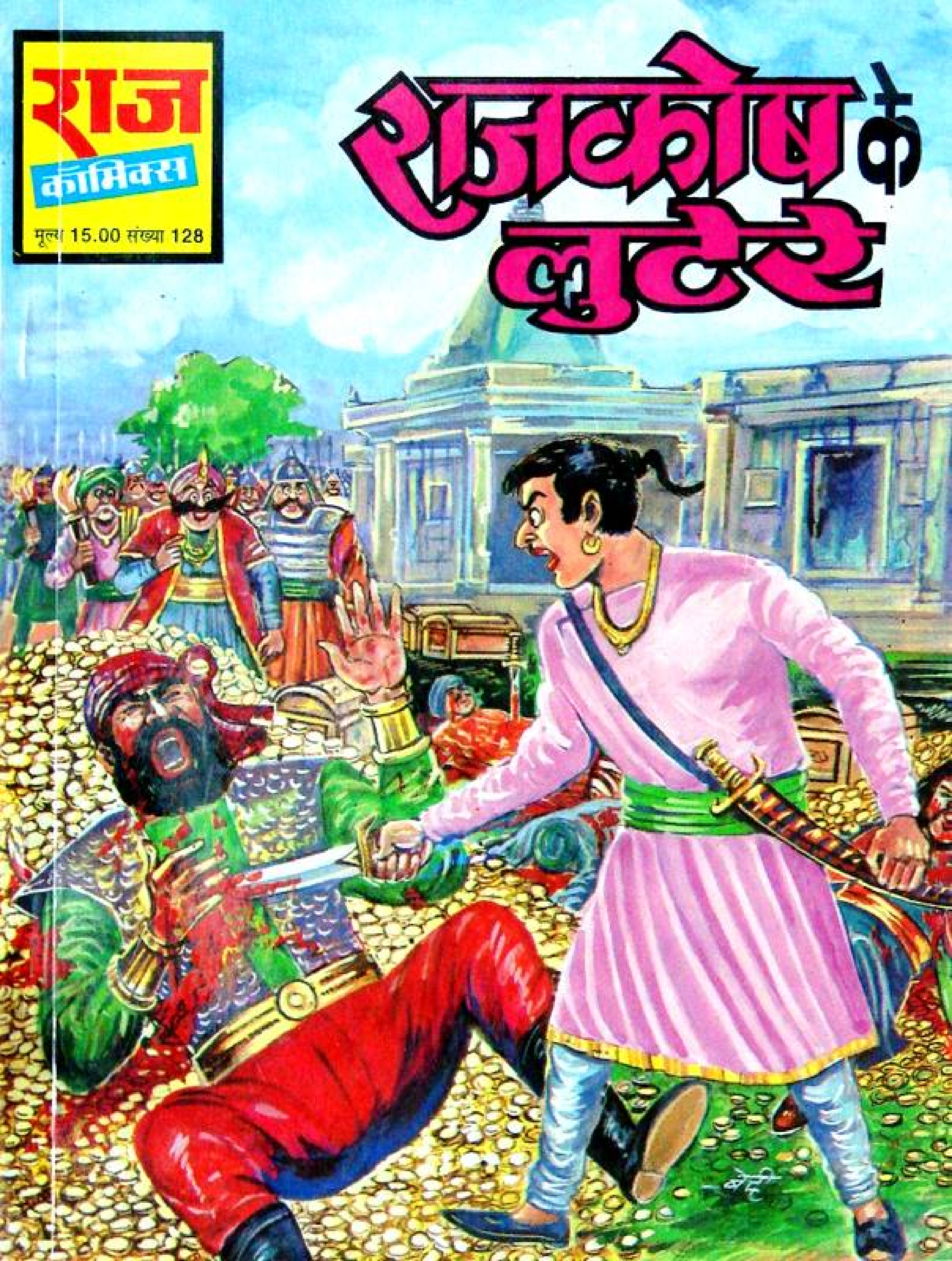
राज
कॉमिक्स
मूल्य 15.00 संख्या 128
राजकोष के
लुटेरे

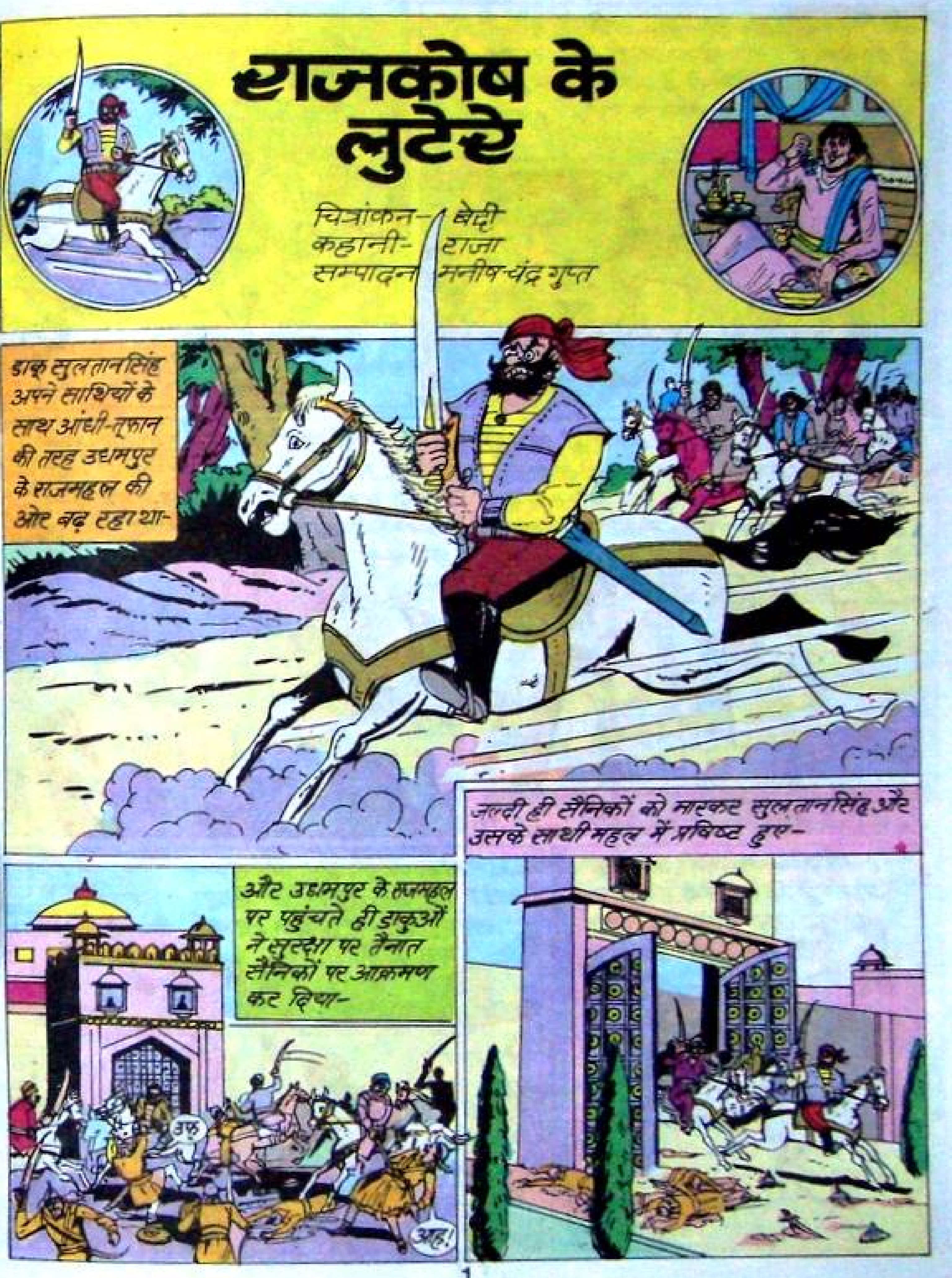

राजकोष के लुटेरे
चित्रांकन- बेदी
कहानी- राजा
सम्पादन- मनीष चंद्र गुप्त
डाकू सुलतान सिंह अपने साथियों के साथ आंधी-तूफान की तरह उधमपुर के राजमहल की ओर बढ़ रहा था-
और उधमपुर के राजमहल पर पहुंचते ही डाकुओं ने सुरक्षा पर तैनात सैनिकों पर आक्रमण कर दिया-
उफ़
आह!
जल्दी ही सैनिकों को मारकर सुलतान सिंह और उसके साथी महल में प्रविष्ट हुए-

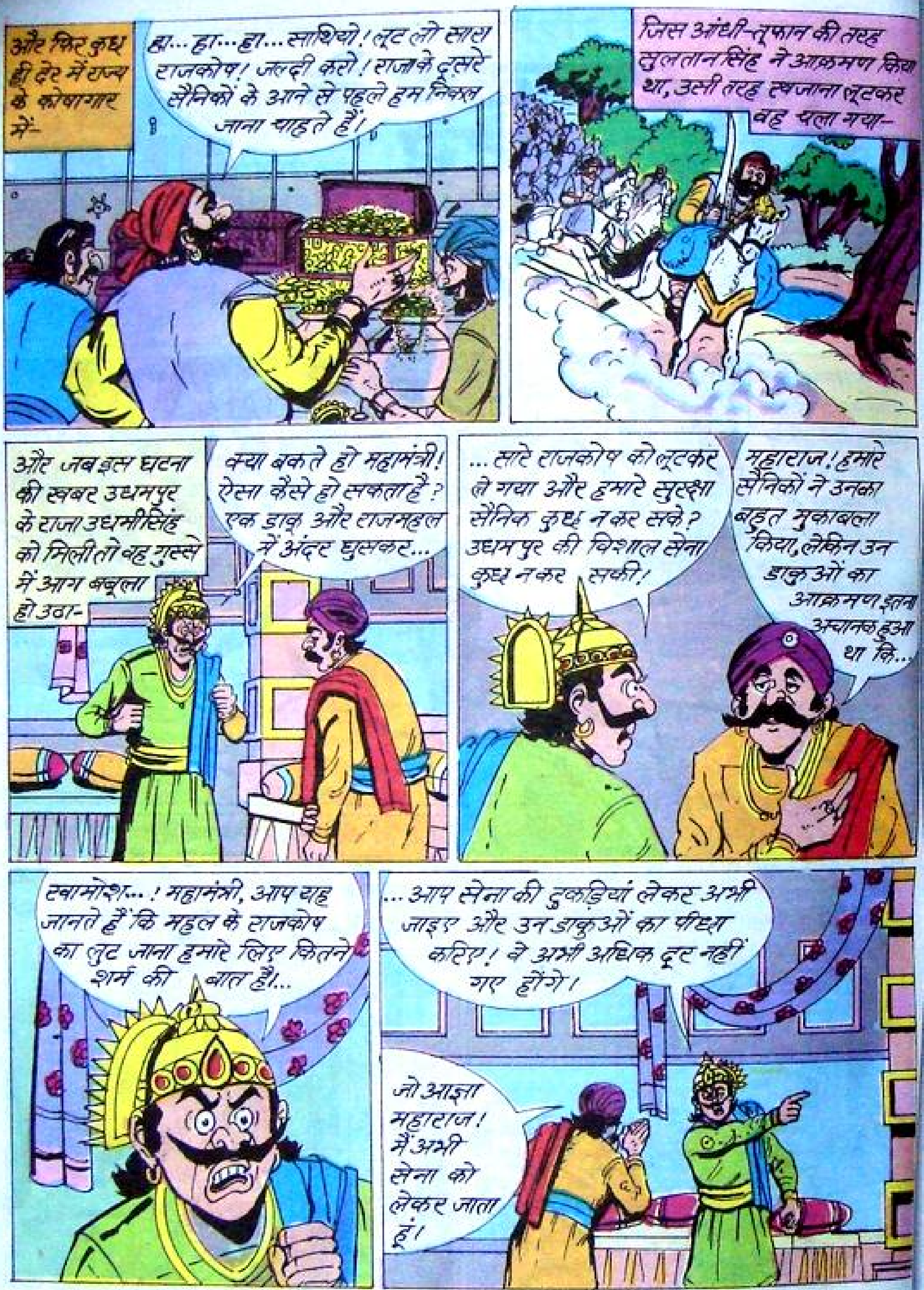
और फिर कुछ ही देर में राज्य के कोषागार में-
हा...हा...हा...साथियो! लूट लो सारा राजकोष! जल्दी करो! राजा के दूसरे सैनिकों के आने से पहले हम निकल जाना चाहते हैं!
जिस आंधी-तूफान की तरह सुलतान सिंह ने आक्रमण किया था, उसी तरह खजाना लूटकर वह चला गया-
और जब इस घटना की खबर उधमपुर के राजा उधमीसिंह को मिली तो वह गुस्से में आग बबूला हो उठा-
क्या बकते हो महामंत्री! ऐसा कैसे हो सकता है? एक डाकू और राजमहल में अंदर घुसकर...
...सारे राजकोष को लूटकर ले गया और हमारे सुरक्षा सैनिक कुछ न कर सके? उधमपुर की विशाल सेना कुछ न कर सकी!
महाराज! हमारे सैनिकों ने उनका बहुत मुकाबला किया, लेकिन उन डाकुओं का आक्रमण इतना अचानक हुआ था कि...
खामोश...! महामंत्री, आप यह जानते हैं कि महल के राजकोष का लुट जाना हमारे लिए कितने शर्म की बात है...
...आप सेना की टुकड़ियां लेकर अभी जाइए और उन डाकुओं का पीछा करिए! वे अभी अधिक दूर नहीं गए होंगे।
जो आज्ञा महाराज! मैं अभी सेना को लेकर जाता हूं।

कुछ ही देर में महामंत्री बहुत से सैनिकों के साथ डाकुओं की खोज में निकला-
सैनिको! जंगल का कोना-कोना छान मारो! हमें वह डाकू हर हालत में मिलना चाहिए।
महामंत्री ने बहुत दौड़-धूप की, लेकिन डाकुओं का कुछ पता नहीं चला। आखिर वह निराश होकर लौट आया-
क्षमा करें महाराज! हमने बहुत दूर-दूर तक उन डाकुओं की खोज की, लेकिन उनका कोई सुराग नहीं मिला।
ओह! महामंत्री, नगर में यह घोषणा कर दो, जो कोई भी डाकुओं को पकड़वाएगा उसे दस हजार स्वर्ण-मुद्राएं पुरस्कार में दी जाएंगी।
और फिर अगले दिन पूरे राज्य में चौराहों पर यह सूचना लिखी हुई थी-
आवश्यक सूचना! खजाना लूटने वाले डाकुओं को पकड़वाने वाले व्यक्ति को दस हजार स्वर्ण-मुद्राएं पुरस्कार में दी जाएंगी
डाकू!
दस हजार स्वर्ण-मुद्राएं!

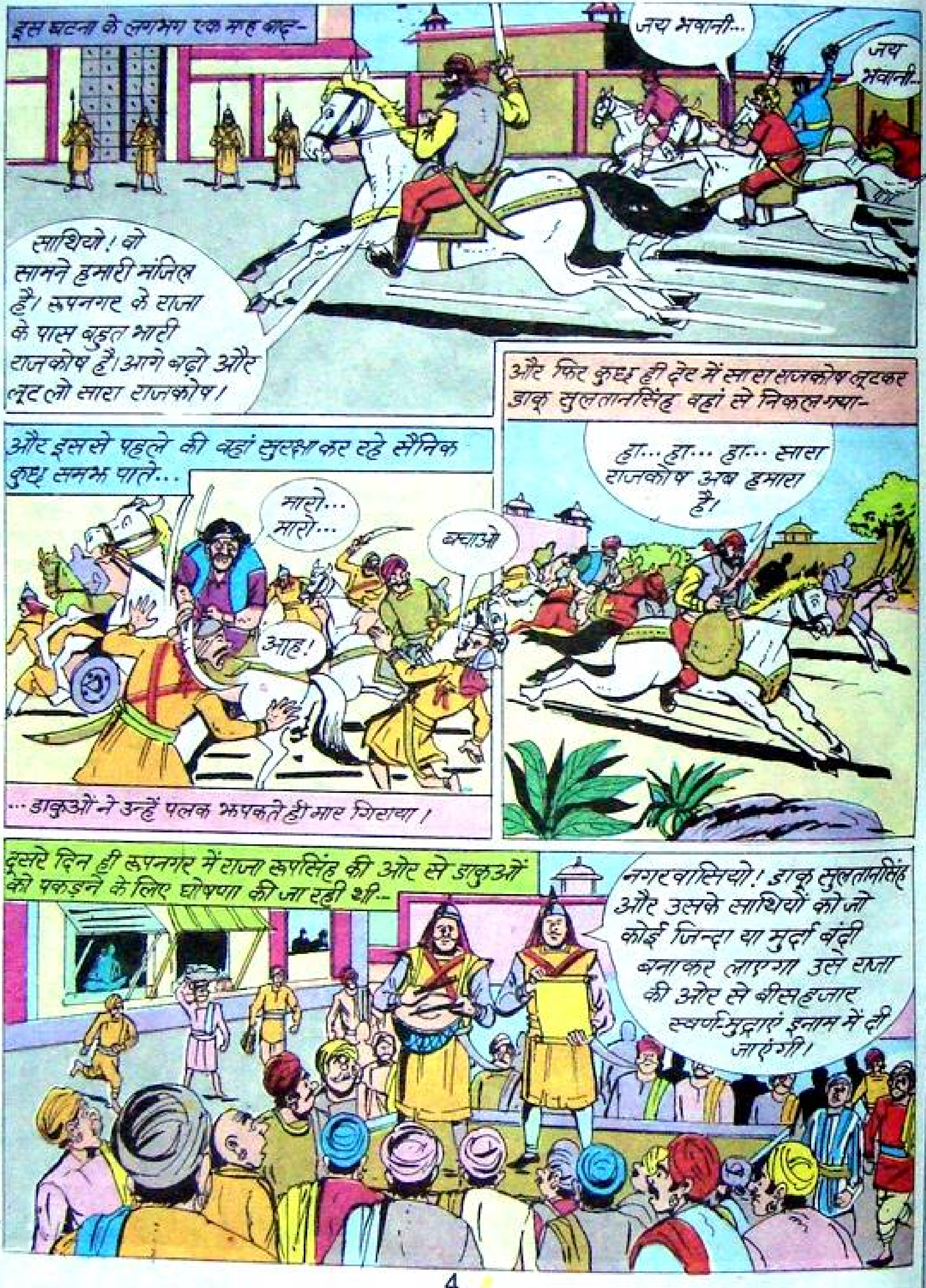
इस घटना के लगभग एक माह बाद-
जय भवानी...
जय भवानी...
साथियो! वो सामने हमारी मंजिल है। रूपनगर के राजा के पास बहुत भारी राजकोष है। आगे बढ़ो और लूट लो सारा राजकोष।
और इससे पहले की वहां सुरक्षा कर रहे सैनिक कुछ समझ पाते...
मारो... मारो...
बचाओ
आह!
...डाकुओं ने उन्हें पलक झपकते ही मार गिराया।
और फिर कुछ ही देर में सारा राजकोष लूटकर डाकू सुलतानसिंह वहां से निकल गया-
हा... हा... हा... सारा राजकोष अब हमारा है।
दूसरे दिन ही रूपनगर में राजा रूपसिंह की ओर से डाकुओं को पकड़ने के लिए घोषणा की जा रही थी-
नगरवासियो! डाकू सुलतानसिंह और उसके साथियों को जो कोई जिन्दा या मुर्दा बंदी बनाकर लाएगा उसे राजा की ओर से बीस हजार स्वर्ण-मुद्राएं इनाम में दी जाएंगी।

उधर रूपनगर में घोषणा की जा रही थी, इधर शक्तिनगर में सुलतानसिंह आक्रमण कर रहा था-
साथियो! मां भवानी हमारे साथ है। विजय हमारी ही होगी। साहस से आगे बढ़ो और सारा राजकोष लूट लो!
जय भवानी!
खच!
आह!

कुछ ही देर में शक्तिनगर का राजकोष भी लुट चुका था-

और इसी तरह कुछ ही दिनों में सुलतानसिंह आसपास के अनेक राज्यों के राजकोष लूट चुका था। राजाओं ने उससे बचने की बहुत कोशिश की, लेकिन किसी को सफलता नहीं मिली-

सुलतान सिंह का आतंक इतना बढ़ चुका था कि उसका आक्रमण देखकर सैनिक उसका मुकाबला करने के बजाय अपनी जान बचाने की कोशिश करने लगते थे-
जय भवानी...
जय भवानी...
भागो...सुलतान आ गया।
भागो... भागो...

उधर विशालगढ़ के राजमहल में बांकेलाल राजअतिथि के रूप में ठाठ के दिन गुजार रहा था। बांकेलाल को बचपन से ही शिव का ऐसा वरदान प्राप्त था कि वह किसी को नुकसान पहुंचाने के लिए कोई शरारत करता था तो उसका नुकसान होने की बजाए उल्टा लाभ हो जाता था। और इससे बांकेलाल का सम्मान भी अधिक बढ़ जाता था। शिव के इस वरदान ने ही बांकेलाल को विशालगढ़ के राजा विक्रमसिंह के महल में पहुंचा दिया था।
आहा...हा...अपनी भी क्या किस्मत है। करो बुरा होगा भला! बस एक गड़बड़ हर बार हो जाती है। जिस का नुकसान करता हूं उसे बहुत लाभ होता है और मुझे थोड़ा!...
...लेकिन इस बार कोई ऐसा चक्कर चलाऊंगा कि योजना की टांग भी न टूटेगी और मैं मालामाल हो जाऊंगा! बस मौका मिलने की देर है।
अभी बांकेलाल यह सोच ही रहा था कि तभी—
श्रीमान जी! आपको महाराज ने बुलाया है।
सत्यानाश हो महाराज का! सब मजा खराब कर दिया! ऊंचे-ऊंचे गद्दों में कितना मजा आ रहा था!
महाराज से कहो, हम अभी आते हैं।
जब बांकेलाल राजा विक्रमसिंह के पास पहुंचा—
आओ बांकेलाल! हम तुम्हें ही याद कर रहे थे।
कहिये महाराज! आपने कैसे याद किया? मैं तो हर समय आपकी सेवा करने के लिए तैयार हूं।
अवश्य कोई गड़बड़ है तभी तो महामंत्री, सेनापति आदि सभी यहां पर मौजूद हैं। लगता है, यह सब मुझे किसी मुश्किल में फंसाने जा रहे हैं।

बांकेलाल! समीप के राज्यों में एक खूंखार डाकू सुलतानसिंह ने भयंकर तबाही मचा रखी है। वह अनेक राज्यों के राजकोष लूट चुका है।
महाराज, आप बिल्कुल भी चिंता न करें। बांकेलाल के होते वह हमारे राज्य में कदम भी नहीं रख सकेगा।
यूं तो बांकेलाल-जी! हमने अपने राजकोष को बहुत सुरक्षित कर दिया है। लेकिन फिर भी हम चाहते हैं कि आप कुछ ऐसा उपाय करें जिससे राजकोष बिल्कुल सुरक्षित रहे।
यह सब तो ठीक है, लेकिन मैं एक बार अपनी आंखों से सुरक्षा-व्यवस्था देख लेना चाहता हूं।
ठीक है, तुम अभी हमारे साथ चलकर उस सुरक्षा-व्यवस्था को देख सकते हो। हम महामंत्री और सेनापति के साथ वहीं चल रहे हैं।
और फिर बांकेलाल राजा विक्रमसिंह, महामंत्री और सेनापति के साथ राजकोष की सुरक्षा-व्यवस्था देखने चल दिया-
एक लम्बा गलियारा पार करने के बाद सब एक विशाल कक्ष में पहुंचे-
विशाल कक्ष में पहुंचकर महामंत्री ने अंदर से दरवाजा बंद किया और फिर उन्होंने एक दूसरे दरवाजे को खटखटाया-
खट...खट...खट...

अगले ही पल–
अरे! यह क्या? कमरे का फर्श तो नीचे की ओर धस रहा है।
बहुत अच्छा!
फर्श के हटने के बाद विशाल कक्ष का दरवाजा अपने आप खुल गया–
चर... चर... चर...
उस दरवाजे में प्रवेश कर, एक लंबे गलियारे को पार करते हुए...
...सब विशाल लोहे के दरवाजे पर पहुंचे।
अरे, यह तो बिल्कुल तिलिस्मी कहानियों के महल की तरह बना है
यह दरवाजा कैसे खुलेगा, महामंत्री जी?
मेरे पांव के नीचे देखिए महाराज! फर्श के इस टुकड़े को पांव से तीन बार दबाने से यह लोहे का दरवाजा स्वयं खुल जाएगा।
??
फर्श के टुकड़े को दबाते ही लोहे का दरवाजा खुलता चला गया–
ओह! सचमुच बहुत सुरक्षित रखा है खजाना लेकिन चिंता मत करो सब बोझ हल्का कर दूंगा।

उस दरवाजे को पार करके जब वे सब अंदर पहुंचे-
महाराज! इस तालाब के उस पार विशाल कक्ष में राजकोष रखा है और सामने हमारे विशेष सैनिक पहरा दे रहे हैं।
लेकिन इस तालाब को पार करके तो डाकू विशाल कक्ष से राजकोष को लूट सकते हैं।
नहीं महाराज! यह सम्भव नहीं होगा। यह तालाब बहुत गहरा है। और फिर इन मांसभक्षी मगरमच्छों को मारकर उस पार पहुंचना बहुत कठिन है...
??
...और उस पार पहुंचने से पहले हमारे सैनिक विषैले बाणों से डाकुओं को मारकर बीच में ही डुबो देंगे।
लेकिन हम अगर उस विशाल कक्ष में जाना चाहें तो कैसे जा सकते हैं?
हम लोग बहुत आसानी से जा सकते हैं। देखिए, यहां पर बहुत सी रंग-बिरंगी कीलें लगी हैं...
...इन में से यह कील घुमाने से इस तालाब पर पुल बन जाएगा।

और फिर उस पुल पर चढ़कर सब विशाल कक्ष के दरवाजे तक पहुंच गए। महामंत्री ने वहां पहरा दे रहे एक सैनिक से कहा–
सैनिक दरवाजे का ताला खोल दो।
और जैसे ही विशाल कक्ष का दरवाजा खुला बांकेलाल जल्दी से अंदर जाने लगा–
ठहरिये बांकेलाल जी, दरवाजा खुला होने पर भी आप कक्ष में प्रवेश नहीं कर सकते।
वह क्यों? दरवाजा खुला होने पर तो कोई भी मजे से घूमता हुआ अंदर जा सकता है।
नहीं, ऐसा संभव नहीं।
और फिर महामंत्री ने एक सैनिक से भाला लेकर खुले दरवाजे से अंदर की ओर फेंका–
??
??
??
भाला अभी हवा में ही था कि आग की लपटें उसकी ओर बढ़ीं–
बाल-बाल बच गया! नहीं तो अभी राम-नाम सत्य हो जाता।
और कुछ पलों में भाला जलकर भस्म हो गया–

और फिर दरवाजे पर लगी एक कल को घुमाकर महामंत्री ने विशालकक्ष में प्रवेश किया- अंदर जाते ही पूरा कक्ष रोशनी से चमक उठा-
महाराज! यह सब सुरक्षा-व्यवस्था हमारे राजगुरु सिद्धनाथ ने अपनी तिलिस्मी विद्या से की है।
सचमुच, यहां तो हमारा राजकोष पूरी तरह सुरक्षित रहेगा।
आहा! इतना विशाल राजकोष! एक बार मैं सारा राजकोष ले जाने में सफल हो जाऊं, फिर देखना मेरी सात पीढ़ियां मौज से रहेंगी।
बांकेलाल! क्या सोच रहे हो? तुमने इस सुरक्षा व्यवस्था के बारे में कुछ नहीं कहा!
कुछ...कुछ नहीं महाराज! सुरक्षा-व्यवस्था बहुत अच्छी है।
और फिर सब वापस लौट चले, लेकिन बांकेलाल कुछ और ही सोच रहा था-
इस सारी सुरक्षा-व्यवस्था की ऐसी-तैसी न कर दी तो मेरा नाम भी बांकेलाल नहीं।
उधर दिन प्रतिदिन डाकू सुलतानसिंह का प्रकोप बढ़ता ही जा रहा था। दूर-दूर के राज्यों के राजा उसके नाम से भयभीत होने लगे थे। एक दिन अमरपुर में-
सेनापति जी! सुलतानसिंह कभी भी हमारे महल पर आक्रमण कर सकता है। तुमने राजकोष की सुरक्षा के लिए क्या प्रबंध किया है?

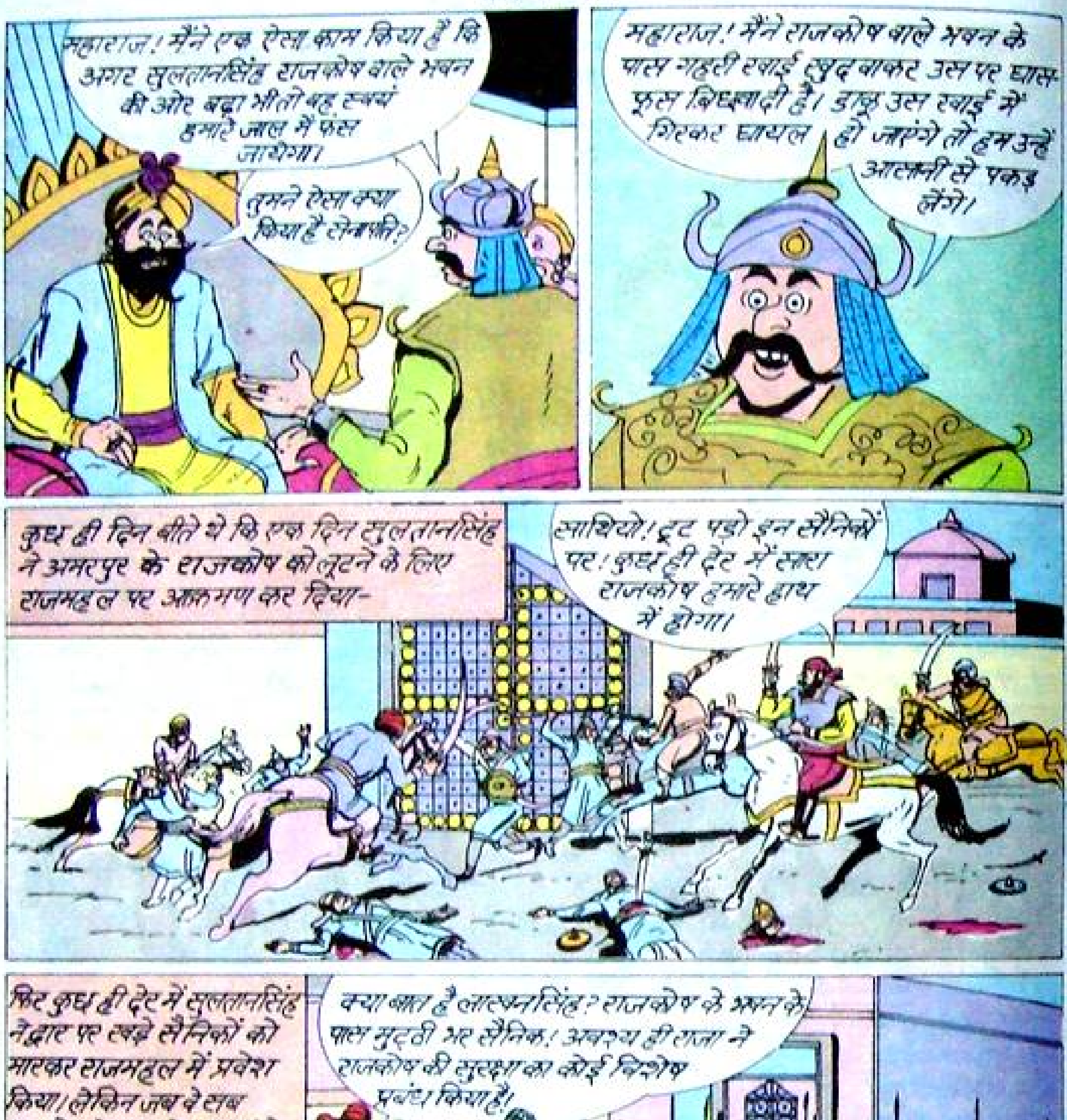
महाराज! मैंने एक ऐसा काम किया है कि अगर सुलतानसिंह राजकोष वाले भवन की ओर बढ़ा भी तो वह स्वयं हमारे जाल में फंस जायेगा।
तुमने ऐसा क्या किया है सेनापति?
महाराज! मैंने राजकोष वाले भवन के पास गहरी खाई खुदवाकर उस पर घास-फूस बिछवा दी है। डाकू उस खाई में गिरकर घायल हो जाएंगे तो हम उन्हें आसानी से पकड़ लेंगे।
कुछ ही दिन बीते थे कि एक दिन सुलतानसिंह ने अमरपुर के राजकोष को लूटने के लिए राजमहल पर आक्रमण कर दिया–
साथियो! टूट पड़ो इन सैनिकों पर! कुछ ही देर में सारा राजकोष हमारे हाथ में होगा।
फिर कुछ ही देर में सुलतानसिंह ने द्वार पर खड़े सैनिकों को मारकर राजमहल में प्रवेश किया। लेकिन जब वे सब राजकोष के भवन के पास पहुंचे–
क्या बात है लाखनसिंह? राजकोष के भवन के पास मुट्ठी भर सैनिक! अवश्य ही राजा ने राजकोष की सुरक्षा का कोई विशेष प्रबंध किया है।
सरदार! भवन पर सीधे आक्रमण करने के बजाय हमें एक-दो साथियों को वहां भेजना चाहिए ताकि शत्रु की चाल का पता चल सके!

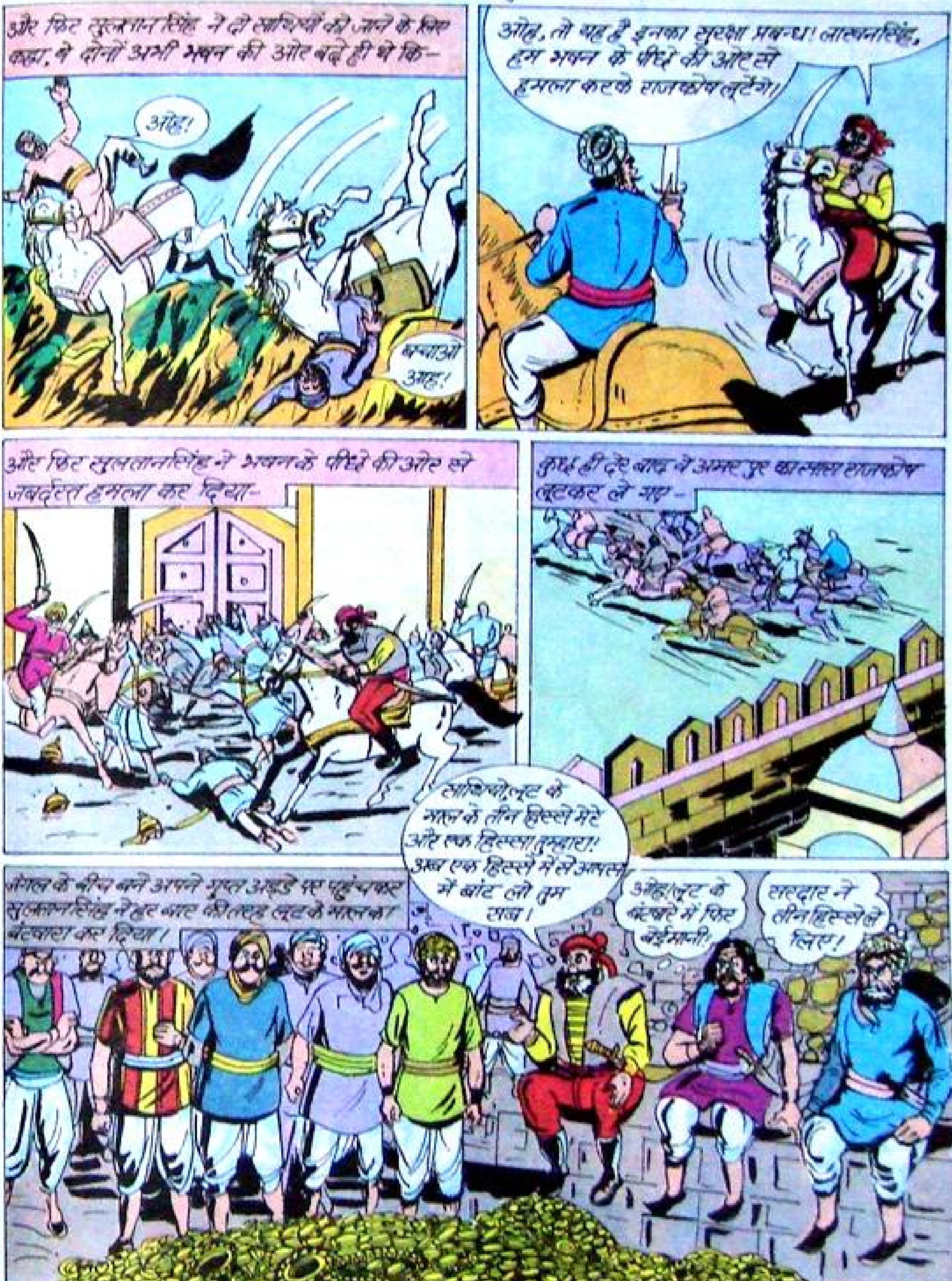
और फिर सुलतानसिंह ने दो साथियों को जाने के लिए कहा, वे दोनों अभी भवन की ओर बढ़े ही थे कि–
ओह!
आह!
ओह, तो यह है इनका सुरक्षा प्रबन्ध! आखनसिंह, हम भवन के पीछे की ओर से हमला करके राजकोष लूटेंगे।
और फिर सुलतानसिंह ने भवन के पीछे की ओर से जबर्दस्त हमला कर दिया–
कुछ ही देर बाद वे अमर पुर का सारा राजकोष लूटकर ले गए–
जंगल के बीच बने अपने गुप्त अड्डे पर पहुंचकर सुलतानसिंह ने हर बार की तरह लूट के माल का बंटवारा कर दिया।
साथियो! लूट के माल के तीन हिस्से मेरे और एक हिस्सा तुम्हारा! अब एक हिस्से में से आपस में बांट लो तुम सब।
ओह! लूट के बंटवारे में फिर बेईमानी!
सरदार ने तीन हिस्से ले लिए!

सुल्तानसिंह ने खुश होते हुए अपने हिस्से का माल उठाया—
आ...हा...हा... इतना माल!
कुत्ता! कमीना! हर बार ज्यादा हिस्सा ले जाता है।
नहीं! मैं यह बेईमानी अब नहीं चलने दूंगा। मैं सुल्तान सिंह से बराबर का हिस्सा लूंगा!
छोटे ठाकुर! क्या सोच रहे हो? जल्दी से माल का बंटवारा कर दो!
लाखन काका! यह बंटवारा मैं नहीं कर सकूंगा! तुम ही सबको बांट दो।
??
??
??
और मंगलसिंह दूसरी ओर चला गया।
सब डाकुओं को उनका हिस्सा देकर अंत में लाखन-सिंह मंगलसिंह के पास पहुंचा—
यह लो छोटे ठाकुर! यह रहा तुम्हारे हिस्से का माल!
उधर रख दो काका!
क्या बात है छोटे ठाकुर! सब लोग तो लूट के हिस्से को लेते समय बहुत खुश होते हैं और एक तुम हो कि तुम्हें कोई खुशी नहीं होती।
काका! खुशी तो मुझे भी होती! लेकिन यह लूट का हिस्सा नहीं है...
...मेरी तरफ फेंका हुआ भीख का एक टुकड़ा है।
मैं तुम्हारी बात नहीं समझा छोटे ठाकुर!

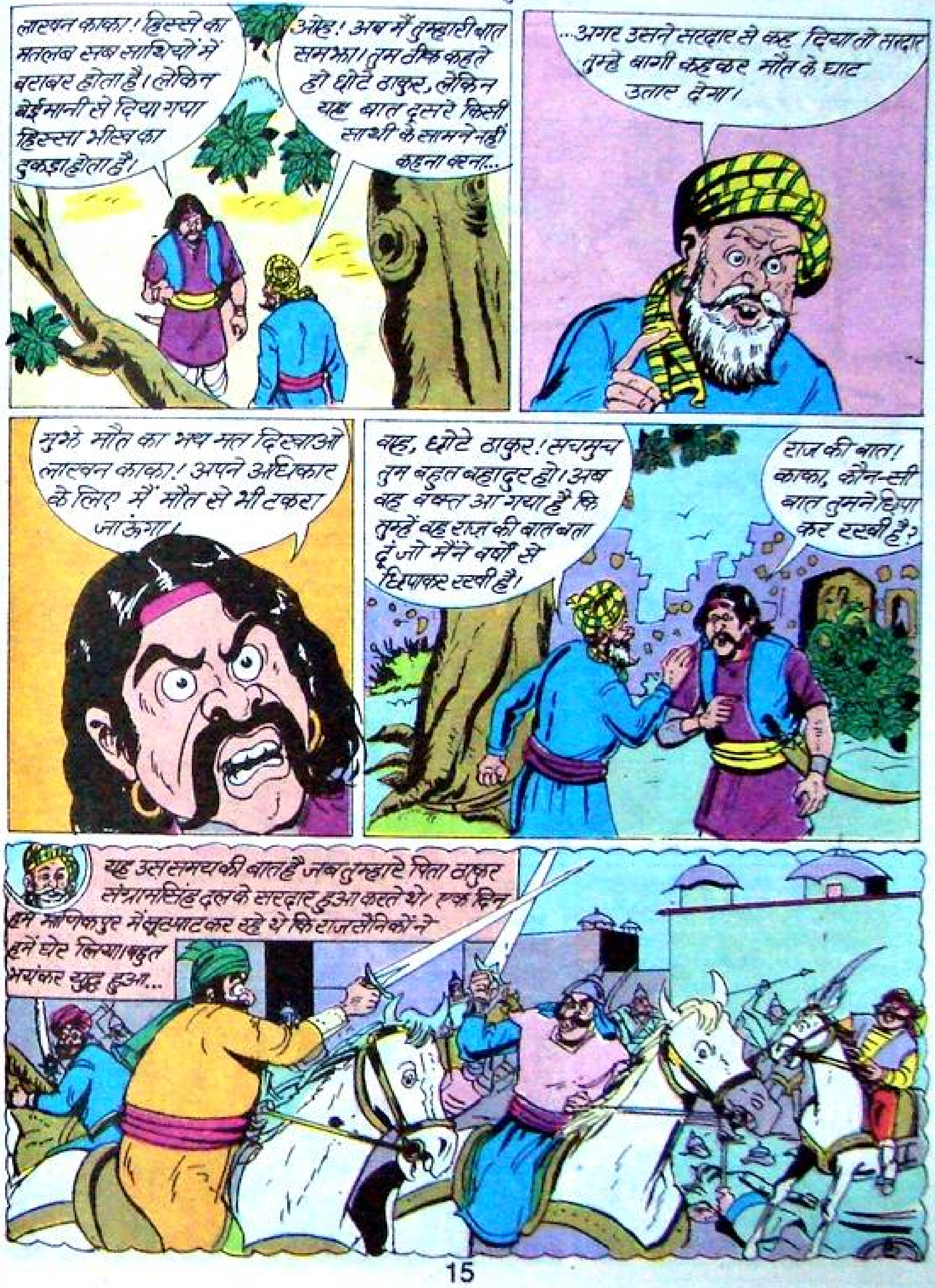
लाखन काका! हिस्से का मतलब सब साथियों में बराबर होता है। लेकिन बेईमानी से दिया गया हिस्सा भीख का टुकड़ा होता है।
ओह! अब मैं तुम्हारी बात समझा। तुम ठीक कहते हो छोटे ठाकुर, लेकिन यह बात दूसरे किसी साथी के सामने नहीं कहना वरना...
...अगर उसने सरदार से कह दिया तो सरदार तुम्हें बागी कहकर मौत के घाट उतार देगा।
मुझे मौत का भय मत दिखाओ लाखन काका! अपने अधिकार के लिए मैं मौत से भी टकरा जाऊंगा।
वाह, छोटे ठाकुर! सचमुच तुम बहुत बहादुर हो। अब वह वक्त आ गया है कि तुम्हें वह राज की बात बता दूं जो मैंने वर्षों से छिपाकर रखी है।
राज की बात! काका, कौन-सी बात तुमने छिपा कर रखी है?
यह उस समय की बात है जब तुम्हारे पिता ठाकुर संग्रामसिंह दल के सरदार हुआ करते थे। एक दिन हम माणिकपुर में लूटपाट कर रहे थे कि राजसैनिकों ने हमें घेर लिया। बहुत भयंकर युद्ध हुआ...

...उस दिन हमारे बहुत से साथी मारे गए। और फिर हमें सरदार के साथ उस जगह से भागना पड़ा। सुल्तानसिंह भी हमारे साथ था...
...हम एक जंगल में सुरक्षित पहुंच गए थे, लेकिन दल का सरदार बनने के लालच में सुल्तानसिंह ने संग्रामसिंह की हत्या कर दी...
आह! सुल्तान.. धोखा...
आ हा...हा... अब मैं सरदार बनूंगा।
??
...और इस तरह सुल्तानसिंह दल का सरदार बन गया।
ओह! तो मेरे पिता का हत्यारा यह सुल्तानसिंह है। सुल्तान! मैं तुझे जिन्दा नहीं छोड़ूंगा। कभी नहीं...
रुको, छोटे ठाकुर! सुल्तानसिंह को मारने का समय अभी नहीं आया है। इसके लिए तुम्हें प्रतीक्षा करनी होगी।
नहीं, मैं एक दिन भी प्रतीक्षा नहीं कर सकता।
बुद्धि से काम लो छोटे ठाकुर! अभी दल के लोगों को अपने साथ मिलाना है। बंटवारे के नाम पर हम लोगों को सुल्तानसिंह के खिलाफ कर सकते हैं।
ठीक है, लेकिन सुल्तानसिंह का अधिक दिन जीवित रहना मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता।
तुम्हें अधिक दिन प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी।

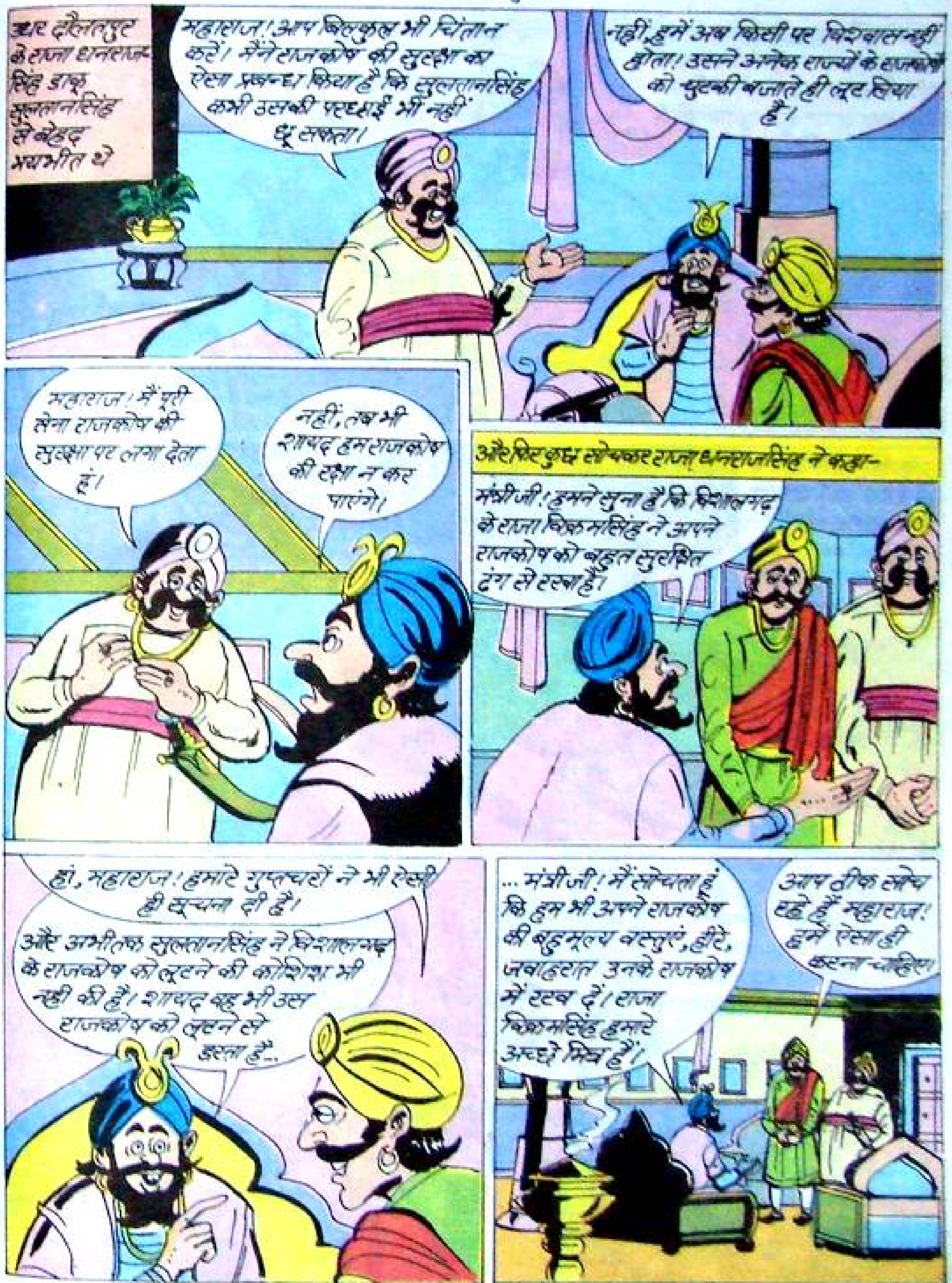
उधर दौलतपुर के राजा धनराजसिंह डाकू सुल्तानसिंह से बेहद भयभीत थे
महाराज! आप बिल्कुल भी चिंता न करें। मैंने राजकोष की सुरक्षा का ऐसा प्रबन्ध किया है कि सुल्तानसिंह कभी उसकी परछाईं भी नहीं छू सकता।
नहीं हमें अब किसी पर विश्वास नहीं होता! उसने अनेक राज्यों के राजकोषों को चुटकी बजाते ही लूट लिया है।
महाराज! मैं पूरी सेना राजकोष की सुरक्षा पर लगा देता हूं।
नहीं, तब भी शायद हम राजकोष की रक्षा न कर पाएंगे।
और फिर कुछ सोचकर राजा धनराजसिंह ने कहा—
मंत्री जी! हमने सुना है कि विशालगढ़ के राजा विक्रमसिंह ने अपने राजकोष को बहुत सुरक्षित ढंग से रखा है।
हां, महाराज! हमारे गुप्तचरों ने भी ऐसी ही सूचना दी है।
और अभी तक सुल्तानसिंह ने विशालगढ़ के राजकोष को लूटने की कोशिश भी नहीं की है। शायद वह भी उस राजकोष को लूटने से डरता है...
...मंत्री जी! मैं सोचता हूं कि हम भी अपने राजकोष की बहुमूल्य वस्तुएं, हीरे, जवाहरात उनके राजकोष में रख दें। राजा विक्रमसिंह हमारे अच्छे मित्र हैं।
आप ठीक सोच रहे हैं महाराज! हमें ऐसा ही करना चाहिए।

तो ठीक है! आज ही अपने राजकोष की बहुमूल्य वस्तुएं विशालगढ़ भेजने का प्रबंध करो, लेकिन यह सब काम बहुत होशियारी से होना चाहिए।
महाराज! मैं सभी वस्तुएं ऐसे गुप्त ढंग से विशालगढ़ भेजूंगा कि किसी को कानों-कान भी खबर नहीं होगी।

और फिर तीर्थयात्रियों के रूप में सैनिकों का एक दल बहुमूल्य वस्तुओं को लेकर विशालगढ़ की ओर रवाना हो गया—

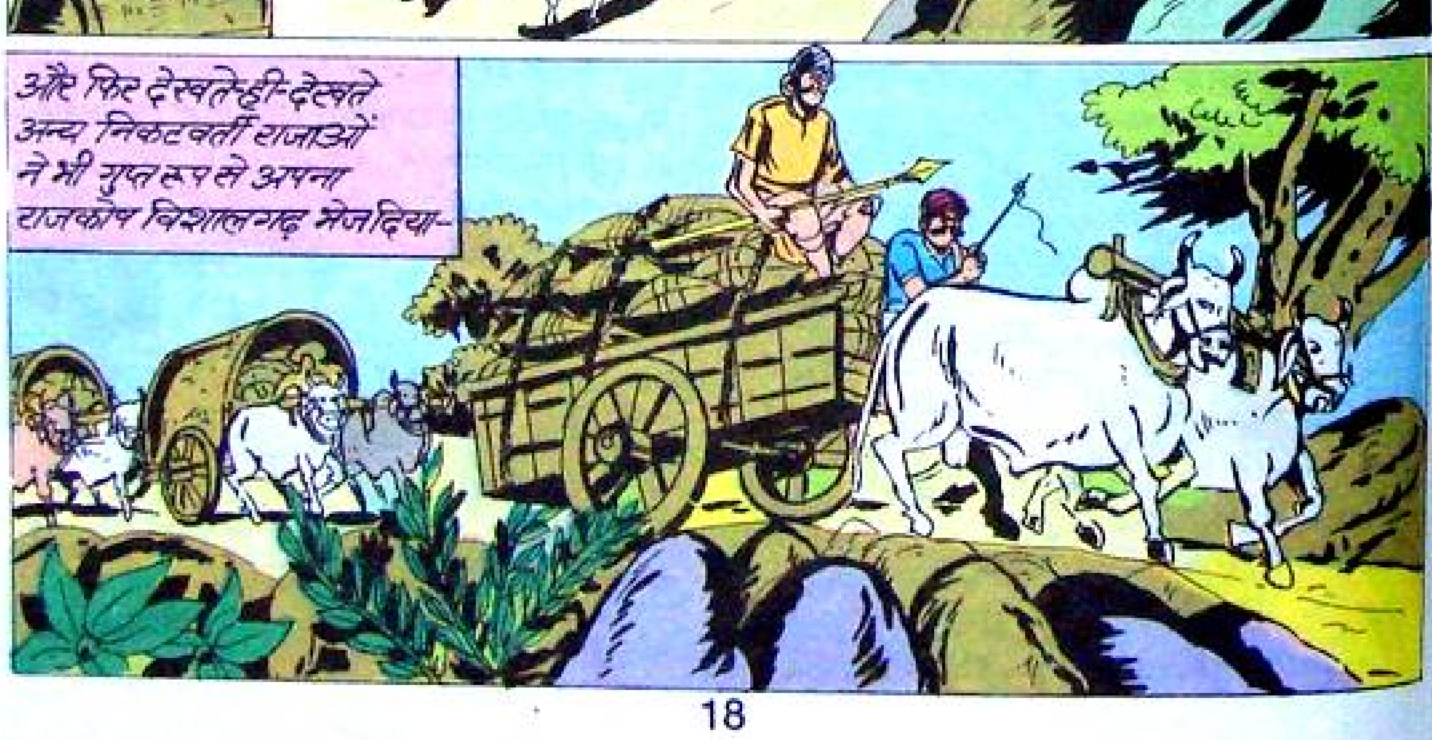
और फिर देखते-ही-देखते अन्य निकटवर्ती राजाओं ने भी गुप्त रूप से अपना राजकोष विशालगढ़ भेज दिया—

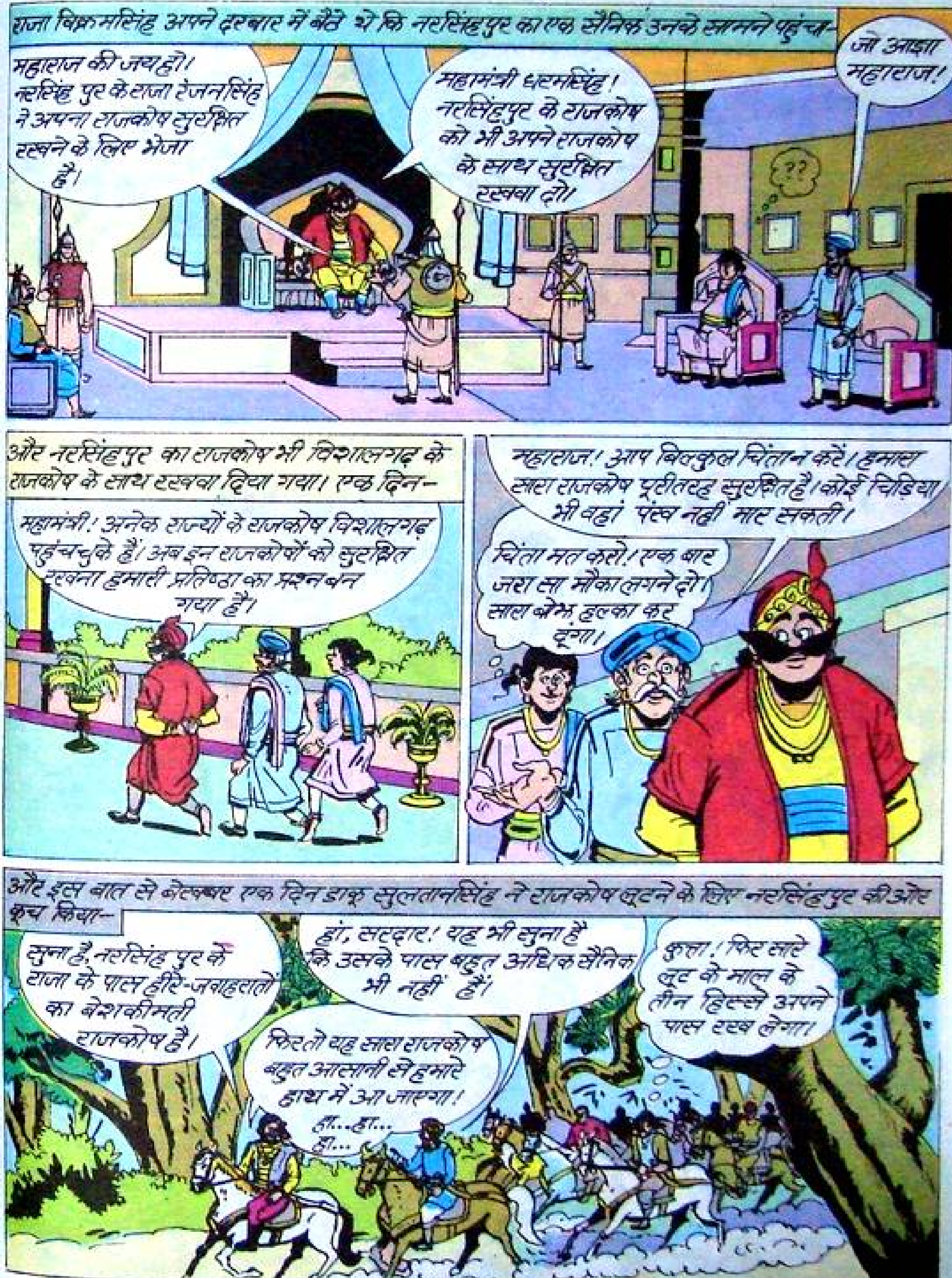
राजा विक्रमसिंह अपने दरबार में बैठे थे कि नरसिंहपुर का एक सैनिक उनके सामने पहुंचा—
महाराज की जय हो! नरसिंह पुर के राजा रंजनसिंह ने अपना राजकोष सुरक्षित रखने के लिए भेजा है।
महामंत्री धरमसिंह! नरसिंहपुर के राजकोष को भी अपने राजकोष के साथ सुरक्षित रखवा दो।
जो आज्ञा महाराज!
??
और नरसिंहपुर का राजकोष भी विशालगढ़ के राजकोष के साथ रखवा दिया गया। एक दिन—
महामंत्री! अनेक राज्यों के राजकोष विशालगढ़ पहुंच चुके हैं। अब इन राजकोषों को सुरक्षित रखना हमारी प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गया है।
महाराज! आप बिल्कुल चिंता न करें। हमारा सारा राजकोष पूरी तरह सुरक्षित है। कोई चिड़िया भी वहां पंख नहीं मार सकती।
चिंता मत करो! एक बार जरा सा मौका लगने दो। सारा बोझ हल्का कर दूंगा।
और इस बात से बेखबर एक दिन डाकू सुलतानसिंह ने राजकोष लूटने के लिए नरसिंहपुर की ओर कूच किया—
सुना है, नरसिंह पुर के राजा के पास हीरे-जवाहरातों का बेशकीमती राजकोष है।
हां, सरदार! यह भी सुना है कि उसके पास बहुत अधिक सैनिक भी नहीं हैं।
फिर तो यह सारा राजकोष बहुत आसानी से हमारे हाथ में आ जाएगा!
हा...हा... हा...
हुंह! फिर सारे लूट के माल के तीन हिस्से अपने पास रख लेगा।

नरसिंहपुर में राजकोष भवन के पास पहुंचते ही सुलतान सिंह ने हमला बोल दिया–
इन थोड़े से सैनिकों को तो पलक झपकते मौत के घाट उतारकर मैं सारा राजकोष लूट लूंगा।
राजकोष भवन
जय भवानी...
जय भवानी...
लेकिन जब डाकुओं ने उन सैनिकों को मारना शुरू किया तो–
हमें मत मारो! हम हथियार डाल देते हैं।
हम दरवाजा खोल देते हैं। आप सब-कुछ ले जाएं।
सैनिकों ने भवन के दरवाजे खोल दिए–
और सुलतानसिंह धड़धड़ाता हुआ भीतर प्रविष्ट हुआ।
लेकिन जब उसे थोड़ी सी स्वर्ण-मुद्राओं के अलावा कुछ भी नहीं मिला तो वह आग-बबूला हो उठा–
लाखनसिंह! यहां तो कुछ भी नहीं है। सारा राजकोष कहां गया?
लगता है राजा ने राजकोष को कहीं छिपा दिया है!
??

लाखनसिंह! ऐसा कभी नहीं हुआ कि सुलतान को खाली हाथ लौटना पड़ा हो। अवश्य ही राजा ने सारा धन कहीं छिपाकर रखा है।
घेर लो साथियो! इन सैनिकों को और इन से पूछो, राजा ने सारा राजकोष कहां छिपाया है?
सरदार! हमें मत मारो। हमें छोड़ दो। महाराज ने सारा राजकोष विशालगढ़ में सुरक्षित रखा है।
विशालगढ़!
हां सरदार! हमारे राजा ने ही नहीं, बल्कि दूसरे सभी राजाओं ने भी अपना-अपना राजकोष विशालगढ़ में सुरक्षित रख छोड़ा है।
वापस चलो साथियो!
सभी डाकू वापस लौट पड़े-

उस दिन सुलतानसिंह ने अपने साथियों से कहा-
साथियो! आज हमें पहली बार असफलता का मुंह देखना पड़ा है, लेकिन अब हमें एक बहुत बड़ी सफलता भी हाथ लगेगी। हम कुछ ही दिनों में विशाल-गढ़ पर...
...आक्रमण करके एक साथ बहुत से राज्यों का राजकोष लूट लेंगे।
लेकिन मैं तुम्हें उस राजकोष को नहीं लेने दूंगा!
लेकिन सरदार! हमें विशालगढ़ के राज महल पर आक्रमण करने से पहले वहां की सुरक्षा-व्यवस्था की जानकारी अवश्य लेनी चाहिए...
...क्योंकि जब वहां पर बहुत से राज्यों का राजकोष रखा गया है तो अवश्य ही उसकी सुरक्षा की बहुत मजबूत व्यवस्था भी की गई होगी।
लाखनसिंह ठीक कहते हैं, सरदार!
ठीक है, कल कुछ लोग वेष बदलकर विशालगढ़ जाएंगे और राजकोष की सुरक्षा-व्यवस्था का पता करेंगे।
और अगले दिन लाखनसिंह और मंगलसिंह वेष बदलकर विशाल-गढ़ की ओर चल दिए-

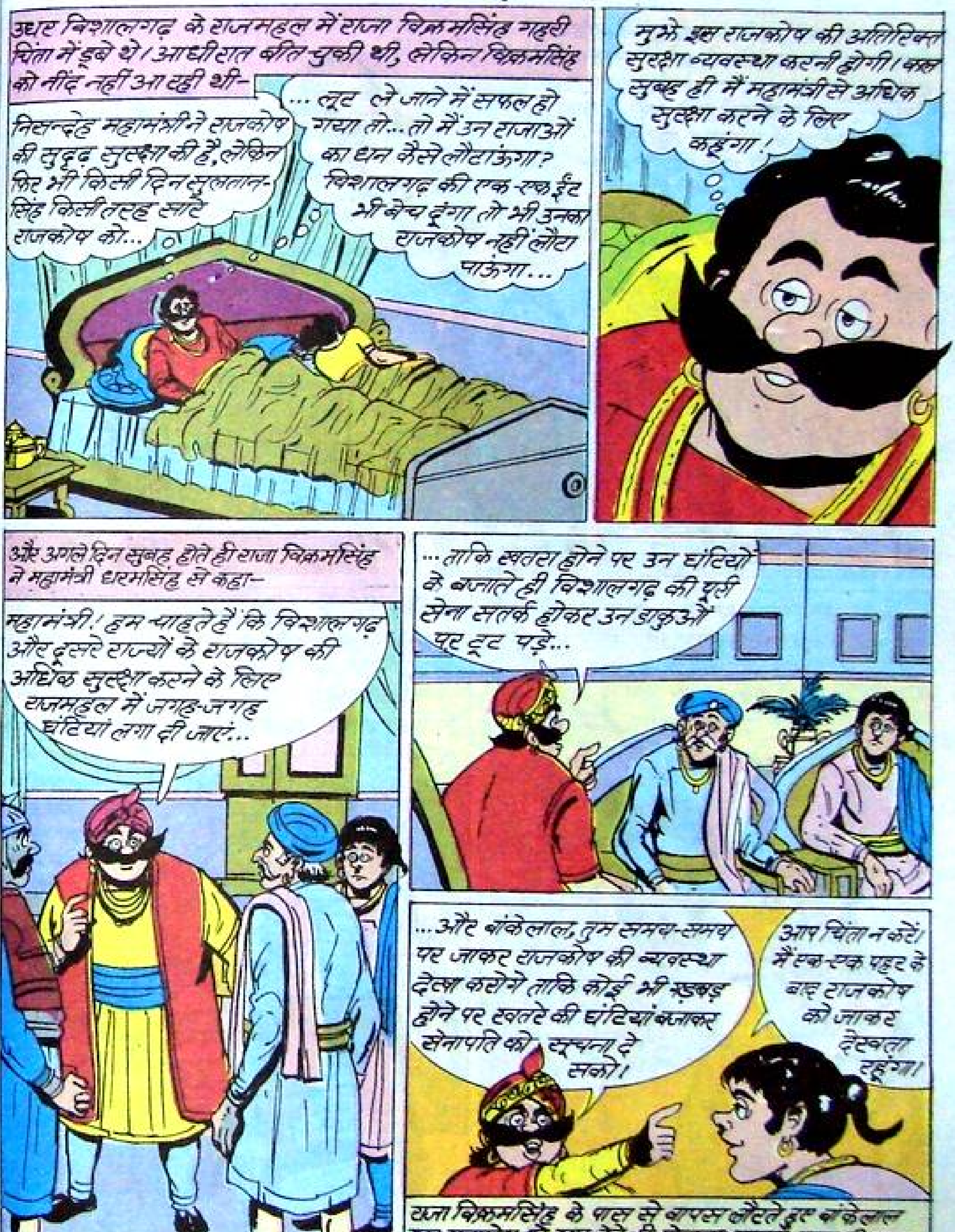
उधर विशालगढ़ के राजमहल में राजा विक्रमसिंह गहरी चिंता में डूबे थे। आधी रात बीत चुकी थी, लेकिन विक्रमसिंह को नींद नहीं आ रही थी–
निसन्देह महामंत्री ने राजकोष की सुदृढ़ सुरक्षा की है, लेकिन फिर भी किसी दिन सुलतानसिंह किसी तरह सारे राजकोष को...
...लूट ले जाने में सफल हो गया तो... तो मैं उन राजाओं का धन कैसे लौटाऊंगा? विशालगढ़ की एक-एक ईंट भी बेच दूंगा तो भी उनका राजकोष नहीं लौटा पाऊंगा...
मुझे इस राजकोष की अतिरिक्त सुरक्षा व्यवस्था करनी होगी। कल सुबह ही मैं महामंत्री से अधिक सुरक्षा करने के लिए कहूंगा।
और अगले दिन सुबह होते ही राजा विक्रमसिंह ने महामंत्री धरमसिंह से कहा–
महामंत्री! हम चाहते हैं कि विशालगढ़ और दूसरे राज्यों के राजकोष की अधिक सुरक्षा करने के लिए राजमहल में जगह-जगह घंटियां लगा दी जाएं...
...ताकि खतरा होने पर उन घंटियों के बजाते ही विशालगढ़ की पूरी सेना सतर्क होकर उन डाकुओं पर टूट पड़े...
...और बंकेलाल, तुम समय-समय पर जाकर राजकोष की व्यवस्था देखा करोगे ताकि कोई भी गड़बड़ होने पर खतरे की घंटियां बजाकर सेनापति को सूचना दे सको।
आप चिंता न करें। मैं एक-एक पहर के बाद राजकोष को जाकर देखता रहूंगा।
राजा विक्रमसिंह के पास से वापस लौटते हुए बंकेलाल उस राजकोष को उड़ा लेने की योजना बनाकर मन-ही-मन खुश हो रहा था–

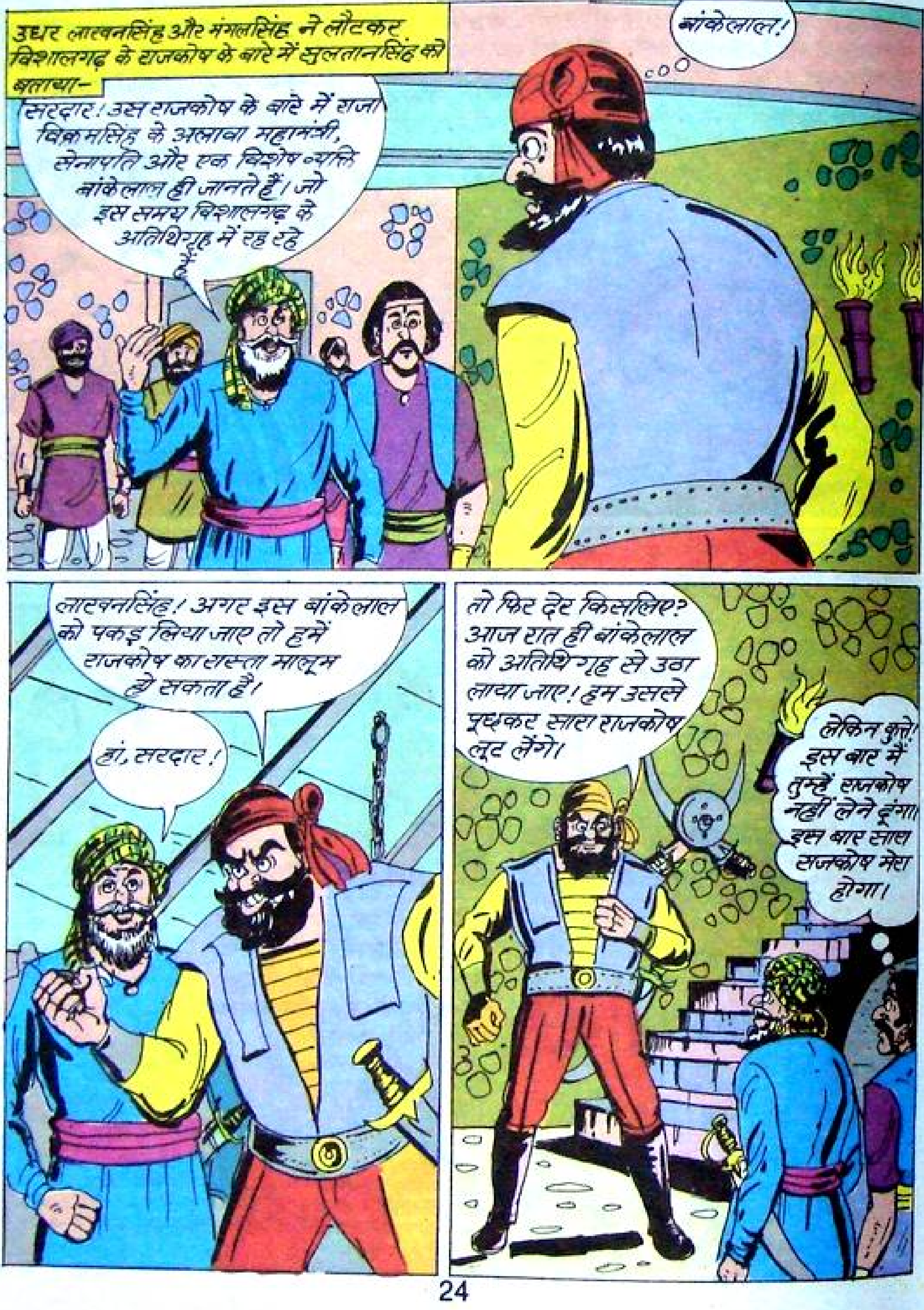
उधर लाखनसिंह और मंगलसिंह ने लौटकर विशालगढ़ के राजकोष के बारे में सुलतानसिंह को बताया–
सरदार! उस राजकोष के बारे में राजा विक्रमसिंह के अलावा महामंत्री, सेनापति और एक विशेष व्यक्ति बांकेलाल ही जानते हैं। जो इस समय विशालगढ़ के अतिथिगृह में रह रहे हैं।
बांकेलाल!
लाखनसिंह! अगर इस बांकेलाल को पकड़ लिया जाए तो हमें राजकोष का रास्ता मालूम हो सकता है।
हां, सरदार!
तो फिर देर किसलिए? आज रात ही बांकेलाल को अतिथिगृह से उठा लाया जाए! हम उससे पूछकर सारा राजकोष लूट लेंगे।
लेकिन कुत्ते! इस बार मैं तुम्हें राजकोष नहीं लेने दूंगा। इस बार सारा राजकोष मेरा होगा।

और फिर उस रात लाखनसिंह, मंगलसिंह और कुछ डाकू अतिथिगृह के पास पहुंचे-
छोटे ठाकुर! मैंने खिड़की में रस्सी का फंदा फंसा दिया है। अब तुम जल्दी से ऊपर चढ़कर बांकेलाल को उठा लाओ।
और रस्सी के सहारे मंगलसिंह और कुछ डाकू ऊपर चढ़ गए-
उधर अतिथिगृह में कोमल गद्दों पर लेटे बांकेलाल की आंखों में नींद का नाम नहीं था। उसकी आंखों के सामने विशाल राजकोष घूम रहा था-
और तभी बांकेलाल की आंख खुल गई-
क... कौन है...? तुम लोग यहां कैसे आए?
हम तुम्हें लेने आए हैं। अगर तुमने शोर मचाया तो...अभी खंजर घोंप देंगे।
क्या... क्या चाहते हो तुम? मेरे पास कोई राजकोष नहीं! मैंने राजकोष की चोरी नहीं की!
चुपचाप हमारे साथ चलो। अगर जरा भी बोले तो गरदन अलग कर देंगे।

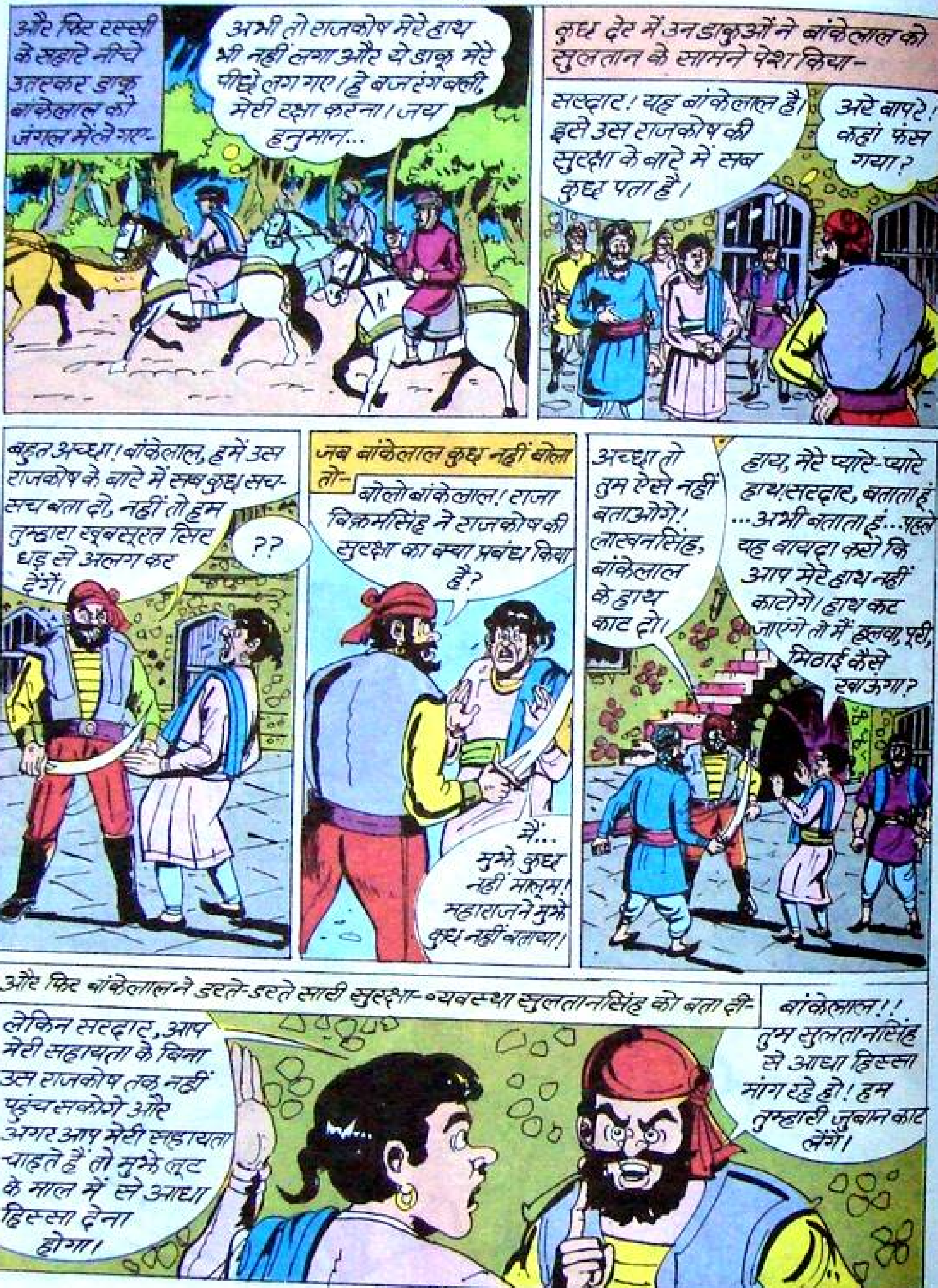

और फिर रस्सी के सहारे नीचे उतरकर डाकू बांकेलाल को जंगल में ले गए-
अभी तो राजकोष मेरे हाथ भी नहीं लगा और ये डाकू मेरे पीछे लग गए। हे बजरंग बली, मेरी रक्षा करना। जय हनुमान...
कुछ देर में उन डाकुओं ने बांकेलाल को सुलतान के सामने पेश किया-
सरदार! यह बांकेलाल है। इसे उस राजकोष की सुरक्षा के बारे में सब कुछ पता है।
अरे बाप रे! कहां फंस गया?
बहुत अच्छा! बांकेलाल, हमें उस राजकोष के बारे में सब कुछ सच-सच बता दो, नहीं तो हम तुम्हारा खूबसूरत सिर धड़ से अलग कर देंगे।
??
जब बांकेलाल कुछ नहीं बोला तो-
बोलो बांकेलाल! राजा विक्रमसिंह ने राजकोष की सुरक्षा का क्या प्रबंध किया है?
मैं... मुझे कुछ नहीं मालूम! महाराज ने मुझे कुछ नहीं बताया!
अच्छा तो तुम ऐसे नहीं बताओगे! लाखनसिंह, बांकेलाल के हाथ काट दो।
हाय, मेरे प्यारे-प्यारे हाथ! सरदार, बताता हूं ...अभी बताता हूं...पहले यह वायदा करो कि आप मेरे हाथ नहीं काटोगे। हाथ कट जाएंगे तो मैं हलवा, पूरी, मिठाई कैसे खाऊंगा?
और फिर बांकेलाल ने डरते-डरते सारी सुरक्षा-व्यवस्था सुलतानसिंह को बता दी-
लेकिन सरदार, आप मेरी सहायता के बिना उस राजकोष तक नहीं पहुंच सकोगे और अगर आप मेरी सहायता चाहते हैं तो मुझे लूट के माल में से आधा हिस्सा देना होगा।
बांकेलाल!! तुम सुलतानसिंह से आधा हिस्सा मांग रहे हो! हम तुम्हारी जुबान काट लेंगे।

सोच लो सरदार! अगर आपने मेरी जुबान काट दी तो राजकोष तक पहुंचने की जानकारी कौन देगा?
बहुत चालाक मालूम देता है। एक बार राजकोष मेरे हाथ लग जाए फिर सारी चालाकी निकाल दूंगा।
अच्छा बांकेलाल! मैं तुम्हें राजकोष का दसवां हिस्सा दूंगा, लेकिन अब भी तुमने इनकार किया तो अभी तुम्हारी गर्दन अलग कर दूंगा।
अरे बाप रे! बेटा! बांके जो मिलता है चुपचाप ले ले। यहां तो गर्दन भी धड़ से अलग होती दिखाई पड़ रही है।
सरदार! मुझे आपकी बात मंजूर है।
तो ठीक है। राजकोष लूटने के बाद तुम्हारा हिस्सा नगर के बाहर शिव के पुराने मंदिर में पहुंचा देंगे।
राजकोष की सुरक्षा के बारे में बांकेलाल से सारी बातें पूछकर सुलतानसिंह ने उसे फिर विशालगढ़ पहुंचा दिया।
सुलतानसिंह की बताई गई योजना के अनुसार अगली रात बांकेलाल ने महल में लगी घंटियों की रस्सियों को काट दिया–
यह रस्सी भी कट गई! अब न रहेगी रस्सी और न बजेगी घंटी! सेना को राजकोष के लुटने का भी पता नहीं चलेगा।
हे भगवान! यदि सुलतानसिंह राजकोष लूटने में सफल हो गया तो मैं अपने हिस्से में से तेरे मंदिर में चांदी का दीपक जलाऊंगा।
रात के दूसरे पहर ही सुलतानसिंह ने राजमहल पर चुपचाप आक्रमण कर दिया। राजमहल के दरवाजे पर खड़े सैनिकों को मारकर सुलतानसिंह ने भीतर प्रवेश किया–
ओह! डाकू आ गए। तुरन्त खतरे की घंटियां बजाओ।
अरे, यह घंटियां तो बजती ही नहीं! रस्सियां कटी हुई हैं।
आह!
और फिर कुछ ही देर में सुलतानसिंह अपने साथियों के साथ तालाब के किनारे पहुंच गया–
सरदार! अब इस तालाब को कैसे पार करेंगे? इस तालाब में तो भयंकर मगरमच्छ तैर रहे हैं।
ठहरो लाखनसिंह! बांकेलाल ने हमें किसी 'कील' को घुमाने के लिए कहा था। हां, याद आया...

...ओह! यह रही वे कीलें! हां, यही है वह कील जिसे घुमाने से यहां पुल बन जायेगा।
और फिर सुलतानसिंह के कील घुमाते ही तालाब पर एक पुल बन गया–
पुल द्वारा तालाब को पार कर सुलतानसिंह विशाल कक्ष के सामने पहुंचा। पलक झपकते ही डाकुओं ने द्वार पर खड़े सैनिकों को मार कर विशाल कक्ष का द्वार खोल दिया। अभी कुछ डाकुओं ने भीतर प्रवेश किया था कि–
ठहरो साथियो! आगे मत बढ़ो यह दरवाजा नहीं, मौत का कुआं है।
आह! मैं जल गया!
आह... बचाओ...
??
??
तभी सुलतानसिंह ने कुछ सोचा–
यहां पर बांकेलाल ने कोई चीज घुमाने के लिए कहा था! हां, वह रही कल! मैं उसे अभी घुमाता हूं!
और यह सोचकर सुलतानसिंह उस 'कल' की ओर बढ़ा–
बांकेलाल द्वारा बताई 'कल' को घुमाकर सुलतानसिंह ने तिलिस्मी आग को बंद कर दिया–
साथियो! अब तुम सब निडर होकर अंदर जा सकते हो।

फिर तो सभी डाकू राजकोष पर टूट पड़े-
साथियो! सारा राजकोष उठा लो। जल्दी उठाओ।
इतनी सारी स्वर्ण-मुद्राएं!
इतने हीरे-जवाहरात मैंने अपने जीवन में कभी नहीं देखे।
मैं तो बस हीरे-हीरे उठाऊंगा।
और फिर सारा राजकोष लेकर सुलतानसिंह वहां से निकल गया।
और जब राजा विक्रमसिंह को कुछ सैनिकों ने राजकोष लूट लिए जाने की सूचना दी-
नहीं, ऐसा नहीं हो सकता! यदि डाकुओं ने हमला किया था तो घंटियां क्यों नहीं बजाई गईं?
महाराज! हमने घंटियां बजाने की बहुत कोशिश की लेकिन...
...लेकिन लगता था किसी ने पहले से ही घंटियों की रस्सियां काट रखी थीं।
घंटियों की रस्सियां काट दी थीं! लेकिन किसने? महामंत्री! तुम उस नमक हराम का पता करो। हम उसे फांसी की सजा देंगे।
महाराज! घंटियों की रस्सियां काटने वाला अवश्य कोई महल का आदमी होगा...
फांसी! बाप रे! मुझे अभी खिसक-कर शिव के पुराने मंदिर में पहुंचना चाहिए। अगर राजा को पता चल गया तो?

और तभी राजा विक्रमसिंह ने सेनापति से कहा–
सेनापति! तुरन्त सेना को आदेश दो कि वे डाकुओं का पीछा करें। देश विदेश का कोना-कोना छान मारो। मुझे सुलतानसिंह जिन्दा या मुर्दा चाहिये।
महाराज! मैं पहले ही उन डाकुओं की तलाश में सेना भेज चुका हूं!
राजा विक्रमसिंह को सेनापति से बातें करते देख बांकेलाल खिसकने लगा था, लेकिन तभी–
बांकेलाल! तुम ऐसे चुपके से कहां जा रहे हो?
मारे गए!
म... महाराज! मैं अपने तरीके से उन डाकुओं को पकड़ने जा रहा हूं।
शाबाश! बांकेलाल, हमें तुमसे यही आशा थी।
??
बांकेलाल जल्दी-जल्दी वहां से चल दिया–
बच गए! नहीं तो राजा अभी पकड़ लेता। चलो बेटा! बांकेलाल, भाग लो यहां से सिर पर पांव रखकर।
और उधर विशालगढ़ के बाहर पुराने शिव मंदिर में–
साथियो! आज की लूट के माल के तीन हिस्से मैं लेता हूं। और एक चौथाई हिस्से को तुम सब आपस में बांट लो। बांकेलाल को कुछ नहीं मिलेगा। मैं उसे आते ही कत्ल कर दूंगा।
??
??
ठहरो सरदार! इस बार लूट के माल में सब को बराबर हिस्सा देना होगा।

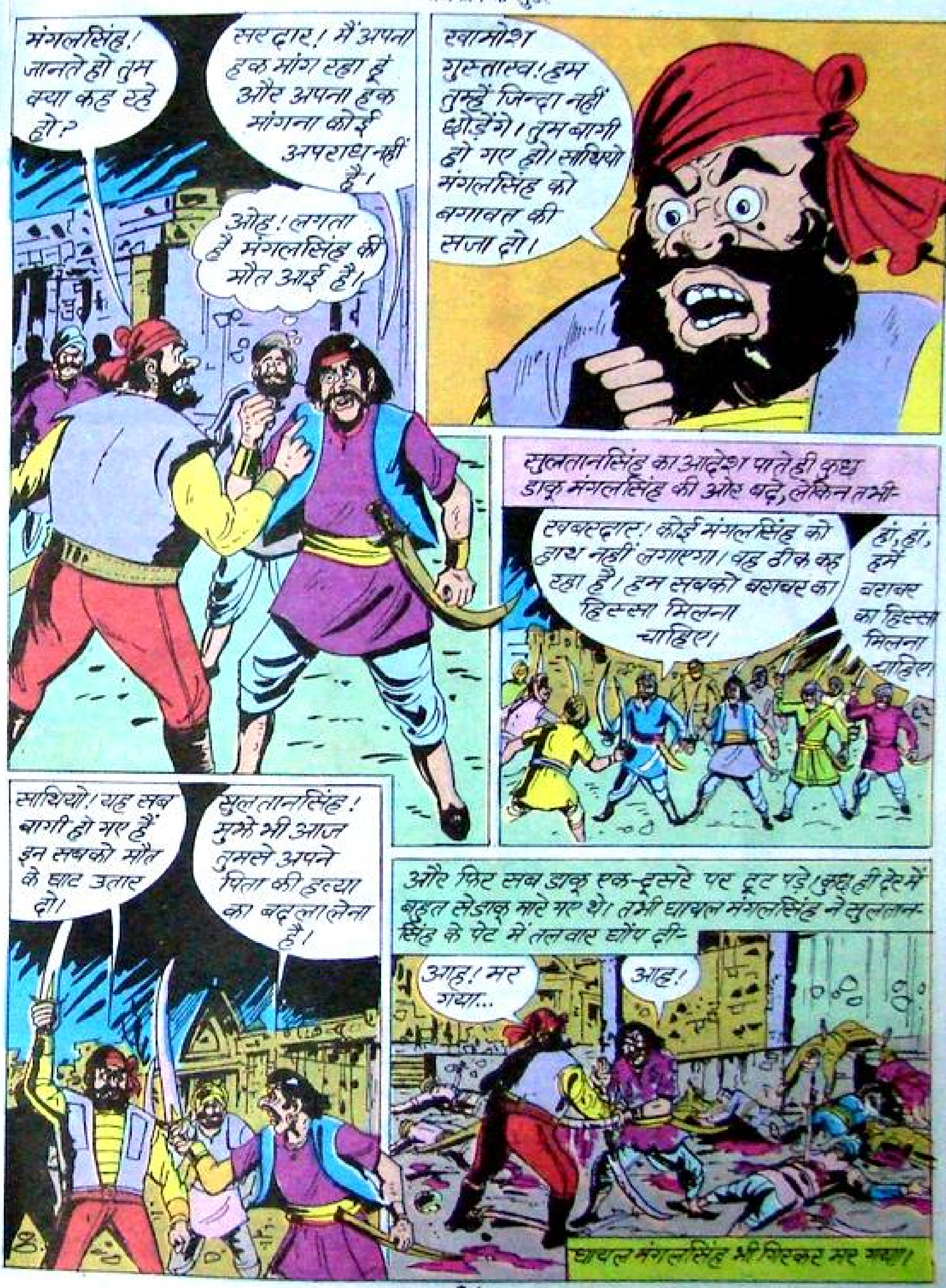

मंगलसिंह! जानते हो तुम क्या कह रहे हो?
सरदार! मैं अपना हक मांग रहा हूं और अपना हक मांगना कोई अपराध नहीं है।
ओह! लगता है मंगलसिंह की मौत आई है!
खामोश गुस्ताख! हम तुम्हें जिन्दा नहीं छोड़ेंगे। तुम बागी हो गए हो। साथियो मंगलसिंह को बगावत की सजा दो।
सुल्तानसिंह का आदेश पाते ही कुछ डाकू मंगलसिंह की ओर बढ़े, लेकिन तभी-
खबरदार! कोई मंगलसिंह को हाथ नहीं लगाएगा। वह ठीक कह रहा है। हम सबको बराबर का हिस्सा मिलना चाहिए।
हां, हां, हमें बराबर का हिस्सा मिलना चाहिए
साथियो! यह सब बागी हो गए हैं इन सबको मौत के घाट उतार दो।
सुलतानसिंह! मुझे भी आज तुमसे अपने पिता की हत्या का बदला लेना है।
और फिर सब डाकू एक-दूसरे पर टूट पड़े। कुछ ही देर में बहुत से डाकू मारे गए थे। तभी घायल मंगलसिंह ने सुलतान-सिंह के पेट में तलवार घोंप दी-
आह! मर गया...
आह!
घायल मंगलसिंह भी गिरकर मर गया।

जब बांकेलाल यहां पहुंचा तो लगभग सभी डाकू लड़कर मर चुके थे। कुछ घायल डाकू तड़प रहे थे-
अरे वाह! ऊपर वाले। आज तो तूने पूरा छप्पर फाड़कर ही खजाना दे दिया।
आह!
पानी!
बांकेलाल मेरे पेट से यह तलवार निकाल दो। आह!
लेकिन जैसे ही बांकेलाल ने सुलतान सिंह के पेट से तलवार खींची तभी-
महाराज! वह रहे अपने बांकेलाल जी! शायद उन्होंने अकेले ही सारे डाकुओं को मार डाला है।
आह। मर गया...
बांकेलाल! तुम बहुत बहादुर हो हम तुम्हें बहुत इनाम देंगे। तुमने सारा राजकोष बचाकर हमें अपमानित होने से बचा लिया!
और फिर मारे गए बेटा बांकेलाल! अगर यह सब थोड़ी देर न आते तो आज सारा राजकोष तेरा ही होता। आज तो इन्होंने योजना की नहीं तेरी ही टांग तोड़ दी।
जब बांकेलाल राजा विक्रमसिंह के साथ वापस लौटा तो नगर के लोग उसकी जय-जयकार कर रहे थे लेकिन बांकेलाल कुछ और ही सोच रहा था-
बांकेलाल की... जय हो... बांकेलाल... अमर रहें!
मेरा बेड़ा गर्क हो गया, और यह सब मेरी जय बोल रहे हैं। हाय! सारा राजकोष मुझे मिल गया होता तो मैं भी राजा बन गया होता।
जितेंद्र बेदी

•समाप्त•

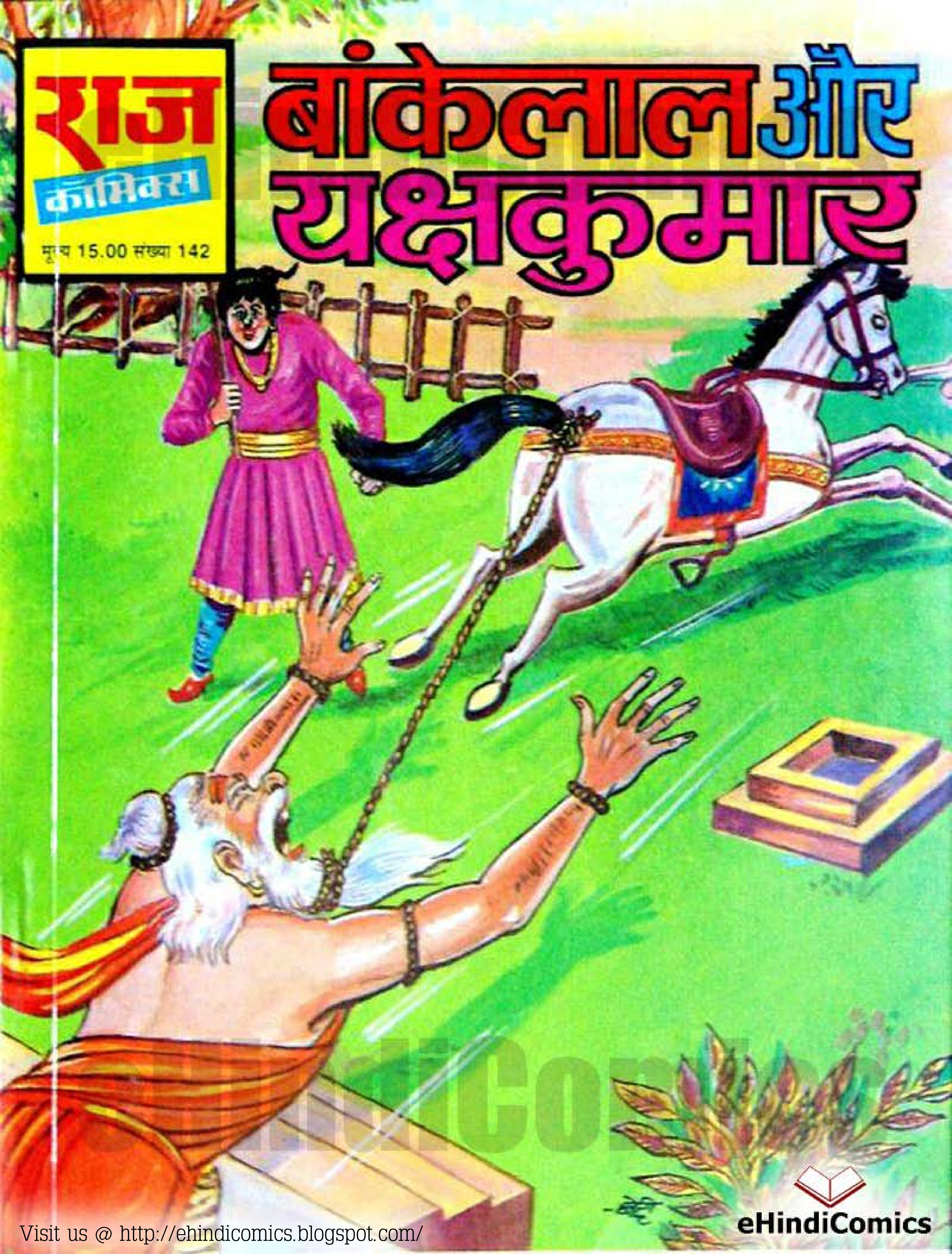

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

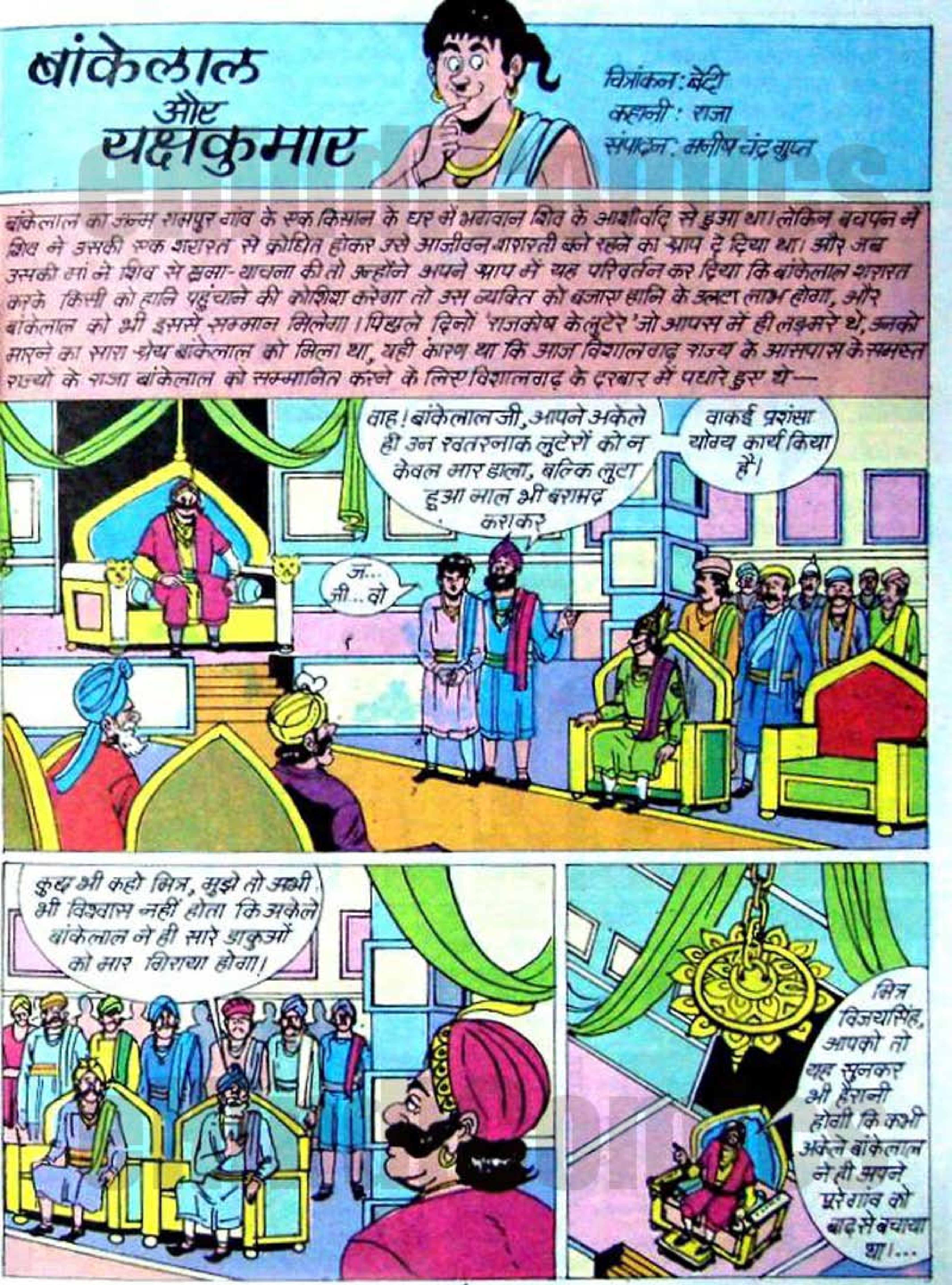

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

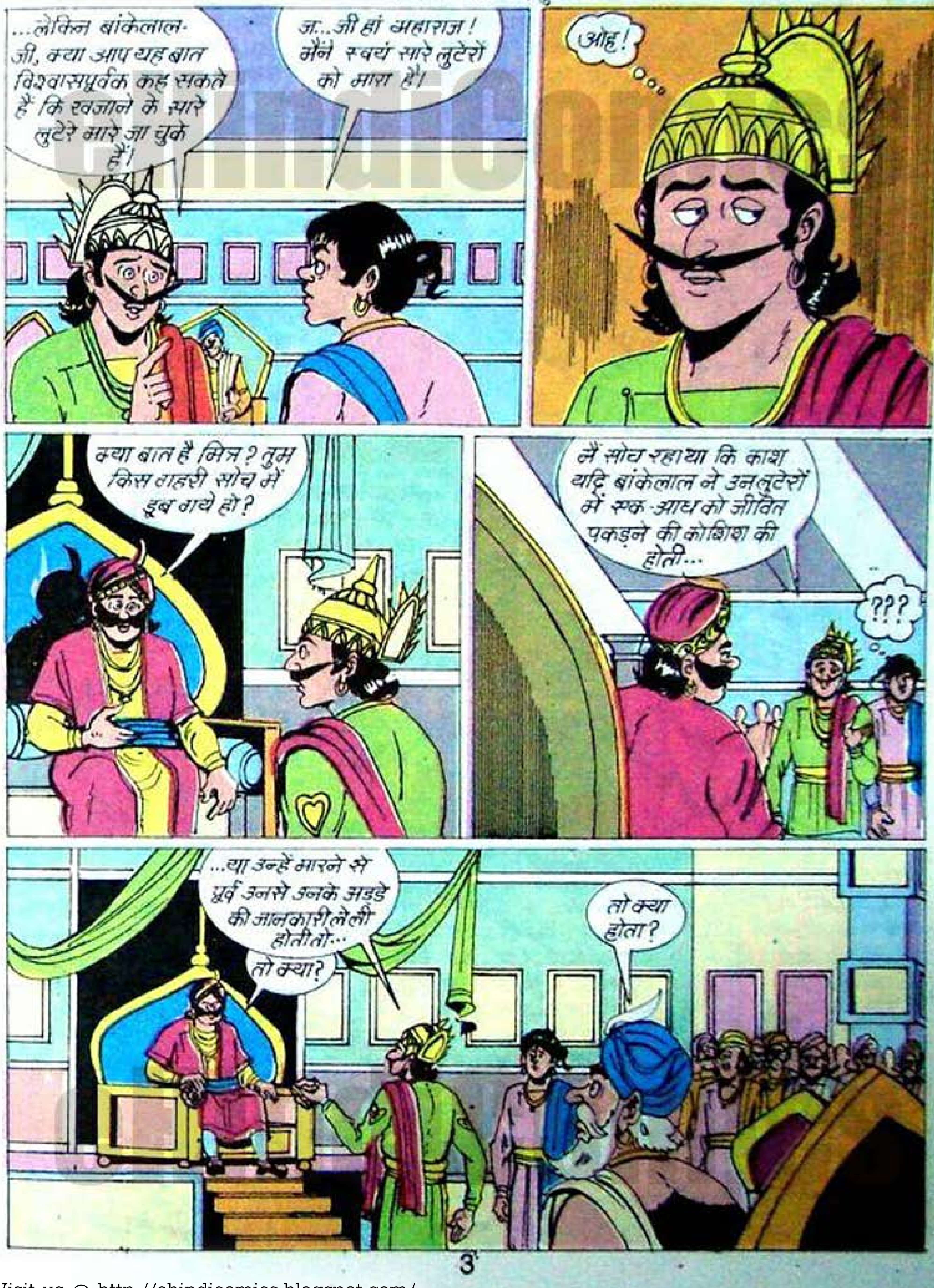

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

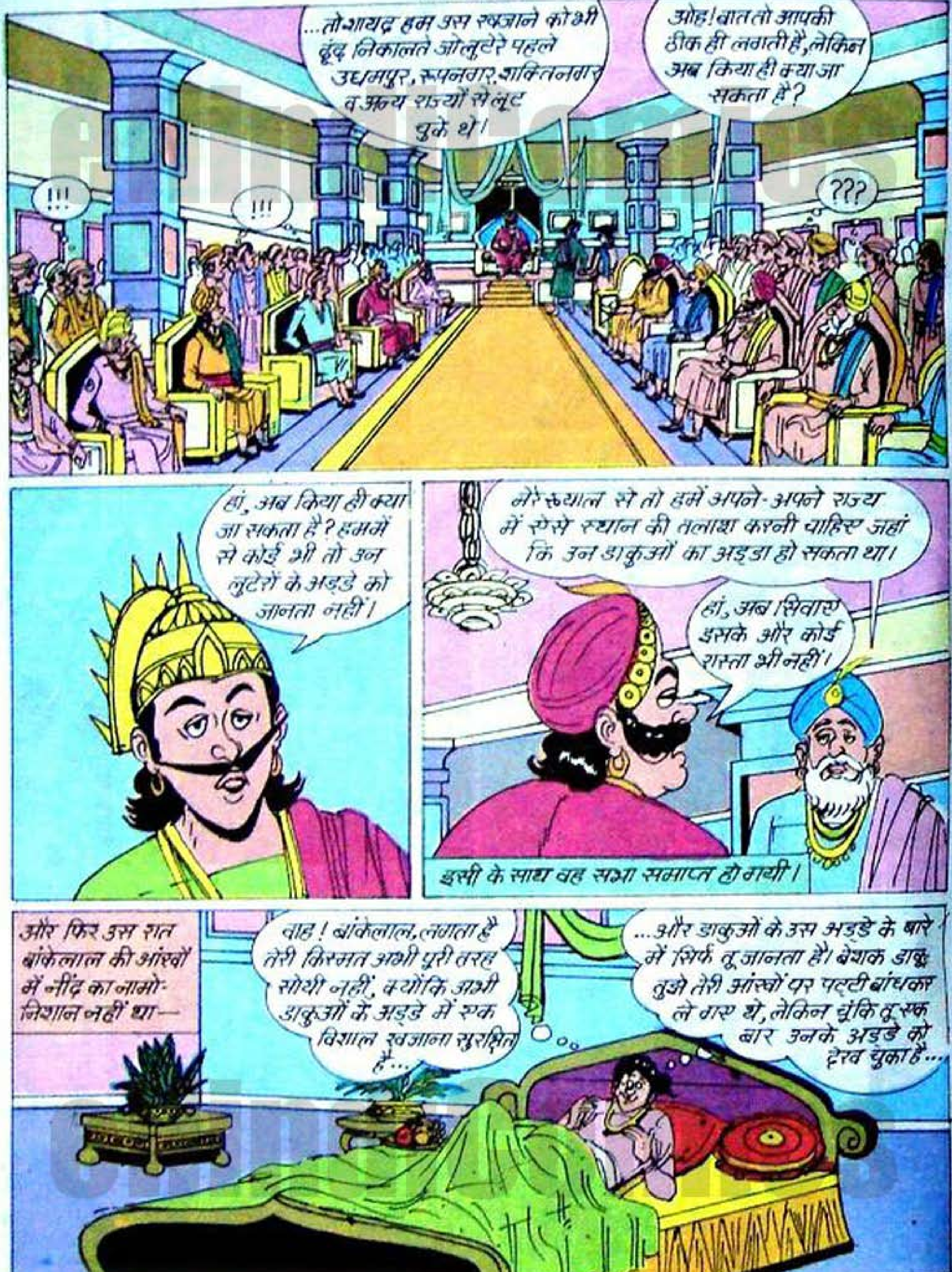

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

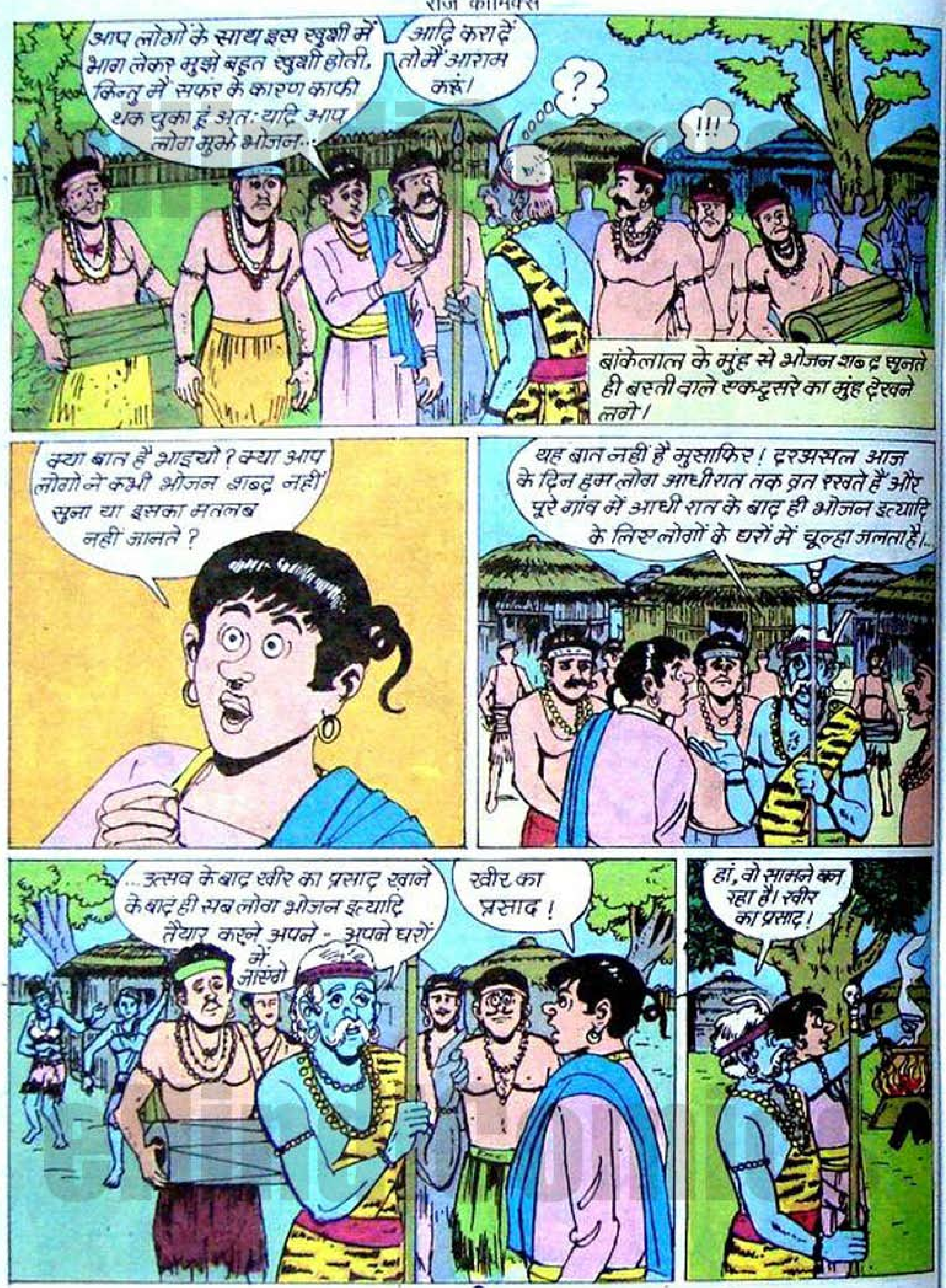

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

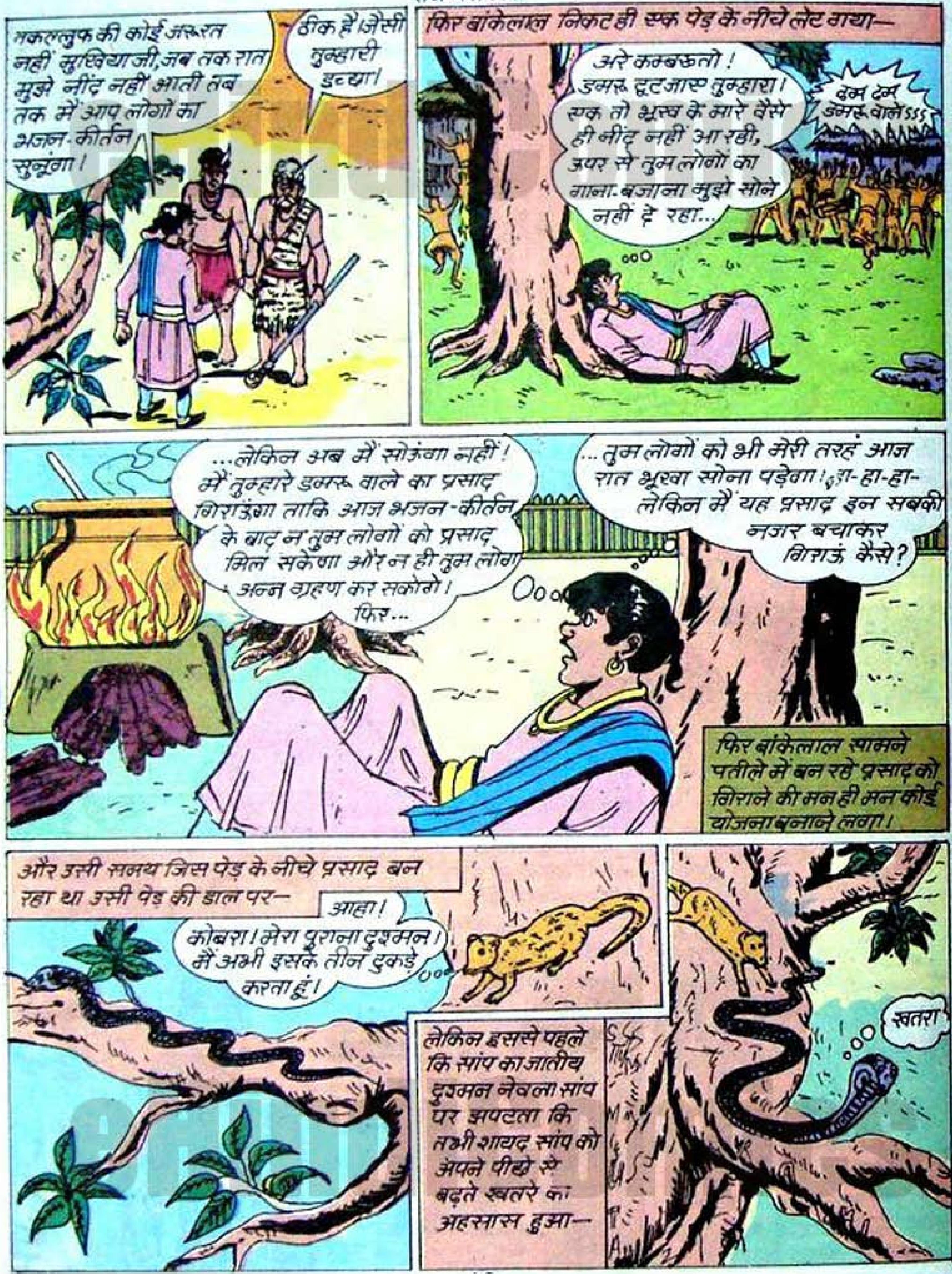

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

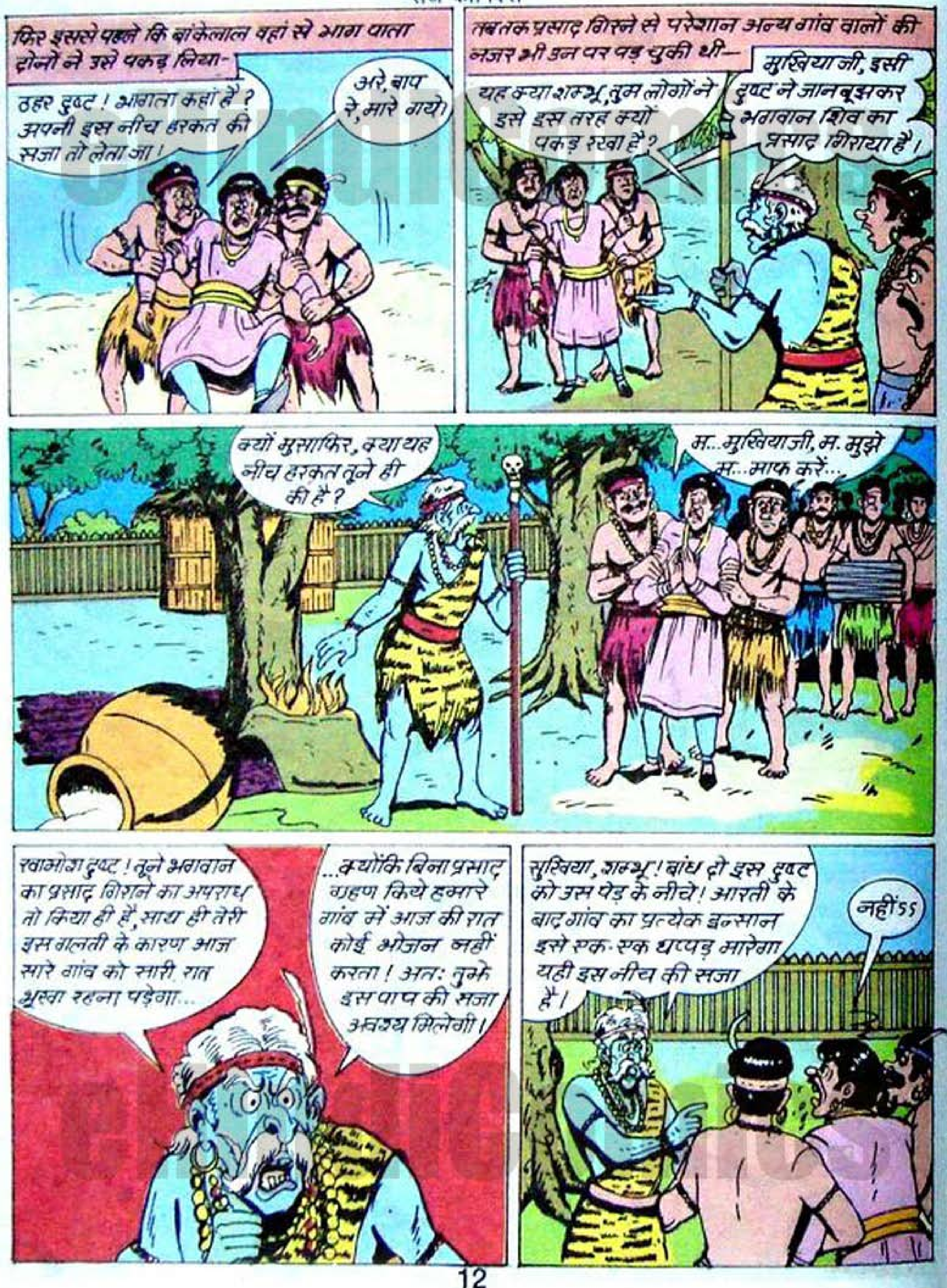

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

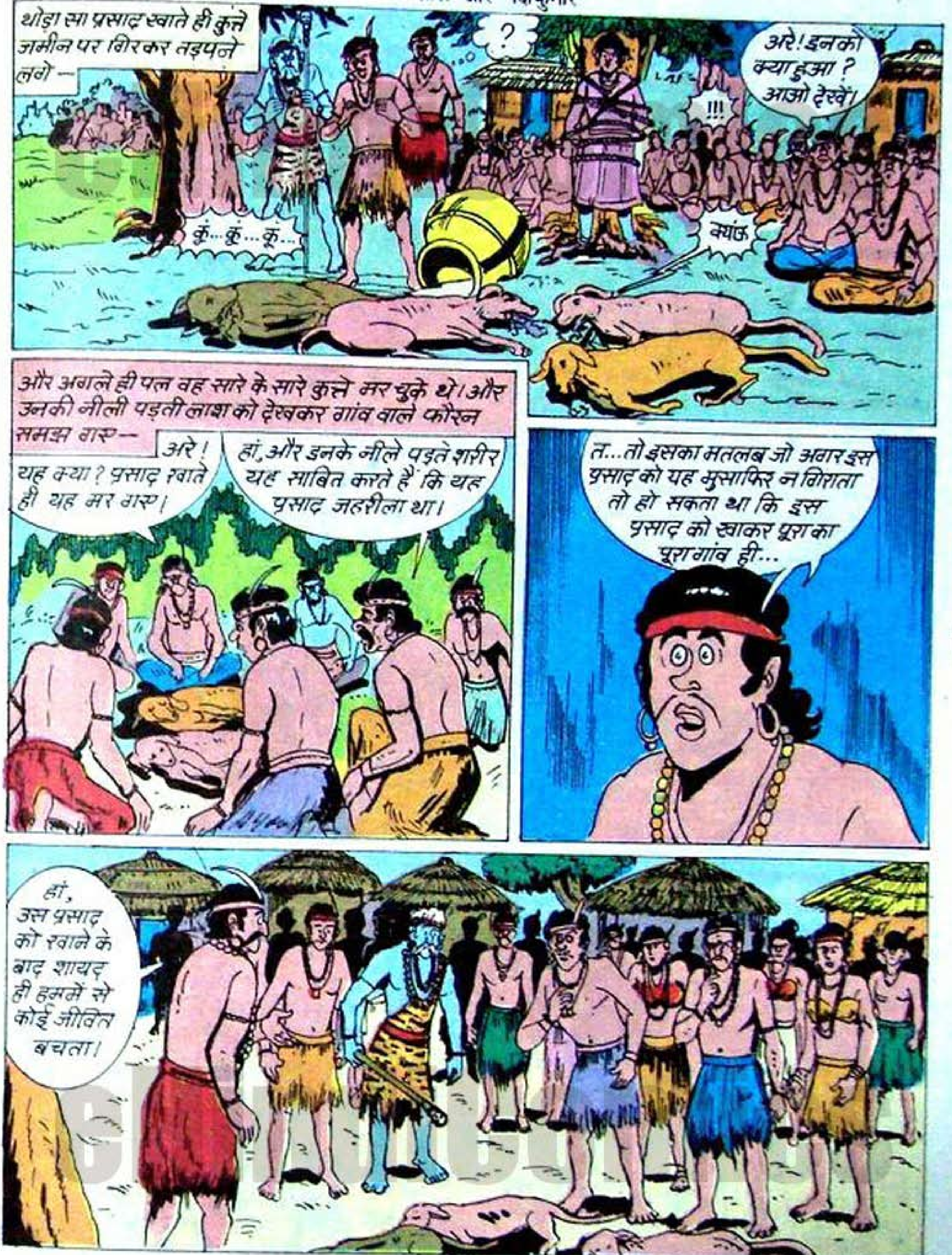

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

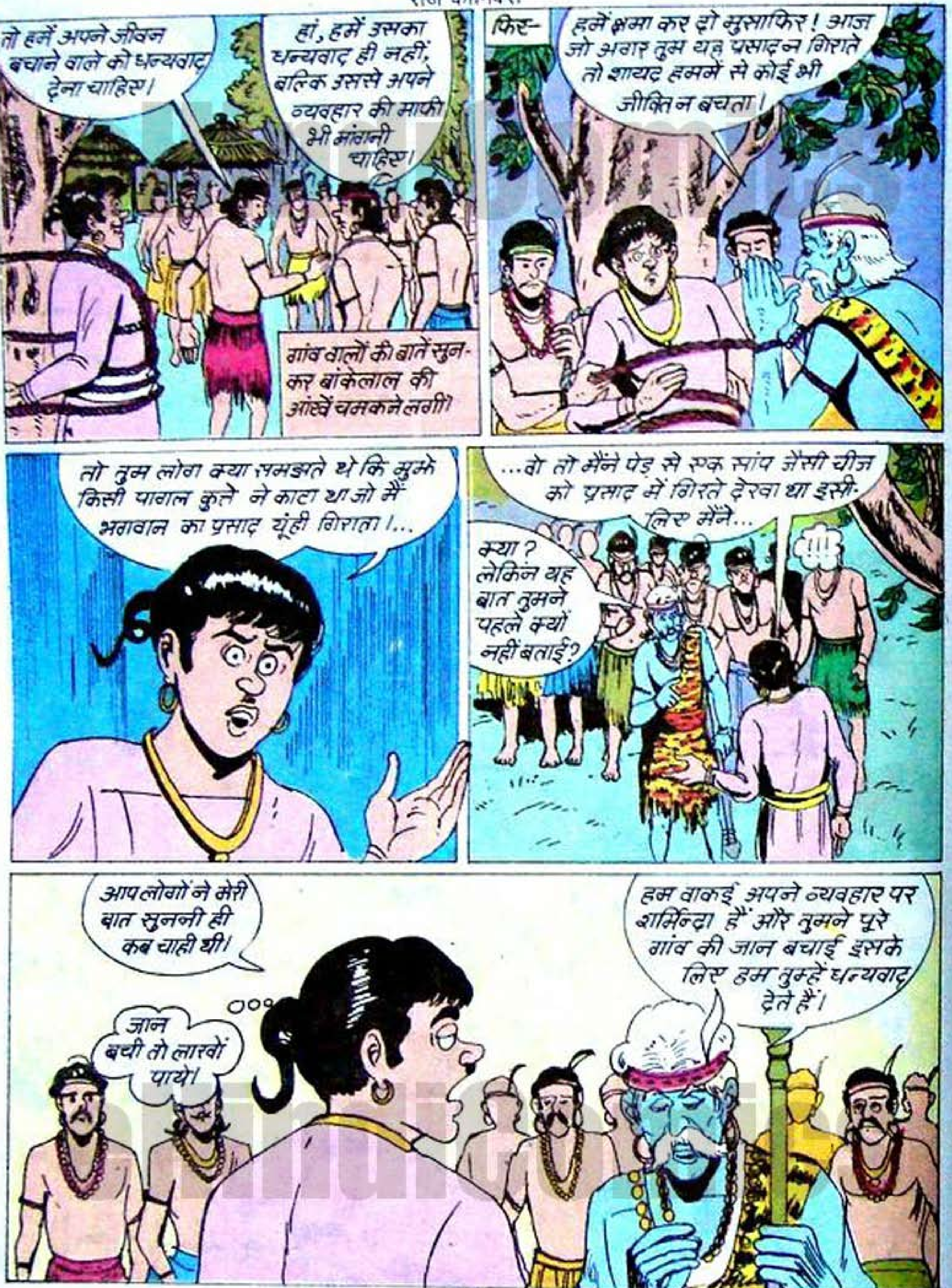

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

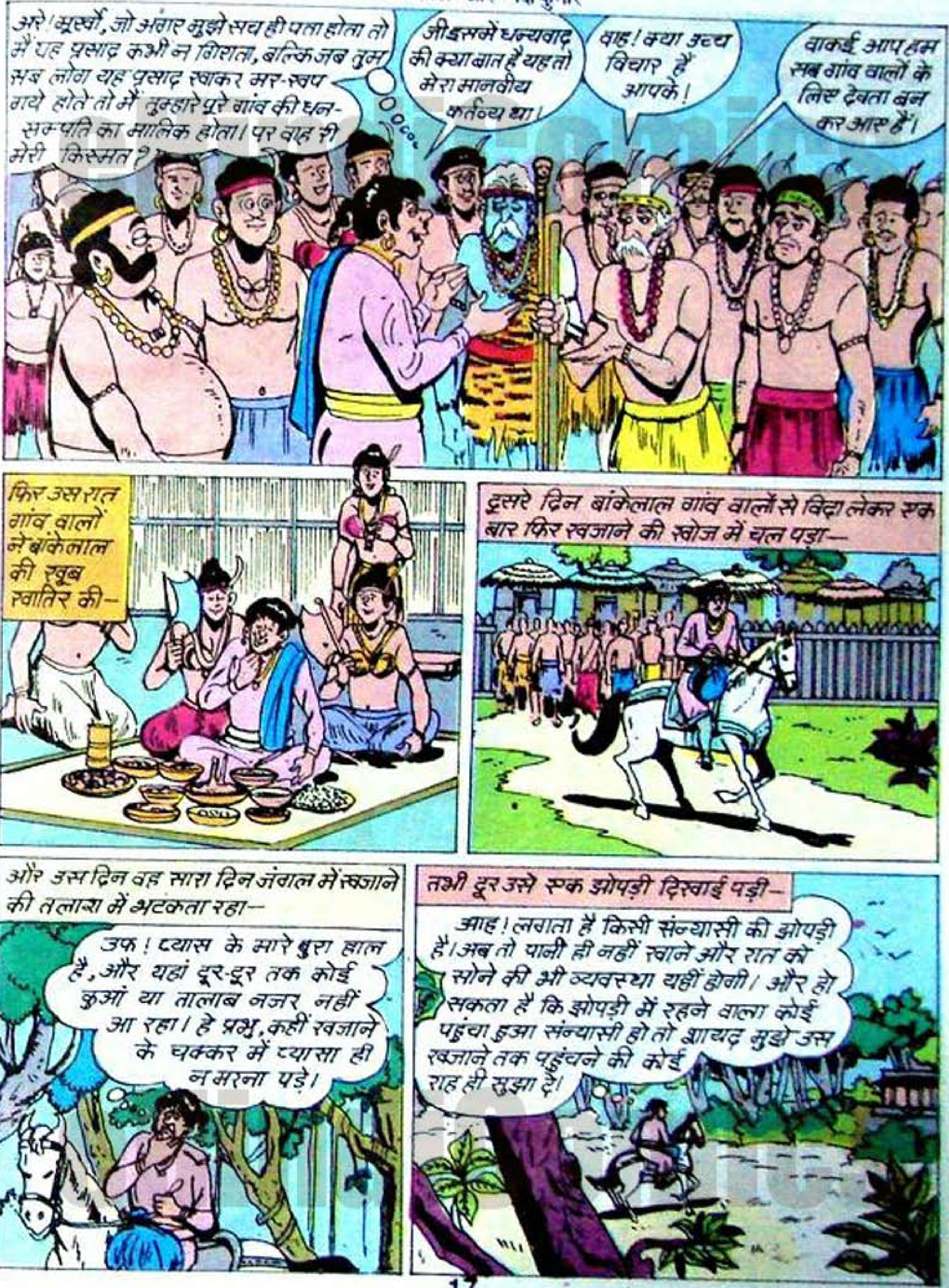

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

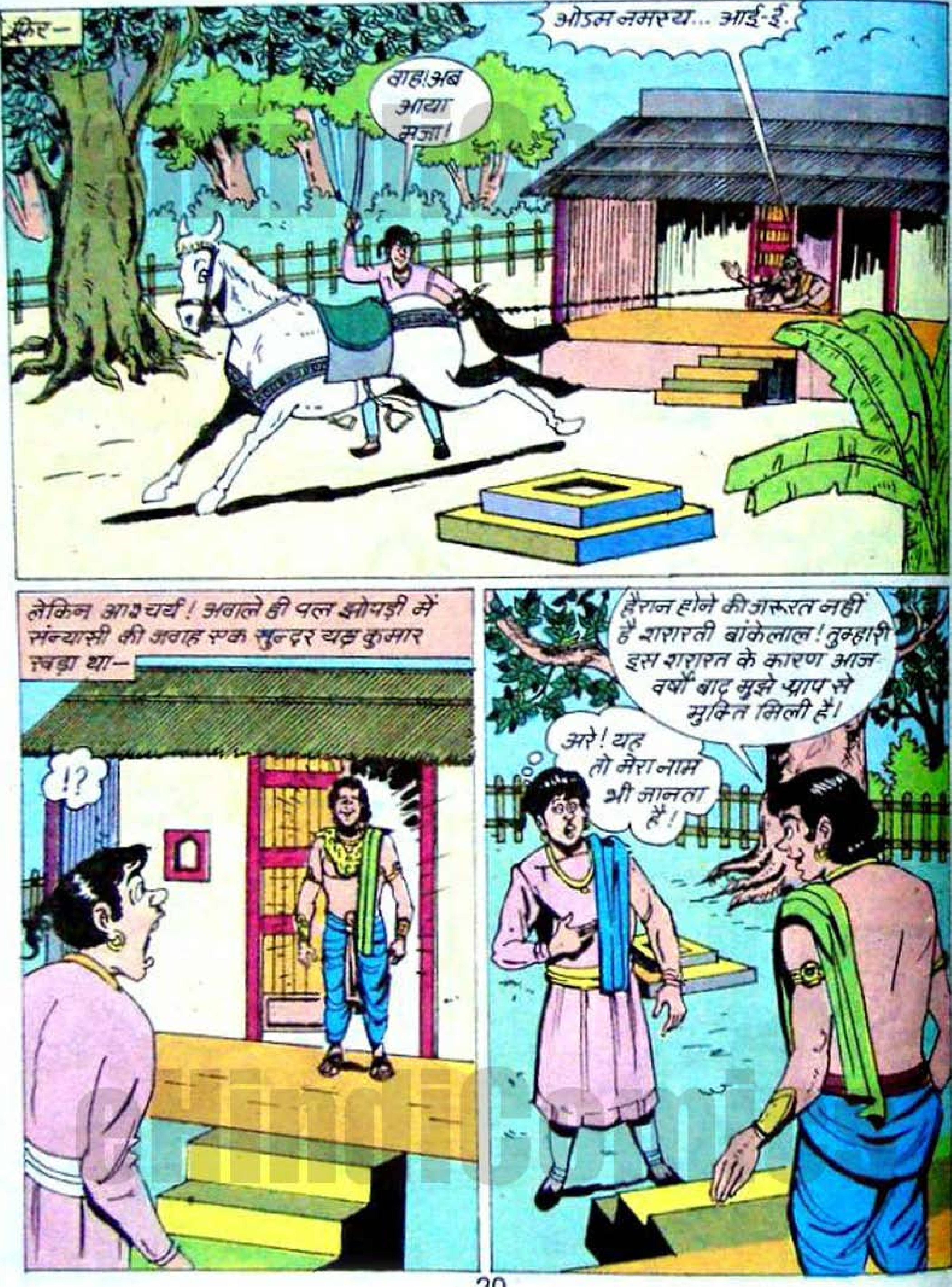

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

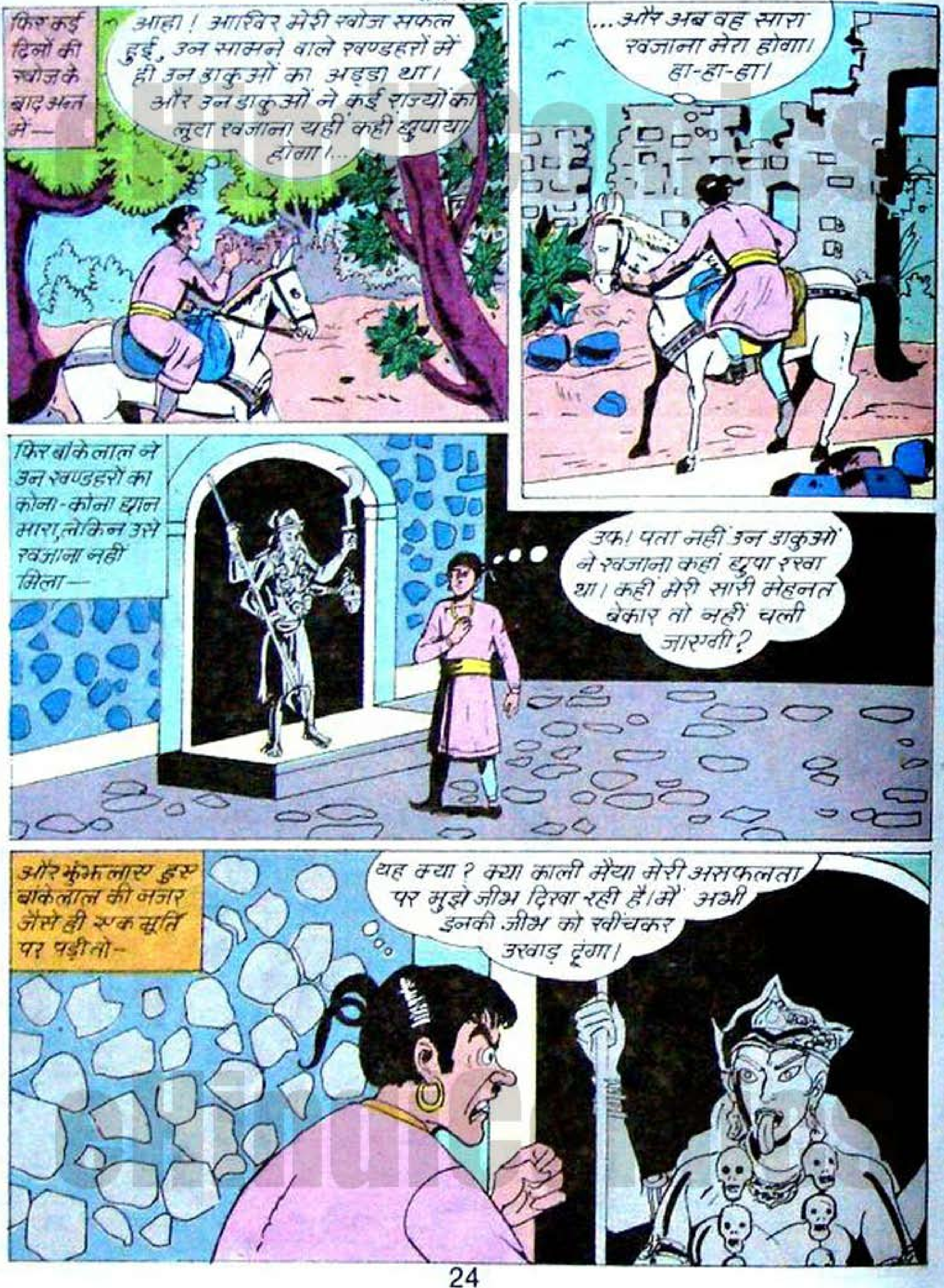

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

फिर विशाल गढ़ राज्य की सीमा के अन्दर पहुंचकर बांकेलाल ने जैसे ही बैलगाड़ी को अपने गांव की ओर मोड़ना चाहा तो बैल रूपी यक्षकुमार अचानक ही नगर की ओर मुड़कर भागने लगा—
अ...रे...रे यह क्या यक्षकुमार... तुम किधर जा रहे हो?
जहां मुझे जाना चाहिए बांकेलाल!
क्या मतलब? कहीं तुम पागल तो नहीं हो गये।
तुम शायद ठीक समझ रहे हो। मैं वाकई पागल हो चुका हूं।
कुछ देर बाद—
अरे! इस बैलगाड़ी को रोको वर्ना यह भरे दरबार में पहुंच जाएगी और फिर महाराज हमें कठोर दण्ड देंगे।
?
!?
लेकिन इससे पहले कि पहरेदार बैलगाड़ी को रोक पाते बैलगाड़ी राजा विक्रमसिंह के लगे हुए दरबार में पहुंच गयी—
अरे! बांकेलाल तुम? यह सब क्या है?
मारे गये!

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

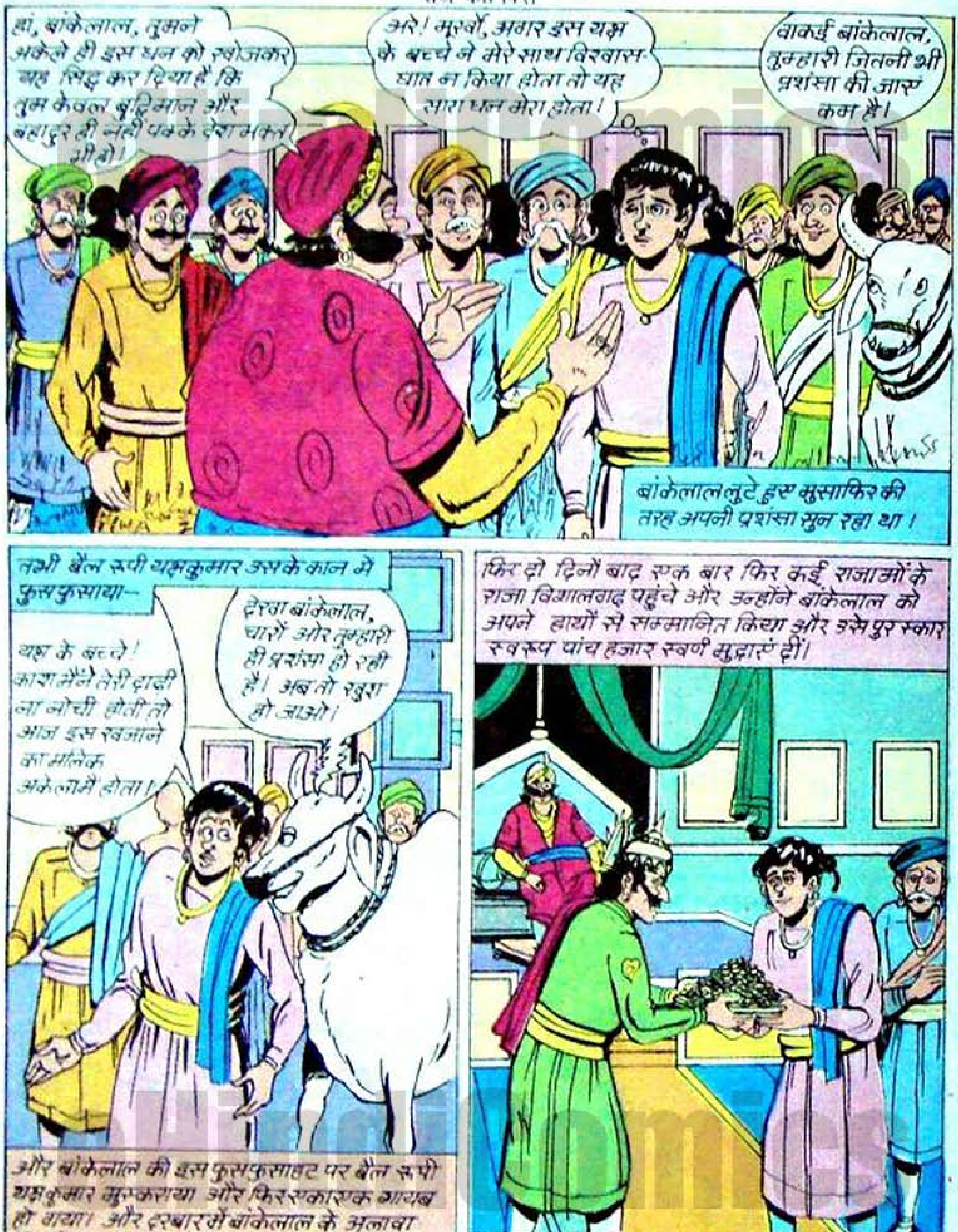

समाप्त

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

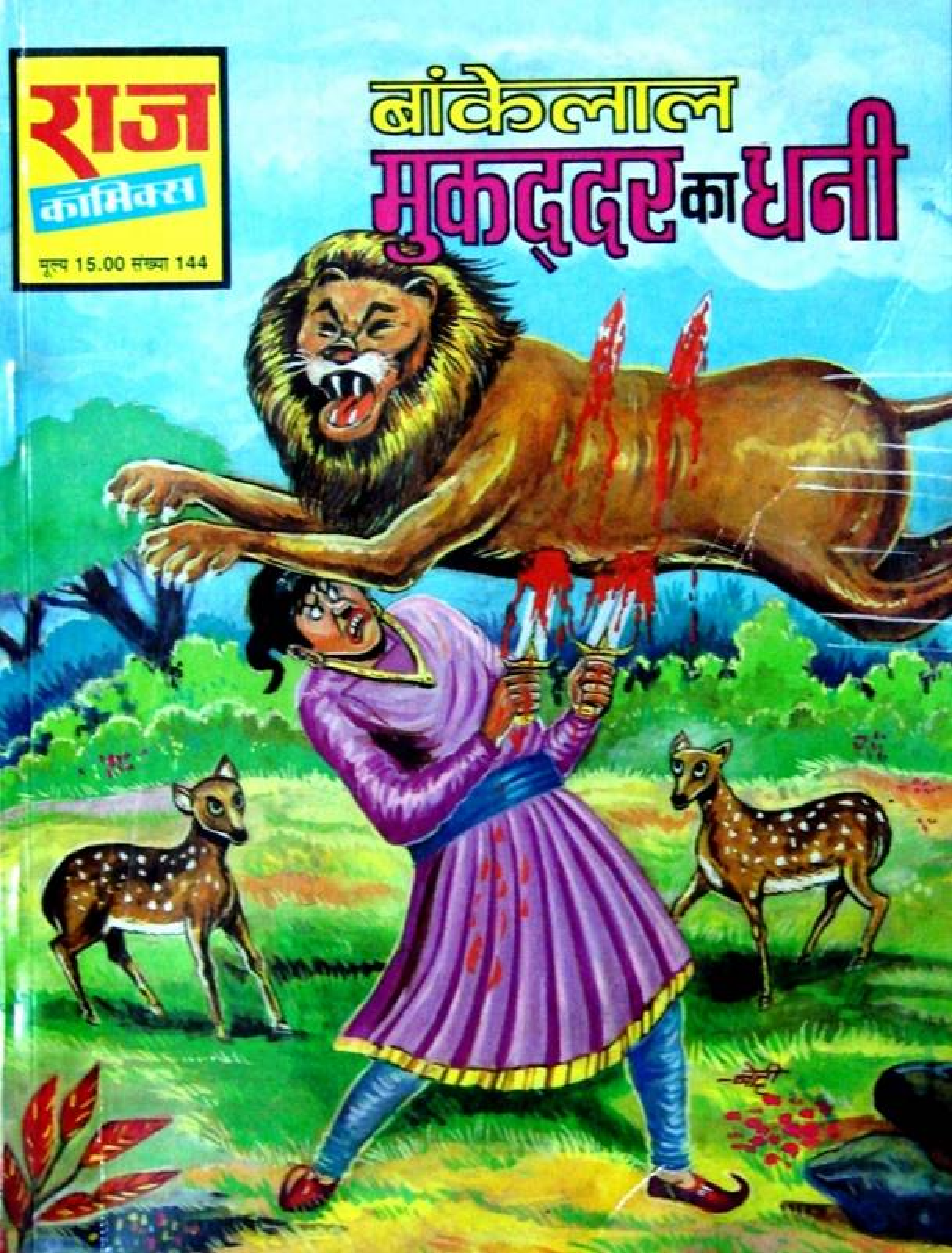
राज
कॉमिक्स
मूल्य 15.00 संख्या 144
बांकेलाल
मुकद्दर का धनी

मुकद्दर का धनी

चित्रांकन: बेदी
कहानी : राजा
सम्पादक: मनीषचंद्र गुप्त

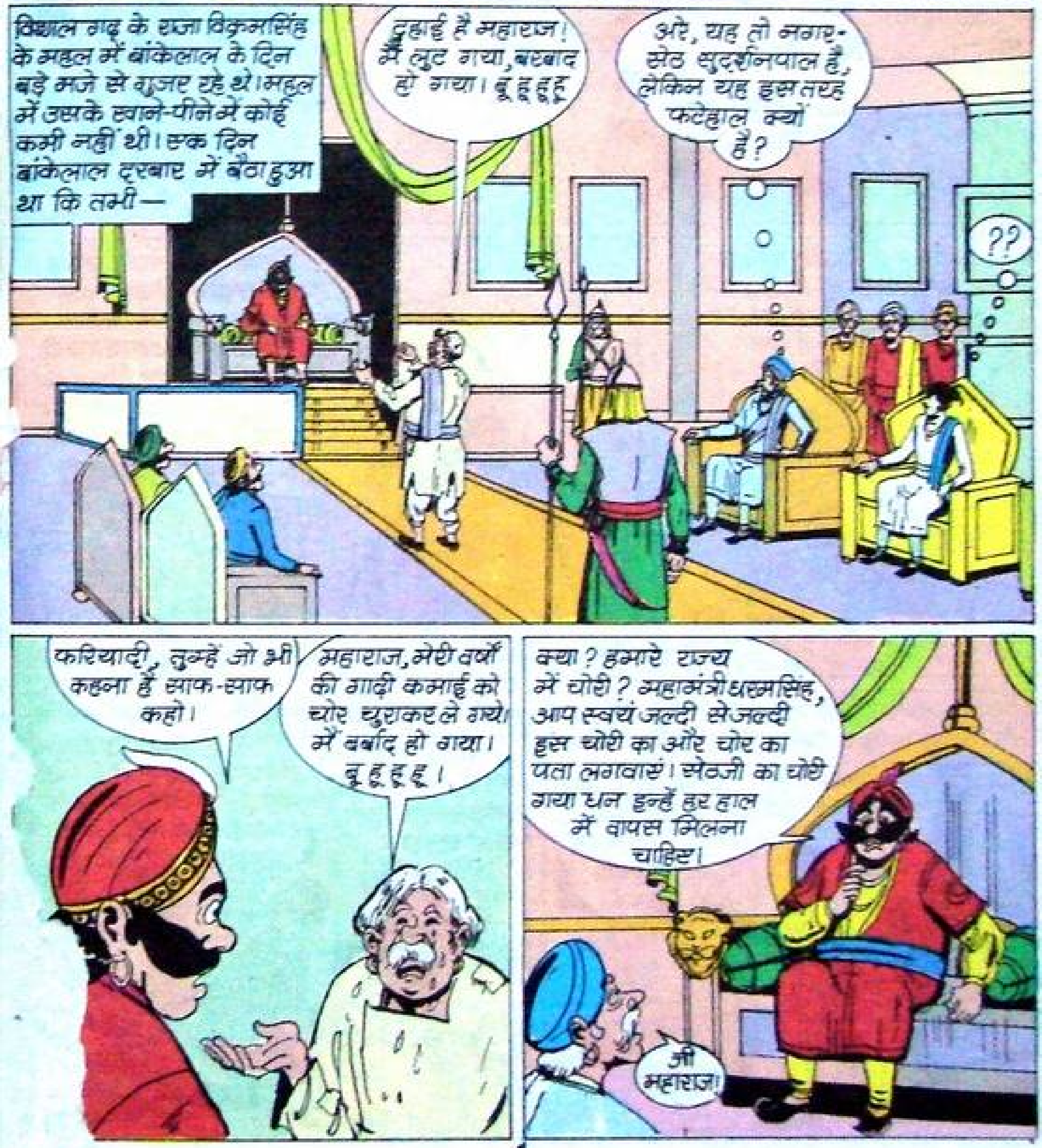

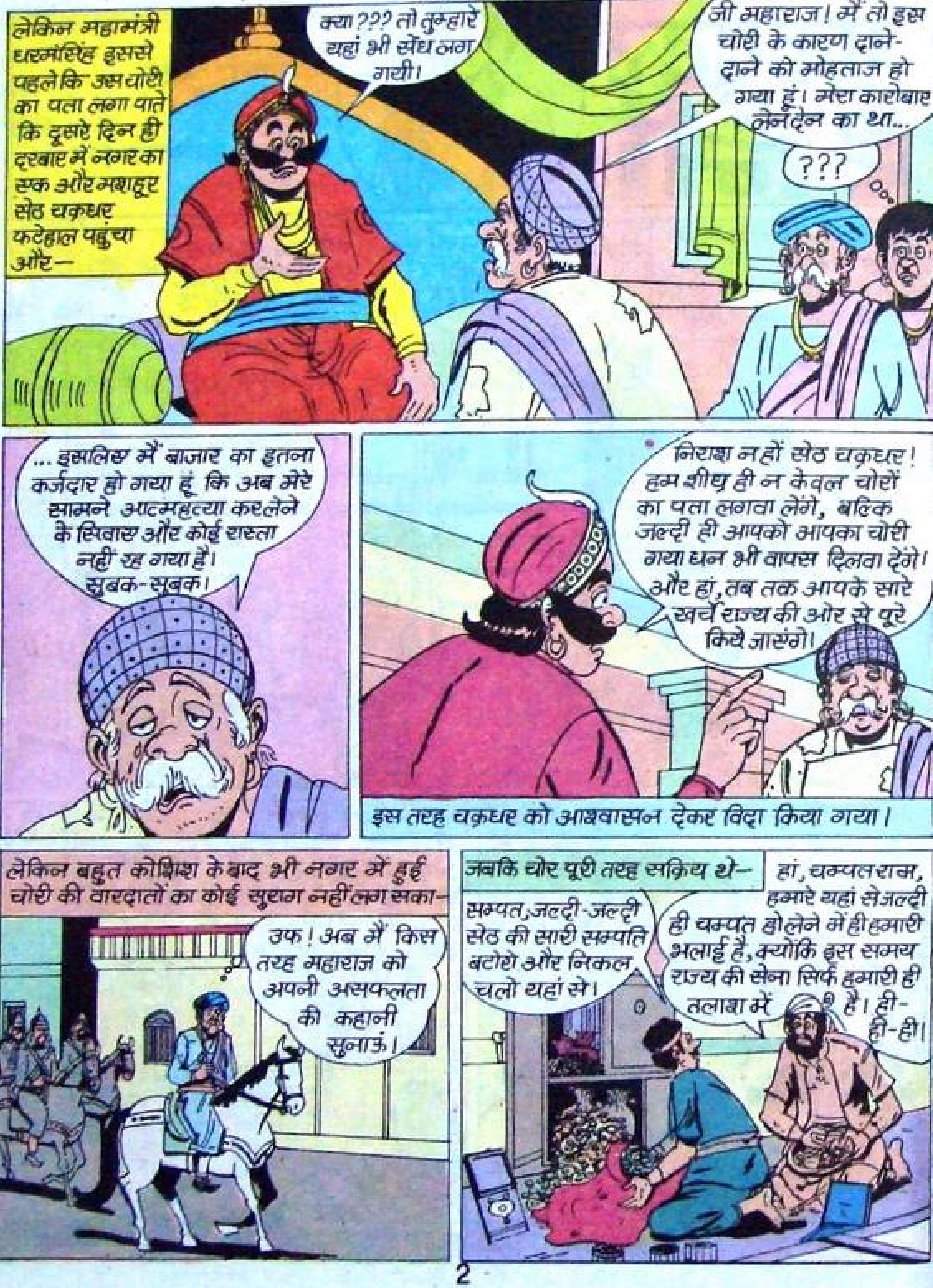
लेकिन महामंत्री धर्मसिंह इससे पहले कि उस चोरी का पता लगा पाते कि दूसरे दिन ही दरबार में नगर का एक और मशहूर सेठ चक्रधर फटेहाल पहुंचा और—
क्या??? तो तुम्हारे यहां भी सेंध लग गयी।
जी महाराज! मैं तो इस चोरी के कारण दाने-दाने को मोहताज हो गया हूं। मेरा कारोबार लेन-देन का था...
???
...इसलिए मैं बाजार का इतना कर्जदार हो गया हूं कि अब मेरे सामने आत्महत्या करलेने के सिवाए और कोई रास्ता नहीं रह गया है। सुबक-सुबक।
निराश न हों सेठ चक्रधर! हम शीघ्र ही न केवल चोरों का पता लगवा लेंगे, बल्कि जल्दी ही आपको आपका चोरी गया धन भी वापस दिलवा देंगे। और हां, तब तक आपके सारे खर्चे राज्य की ओर से पूरे किये जाएंगे।
इस तरह चक्रधर को आश्वासन देकर विदा किया गया।
लेकिन बहुत कोशिश के बाद भी नगर में हुई चोरी की वारदातों का कोई सुराग नहीं लग सका—
उफ! अब मैं किस तरह महाराज को अपनी असफलता की कहानी सुनाऊं।
जबकि चोर पूरी तरह सक्रिय थे—
सम्पत, जल्दी-जल्दी सेठ की सारी सम्पत्ति बटोरो और निकल चलो यहां से।
हां, चम्पलराम, हमारे यहां से जल्दी ही चम्पत हो लेने में ही हमारी भलाई है, क्योंकि इस समय राज्य की सेना सिर्फ हमारी ही तलाश में है। ही-ही-ही।

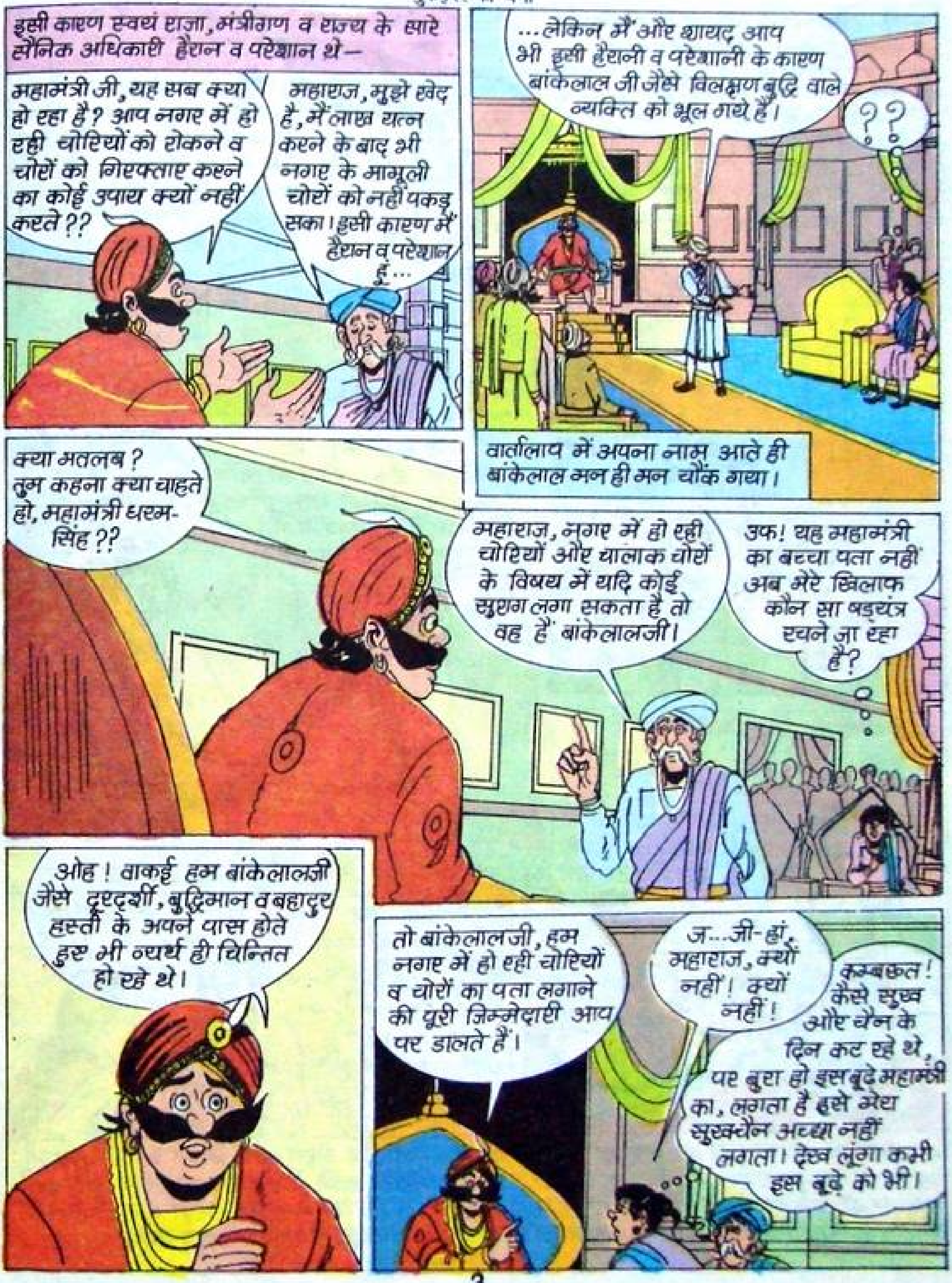
इसी कारण स्वयं राजा, मंत्रीगण व राज्य के सारे सैनिक अधिकारी हैरान व परेशान थे—
महामंत्री जी, यह सब क्या हो रहा है? आप नगर में हो रही चोरियों को रोकने व चोरों को गिरफ्तार करने का कोई उपाय क्यों नहीं करते??
महाराज, मुझे खेद है, मैं लाख यत्न करने के बाद भी नगर के मामूली चोरों को नहीं पकड़ सका। इसी कारण मैं हैरान व परेशान हूं...
...लेकिन मैं और शायद आप भी इसी हैरानी व परेशानी के कारण बांकेलाल जी जैसे विलक्षण बुद्धि वाले व्यक्ति को भूल गये हैं।
??
वार्तालाप में अपना नाम आते ही बांकेलाल मन ही मन चौंक गया।
क्या मतलब? तुम कहना क्या चाहते हो, महामंत्री धरमसिंह??
महाराज, नगर में हो रही चोरियों और चालाक चोरों के विषय में यदि कोई सुराग लगा सकता है तो वह हैं बांकेलालजी।
उफ! यह महामंत्री का बच्चा पता नहीं अब मेरे खिलाफ कौन सा षड्यंत्र रचने जा रहा है?
ओह! वाकई हम बांकेलालजी जैसे दूरदर्शी, बुद्धिमान व बहादुर हस्ती के अपने पास होते हुए भी व्यर्थ ही चिन्तित हो रहे थे।
तो बांकेलालजी, हम नगर में हो रही चोरियों व चोरों का पता लगाने की पूरी जिम्मेदारी आप पर डालते हैं।
ज...जी-हां, महाराज, क्यों नहीं! क्यों नहीं!
कम्बख्त! कैसे सुख और चैन के दिन कट रहे थे, पर बुरा हो इस बूढ़े महामंत्री का, लगता है इसे मेरा सुख्चैन अच्छा नहीं लगता। देख लूंगा कभी इस बूढ़े को भी।

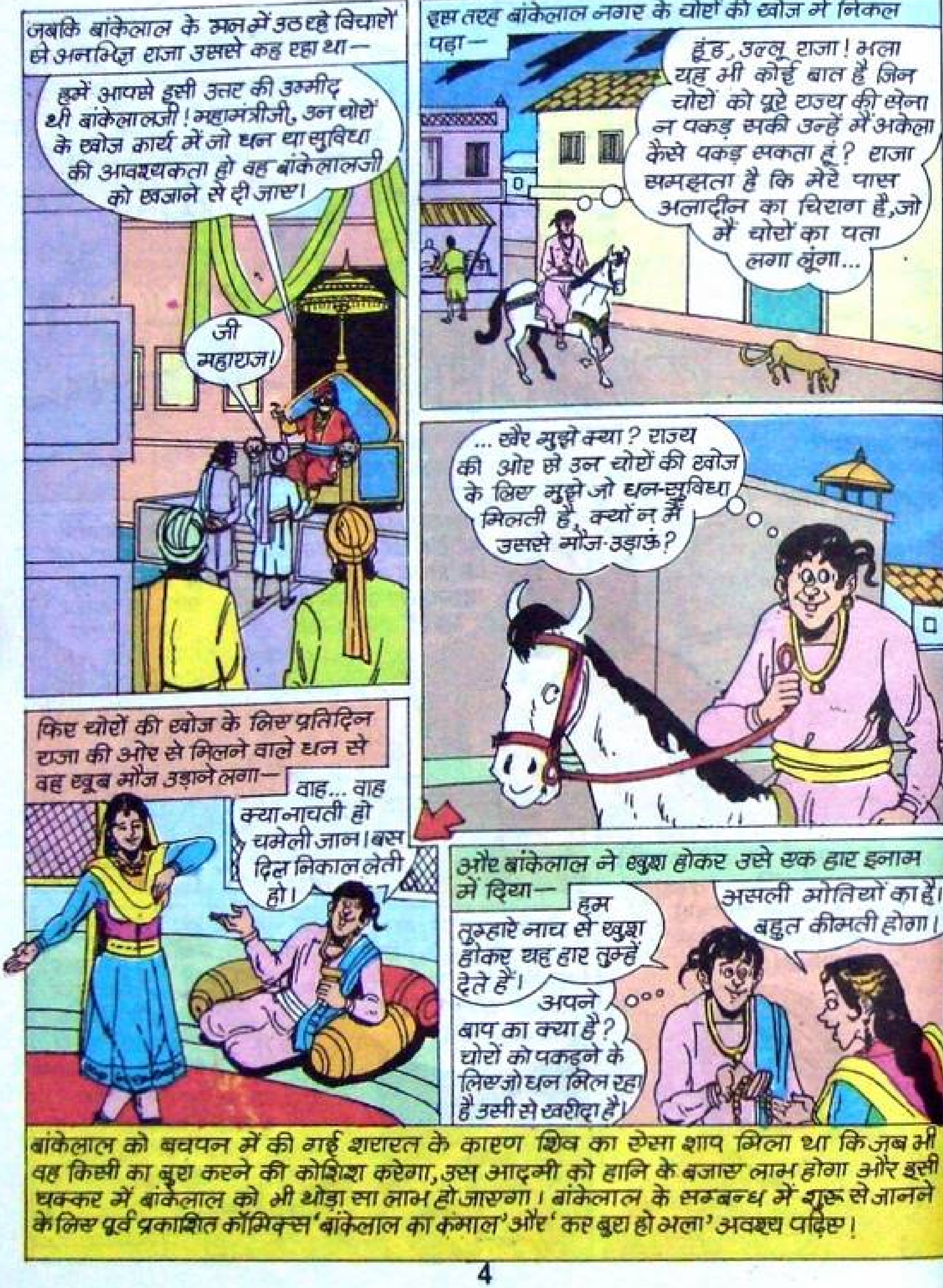
जबकि बांकेलाल के मन में उठ रहे विचारों से अनभिज्ञ राजा उससे कह रहा था—
हमें आपसे इसी उत्तर की उम्मीद थी बांकेलालजी! महामंत्रीजी, उन चोरों के खोज कार्य में जो धन या सुविधा की आवश्यकता हो वह बांकेलालजी को खजाने से दी जाए।
जी महाराज!
इस तरह बांकेलाल नगर के चोरों की खोज में निकल पड़ा—
हुंह, उल्लू राजा! भला यह भी कोई बात है जिन चोरों को पूरे राज्य की सेना न पकड़ सकी उन्हें मैं अकेला कैसे पकड़ सकता हूं? राजा समझता है कि मेरे पास अलादीन का चिराग है, जो मैं चोरों का पता लगा लूंगा...
...खैर मुझे क्या? राज्य की ओर से उन चोरों की खोज के लिए मुझे जो धन-सुविधा मिलती है, क्यों न मैं उससे मौज-उड़ाऊं?
फिर चोरों की खोज के लिए प्रतिदिन राजा की ओर से मिलने वाले धन से वह खूब मौज उड़ाने लगा—
वाह... वाह क्या नाचती हो चमेली जान। बस दिल निकाल लेती हो।
और बांकेलाल ने खुश होकर उसे एक हार इनाम में दिया—
हम तुम्हारे नाच से खुश होकर यह हार तुम्हें देते हैं।
अपने बाप का क्या है? चोरों को पकड़ने के लिए जो धन मिल रहा है उसी से खरीदा है।
असली मोतियों का है। बहुत कीमती होगा।
बांकेलाल को बचपन में की गई शरारत के कारण शिव का ऐसा शाप मिला था कि जब भी वह किसी का बुरा करने की कोशिश करेगा, उस आदमी को हानि के बजाए लाभ होगा और इसी चक्कर में बांकेलाल को भी थोड़ा सा लाभ हो जाएगा। बांकेलाल के सम्बन्ध में शुरू से जानने के लिए पूर्व प्रकाशित कॉमिक्स 'बांकेलाल का कमाल' और 'कर बुरा हो भला' अवश्य पढ़िए।

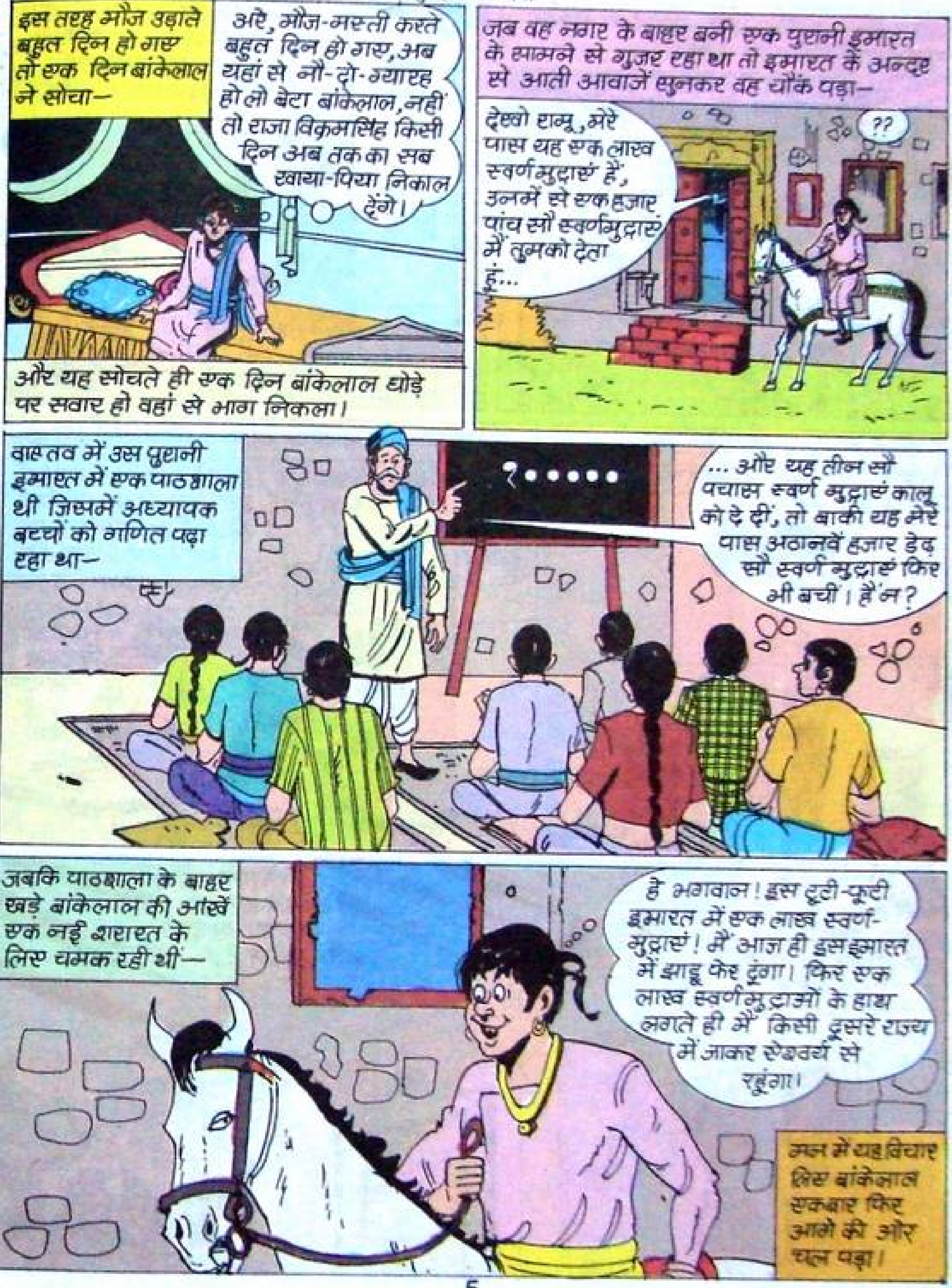
इस तरह मौज उड़ाते बहुत दिन हो गए तो एक दिन बांकेलाल ने सोचा—
अरे, मौज-मस्ती करते बहुत दिन हो गए, अब यहां से नौ-दो-ग्यारह हो लो बेटा बांकेलाल, नहीं तो राजा विक्रमसिंह किसी दिन अब तक का सब खाया-पिया निकाल देंगे।
और यह सोचते ही एक दिन बांकेलाल घोड़े पर सवार हो वहां से भाग निकला।
जब वह नगर के बाहर बनी एक पुरानी इमारत के सामने से गुजर रहा था तो इमारत के अन्दर से आती आवाजें सुनकर वह चौंक पड़ा—
देखो रामू, मेरे पास यह एक लाख स्वर्णमुद्राएं हैं, उनमें से एक हजार पांच सौ स्वर्णमुद्राएं मैं तुमको देता हूं...
??
वास्तव में उस पुरानी इमारत में एक पाठशाला थी जिसमें अध्यापक बच्चों को गणित पढ़ा रहा था—
१.....
...और यह तीन सौ पचास स्वर्ण मुद्राएं कालू को दे दीं, तो बाकी यह मेरे पास अठानवें हजार डेढ सौ स्वर्ण मुद्राएं फिर भी बचीं। है न?
जबकि पाठशाला के बाहर खड़े बांकेलाल की आंखें एक नई शरारत के लिए चमक रही थीं—
हे भगवान! इस टूटी-फूटी इमारत में एक लाख स्वर्ण-मुद्राएं! मैं आज ही इस इमारत में झाड़ू फेर दूंगा। फिर एक लाख स्वर्णमुद्राओं के हाथ लगते ही मैं किसी दूसरे राज्य में जाकर ऐश्वर्य से रहूंगा।
मन में यह विचार लिए बांकेलाल एकबार फिर आगे की ओर चल पड़ा।

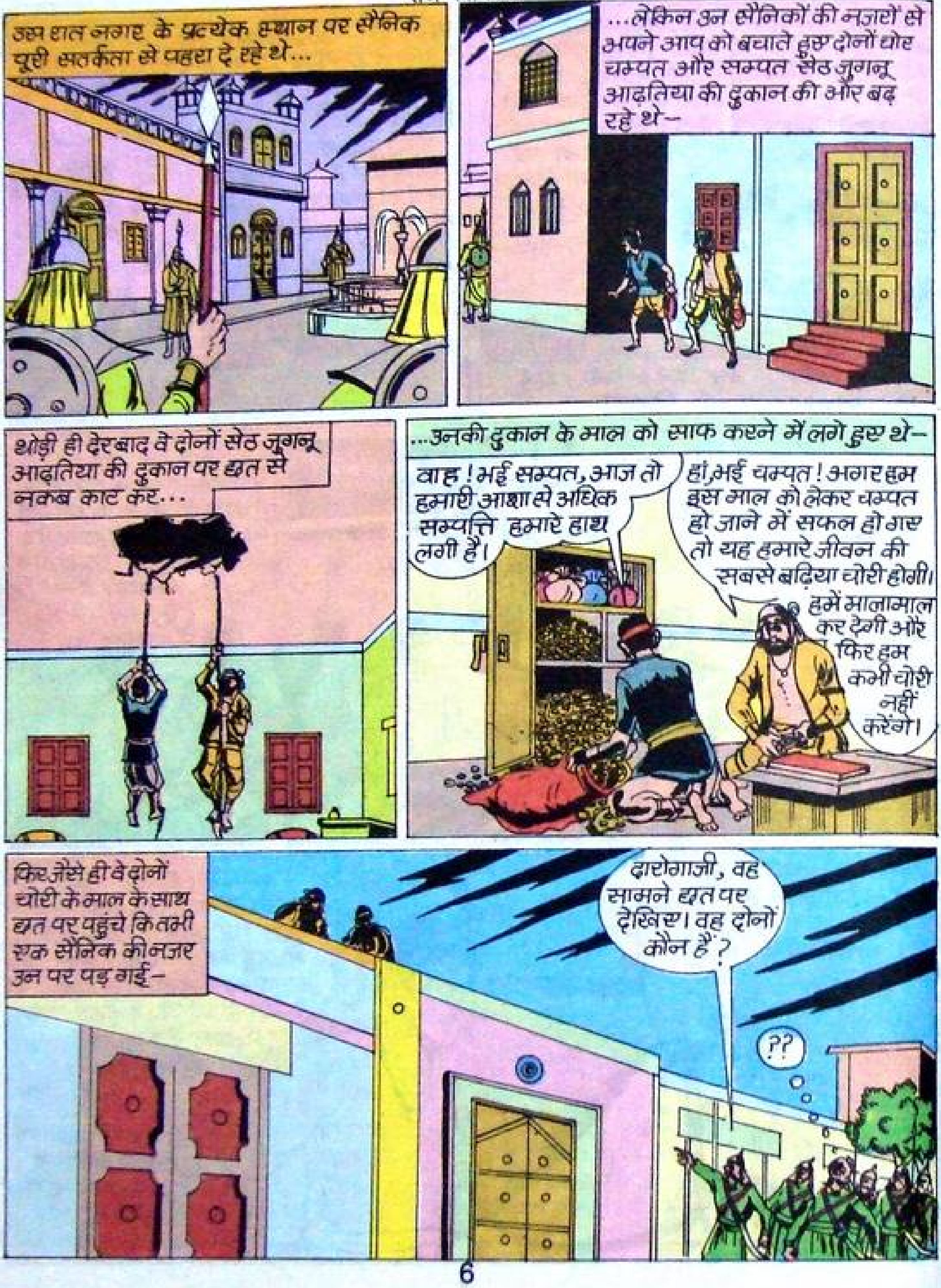
उस रात नगर के प्रत्येक स्थान पर सैनिक पूरी सतर्कता से पहरा दे रहे थे...
...लेकिन उन सैनिकों की नज़रों से अपने आप को बचाते हुए दोनों चोर चम्पत और सम्पत सेठ जुगनू आढ़तिया की दुकान की ओर बढ़ रहे थे–
थोड़ी ही देर बाद वे दोनों सेठ जुगनू आढ़तिया की दुकान पर छत से नक्ब काट कर...
...उनकी दुकान के माल को साफ करने में लगे हुए थे–
वाह! भई सम्पत, आज तो हमारी आशा से अधिक सम्पत्ति हमारे हाथ लगी है।
हां, भई चम्पत! अगर हम इस माल को लेकर चम्पत हो जाने में सफल हो गए तो यह हमारे जीवन की सबसे बढ़िया चोरी होगी।
हमें मालामाल कर देगी और फिर हम कभी चोरी नहीं करेंगे।
फिर जैसे ही वे दोनों चोरी के माल के साथ छत पर पहुंचे कि तभी एक सैनिक की नजर उन पर पड़ गई–
दारोगाजी, वह सामने छत पर देखिए। वह दोनों कौन हैं?
??

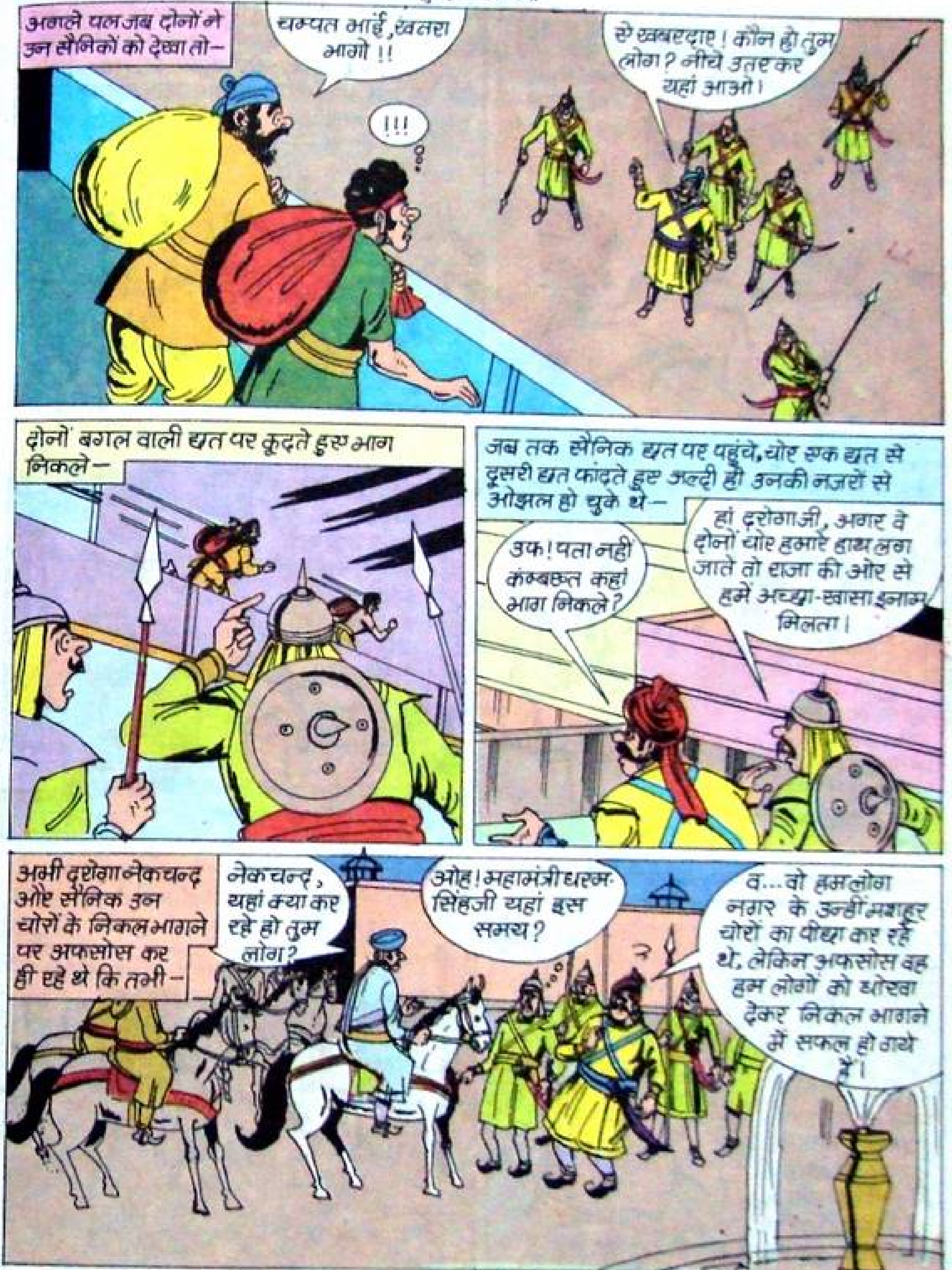
अगले पल जब दोनों ने उन सैनिकों को देखा तो–
चम्पत भाई, खतरा भागो !!
!!!
ऐ खबरदार! कौन हो तुम लोग? नीचे उतर कर यहां आओ।
दोनों बगल वाली छत पर कूदते हुए भाग निकले–
जब तक सैनिक छत पर पहुंचे, चोर एक छत से दूसरी छत फांदते हुए जल्दी ही उनकी नजरों से ओझल हो चुके थे–
उफ! पता नहीं कम्बख्त कहां भाग निकले?
हां दरोगाजी, अगर वे दोनों चोर हमारे हाथ लग जाते तो राजा की ओर से हमें अच्छा-खासा इनाम मिलता।
अभी दरोगा नेकचन्द और सैनिक उन चोरों के निकल भागने पर अफसोस कर ही रहे थे कि तभी–
नेकचन्द, यहां क्या कर रहे हो तुम लोग?
ओह! महामंत्री धरमसिंहजी यहां इस समय?
व...वो हम लोग नगर के उन्हीं मशहूर चोरों का पीछा कर रहे थे, लेकिन अफसोस वह हम लोगों को धोखा देकर निकल भागने में सफल हो गये हैं।

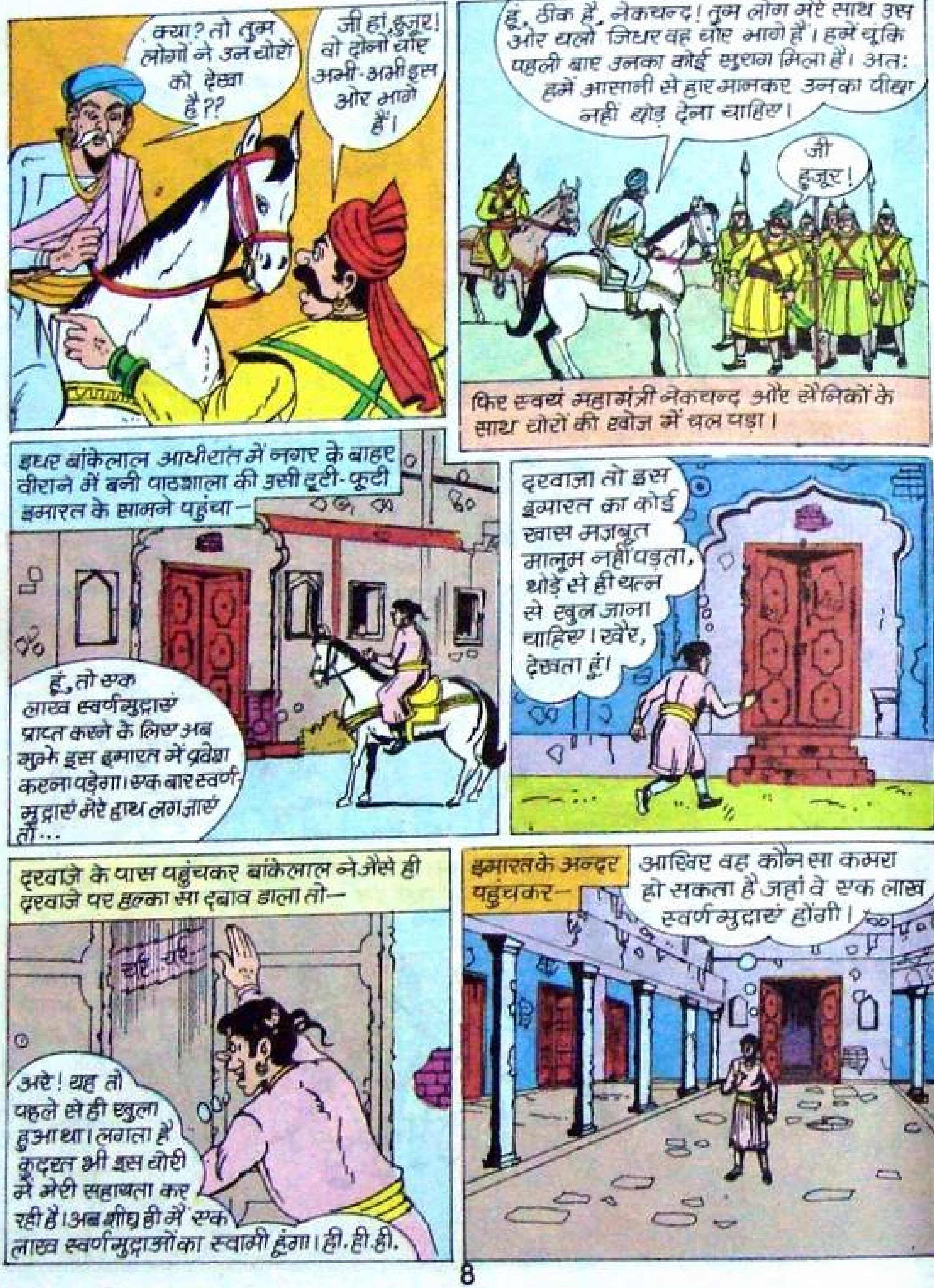
क्या? तो तुम लोगों ने उन चोरों को देखा है??
जी हां, हुजूर! वो दोनों चोर अभी-अभी इस ओर भागे हैं।
हूं, ठीक है, नेकचन्द! तुम लोग मेरे साथ उस ओर चलो जिधर वह चोर भागे हैं। हमें चूंकि पहली बार उनका कोई सुराग मिला है। अत: हमें आसानी से हार मानकर उनका पीछा नहीं छोड़ देना चाहिए।
जी हुजूर!
फिर स्वयं महामंत्री नेकचन्द और सैनिकों के साथ चोरों की खोज में चल पड़ा।
इधर बांकेलाल आधीरात में नगर के बाहर वीराने में बनी पाठशाला की उसी टूटी-फूटी इमारत के सामने पहुंचा—
हूं, तो एक लाख स्वर्णमुद्राएं प्राप्त करने के लिए अब मुझे इस इमारत में प्रवेश करना पड़ेगा। एक बार स्वर्ण-मुद्राएं मेरे हाथ लग जाएं तो...
दरवाजा तो इस इमारत का कोई खास मज़बूत मालूम नहीं पड़ता, थोड़े से ही यत्न से खुल जाना चाहिए। खैर, देखता हूं।
दरवाज़े के पास पहुंचकर बांकेलाल ने जैसे ही दरवाज़े पर हल्का सा दबाव डाला तो—
चर्र... चर्र
अरे! यह तो पहले से ही खुला हुआ था। लगता है कुदरत भी इस चोरी में मेरी सहायता कर रही है। अब शीघ्र ही मैं एक लाख स्वर्णमुद्राओं का स्वामी हूंगा। ही. ही. ही.
इमारत के अन्दर पहुंचकर—
आखिर वह कौन सा कमरा हो सकता है जहां वे एक लाख स्वर्ण मुद्राएं होंगी।

तभी–
ओह! उस सामने वाले कमरे के दरवाजे की झिरी से रोशनी बाहर आ रही है। मुझे देखना चाहिए कहीं इमारत के स्वामी जाग तो नहीं रहे।
फिर दरवाजे की झिरी से कमरे का दृश्य देखते ही बांकेलाल बुरी तरह चौंक पड़ा–
हे भगवान! यहां तो सोने के आभूषणों का भण्डार है।
और शायद उसके चौंकने के कारण ही दरवाजे पर हल्का सा दबाव पड़ा तो वह दरवाज़ा खुल गया–
क... कौन है?
???
हे भगवान! खतरा! भागो बेटा बांकेलाल वरना तुम्हारी खैर नहीं।
...और अन्दर चोरी के माल का बटवारा करते चम्पत और सम्पत बांकेलाल को देखकर घबरा गये तभी–
अरे! यह तो भाग रहा है। चम्पत भाई, हो न हो यह कोई मुसाफिर था या फिर हमारी ही बिरादरी का था।
हां, लगता तो यही है, लेकिन अब इसके इस तरह निकल भागने से हमें खतरा हो सकता है। इसे रोको।
अगले ही पल–
ऐ रुको, खबरदार! भागने की कोशिश मत करो, वरना मारे जाओगे।

लेकिन जब बांकेलाल ने उनकी धमकी की परवाह नहीं की तब सम्पत ने अपने कपड़ों में छुपा खंजर निकाला—
बचकर कहां जाएगा बच्चू! अभी देखता हूं तुझे।
और अगले ही पल- सम्पत ने खंजर फेंककर मारा—
आऽऽ ई.ई.ई...
दरवाजे से बाहर निकलकर घायल बांकेलाल ने उस मुख्य दरवाजे की बाहर से कुण्डी लगा दी—
हाय! बेटा बांकेलाल, जब तक इस इमारत के स्वामी किसी अन्य रास्ते या तरीके से बाहर निकलें, जान बचानी है तो भाग ले यहां से। नहीं तो चोरी के अपराध में पकड़ा जाएगा।
फिर बांकेलाल निकट ही खड़े अपने घोड़े की तरफ बढ़ा ही था कि तभी चोरों की तलाश में निकला महामंत्री वहां पहुंचा और बांकेलाल को देखकर चौंक पड़ा—
अरे! बांकेलाल, तुम और यहां, इस समय?
बुरे फंसे बेटा बांकेलाल! जबकि महामंत्री यहां पहुंच ही गया है तो शीघ्र ही तेरी चोरी वाली योजना की पोल खुल जाने वाली है, और अब तुझे लाख स्वर्ण मुद्राएं नहीं, बल्कि कारागार की चक्की आटा पीसने को मिलेगी।

क्या बात है बांके ...अरे! तुम्हारे कन्धे में खंजर... खून!! तुम्हारा यह हाल किसने और क्यों किया?
व-वो- इमारत...
???
अपनी चोरी की पोल खुलते देख भय से बांकेलाल की आंखों के सामने अंधेरा छाता चला गया—
और अगले ही पल—
अरे! यह तो बेहोश हो गया।
???
नेकचंद, अभी बांकेलालजी इस इमारत के बारे में कुछ संकेत करते हुए शायद कुछ बताना चाहते थे, लेकिन बीच में बेहोश हो गए...
...तुम इस इमारत में प्रवेश कर यह जानने की कोशिश करो कि बांकेलाल आखिर हमसे कहना क्या चाहता था?
जी, हुजूर!
जबकि पाठशाला की इमारत के अन्दर—
खड़-खड़
अब क्या होगा?
उफ! कम्बख्त हमारे खंजर से घायल तो हो गया था, लेकिन जाते-जाते हमारे लिए एक मुसीबत पैदा कर गया। दरवाजा बाहर से बन्द कर गया।

भाई चम्पत, तू जल्दी से अन्दर से सारी सम्पत्ति उठा ला। तब तक मैं इस दरवाजे को तोड़ने का यत्न करता हूं।
हां भाई सम्पत! अब हमारा यहां से जितनी जल्दी हो सके चम्पत हो जाना ही ठीक है, क्योंकि मुझे वह घायल खतरे का अवतार मालूम होता है।
फिर चम्पत अन्दर कमरे में पड़ा चोरी का माल लेने चला गया...
...और सम्पत अपने कन्धों के जोर से दरवाजा तोड़ने का यत्न करने लगा—
धाड़-धाड़
और बाहर—
अरे, यह क्या? लगता है अन्दर से कोई दरवाजे को तोड़ने का यत्न कर रहा है, लेकिन रात को इस समय भला कौन हो सकता है?
धाड़
फिर दरोगा नेकचन्द के आदेश पर जब एक सैनिक ने दरवाजे पर लगी कुन्डी खोली तो—
!!!
??
उफ!
अरे...रे रे मैं मरा।
भड़ाक

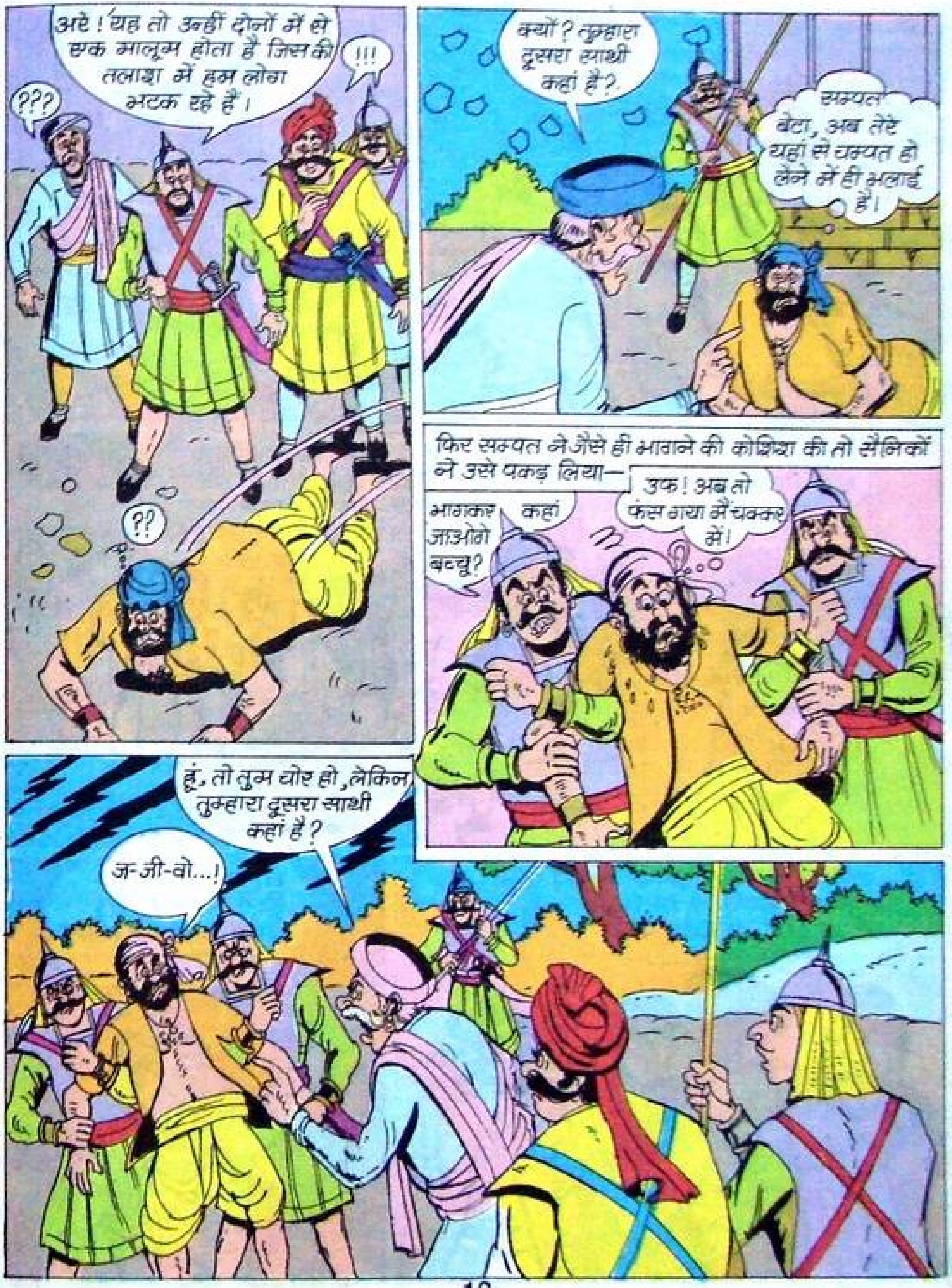
अरे! यह तो उन्हीं दोनों में से एक मालूम होता है जिसकी तलाश में हम लोग भटक रहे हैं।
???
!!!
??
क्यों? तुम्हारा दूसरा साथी कहां है?
सम्पत बेटा, अब तेरे यहां से चम्पत हो लेने में ही भलाई है।
फिर सम्पत ने जैसे ही भागने की कोशिश की तो सैनिकों ने उसे पकड़ लिया—
भागकर कहां जाओगे बच्चू?
उफ! अब तो फंस गया मैं चक्कर में।
हूं, तो तुम चोर हो, लेकिन तुम्हारा दूसरा साथी कहां है?
ज-जी-वो...!

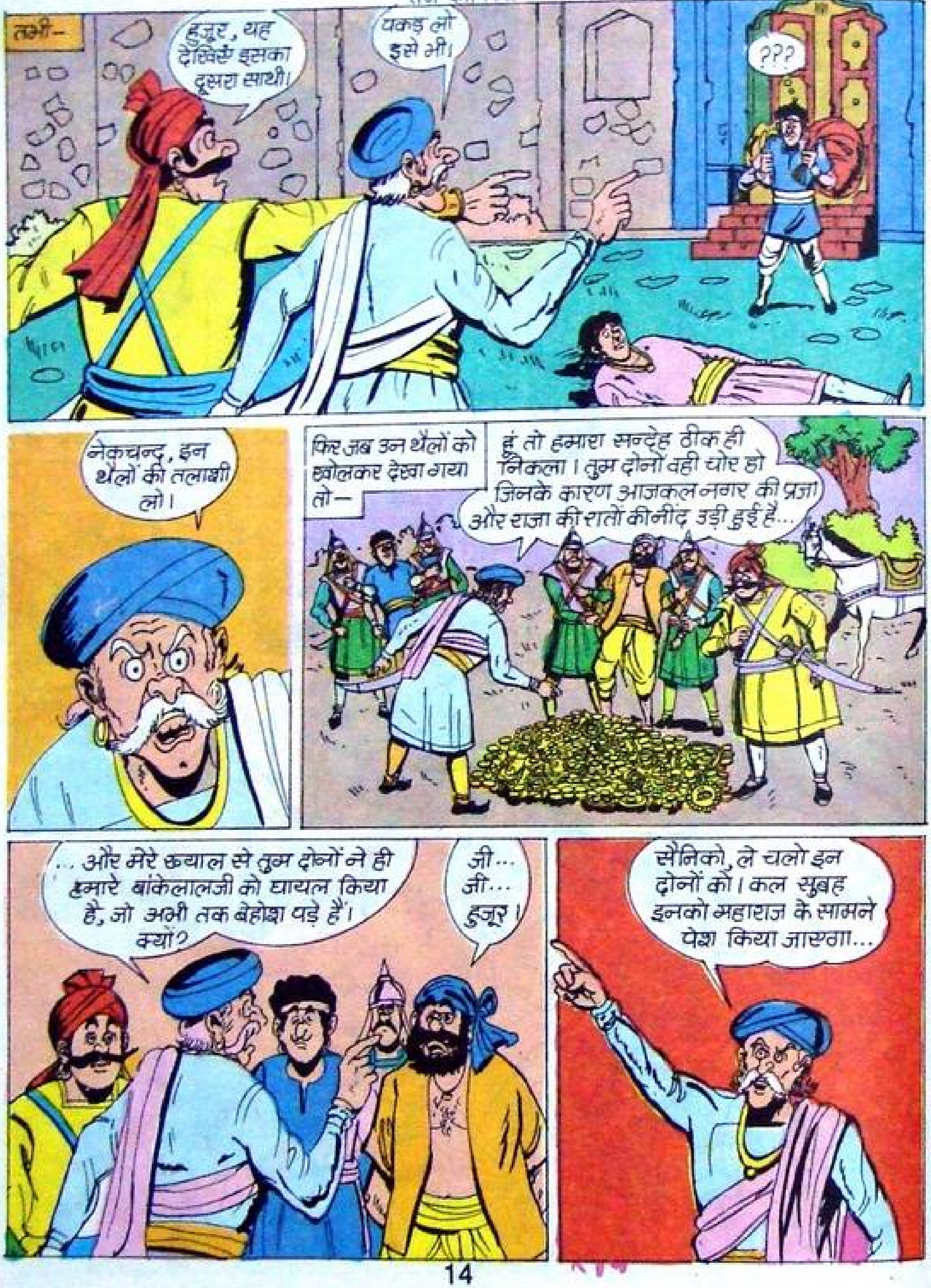
तभी—
हुजूर, यह देखिए इसका दूसरा साथी।
पकड़ लो इसे भी।
???
नेकचन्द, इन थैलों की तलाशी लो।
फिर जब उन थैलों को खोलकर देखा गया तो—
हूं तो हमारा सन्देह ठीक ही निकला। तुम दोनों वही चोर हो जिनके कारण आजकल नगर की प्रजा और राजा की रातों की नींद उड़ी हुई है...
... और मेरे ख्याल से तुम दोनों ने ही हमारे बांकेलालजी को घायल किया है, जो अभी तक बेहोश पड़े हैं। क्यों?
जी... जी... हुजूर।
सैनिको, ले चलो इन दोनों को। कल सुबह इनको महाराज के सामने पेश किया जाएगा...

...और नेकचंद तुम तुरन्त बांकेलालजी को उठाकर महल में पहुंचवाओ! इनकी तुरन्त राजवैद्य से चिकित्सा करानी है।
जी हुज़ूर!
फिर दो दिन बाद जब बांकेलाल को होश आया तो—.
अ...आह
ओह! शुक्र है भगवान का, बांकेलाल को होश आ गया।
क्या हो...श...लेकिन मुझे हुआ क्या था? और राजवैद्य जी आप...।
अचानक बोलते-बोलते बांकेलाल के दिमाग को एक झटका सा लगा...
...और अगले ही पल होश खोने से पहले का दृश्य उसके मानस पटल पर घूमने लगा—
आऽऽ ई-ई ई...
तभी—
क्या सोचने लगे बांकेलाल?
महाराज मुझे क्षमा कर दीजिए, मैं चोरी...

...इसमें क्षमा मांगने की क्या बात है बांकेलाल, बेशक तुम चोरों को अपने हाथों से गिरफ्तार नहीं कर सके, लेकिन तुम्हारे ही प्रयत्न से महामंत्री उन चोरों को पकड़ने में सफल हुए हैं।...
???
...वाकई बांकेलाल, हम मानते हैं कि तुम असाधारण विद्वान ही नहीं, बल्कि एक बहादुर इन्सान हो। उन चोरों के लिए तुमने अपनी जान की बाजी लगा दी। भई वाह! जवाब नहीं तुम्हारी कर्तव्य-परायणता का।
और राजा की पूरी बात सुनते ही बांकेलाल के मस्तिष्क में एक धमाका सा हुआ—
वाह! अरे, चोर सचमुच ही पकड़े गए। मैं तो यह सोचकर घबरा रहा था कि चोरी के माल के साथ मुझे ही चोर समझकर पकड़ लिया जाएगा।
अरे, जब ऊपर वाला मुझे छप्पर फाड़कर दे रहा है तो मुझे लेने में क्या हर्ज है। बेटा बांकेलाल, चुप-चाप झोली भरते रहो।
क्या बात है बांकेलाल? इस समय तुम्हें ज्यादा तकलीफ महसूस हो रही है?
ज...जी महाराज, कोई खास नहीं।

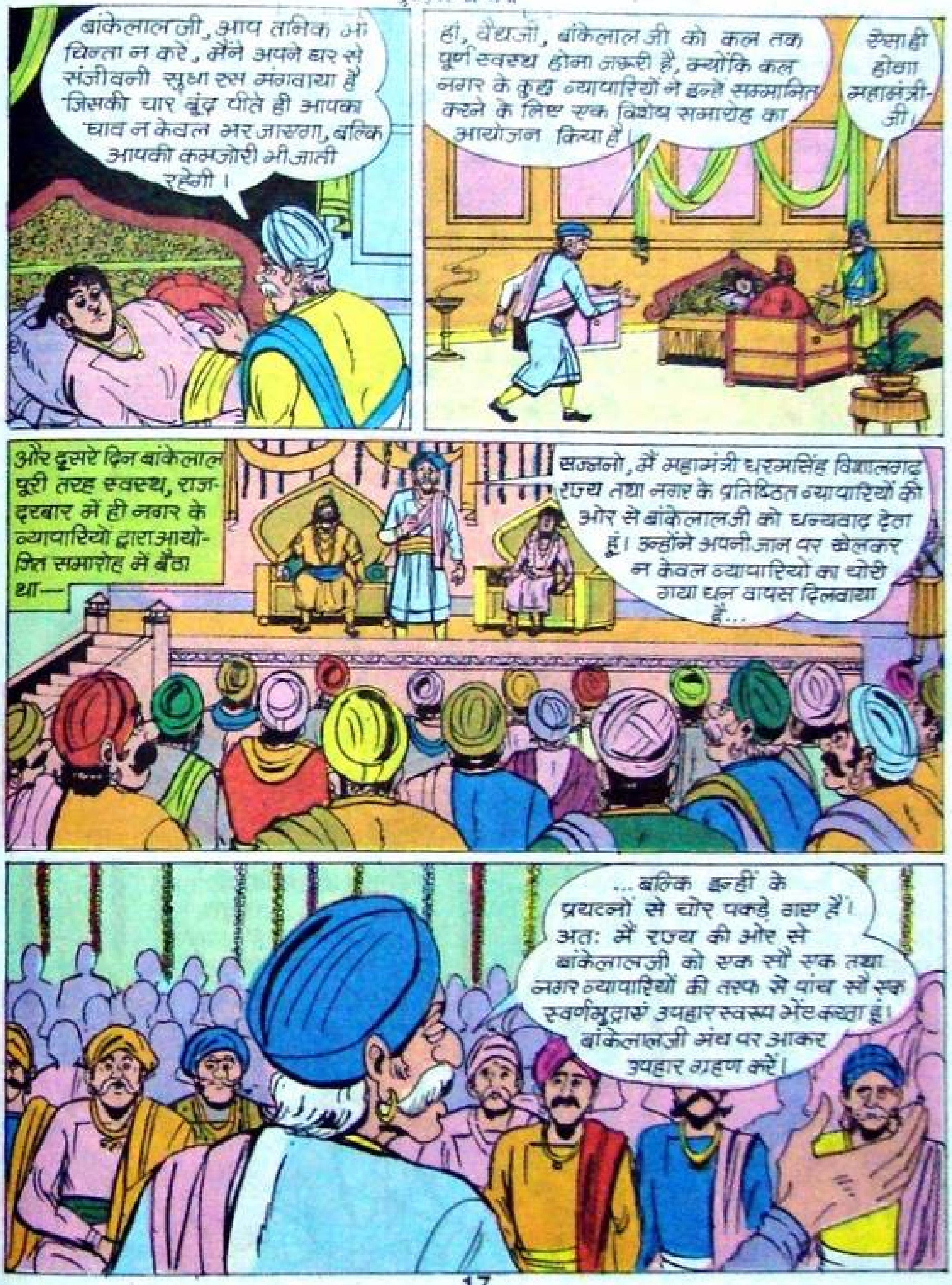
बांकेलाल जी, आप तनिक भी चिन्ता न करें, मैंने अपने घर से संजीवनी सुधा रस मंगवाया है जिसकी चार बूंद पीते ही आपका घाव न केवल भर जाएगा, बल्कि आपकी कमजोरी भी जाती रहेगी।
हां, वैद्यजी, बांकेलाल जी को कल तक पूर्ण स्वस्थ होना जरूरी है, क्योंकि कल नगर के कुछ व्यापारियों ने इन्हें सम्मानित करने के लिए एक विशेष समारोह का आयोजन किया है।
ऐसा ही होगा महामंत्री-जी।
और दूसरे दिन बांकेलाल पूरी तरह स्वस्थ, राजदरबार में ही नगर के व्यापारियों द्वारा आयोजित समारोह में बैठा था—
सज्जनो, मैं महामंत्री धरमसिंह विशालगढ़ राज्य तथा नगर के प्रतिष्ठित व्यापारियों की ओर से बांकेलालजी को धन्यवाद देता हूं। उन्होंने अपनी जान पर खेलकर न केवल व्यापारियों का चोरी गया धन वापस दिलवाया है...
...बल्कि इन्हीं के प्रयत्नों से चोर पकड़े गए हैं। अतः मैं राज्य की ओर से बांकेलालजी को एक सौ एक तथा नगर व्यापारियों की तरफ से पांच सौ एक स्वर्णमुद्राएं उपहार स्वरूप भेंट करता हूं। बांकेलालजी मंच पर आकर उपहार ग्रहण करें।

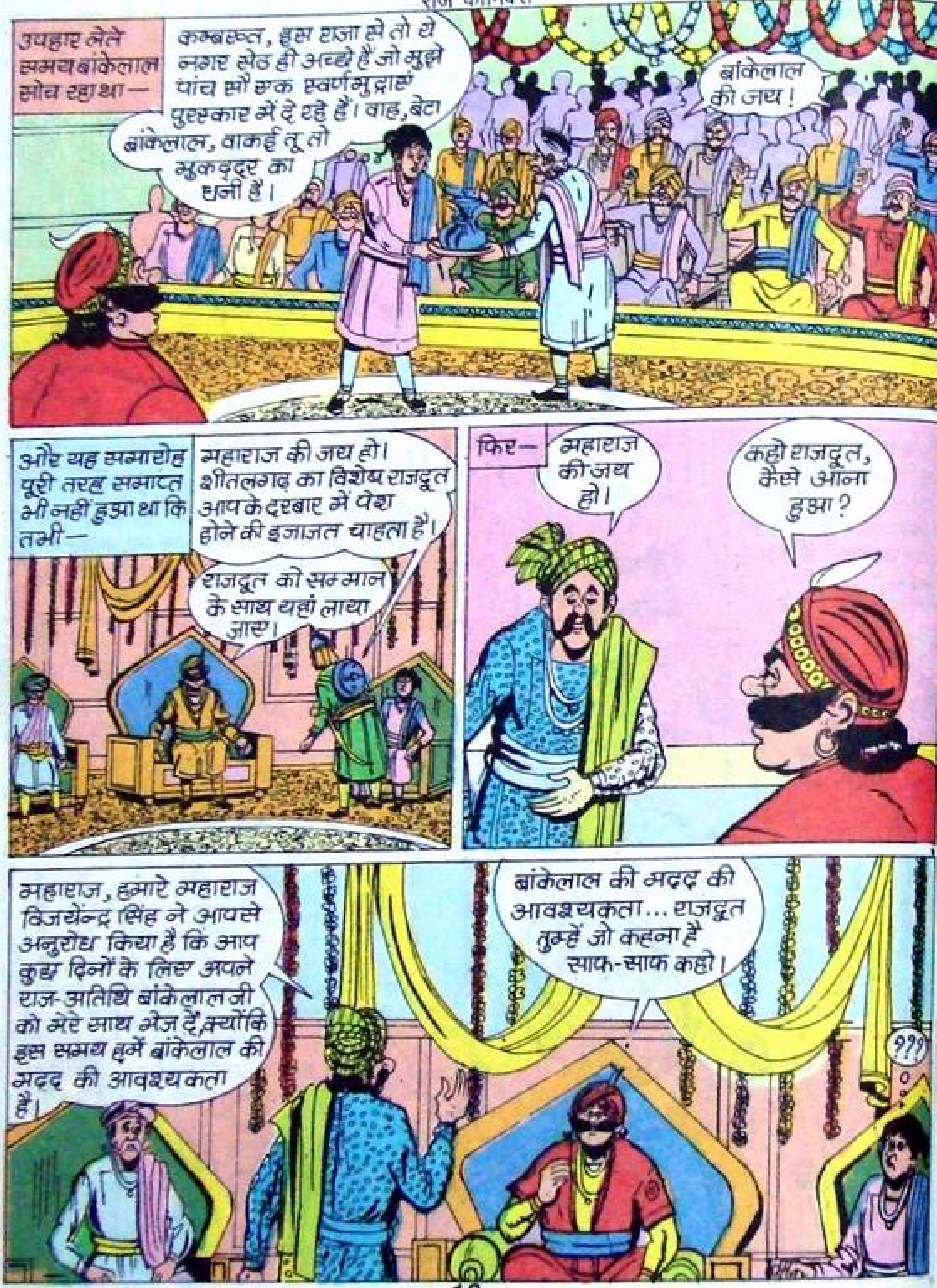
उपहार लेते समय बांकेलाल सोच रहा था—
कम्बख्त, इस राजा से तो ये नगर सेठ ही अच्छे हैं जो मुझे पांच सौ एक स्वर्णमुद्राएं पुरस्कार में दे रहे हैं। वाह, बेटा बांकेलाल, वाकई तू तो मुकद्दर का धनी है।
बांकेलाल की जय!
और यह समारोह पूरी तरह समाप्त भी नहीं हुआ था कि तभी—
महाराज की जय हो। शीतलगढ़ का विशेष राजदूत आपके दरबार में पेश होने की इजाजत चाहता है।
राजदूत को सम्मान के साथ यहां लाया जाए।
फिर—
महाराज की जय हो।
कहो राजदूत, कैसे आना हुआ?
महाराज, हमारे महाराज विजयेन्द्र सिंह ने आपसे अनुरोध किया है कि आप कुछ दिनों के लिए अपने राज-अतिथि बांकेलाल जी को मेरे साथ भेज दें, क्योंकि इस समय हमें बांकेलाल की मदद की आवश्यकता है।
बांकेलाल की मदद की आवश्यकता... राजदूत तुम्हें जो कहना है साफ-साफ कहो।
???

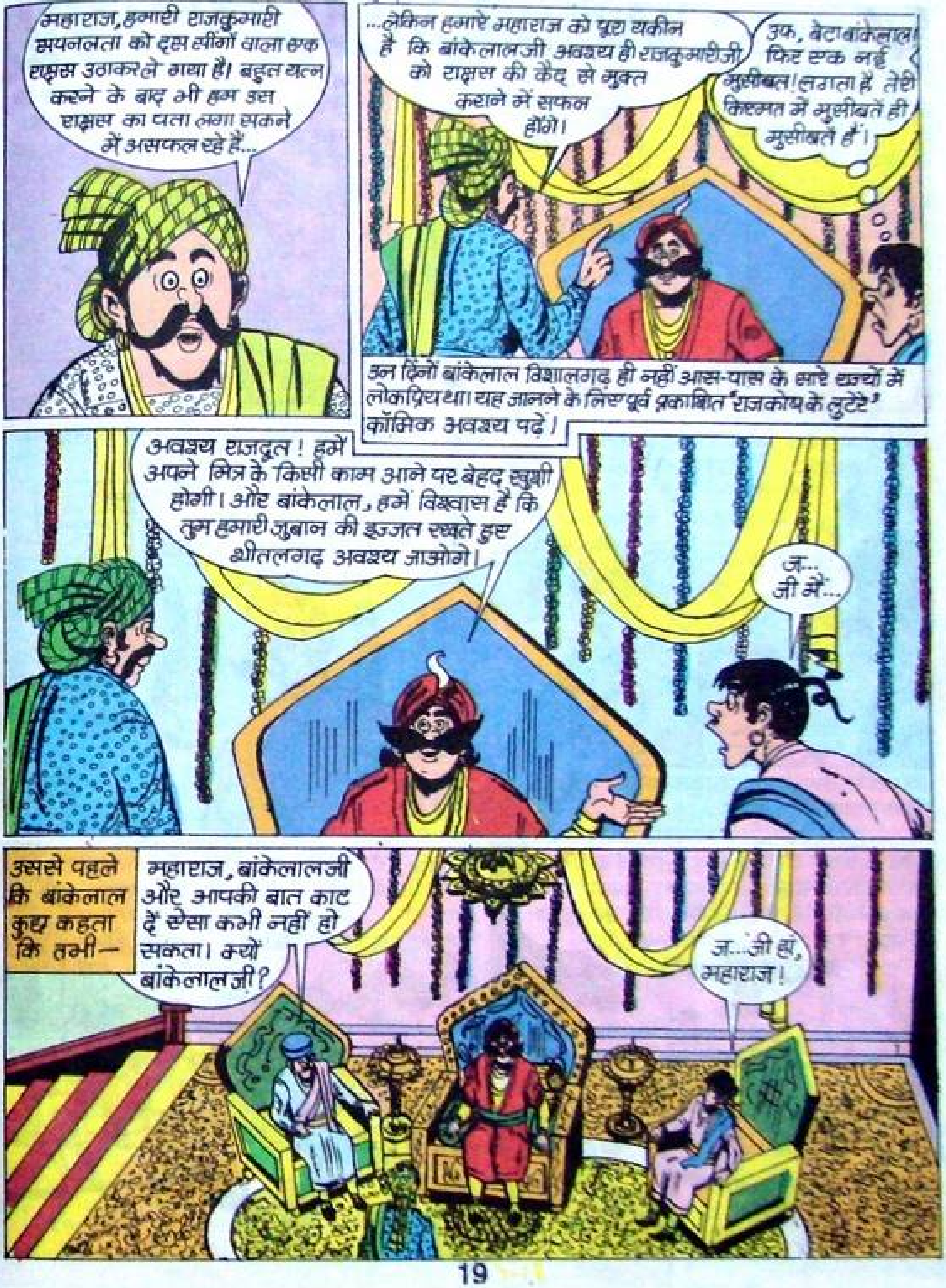
महाराज, हमारी राजकुमारी सपनलता को दस सींगों वाला एक राक्षस उठाकर ले गया है। बहुत यत्न करने के बाद भी हम उस राक्षस का पता लगा सकने में असफल रहे हैं...
...लेकिन हमारे महाराज को पूरा यकीन है कि बांकेलालजी अवश्य ही राजकुमारीजी को राक्षस की कैद से मुक्त कराने में सफल होंगे।
उफ, बेटा बांकेलाल! फिर एक नई मुसीबत! लगता है तेरी किस्मत में मुसीबतें ही मुसीबतें हैं।
उन दिनों बांकेलाल विशालगढ़ ही नहीं आस-पास के सारे राज्यों में लोकप्रिय था। यह जानने के लिए पूर्व प्रकाशित 'राजकोष के लुटेरे' कॉमिक अवश्य पढ़ें।
अवश्य राजदूत! हमें अपने मित्र के किसी काम आने पर बेहद खुशी होगी। और बांकेलाल, हमें विश्वास है कि तुम हमारी जुबान की इज्जत रखते हुए शीतलगढ़ अवश्य जाओगे।
ज... जी मैं...
उससे पहले कि बांकेलाल कुछ कहता कि तभी—
महाराज, बांकेलालजी और आपकी बात काट दें ऐसा कभी नहीं हो सकता। क्यों बांकेलालजी?
ज...जी हां, महाराज!

हमें तुमसे ऐसे ही उत्तर की आशा थी बांकेलाल!
हुंह, कम्बख्त मुझे मौत के मुंह में धकेलकर कैसे खुश हो रहे हैं सब।
बांकेलाल की जय...
बांकेलाल की जय।
महाराज, मैं शीतलगढ़ जाऊंगा अवश्य, लेकिन राजदूत के साथ नहीं, अकेला जाऊंगा और वह भी आज नहीं, कल जाऊंगा।
जैसी तुम्हारी इच्छा।
फिर शीतलगढ़ का राजदूत उसी दिन वापस लौट गया...
...और बांकेलाल दूसरे दिन पूरी तैयारी के साथ शीतलगढ़ की ओर चल पड़ा।
ईश्वर तुम्हें हर बार की तरह इस बार भी सफलता प्रदान करे।
फिर लगातार यात्रा के बाद बांकेलाल जब एक घने जंगल से गुजर रहा था तो—
वाह! इतनी बढ़िया सुगन्ध! भला यह किस चीज़ की सुगंध हो सकती है!
सूं...सूं...
...कुछ दूर आगे बढ़ने पर—
वाह! अद्भुत! इतनी सुन्दर हिरणी और हिरण! अगर मैं इन्हें मार लूं तो इनकी खाल की मुझे अच्छी कीमत मिल सकती है।

मन में यह विचार आते ही बांकेलालने घोड़े की पीठ पर लटक रही दोनों तलवारें निकालीं...
जो अगर मैं एक साथ आक्रमण करके इन दोनों को न मार सका तो हो सकता है इनमें से एक भाग निकले।
...और दबे-दबे अन्दाज में निकट ही घास चर रहे हिरण और हिरणी की ओर बढ़ा—
ठीक उसी समय हिरणी और हिरण पर घात लगाए बैठे एक शेर ने छलांग लगाई—
गुर्रर्र
अरे! बाप रे!
भयभीत बांकेलाल पलटा और—
अर्रर... र
खचाक
खचाक
फिर—
धन्यवाद मित्र! तुमने मेरे और मेरी हिरणी के जीवन की रक्षा की है। अत: बदले में मैं तुम्हें यह कस्तूरी देता हूं जिसकी सुगन्ध के आगे सब सुगन्धें छिप जाती हैं।
आंय!
इतना कहकर हिरण ने अपनी नाभि में लगी कस्तूरी अपने मुंह से निकालकर बांकेलाल के सामने डाल दी—

फिर भीलमगढ़ पहुंचने पर बांकेलाल का राजा द्वारा भव्य स्वागत हुआ-
आओ...आओ बांकेलालजी,आपके आ जाने से मेरा खोया हुआ विश्वास पुन: लौट आया है। मुझे विश्वास है कि आप दस सींगों वाले राक्षस से मेरी बेटी को अवश्य ही मुक्त करा लाएंगे।
हूंह मूर्ख! मुझे क्या पड़ी है कि मैं तेरी बेटी के लिए अपनी जान मुसीबत में डालूं!
ज-जी हां महाराज आपके विश्वास को ठेस न लगे इसका मैं पूरा ख़याल रखूंगा।
और फिर उस रात उसे छत्तीस प्रकार का स्वादिष्ट भोजन कराया गया-
वाह! क्या नीति है? बलि के बकरे को खिलापिला कर मस्त कराया जा रहा है। लेकिन मेरा नाम भी बांकेलाल है, निबट लूंगा इस राजा के बच्चे से भी।
और दूसरे दिन दरबार में-
बांकेलालजी, उस राक्षस की खोज के लिए आपको जिस तरह की आवश्यकता हो हमें बताएं।
महाराज,सबसे पहले तो मैं यह जानना चाहूंगा कि वह राक्षस राजकुमारीजी को उठाकर किस दिशा में ले गया है?
उत्तर दिशा में, जंगल की ओर।
हूं...

...ठीक है महाराज। आप मेरे साथ पांच सैनिक भेज दें। मैं अभी राजकुमारीजी की खोज में जाना चाहता हूं।
फिर पांच सैनिकों के साथ बांकेलाल राजकुमारी स्वर्णलता की खोज में उत्तर दिशा की ओर चल पड़ा—
हे भगवान, सब कुछ हो, लेकिन मेरा सामना उस दस सींगों वाले राक्षस से न हो। फिर मैं कुछ दिनों की तलाश के नाटक के बाद यहां के राजा से क्षमा मांगकर अपनी जान बचा लूंगा।
और बांकेलाल अपने पांच सैनिकसाथियों के साथ जंगल में कुछ ही आगे बढ़ा था कि तभी—
आहा-हा हा!
अगले ही पल—
आहा! हा-हा! वाह! मानव!! आज तो भोजन खुद चलकर मेरे पास आया है! वाह! हा-हा-हा!
उफ! आज तो मारे गये।
दस सींगों वाला राक्षस!
देखते ही देखते—
किट-किट...
उफ!
???
...राक्षस एक-एक करके पांचों सैनिकों को खा गया और अन्त में—
आ-हा-हा-हा!
म...मुझे छोड़ दीजिए राक्षसराज! म...मैं आपके बहुत काम आऊंगा। बस एक बार आप मेरी जान बख्श दीजिए।

तुम! एक अदना से इन्सान और मेरे किसी काम आओगे। आ हा हा हा।
जी राक्षसराज, मैं आपके भोजन के लिए प्रतिदिन पांच ऐसे ही हट्टे-कट्टे सैनिक यहीं पहुंचा सकता हूं।
हा-हा-हा! तुच्छ मानव, तू मुझे मूर्ख समझता है। मैं तेरी बातों का कदापि भरोसा नहीं कर सकता।
राक्षस राज, मैं भगवान शिव की सौगन्ध खाकर कहता हूं कि मैं प्रतिदिन पांच सैनिकों को आपकी सेवा में हाजिर किया करूंगा।
बांकेलाल की बात सुनकर राक्षस सोचने लगा—
अगर यह अपने कथनानुसार प्रतिदिन पांच मनुष्यों को यहीं ले आया करे तो मुझे अपने भोजन की तलाश में भटकना न पड़े और अब चूंकि मेरा पेट भी भर चुका है तो क्यों न मैं इसकी बात मानकर इसे छोड़ दूं।
यह सोचकर—
ठीक है मनुष्य! मैं तेरी बात पर यकीन किये लेता हूं, लेकिन याद रख, मुझे धोखा देने की कोशिश मत करना वरना...
राक्षसराज, मैं आपको धोखा देने का कभी प्रयत्न नहीं करूंगा।
इस तरह दस सींगों वाले राक्षस से अपनी जान बचाकर बांकेलाल जब वापस राजमहल पहुंचा तो—
आओ बांकेलाल, हम तुम्हारा ही इंतजार कर रहे थे... लेकिन हमें तुम्हारे साथ वे पांच सैनिक नहीं दिखाई दे रहे जो तुम्हारे साथ गए थे।
क्या! सैनिक अभी तक वापस नहीं लौटे??
बांकेलाल ने चौंकने का शानदार अभिनय किया।
तुम इस तरह चौंके क्यों बांकेलाल? पांच सैनिक तो तुम्हारे ही साथ थे, फिर वे तुम्हारे साथ नहीं लौटे तो इसका कारण भी तुम्हें ही मालूम होगा।

ज..जी महाराज, दरअसल हमारे जंगल में प्रवेश करते ही एकाएक जोरों की आंधी चली और फिर वे पांचों सैनिक मुझसे बिछड़ गये, और मैं बड़ी मुश्किल से यहां पहुंचने में सफल हो पाया हूं।
ओह! पता नहीं वे सैनिक रास्ता भटक गये हैं या किसी मुसीबत में फंस गये हैं, खैर बांकेलाल तुम भोजन करके विश्राम करो, बाकी कल देखा जाएगा।
दूसरे दिन दरबार में—
सेनापति, हमारे पांच सैनिक वापस लौटे या नहीं जो कल बांकेलाल के साथ गए थे?
जी नहीं, महाराज!
मूर्खराजा, तुम्हारे वे पांचों सैनिक अब उस दुनिया में पहुंच चुके हैं जहां से आज तक कोई नहीं लौटा और मैं धीरे-धीरे तेरी सारी सेना भी वहीं पहुंचा दूंगा हा-हा-हा! बड़ा आया था मुझे मौत के मुंह में धकेलने वाला!
हूंह! बांकेलाल, तुम्हारा आज का क्या कार्यक्रम है?
महाराज, मैं आज भी उस दस सींगों वाले राक्षस की तलाश में जाऊंगा, किन्तु आज हम सिर्फ छ: लोग जाएंगे, यानी एक मैं और मेरे साथ पांच बहादुर सैनिक!
सेनापति, तुम सेना के पांच बहादुर सिपाही, बांकेलाल के साथ भेज दो।
जी महाराज!
फिर बांकेलाल पांच सैनिकों के साथ उत्तर दिशा की ओर चल पड़ा—
काश! इन्हें पता होता की यह राजकुमारी की खोज में नहीं, मौत के मुंह में जा रहे हैं।

फिर बांकेलाल सैनिकों सहित जब राक्षस द्वारा निर्दिष्ट स्थान पर पहुंचा तो –
अरे! जंगल में इतना सुन्दर महल! भला यह महल किसका हो सकता है?
आओ देखें इसमें कौन रहता है?
राजकुमारी, यह मेरा प्राणप्रिय तोता है, कोई इसकी तरफ टेढ़ी नजर से भी देखेगा तो मैं उसकी बोटी-बोटी चबा जाऊंगा...
???
!!!
... और राजकुमारी, मैं तुमसे प्रेम करता हूं लेकिन... अरे! यह क्या? मानव गन्ध! देखें... कौन आया है मौत के मुंह में!
???
अगले ही पल –
???
???
दस सींगों वाला राक्षस!
आहा! हा... हा! मानव, मैं तुमसे खुश हुआ। वाकई तुमने मेरे लिए उत्तम भोजन का प्रबन्ध किया है।

ही-ही-ही! राक्षसराज, मैं तो आपकी हमेशा ऐसी ही सेवा करने के लिए वचनबद्ध हूं। आपका भोजन हाजिर है, भोजन कीजिए।
ओह! धोखा।
क्या धोखा?
नहीं मानव, मैं इन्हें नहीं खाऊंगा, बल्कि मुझे अपने देवता सुम्बा शैतान को प्रसन्न करने के लिए ऐसे ही एक सौ एक मनुष्यों की आवश्यकता है, ताकि मेरा देवता प्रसन्न होकर मुझे साधारण मानव सा आकार व इस राजकुमारी के अनुरूप सुन्दर रूप दे दे...
...ताकि मैं इससे ब्याह कर सकूं! अतः मानव, अब तुम्हें मेरे लिए कल तक सौ मनुष्यों को यहां पर लाना है, समझे?
ए... औ... किन्तु...
किन्तु, परन्तु कुछ नहीं। कल तक तुम्हें सौ मानव यहां पहुंचाने हैं वरना मैं तुम्हें कच्चा चबा जाऊंगा।
ज... जी राक्षसराज!
बांकेलाल जाने के लिए मुड़ा...
... किन्तु तभी—
धूर्त बांकेलाल, विश्वास घाती, तूने हमारे महाराज के साथ और हमारे साथ विश्वासघात किया है। ईश्वर इसके लिए तुझे कभी माफ नहीं करेगा।
???
!!!

नीच, तू मेरे पिताजी के साथ विश्वासघात कर रहा है, मैं तुझे जिन्दा नहीं छोडूंगी।
उफ!
राजकुमारी, इससे पहले मेरे लिए सौ मनुष्यों की व्यवस्था कर लेने दो ताकि मैं सुन्दर मानव जैसा हो जाऊं। फिर यदि तुम कहोगी तो मैं इसे कच्चा चबा जाऊंगा!
मैं थूकती हूं, तुम पर और इस कमीने इंसान पर। थू SSS
??
फिर वापस राजमहल लौटते हुए बांकेलाल सोच रहा था–
बेटा बांकेलाल, राजकुमारी सपनलता की जिन्दगी तेरी मौत का पैगाम है, क्योंकि यदि राजकुमारी कभी राक्षस की कैद से भाग निकलने में सफल हो गयी या फिर... राक्षस...
...राजकुमारी से ब्याह करने में सफल हो गया तो राजकुमारी राजा को तेरी मक्कारी की कहानी सुना देगी, और तब तेरे गले में होगा फांसी का फंदा...
... बस बेटा बांकेलाल, यह समझ ले कि राजकुमारी का जीवन तेरी मौत है और राजकुमारी की मौत तेरा जीवन। जल्दी से किसी तरह राक्षस के हाथों राजकुमारी को ठिकाने लगा और फूट ले यहां से। जान बची तो लाखों मिलेंगे।

लेकिन राजकुमारी की मौत उस राक्षस के रहते नहीं हो सकती है। अरे, यदि मैं उस तोते को चुपके से मार दूं तो राक्षस समझेगा राजकुमारी ने मारा है, और वह फिर राजकुमारी को मार देगा! अरे, वाह, यह मारा पापड़ वाले को!
यह सोचते ही वह खुशी से उछल पड़ा।
फिर राजमहल पहुंचते ही—
यह क्या बांकेलाल? आज भी तुम अकेले ही वापस आए हो। हमारे वे पांच सैनिक कहां हैं जो तुम्हारे साथ गए थे?
महाराज, आप उन सैनिकों की जरा भी चिन्ता न करें। उन्हें मैं दस सींगों वाले राक्षस की निगरानी में लगा आया हूं।
???
???
क्या... तो तुमने उस राक्षस को ढूंढ लिया! शाबास... लेकिन हमारी बेटी तो सुरक्षित है न?
??
जी महाराज, राजकुमारी जी ठीक हैं और उम्मीद है कि कल तक मैं उन्हें उस राक्षस के चंगुल से मुक्त कर यहां लाने में सफल हूंगा...
...हां, मुझे कल सौ वीर व साहसी सैनिकों की मदद की आवश्यकता है।
ठीक है, बांकेलाल, हम सौ सैनिक तुम्हारे साथ भेज देंगे।

लेकिन बांकेलालजी, उन सौ सैनिकों के साथ कल मैं भी आपके साथ चलूंगा।
य...यह तो बहुत ही अच्छा होगा।
मूर्ख सेनापति, यदि तू स्वयं ही मौत के मुंह में जाना चाहता है तो मैं क्या करूं?
दूसरे दिन–
सेनापति जी, यही है दस सींगों वाले राक्षस का महल आप लोग यहीं रुककर मेरे अगले किसी आदेश या इशारे का इन्तजार करें। मैं अन्दर जाकर स्थिति को देखता हूं।
???
यदि मैं राक्षस के महल में चुपके से घुसकर उसके प्राणोंप्रिय तोते को मार दूं तो वह राजकुमारी को मार देगा, लेकिन मेरे भीतर घुसते ही उसे मेरी गंध से पता चल जाएगा।
तभी उसे अपने पास रखी कस्तूरी का ध्यान आया तो उसकी आंखें चमकने लगीं–
वाह! बन गया काम!
मित्र, यह कस्तूरी है। इसकी महक के सामने प्रत्येक महक या गन्ध छिप जाती है।
फिर उसने अपनी जेब से कस्तूरी निकाली और महल में चला गया–
अन्दर पहुंचकर–
वाह! सामने ही वह कमरा है जिसमें राक्षस का प्राणोंप्रिय तोता है। ईश्वर, मेरी मदद करना।
बांकेलाल सामने वाले कमरे की ओर बढ़ा–
और उसी महल के अन्य कमरे में–
अरे! यह तो कस्तूरी की सुगंध है। लगता है कोई हिरण मेरे महल में प्रवेश कर गया है... हां, तो राजकुमारी, बोल तू मेरे साथ विवाह करने को तैयार है या नहीं?
कदापि नहीं, मैं थूकती हूं तुम पर।

क्या?? तेरी यह मजाल! मन तो करता है तुझे अभी इसी वक्त कच्चा चबा जाऊं।
कहने के साथ ही राक्षस भयानक अन्दाज में राजकुमारी सपनलता की ओर बढ़ा।
उधर बांकेलाल ने पिंजरा खोलकर तोते को कसकर पकड़ा—
उफ, यह क्या? ऐसा लगता है किसी ने मेरी कमर कस कर पकड़ ली है। आह! लगता है कोई मेरे प्रिय तोते तक पहुंचने में सफल हो गया है।
राक्षस ने बाहर की ओर भागना चाहा, लेकिन भाग नहीं सका। यह रहस्य कोई नहीं जानता था कि उस तोते में राक्षस के प्राण छिपे हैं।
ठीक उसी समय बांकेलाल ने तोते की एक टांग तोड़ दी और—
आई ई ईईऽऽ
तोते की टांग टूटते ही राक्षस की भी एक टांग टूट गई।
किसी तरह जमीन पर घिसटता राक्षस बांकेलाल के पास पहुंचा—
दुष्ट मानव, यह तू क्या कर रहा है? फौरन इस तोते को छोड़ दे वर्ना मैं तुझे जीवित न छोडूंगा।
???
उफ! बेटा बांकेलाल, आज तेरी मृत्यु निश्चित है। यह राक्षस तुझे जिन्दा नहीं छोड़ेगा।
और मारे भय के बांकेलाल लहराया...
...और अगले ही पल वह बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ा—
टेंऽऽऽ
और उसके नीचे दबकर तोता मर गया।

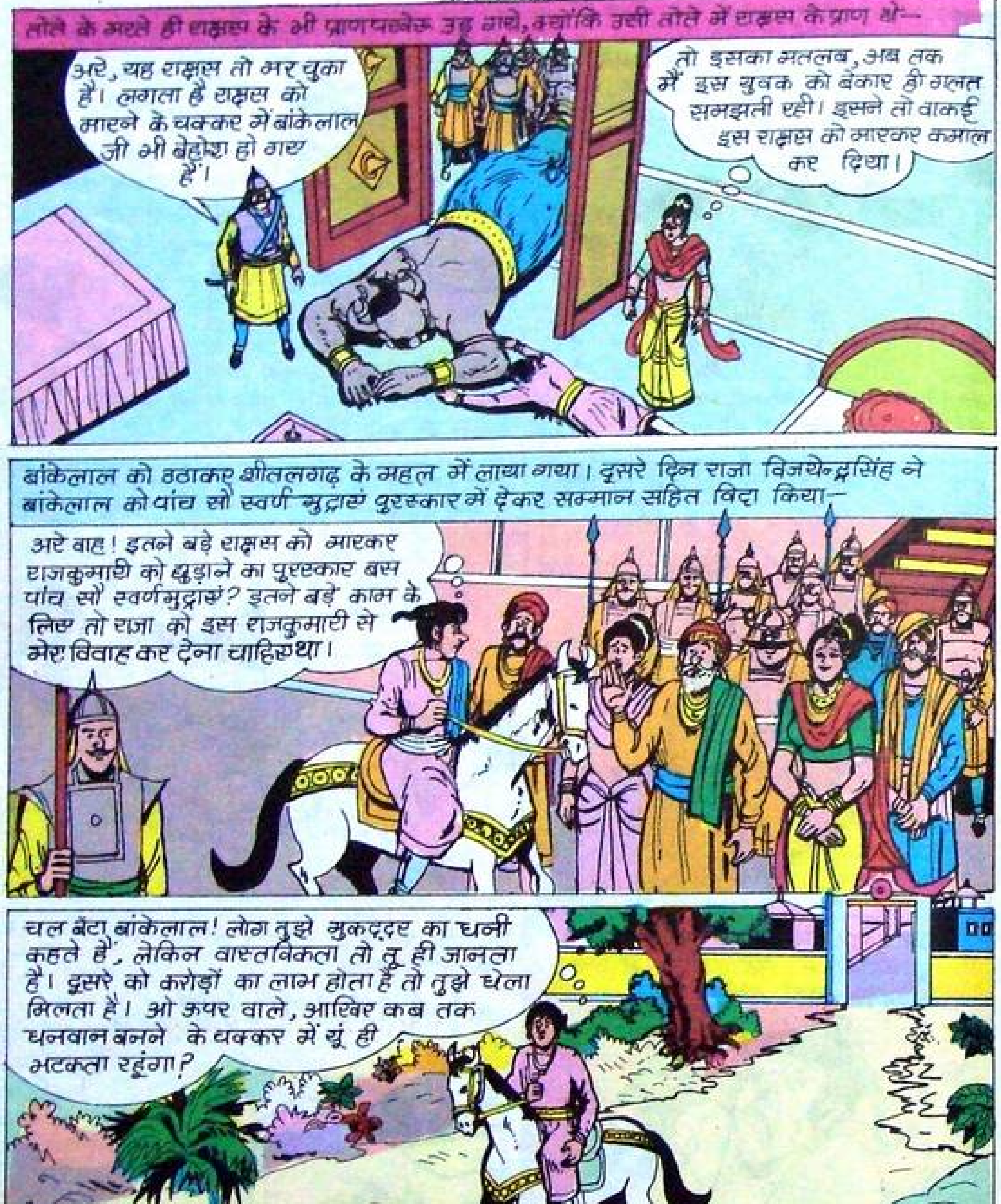
तोते के मरते ही राक्षस के भी प्राणपखेरू उड़ गये, क्योंकि उसी तोते में राक्षस के प्राण थे—
अरे, यह राक्षस तो मर चुका है। लगता है राक्षस को मारने के चक्कर में बांकेलाल जी भी बेहोश हो गए हैं।
तो इसका मतलब, अब तक मैं इस युवक को बेकार ही गलत समझती रही। इसने तो वाकई इस राक्षस को मारकर कमाल कर दिया।
बांकेलाल को उठाकर शीतलगढ़ के महल में लाया गया। दूसरे दिन राजा विजयेन्द्रसिंह ने बांकेलाल को पांच सौ स्वर्ण-मुद्राएं पुरस्कार में देकर सम्मान सहित विदा किया—
अरे वाह! इतने बड़े राक्षस को मारकर राजकुमारी को छुड़ाने का पुरस्कार बस पांच सौ स्वर्णमुद्राएं? इतने बड़े काम के लिए तो राजा को इस राजकुमारी से मेरा विवाह कर देना चाहिए था।
चल बेटा बांकेलाल! लोग तुझे मुकद्दर का धनी कहते हैं, लेकिन वास्तविकता तो तू ही जानता है। दूसरे को करोड़ों का लाभ होता है तो तुझे धेला मिलता है। ओ ऊपर वाले, आखिर कब तक धनवान बनने के चक्कर में यूं ही भटकता रहूंगा?

समाप्त

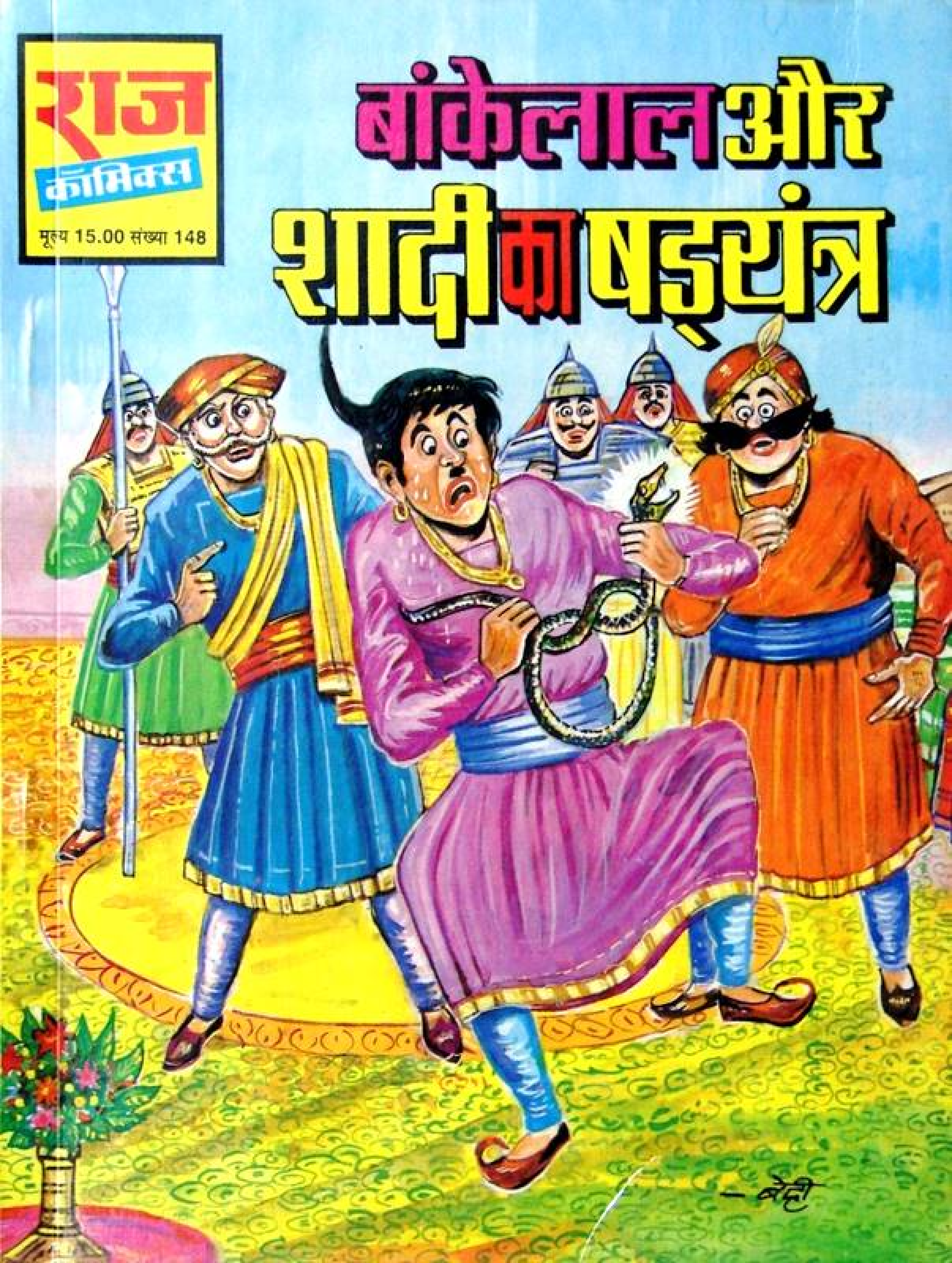

राज
कॉमिक्स
मूल्य 15.00 संख्या 148
बांकेलाल और
शादी का षड़यंत्र
-बेदी

बांकेलाल और शादी का षड्यन्त्र

चित्रांकन: बेदी ▫ कहानी: तरुणकुमार वाही ▫ सम्पादन: मनीष चन्द्र गुप्त

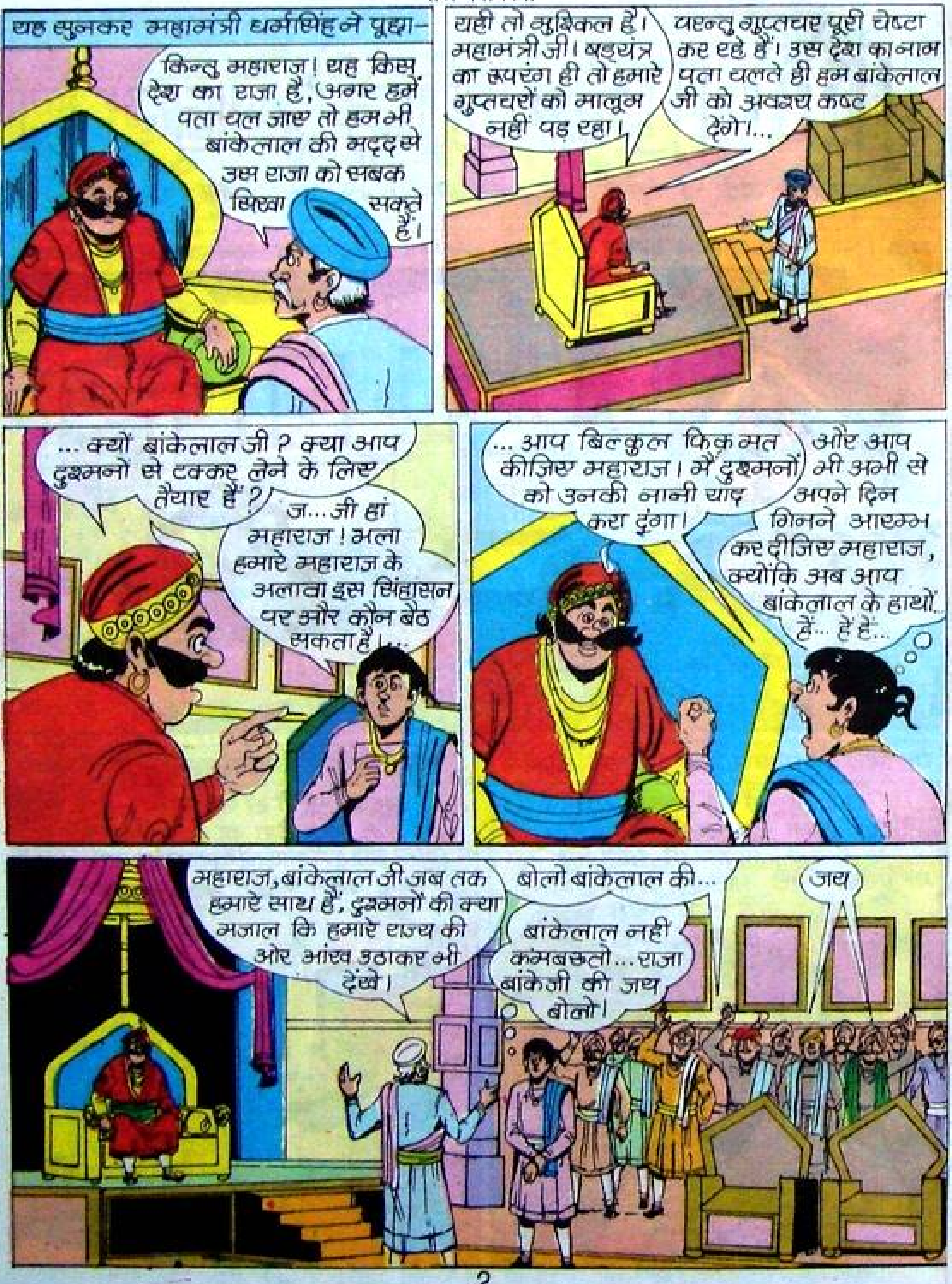
यह सुनकर महामंत्री धर्मसिंह ने पूछा-
किन्तु महाराज! यह किस देश का राजा है, अगर हमें पता चल जाए तो हम भी बांकेलाल की मदद से उस राजा को सबक सिखा सकते हैं।
यही तो मुश्किल है। महामंत्री जी। षड्यंत्र का रूपरंग ही तो हमारे गुप्तचरों को मालूम नहीं पड़ रहा।
परन्तु गुप्तचर पूरी चेष्टा कर रहे हैं। उस देश का नाम पता चलते ही हम बांकेलाल जी को अवश्य कष्ट देंगे।...
... क्यों बांकेलाल जी ? क्या आप दुश्मनों से टक्कर लेने के लिए तैयार हैं ?
ज...जी हां महाराज ! भला हमारे महाराज के अलावा इस सिंहासन पर और कौन बैठ सकता है।...
... आप बिल्कुल फिक्र मत कीजिए महाराज। मैं दुश्मनों को उनकी नानी याद करा दूंगा।
और आप भी अभी से अपने दिन गिनने आरम्भ कर दीजिए महाराज, क्योंकि अब आप बांकेलाल के हाथों हैं... हें हें...
महाराज, बांकेलाल जी जब तक हमारे साथ हैं, दुश्मनों की क्या मजाल कि हमारे राज्य की ओर आंख उठाकर भी देखे।
बोलो बांकेलाल की...
जय
बांकेलाल नहीं कमबख्तो... राजा बांकेजी की जय बोलो।

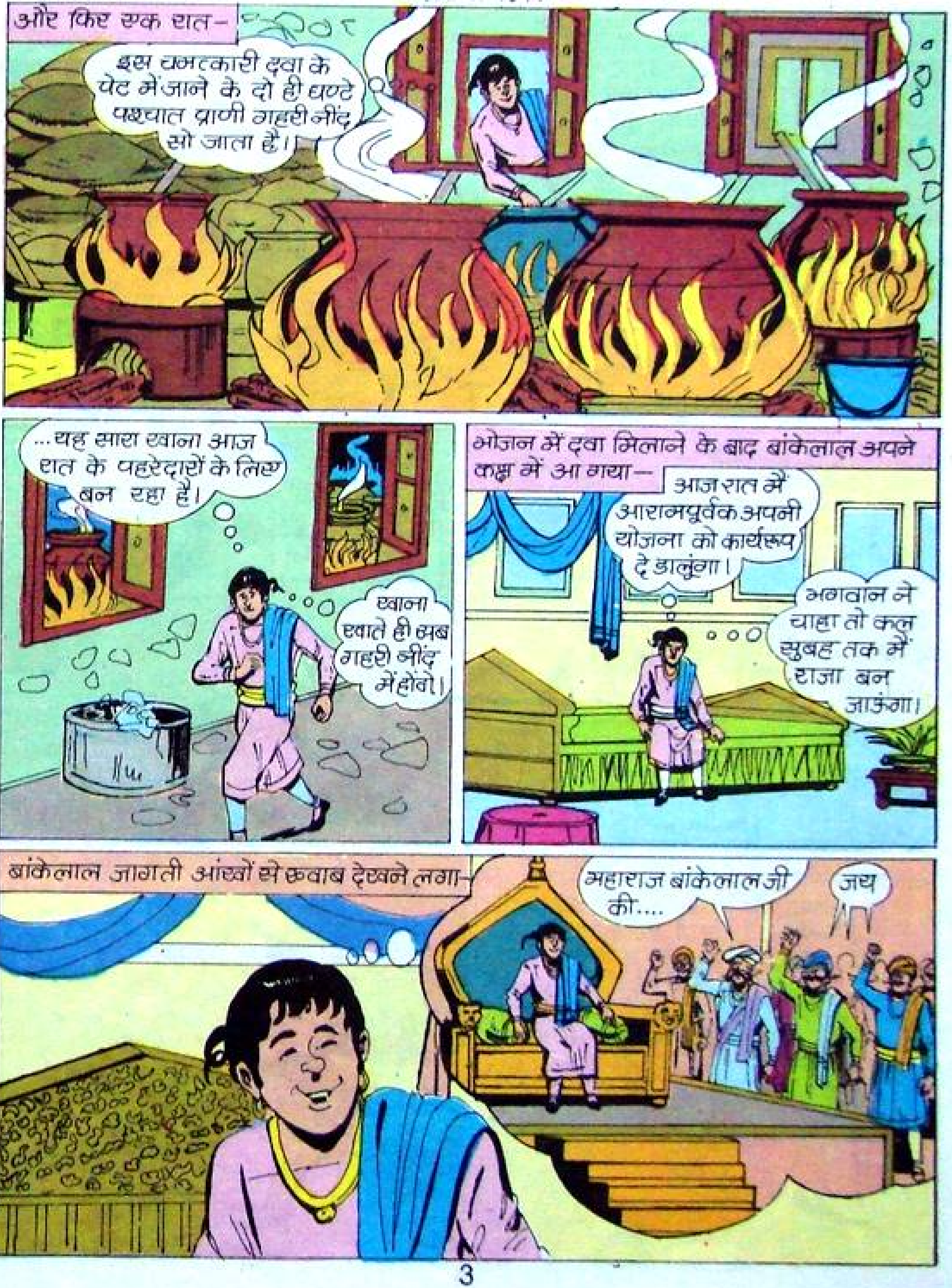
और फिर एक रात-
इस चमत्कारी दवा के पेट में जाने के दो ही घण्टे पश्चात प्राणी गहरी नींद सो जाता है।
...यह सारा खाना आज रात के पहरेदारों के लिए बन रहा है।
खाना खाते ही सब गहरी नींद में होंगे।
भोजन में दवा मिलाने के बाद बांकेलाल अपने कक्ष में आ गया-
आज रात मैं आरामपूर्वक अपनी योजना को कार्यरूप दे डालूंगा।
भगवान ने चाहा तो कल सुबह तक मैं राजा बन जाऊंगा।
बांकेलाल जागती आंखों से ख्वाब देखने लगा-
महाराज बांकेलाल जी की....
जय

उसी रात—
हर तरफ शांति छाई हुई है। लगता है पहरेदार मेरी दवा मिला भोजन खाकर गहरी नींद सो चुके हैं।
बांकेलाल राजा विक्रमसिंह के शयनकक्ष के बाहर पहुंच गया—
ओह, पहरेदार दीवार से लगे सो रहे हैं। वाह, मेरी खोपड़ी ने भी क्या शानदार योजना बनाई है।
वह द्वार खोलकर चुपचाप भीतर आ गया—
वह रहे महाराज विक्रमसिंह। हा... हा... हा। अब इस खंजर को मैं इनके सीने में भोंक कर इनकी जीवनलीला का अंत कर दूंगा। हा... हा... हा...
दबे पांव महाराज के पलंग के निकट पहुंच कर उसने अभी खंजर वाला हाथ ऊपर किया ही था कि—
अरे! यह क्या? पिछवाड़े की खिड़की के रास्ते इस समय कौन भीतर आ रहा है?
बांकेलाल की ऊपर की सांस ऊपर और नीचे की नीचे रह गई—
हे भगवान! अगर किसी आने वाले ने मुझे इस अवस्था में इस खंजर के साथ देख लिया तो मैं तो मुफ्त में ही मारा जाऊंगा। न जाने वह कौन होगा?
भाग बेटा बांकेलाल! छिप जा। वरना तेरी खैर नहीं।

बांकेलाल बेचारा इन्तजार ही करता रहा, लेकिन खिड़की से कोई मानव भीतर नहीं आया बल्कि—
इधर बांकेलाल ने जब कुछ देर इन्तजार करने के पश्चात् भी किसी को भीतर आते न देखा—
लगता है, मैं बेकार ही डर गया था। खिड़की अवश्य हवा से हिली होगी।
यह सोचकर वह पलंग के नीचे से बाहर निकलने लगा कि तभी उसका हाथ सांप से टकरा गया—
ओह! यह क्या है?
अंधेरे में टटोलते हुए उसने सांप को रस्सी समझ-कर उठा लिया—
रस्सी? रस्सी का यहां क्या काम है?
तभी उसके दिमाग में एक अन्य विचार कौंधा—
क्यों न इसी रस्सी का फंदा बनाकर महाराज के गले में कस दूं। आवाज तक नहीं होगी।
इतना सोचकर उसने खंजर वापिस जेब में रखा और सांप की रस्सी का फंदा बनाकर वह महाराज की ओर बढ़ा—
हा हा हा केवल कुछ सांसें और भर ले राजा विक्रम सिंह!

लेकिन ठीक उसी क्षण एक झटके के साथ द्वार खुल गया। महामंत्री धर्मसिंह ने अपने सैनिकों के साथ वहां प्रवेश किया और भीतर बांके पर नजर पड़ते ही महामंत्री आश्चर्य से बोले—
बांकेलाल जी! आप... इस वक्त... यहां...?
ओह! महामंत्रीजी! हो गया अब गड़बड़ घोटाला। बेटा, बांके, अब तू नहीं बच सकता।
अचानक महामंत्री की निगाहें बांके के हाथ में पकड़े सांप पर पड़ीं और वह चिल्लाया—
बांकेलाल जी! आपने सांप पकड़ रखा है।
...क...क क्या? स...स सांप?
ई ई ई
ही ही ही
डर गया न! मैं भी कहूं कि अभी तक तू डरा क्यों नहीं।
बांकेलाल ने तुरन्त सांप को एक तरफ उछाल दिया। एक सैनिक ने भाले की नोक पर उसे उठा लिया—
यह भयानक सर्प... उफ। यह माजरा क्या है महामंत्रीजी?
और बांकेलाल? तुम्हारे हाथ में वह सर्प कहां से आया।
राजा विक्रमसिंह के पूछने पर महामंत्री बोला—
महाराज! पहरेदारों ने आपके कक्ष की खिड़की के पास कोई साया जाते देखा था। इसलिए जब मैं निरीक्षण करने यहां पहुंचा तो...
ओह! और आप बांकेलाल जी?
म...म... मैं महाराज!

फिर अचानक बांकेलाल बात पलटकर बोला—
मैं भी उसी साये को देखकर ही यहां पहुंचा था। और जब यहां पहुंचकर मैंने इस सर्प को आपके पलंग के ऊपर पाया तो मुझे समझते देर न लगी महाराज कि यह सर्प किसने कक्ष में फेंका। और महाराज, मैंने सर्प को पकड़ लिया।
किन्तु बांकेलाल जी, फिर आप सर्प को देख कर एकाएक चौंक क्यों पड़े थे?
वो... वो दरअसल एकाएक आपके आ जाने से मैं भूल ही गया था कि मेरे हाथ में सांप है।
तभी राजा विक्रमसिंह महामंत्री की ओर मुड़कर बोले—
यह सब क्या चक्कर है महामंत्री? हमारी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा।
महाराज, शायद वही साया आपको समाप्त करने के इरादे से इस सांप को यहां फेंक गया था।...
... अगर आज बांकेलाल जी न होते तो शायद आप...
ओह, इतनी बड़ी साजिश! लेकिन ये पहरेदार कहां मर गए थे?
उन्हें कोई तीक्ष्ण बेहोशी की दवा खिला दी जान पड़ती है, महाराज। वे सब बेहोश पड़े हैं।
ओह!
बांकेलाल, तुमने हमारे प्राण बचाकर हम पर बहुत बड़ा उपकार किया है। हम तुम्हारे ऋणी हैं।
क्यों शर्मिंदा करते हैं महाराज! यह तो मेरा फर्ज था।
बाल-बाल बचा।

उस रात्रि की घटना के पश्चात तो बांकेलाल जैसे महाराज की आंखों का तारा बन गया। वे हर पल उसी की तारीफ के पुल बांधा करते। फिर एक दिन–
बांकेलाल! हमें बहुत दिन हो गए शिकार पर गए।
शिकार
??
हम सोच रहे हैं कि कल हम प्रातः ही शिकार खेलने जाएंगे...
...और हमारे साथ केवल तुम शिकार पर चलोगे।
क्षमा करें महाराज। लेकिन आपका अकेले शिकार पर इस प्रकार जाना उचित नहीं।
हम बांकेलाल को साथ ले जा रहे हैं महामंत्री। आपको चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं।
मैं भी कई दिनों से राजा को मारने की योजना नहीं बना सका। अगर शिकार के दौरान...
तुम क्या सोच रहे हो बांकेलाल?
जी हां, महाराज! अवश्य! आपको शिकार पर अवश्य चलना चाहिए। मैं भी आपके साथ जरूर चलूंगा।
अगर बांकेलालजी साथ जा रहे हैं तो फिर मुझे कोई चिन्ता नहीं रहेगी। मैं सभी इन्तजाम किये देता हूं महाराज!

अगले दिन प्रातः ही वे एक रथ पर सवार होकर शिकार खेलने चल पड़े-
देखो बांकेलाल! आज मौसम भी शिकार के अनुकूल है।
जी हां, महाराज!
और मौका भी अच्छा है। आज शाम तक आपके सिर का मुकुट मेरे सिर पर शोभायमान होगा महाराज।
जब महाराज का ध्यान किसी शिकार पर होगा, तब मैं तेज गति से चलते हुए रथ से महाराज को धक्का दे दूंगा।
तभी राजा विक्रमसिंह चीख पड़े-
अरे, हिरण! रथ तेज दौड़ाओ बांकेलाल! अन्यथा हिरण हमारे हाथ से निकल जायेगा।
अभी लीजिये महाराज!
बांकेलाल ने घोड़ों पर चाबुक बरसानी आरम्भ की-
और तेज, हिरण हाथ से नहीं निकलना चाहिए।
सड़ाक सड़ाक
जबकि कुछ ही दूर-
सावधान! रथ इधर ही आ रहा है।
जैसे ही वह सामने से गुजरे तुम राजा का निशाना लेकर तीर छोड़ देना।

उधर बांकेलाल—
यह गया मेरा तीर
यही मौका है।
रथ पूरी गति से दौड़ रहा है। गिरने के बाद महाराज की एक भी हड्डी साबुत नहीं बचेगी।
मन ही मन यह सोचते हुए एकाएक बांकेलाल ने लगाम छोड़कर महाराज को कसकर पकड़ लिया—
अरे! बांकेलाल। यह क्या कर रहे हो?
तेरा समय पूरा हो गया राजा।
लेकिन इससे पूर्व कि वह महाराज को धक्का दे पाता, एक तीर हवा में सरसराया और—
सर्र ईई
आह!
बांकेलाल के मुंह से एक दर्दभरी चीख निकल गई—
आऽऽऽह महाराज
भागो..
ओह, तो उन घुड़सवारों ने तीर फेंका था। मैं अभी उन्हें मजा चखाता हूं।

क्रोध में भरे महाराज विक्रमसिंह ने तुरन्त दो तीर एक साथ धनुष पर रखे और घुड़सवारों की ओर निशाना साधकर छोड़ दिया। अगले ही पल वे दोनों तीर उन दोनों घुड़सवारों के शरीरों में धंस गए—
आह मरा!
खच्च
खच्च
इधर राजा विक्रमसिंह ने तुरन्त घोड़ों को काबू में किया और रथ को वापिस महल की ओर मोड़ दिया—
घबराओ नहीं बांकेलाल! हमने उन दोनों को समाप्त कर दिया है।
आ...ह...
और तुम्हारे कंधे से तीर भी हमने निकाल फेंका है।
हे भगवान! यह तू मेरे साथ कैसा छल कर रहा है। अगर मुझे पहले ही बता देता कि कोई तीर आकर राजा को लगने वाला है तो मैं उसे धक्का देने की क्यों सोचता।
बांकेलाल! अपने प्राणों की परवाह न करते हुए तुमने आज फिर हमारे प्राण बचा लिये।
आह!
यह सुनते ही बांकेलाल मन ही मन जलभुन गया—
अरे दुष्ट राजा! मैं तो तुझे समाप्त करने की सोच रहा था कमबख्त। अगर इस समय मैं घायल न होता तो अभी तुझे चलते रथ से धक्का दे देता। आ...ह!
फिर महल पहुंचकर बांकेलाल की मरहम-पट्टी कर दी गई—
बांकेलाल इन्सान नहीं भगवान का अवतार है, महाराज।
ठीक कहते हो महामंत्रीजी।
भगवान नहीं मूर्ख, शैतान का अवतार कह।

उसके बाद कुछ दिनों तक तो बांके पलंग से उठ भी न पाया। फिर एक दिन—
बांके जी, क्या मैं अन्दर आ सकता हूं?
अगर कोई आवश्यक कार्य है तो आओ, अन्यथा हमारे आराम में विघ्न मत डालो।
कार्य तो आवश्यक ही है बांकेलालजी।
कहो क्या काम है?
थाल में स्वर्ण मुद्राएं या हीरे-मोती तो नहीं लाया ये मेरे लिए?
महाराज ने आपकी सेहत के लिए यह तोहफा तुरन्त ग्रहण करने के लिए भेजा है।
ओह!
न जाने इसमें क्या होगा?
बांकेलाल ने जब तोहफे पर ढका कपड़ा हटाकर देखा—
सिर्फ फूलों का एक हार! लानत है ऐसे तोहफे पर।
किन्तु इस दरबारी के सामने तो इसे ग्रहण करना ही होगा।
किन्तु, जैसे ही बांकेलाल फूलों का हार गले में डालने लगा, कि अचानक उसे एक बेहद जोर की छींक आ गई—
आऽऽऽ छी
और फूलों का हार झटके के साथ जमीन पर जा गिरा।

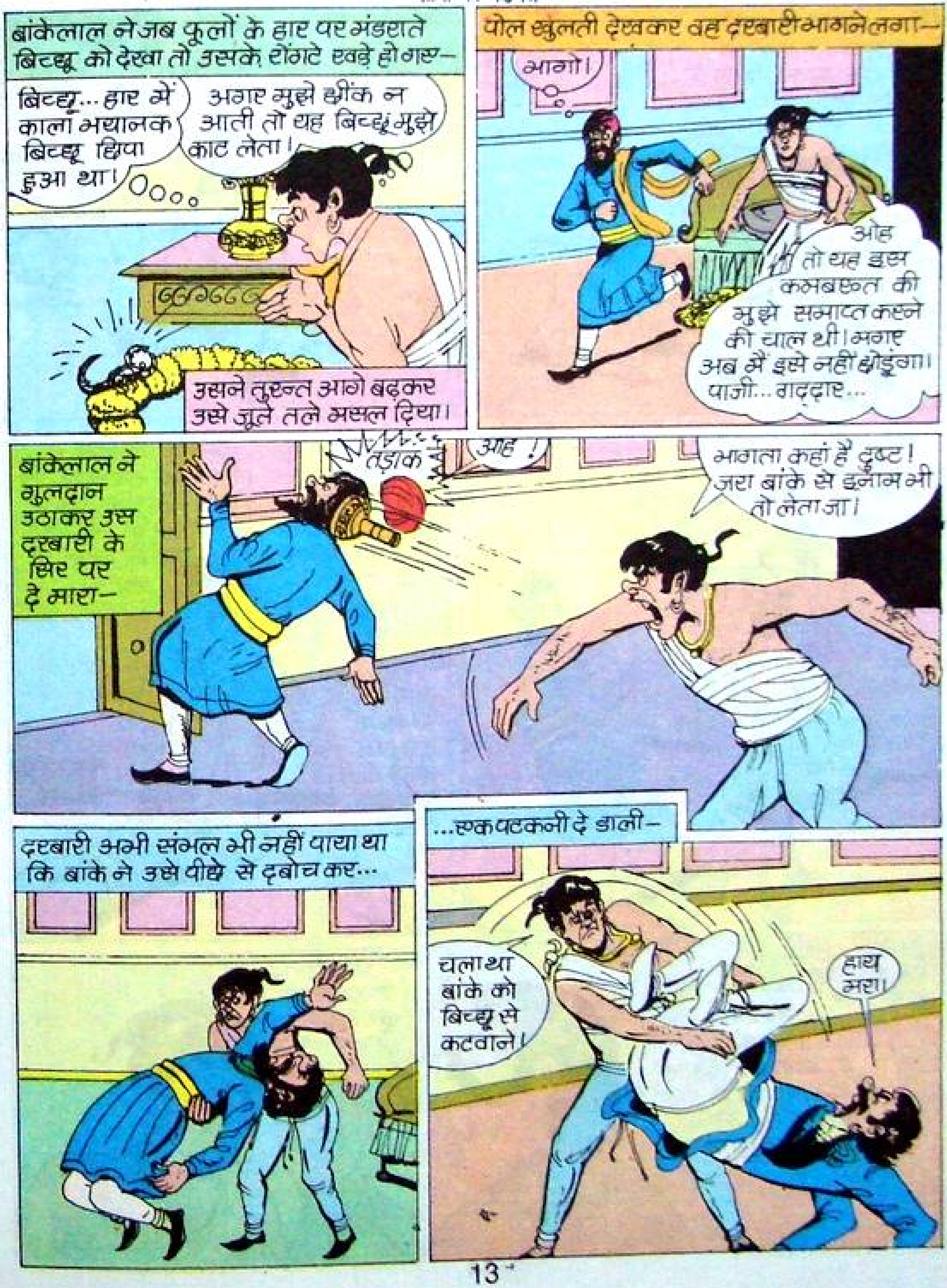
बांकेलाल ने जब फूलों के हार पर मंडराते बिच्छू को देखा तो उसके रोंगटे खड़े हो गए—
बिच्छू... हार में काला भयानक बिच्छू छिपा हुआ था।
अगर मुझे छींक न आती तो यह बिच्छू मुझे काट लेता।
उसने तुरन्त आगे बढ़कर उसे जूते तले मसल दिया।
पोल खुलती देखकर वह दरबारी भागने लगा—
भागो।
ओह तो यह इस कमबख्त की मुझे समाप्त करने की चाल थी। मगर अब मैं इसे नहीं छोड़ूंगा। पाजी... गद्दार...
बांकेलाल ने गुलदान उठाकर उस दरबारी के सिर पर दे मारा—
तड़ाक
आह!
भागता कहां है दुष्ट! जरा बांके से इनाम भी तो लेता जा।
दरबारी अभी संभल भी नहीं पाया था कि बांके ने उसे पीछे से दबोच कर...
...एक पटकनी दे डाली—
चला था बांके को बिच्छू से कटवाने।
हाय मरा।

...तुझे शायद नहीं मालूम कि बांके का दूसरा नाम भी बिच्छू है, जिसका काटा पानी भी नहीं मांगता!
मुझे क्षमा कर दो, बांकेलाल!
और तभी बांकेलाल पुनः चौंक पड़ा—
अरे! नकली दाढ़ी?
हुम्म!
ओह, मेरी दाढ़ी! फंस गए!
अब कुछ भी छिपाना बेकार है मक्कार! जल्दी बता तू कौन है अन्यथा अभी मैं सैनिकों को बुलवाकर तुझे लटकवाता हूं फांसी पर।
फां... सी?
फांसी का नाम सुनते ही थर-थर कांपता हुआ वह बांके के कदमों में लेट गया, फिर गिड़गिड़ाता हुआ बोला—
नहीं बांकेलाल जी, मैं आपको सब कुछ सच-सच बता दूंगा। मगर भगवान के लिये मुझे फांसी लगने से बचालो।
ठीक है। अगर तुम सच बोलो तो मैं तुम्हें बचा सकता हूं।
दूसरे ही पल वह उठ खड़ा हुआ और बोला—
मेरा नाम लोटनचन्द है, बांकेलाल। और मैं चन्दनगढ़ के राजा चन्दनसिंह का गुप्तचर हूं।
चन्दनगढ़ के राजा चन्दनसिंह का गुप्तचर??

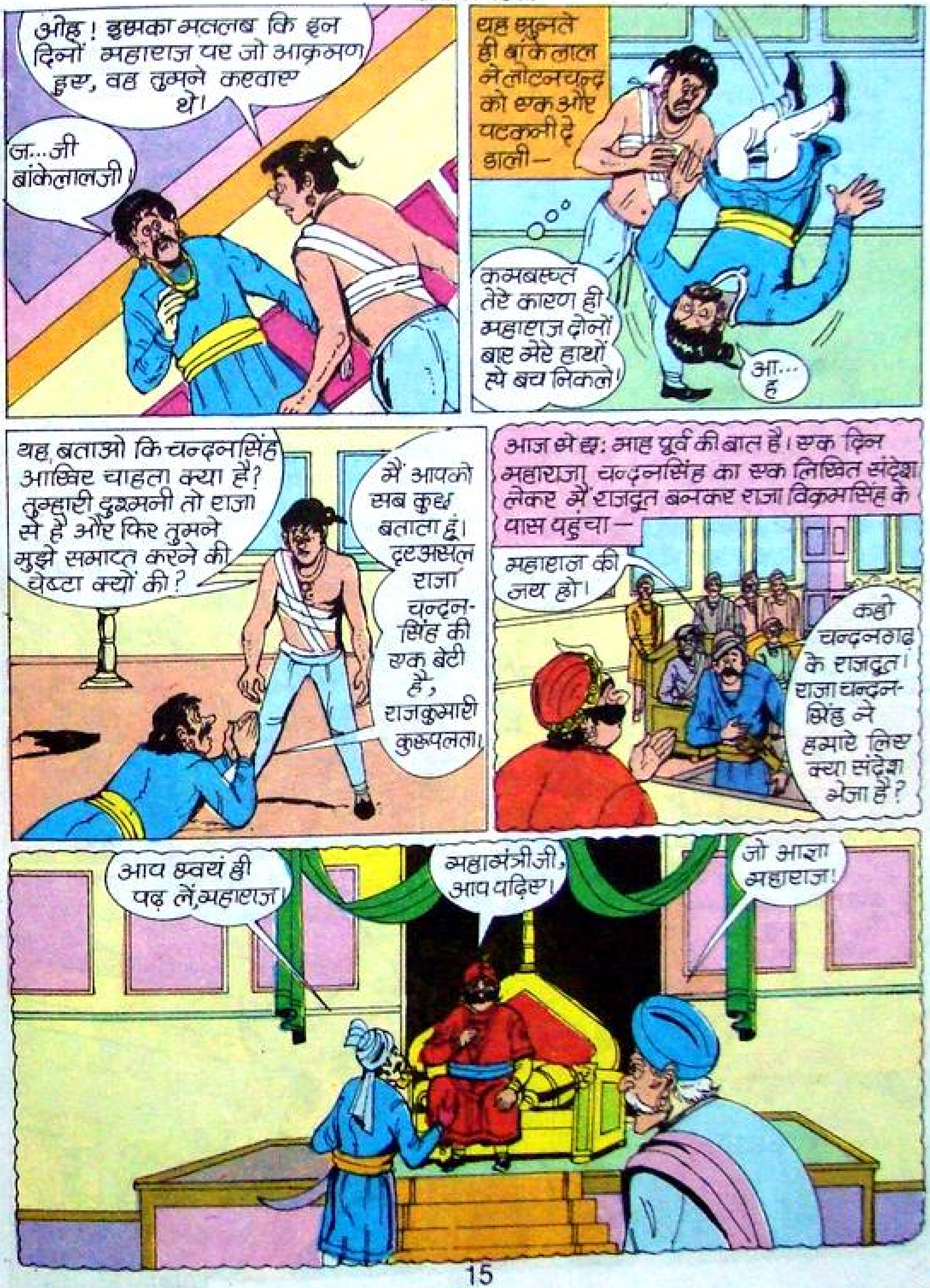
ओह! इसका मतलब कि इन दिनों महाराज पर जो आक्रमण हुए, वह तुमने करवाए थे!
ज...जी बांकेलालजी!
यह सुनते ही बांकेलाल ने लोटनचन्द को एक और पटकनी दे डाली—
कमबख्त तेरे कारण ही महाराज दोनों बार मेरे हाथों से बच निकले!
आ... ह
यह बताओ कि चन्दनसिंह आखिर चाहता क्या है? तुम्हारी दुश्मनी तो राजा से है और फिर तुमने मुझे समाप्त करने की चेष्टा क्यों की?
मैं आपको सब कुछ बताता हूं। दरअसल राजा चन्दन-सिंह की एक बेटी है, राजकुमारी कुरूपलता।
आज से छ: माह पूर्व की बात है। एक दिन महाराजा चन्दनसिंह का एक लिखित संदेश लेकर मैं राजदूत बनकर राजा विक्रमसिंह के पास पहुंचा—
महाराज की जय हो।
कहो चन्दनगढ़ के राजदूत! राजा चन्दन-सिंह ने हमारे लिए क्या संदेश भेजा है?
आप स्वयं ही पढ़ लें, महाराज!
महामंत्रीजी, आप पढ़िए।
जो आज्ञा महाराज!

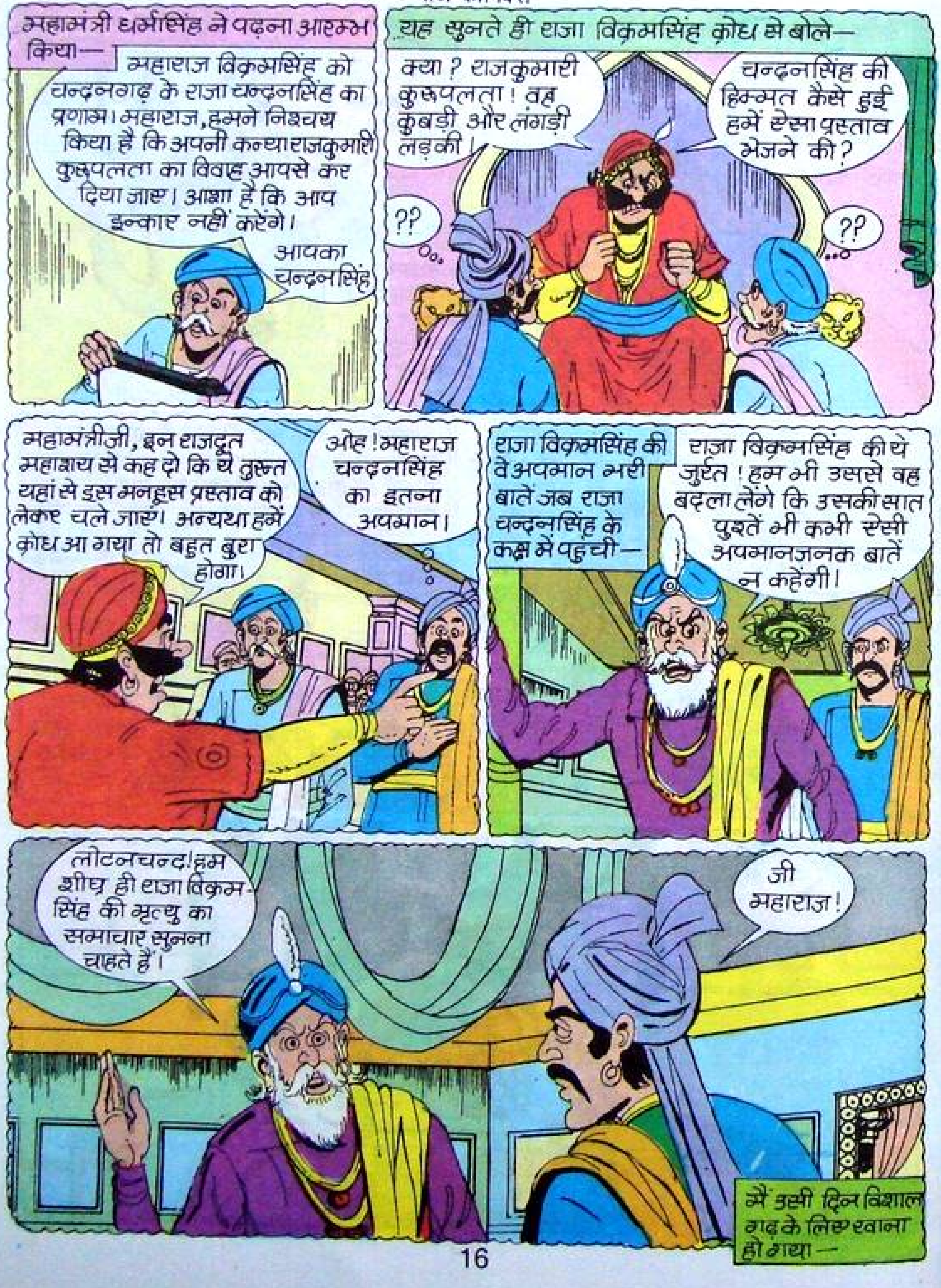

महामंत्री धर्मसिंह ने पढ़ना आरम्भ किया—
महाराज विक्रमसिंह को चन्दनगढ़ के राजा चन्दनसिंह का प्रणाम। महाराज, हमने निश्चय किया है कि अपनी कन्या राजकुमारी कुरूपलता का विवाह आपसे कर दिया जाए। आशा है कि आप इन्कार नहीं करेंगे।
आपका चन्दनसिंह
यह सुनते ही राजा विक्रमसिंह क्रोध से बोले—
क्या? राजकुमारी कुरूपलता! वह कुबड़ी और लंगड़ी लड़की!
चन्दनसिंह की हिम्मत कैसे हुई हमें ऐसा प्रस्ताव भेजने की?
??
??
महामंत्रीजी, इन राजदूत महाशय से कह दो कि ये तुरन्त यहां से इस मनहूस प्रस्ताव को लेकर चले जाएं। अन्यथा हमें क्रोध आ गया तो बहुत बुरा होगा।
ओह! महाराज चन्दनसिंह का इतना अपमान।
राजा विक्रमसिंह की ये अपमान भरी बातें जब राजा चन्दनसिंह के कक्ष में पहुंची—
राजा विक्रमसिंह की ये जुर्रत! हम भी उससे वह बदला लेंगे कि उसकी सात पुश्तें भी कभी ऐसी अपमानजनक बातें न कहेंगी।
लोटनचन्द! हम शीघ्र ही राजा विक्रमसिंह की मृत्यु का समाचार सुनना चाहते हैं।
जी महाराज!
मैं उसी दिन विशाल गढ़ के लिए रवाना हो गया—

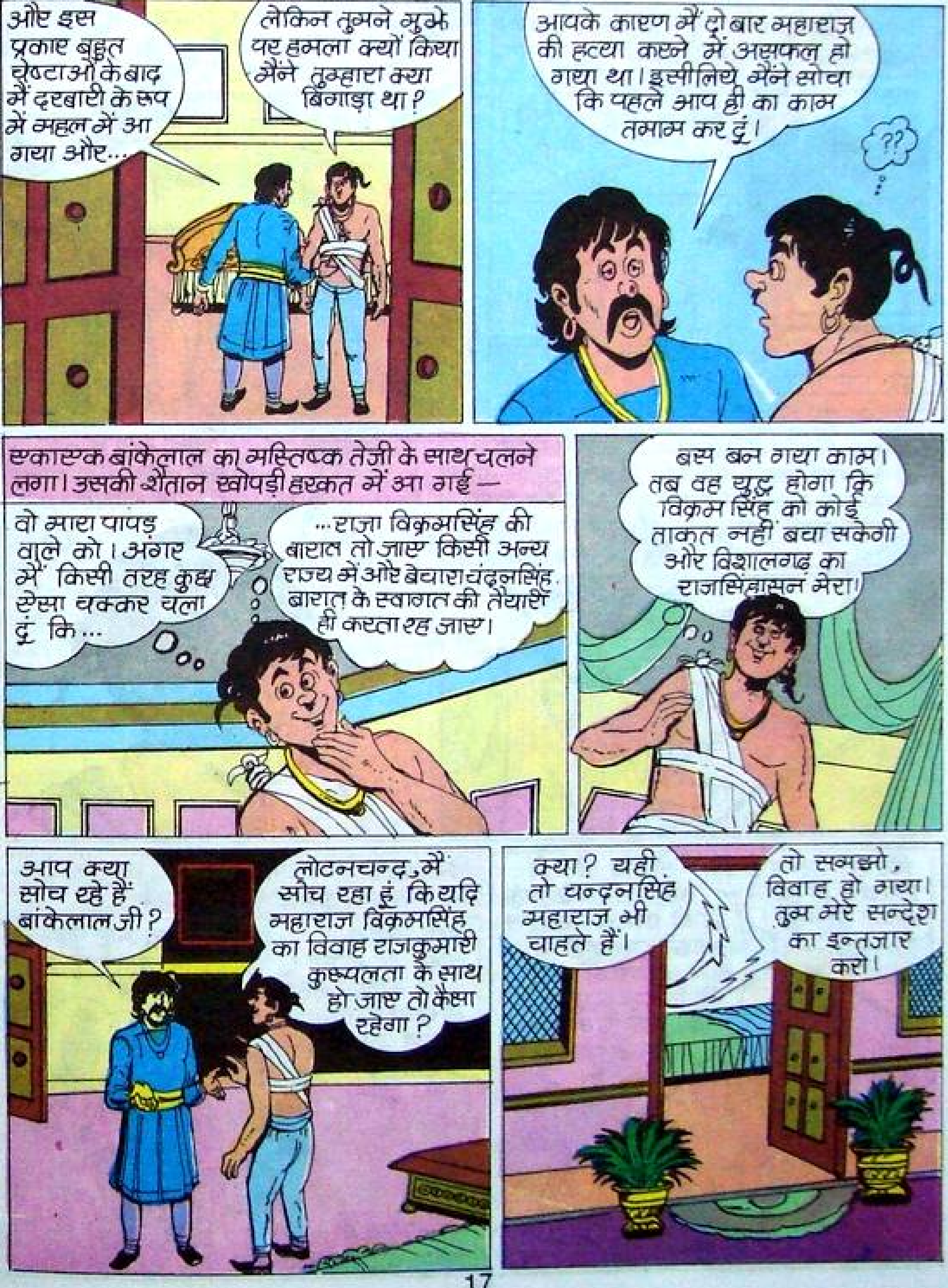
और इस प्रकार बहुत चेष्टाओं के बाद मैं दरबारी के रूप में महल में आ गया और...
लेकिन तुमने मुझ पर हमला क्यों किया मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था?
आपके कारण मैं दो बार महाराज की हत्या करने में असफल हो गया था। इसीलिये मैंने सोचा कि पहले आप ही का काम तमाम कर दूं।
??
एकाएक बांकेलाल का मस्तिष्क तेजी के साथ चलने लगा। उसकी शैतान खोपड़ी हरकत में आ गई—
वो मारा पापड़ वाले को। अगर मैं किसी तरह कुछ ऐसा चक्कर चला दूं कि...
...राजा विक्रमसिंह की बारात तो जाए किसी अन्य राज्य में और बेचारा चंद्रसिंह बारात के स्वागत की तैयारी ही करता रह जाए।
बस बन गया काम। तब वह युद्ध होगा कि विक्रम सिंह को कोई ताकत नहीं बचा सकेगी और विशालगढ़ का राजसिंहासन मेरा।
आप क्या सोच रहे हैं बांकेलाल जी?
लोटनचन्द, मैं सोच रहा हूं कि यदि महाराज विक्रमसिंह का विवाह राजकुमारी कुष्पलता के साथ हो जाए तो कैसा रहेगा?
क्या? यही तो चन्दनसिंह महाराज भी चाहते हैं।
तो समझो, विवाह हो गया। तुम मेरे सन्देश का इन्तजार करो।

फिर एक दिन जब महाराज विक्रमसिंह अभी दरबार बर्खास्त करके ही हटे थे –
महाराज की जय हो।
अरे, बांकेलाल तुम? कहो, कैसे आना हुआ? सब कुशल से तो है ना!
मुझे मेरा स्वप्न आपके पास खींच लाया है।
स्वप्न? हम समझे नहीं बांकेलाल!
स्वप्न!
महाराज! रात मैंने स्वप्न में आपका विवाह कौशल नरेश की सुपुत्री से सम्पन्न होते हुए देखा।
कौशल नरेश? अरे! आज ही तो उन्होंने अपनी पुत्री के विवाह का प्रस्ताव भेजा है।
क्या?
वाह, बेटा बांके! बन गया तेरा काम तो शायद।
विवाह? परन्तु उसके विषय में तो हमने सोचा ही नहीं।
तो अब सोच लें महाराज! बांकेलाल जी ने समय पर बहुत अच्छी बात कही है। आप कहें तो मैं आज ही विवाह के प्रस्ताव की मंजूरी कौशल नरेश के पास भेज दूं।
फिर बांकेलाल व महामंत्री के बहुत जोर देने पर महाराज इंकार नहीं कर सके –
अब जैसी तुम दोनों की इच्छा। आप कौशल नरेश के पास हमारे विवाह का प्रस्ताव भिजवा दें।
राजकुमारी पुष्पलता तो बहुत सुन्दर भी है।
महामंत्री व बांकेलाल कक्ष से बाहर निकल गए।

इधर एक शाम बांकेलाल अपनी योजनानुसार लोटनचंद के पास पहुंचा और उसे एक लिखित संदेशा देकर बोला—
लोटन चंद! महाराज विवाह के लिए तैयार हो गए हैं। यह संदेश जाकर अपने महाराज चन्दनसिंह को दे देना।
क्या सच? यह समाचार सुनकर महाराज फूले न समायेंगे।
और हां, तुम इसी समय चुपचाप चले जाओ।
मैं तुरन्त ही प्रस्थान कर रहा हूं बांकेजी!
लोटनचंद के जाने के बाद—
अब आयेगा मजा। जब बारात के स्वागत की तैयारियां तो चन्दनगढ़ और कोशलपुर दोनों राज्यों में होंगी, किन्तु बारात पहुंचेगी केवल कौशलपुर हा...हा... हा!
...महाराज विक्रमसिंह दो पाटन के बीच में बाकी बचा न कोय। विशालगढ़ का राजसिंहासन अब बांके का होय।
इधर कोशलपुर में राजकुमारी पुष्पलता के विवाह की तैयारियां चल रही थीं—
उधर चन्दनगढ़ में कुकपलता के विवाह की—
जल्दी करो। उफ! बारात आने का समय हो रहा है और अभी भोजन का इन्तजाम नहीं हुआ।
महामंत्री, कुछ व्यक्ति और इस कार्य में लगा दीजिए। हमें देरी बिल्कुल पसन्द नहीं।

यह विक्रमसिंह भी अजीब आदमी हैं। कल शाम ही विवाह का प्रस्ताव भेजा और आज शाम बारात लेकर आ रहे हैं। कुछ समय और दे देते तो ऐसा शानदार स्वागत करता कि देवता भी देखकर प्रसन्न हो उठते।
अरे भई। जल्दी करो। द्वार पर फूलों की लड़ियां लगा दो। मार्ग में इत्र बहा दो। स्वागत में किसी किस्म की कमी नहीं रहनी चाहिए।
जी जी महाराज।
महाराज चन्दन सिंह मानो प्रसन्नता से पागल हुए जा रहे थे।
राजकुमारी कुमुदलता को उसकी सखियां तैयार कर रही थीं—
आज तो राजकुमारी के भाग्य जाग गए हैं।
अरी हट, राजकुमारी के भाग्य सोये कब थे।
लाखों में एक है हमारी राजकुमारी
राजा की आयेगी बारात... रंगीली होगी रात...
उधर पूरी तैयारी के साथ विशालगढ़ में राजा विक्रमसिंह को हाथी पर बैठा दिया गया—
प्रस्थान करो।
महाराज विक्रम सिंह
जिन्दाबाद
और नाचती-गाती बारात कौशलपुर की ओर चल पड़ी—
कुछ दूर चलने के बाद मुझे बीमारी का बहाना बनाकर यहीं ठहरना है। भला युद्ध के मैदान में जाकर मरना है क्या?
वाह! सब कितने प्रसन्न दिखाई पड़ रहे हैं।

कुछ दूर पहुंचते ही बांकेलाल एकाएक त्यौरा कर जमीन पर गिर पड़ा–
अरे! बांकेलालजी को क्या हुआ?
आ... ह!
??
आह! महामंत्रीजी। मैं शायद बारात के साथ न चल सकूंगा। आप मुझे महल भिजवा दें।
ओह, ठीक है, बांकेलालजी। मैं आपको महल भिजवा देता हूं।
क्या हुआ बांकेलालजी को?
महाराज! बांकेलाल की तबीयत एकाएक खराब हो गई है। मैं इन्हें महल भिजवा रहा हूं।
ओह! फिर तो यह विवाह भी आज नहीं होगा।
यह सुनते ही बांकेलाल चीखकर बोला–
नहीं महाराज, अब यह विवाह नहीं रुक सकता। आप दुल्हन लेकर लौटिये, ईश्वर ने चाहा तो मैं एकदम भला-चंगा होकर महल में आपका स्वागत करूंगा। आह!
तभी महामंत्री के कहने से एक रथ वहां आ पहुंचा। बांकेलाल को उस रथ पर बिठा दिया–
अपना ध्यान रखना बांके।
आप मेरी फिक्र मत करें महाराज आ···ह
रथ उसे लेकर वापिस महल की ओर चल पड़ा–
शुक्र है, जान बची। केवल मैं ही जानता हूं कि कोशालपुर युद्धस्थल बनने वाला है। ऐसे में वहां जाना मौत को दावत देना था।

इधर चन्दनगढ़ में काफी समय इन्तजार करने के बाद भी जब राजा विक्रमसिंह बारात लेकर नहीं पहुंचे तो—
अब तो लग्न का मुहूर्त भी निकला जा रहा है। लोटनचन्द, तुम जाकर मालूम करो कि बारात अभी तक क्यों नहीं पहुंची ?
जी महाराज! मैं अभी चला करता हूं।
लोटनचन्द एक तेज-तर्रार घोड़े पर सवार हो कर विशालगढ़ की ओर चल पड़ा—
किन्तु अभी वह आधे रास्ते में ही पहुंचा था कि-
अरे! यह तो महाराज विक्रमसिंह की बारात है।
मगर यह तो कौशलपुर जा रही है।
आखिर माजरा क्या है?
उसने निकट से गुजरते एक बाराती से पूछा—
क्यों भाई। यह बारात क्या चंदनगढ़ नहीं जा रही ?
चन्दनगढ़ ? अरे भलेमानस राजा विक्रमसिंह की बारात तो कौशलपुर जा रही है। महाराज का विवाह राजकुमारी पुष्पलता से होने वाला है।

इतना सुनते ही लोलनचन्द के सीने पर सांप लोटने लगे—
इसका मतलब हमारे साथ धोखा हुआ है।
मैं अभी महाराज चन्दनसिंह को सारी स्थिति से अवगत कराता हूं। वे राजा विक्रमसिंह के साथ-साथ कोशलपुर को भी मिट्टी में मिला देंगे।
और फिर चन्दनसिंह के महल में—
क्या? विक्रमसिंह की ये जुर्रत! हम उसे नेस्तनाबूद कर देंगे।
सेनापति!
जी महाराज! आज्ञा कीजिये।
अपनी सारी सेना एकत्रित कीजिये। हम अपनी बेटी के लिये वर छीनकर लायेंगे।
जो आज्ञा महाराज!
किन्तु महाराज
इस सब में बहुत समय नष्ट हो जायेगा। लग्न का मुहूर्त निकल गया तो, फिर यह विवाह पांच वर्षों तक नहीं हो सकता।
क्या?
मेरी किस्मत में भगवान ने शायद यह दिन देखना नहीं लिखा।
राजा क्रोध में चिल्लाया—
लग्न का मुहूर्त नहीं निकलेगा। महामंत्री जी, राजकुमारी कुरूपलता हमारे साथ ही चलेगी। उसका ब्याह कोशलपुर में राजा विक्रमसिंह के साथ ही होगा।
ठीक है महाराज। मैं अभी सब बंदोबस्त किये देता हूं।

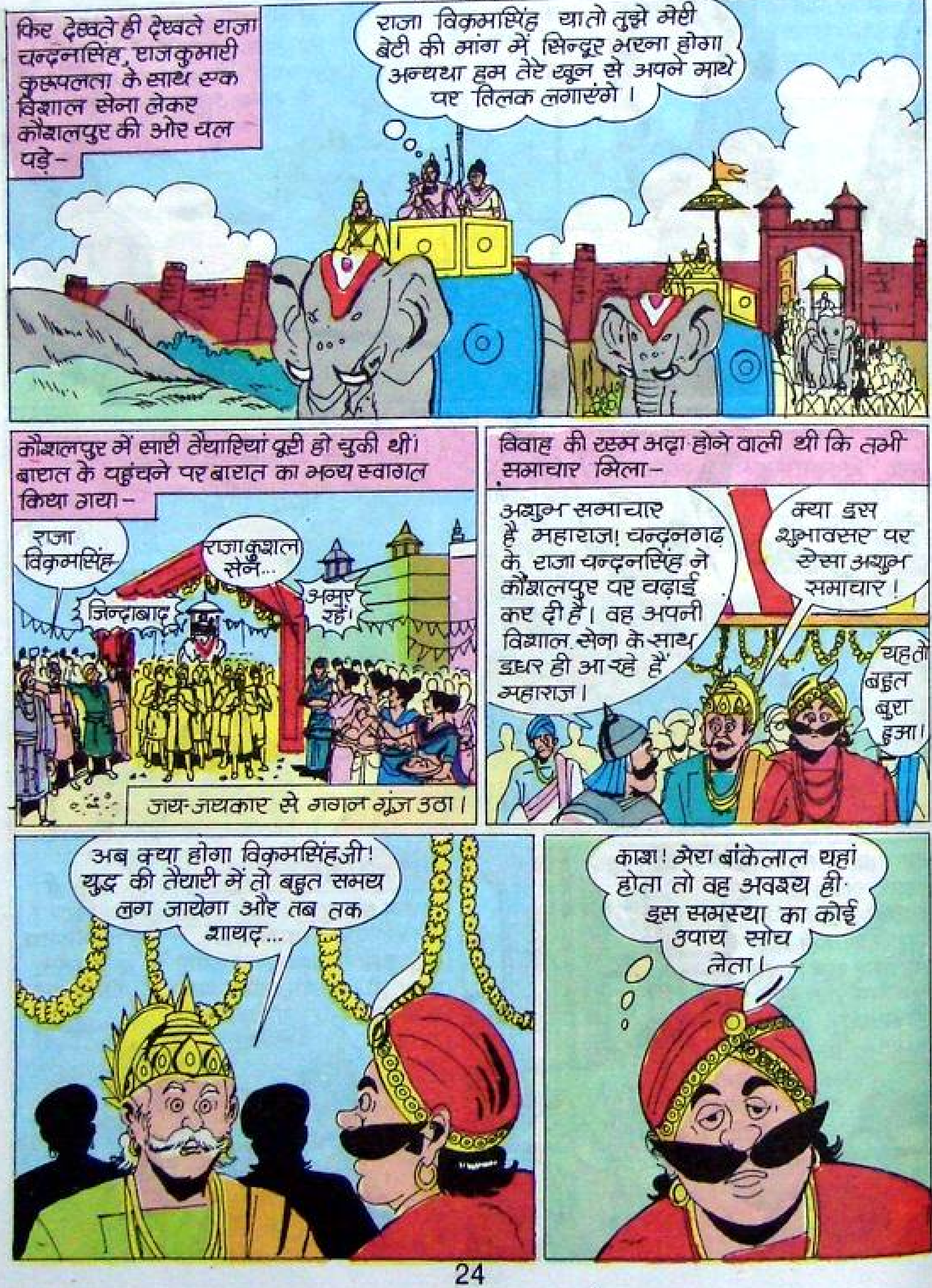

फिर देखते ही देखते राजा चन्दनसिंह, राजकुमारी कुरूपलता के साथ एक विशाल सेना लेकर कौशलपुर की ओर चल पड़े–
राजा विक्रमसिंह या तो तुझे मेरी बेटी की मांग में सिन्दूर भरना होगा अन्यथा हम तेरे खून से अपने माथे पर तिलक लगाएंगे।
कौशलपुर में सारी तैयारियां पूरी हो चुकी थीं। बारात के पहुंचने पर बारात का भव्य स्वागत किया गया–
राजा विक्रमसिंह
राजा कुशल सेन...
जिन्दाबाद
अमर रहें।
जय-जयकार से गगन गूंज उठा।
विवाह की रस्म अदा होने वाली थी कि तभी समाचार मिला–
अशुभ समाचार है महाराज! चन्दनगढ़ के राजा चन्दनसिंह ने कौशलपुर पर चढ़ाई कर दी है। वह अपनी विशाल सेना के साथ इधर ही आ रहे हैं महाराज।
क्या इस शुभावसर पर ऐसा अशुभ समाचार!
यह तो बहुत बुरा हुआ।
अब क्या होगा विक्रमसिंहजी! युद्ध की तैयारी में तो बहुत समय लग जायेगा और तब तक शायद...
काश! मेरा बांकेलाल यहां होता तो वह अवश्य ही इस समस्या का कोई उपाय सोच लेता।

आप क्या सोच रहे हैं विक्रमसिंह जी?
हम सोच रहे हैं महाराज कि कौशलपुर की इज्जत अब हमारी इज्जत है। चन्दनसिंह से युद्ध की तैयारी की जाये। हम स्वयं भी युद्ध लड़ने चलेंगे।

फिर जितना भी इन्तजाम हो सका, उतनी ही सेना लेकर राजा कुशलसेन, विक्रमसिंह के साथ रणभूमि की ओर चल पड़े–

दोनों सेनाएं आमने-सामने पहुंच गईं। तभी राजा चन्दनसिंह गरज पड़े–
राजा विक्रमसिंह! धोखेबाज! हमारी बेटी का विवाह प्रस्ताव मंजूर करके और फिर निश्चित समय पर बारात चन्दनगढ़ न लाकर तुमने हमारा ही नहीं, बल्कि राजा कुशलसेन का भी अपमान किया है।
कुसुमलता से विवाह??
कुसुमलता

राजा कुशलसेन! विक्रमसिंह का विवाह राजकुमारी पुष्पलता से नहीं, राजकुमारी कुरूपलता से तय हुआ है। अगर वायदे के मुताबिक यह विवाह न हुआ तो यहां रक्त की नदियां बह जाएंगी।
कुरूपलता का नाम सुनकर राजा कुशलसेन चौंक पड़े थे—
उफ्। कहीं यह वही मेरी नन्ही सी कुरूपलता तो नहीं।
महाराज! सोच क्या रहे हैं? युद्ध का बिगुल बजवा दीजिये।
राजा चन्दनसिंह को जब अपनी बात का कोई जवाब न मिला तो उन्होंने चीखकर आदेश दिया—
युद्ध!! आक्रमण!
??
नहीं ठहरो!
कुशलसेन ने चीखकर कुछ कहना चाहा।...
...परन्तु तब तक शोर मचाते सैनिक कुशलसेन की सेना पर टूट पड़े। मजबूरन कुशलसेन की सेना भी युद्ध में शामिल हो गई—
मारो मारो
काट डालो
नहीं, यह युद्ध नहीं होगा। महावत, हाथी को राजा चन्दनसिंह के हाथी के निकट ले चलो।
खच्च

चन्दनसिंह के हाथी के निकट पहुंचकर राजा कुशलसेन ने चीखकर कहा–
राजा चन्दनसिंह! अगर आपकी इच्छा युद्ध की हो तो अवश्य युद्ध होगा, किन्तु हम केवल तीन प्रश्नों का उत्तर जानना चाहते हैं।
!!
?
...क्या आपकी बेटी कुरूपलता की एक टांग नहीं है?
क्या उसकी पीठ पर एक कूबड़ है?
क्या उसकी दाईं बाजू पर उसका नाम गुदा है?
परन्तु आप यह सब कैसे जानते हैं?
इसका मतलब है मैंने जो कहा सच है!
तब तो यही मेरी खोई हुई बेटी है। एक ऋषि के शाप के कारण न केवल इसकी ये गत बनी, बल्कि ये हमसे पूरे अठारह बरस तक अलग रही।
और चन्दनसिंह। अब जब इसके शापमुक्त होने का समय आया है तो तुम युद्ध करना चाहते हो।
तब तो हमें तुरन्त युद्ध बन्द करना होगा।
हां, चन्दनसिंह। हमारी बड़ी बेटी कुरूपलता का विवाह राजा विक्रमसिंह के साथ ही होगा। यह हमारा वायदा है।
आज से अठारह बरस पूर्व की बात है। उन दिनों हम अपनी नवविवाहिता पत्नी के साथ रोजाना शिकार खेलने जाया करते थे। लेकिन एक दिन जब हमने एक खरगोश का शिकार करने के लिए तीर छोड़ा–
हे भगवान। लगता है आपका छोड़ा हुआ तीर किसी बालक को लगा है।
आह!
अरे! यह तो किसी बच्चे की चीख का स्वर है।
...हमने उधर जाकर देखा तो सचमुच एक बालिका वहां छटपटा रही थी–
ओह भगवान। इसकी टांग तो तीर से लगभग कट ही गई है। अब क्या होगा महाराज?
ऋषि कन्या!

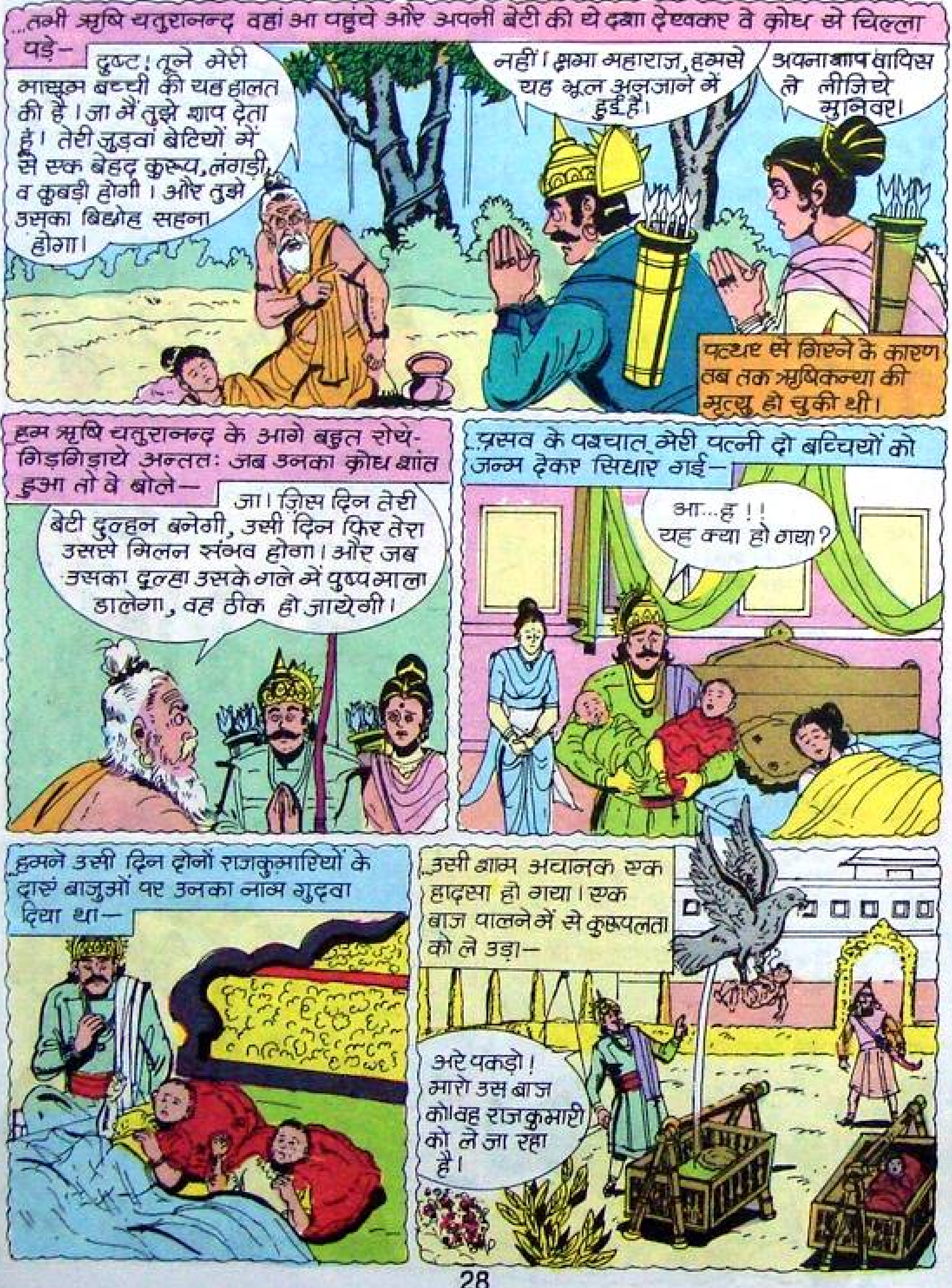
...तभी ऋषि चतुरानन्द वहां आ पहुंचे और अपनी बेटी की ये दशा देखकर वे क्रोध से चिल्ला पड़े–
दुष्ट! तूने मेरी मासूम बच्ची की यह हालत की है। जा मैं तुझे शाप देता हूं। तेरी जुड़वां बेटियों में से एक बेहद कुरूप, लंगड़ी, व कुबड़ी होगी। और तुझे उसका बिछोह सहना होगा।
नहीं! क्षमा महाराज, हमसे यह भूल अनजाने में हुई है।
अपना शाप वापिस ले लीजिये मुनिवर।
पत्थर से गिरने के कारण तब तक ऋषिकन्या की मृत्यु हो चुकी थी।
हम ऋषि चतुरानन्द के आगे बहुत रोये-गिड़गिड़ाये अन्ततः जब उनका क्रोध शांत हुआ तो वे बोले–
जा! जिस दिन तेरी बेटी दुल्हन बनेगी, उसी दिन फिर तेरा उससे मिलन संभव होगा। और जब उसका दूल्हा उसके गले में पुष्पमाला डालेगा, वह ठीक हो जायेगी।
प्रसव के पश्चात मेरी पत्नी दो बच्चियों को जन्म देकर सिधार गई–
आ...ह!! यह क्या हो गया?
हमने उसी दिन दोनों राजकुमारियों के दाएं बाजुओं पर उनका नाम गुदवा दिया था–
उसी शाम अचानक एक हादसा हो गया। एक बाज पालने में से कुरूपलता को ले उड़ा–
अरे पकड़ो! मारो उस बाज को! वह राजकुमारी को ले जा रहा है।

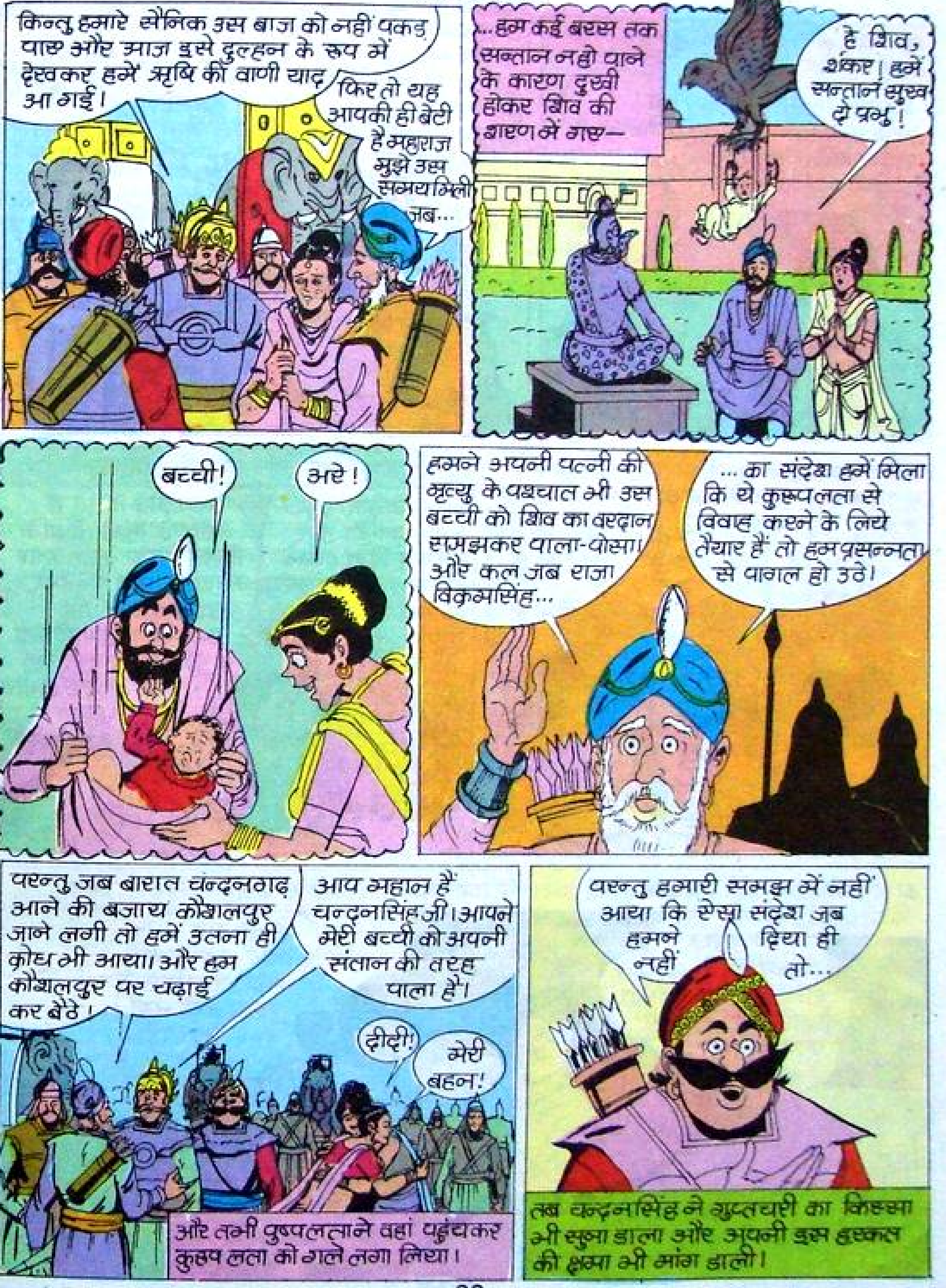
किन्तु हमारे सैनिक उस बाज को नहीं पकड़ पाए और आज इसे दुल्हन के रूप में देखकर हमें ऋषि की वाणी याद आ गई।
फिर तो यह आपकी ही बेटी है महाराज मुझे उस समय मिली जब...
...हम कई बरस तक सन्तान नही पाने के कारण दुखी होकर शिव की शरण में गए—
हे शिव, शंकर! हमें सन्तान सुख दो प्रभु!
बच्ची!
अरे!
हमने अपनी पत्नी की मृत्यु के पश्चात भी उस बच्ची को शिव का वरदान समझकर पाला-पोसा। और कल जब राजा विक्रमसिंह...
...का संदेश हमें मिला कि वे कुरूपलता से विवाह करने के लिये तैयार हैं तो हम प्रसन्नता से पागल हो उठे।
परन्तु जब बारात चन्दनगढ़ आने की बजाय कौशलपुर जाने लगी तो हमें उतना ही क्रोध भी आया। और हम कौशलपुर पर चढ़ाई कर बैठे।
आप महान हैं चन्दनसिंह जी। आपने मेरी बच्ची को अपनी संतान की तरह पाला है।
दीदी!
मेरी बहन!
और तभी पुष्पलता ने वहां पहुंचकर कुरूप लता को गले लगा लिया।
परन्तु हमारी समझ में नहीं आया कि ऐसा संदेश जब हमने दिया ही नहीं तो...
तब चन्दनसिंह ने गुप्तचरी का किस्सा भी सुना डाला और अपनी इस हरकत की क्षमा भी मांग डाली।

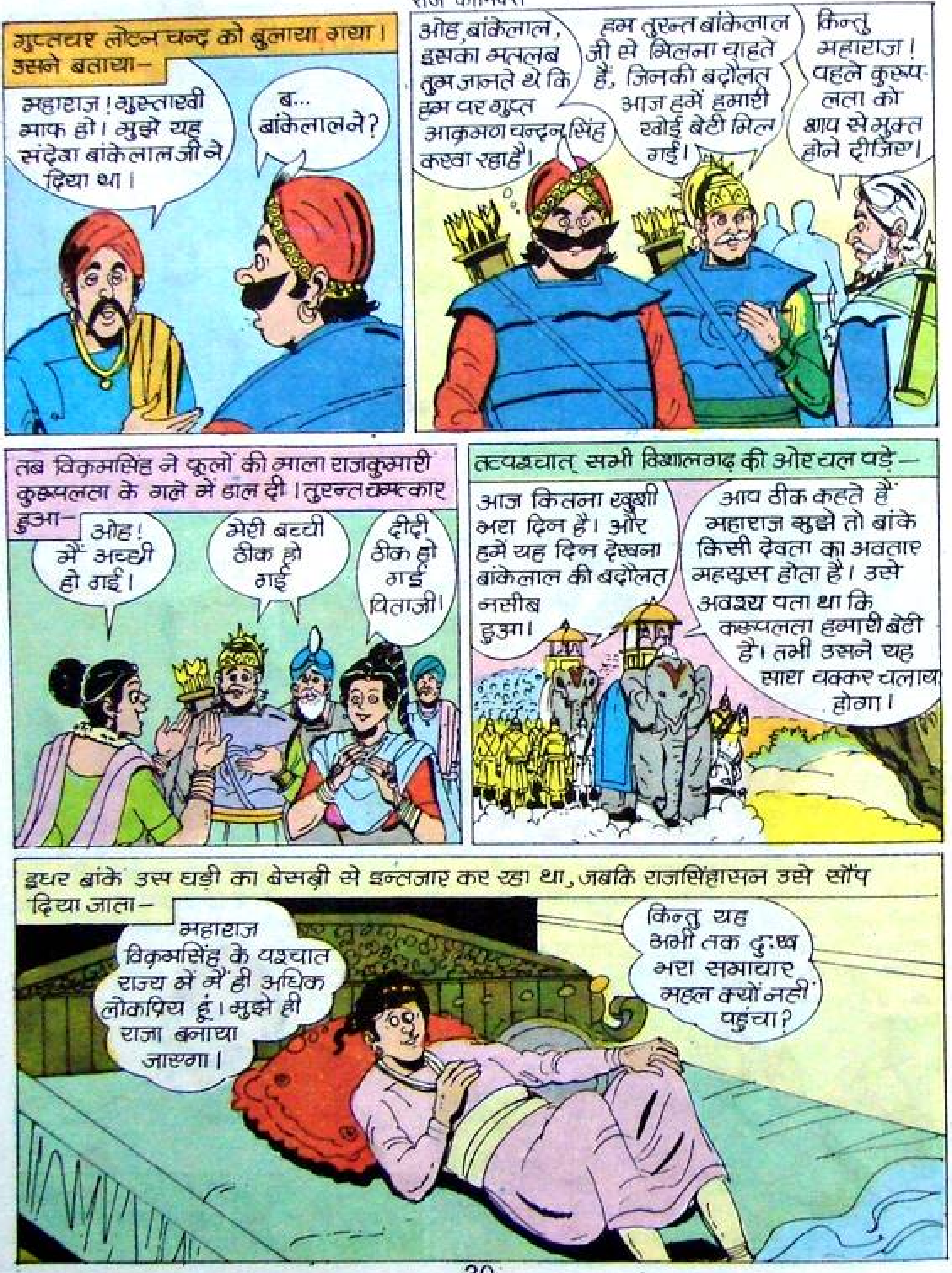

गुप्तचर लोचन चन्द को बुलाया गया। उसने बताया—
महाराज! गुस्ताखी माफ हो। मुझे यह संदेश बांकेलाल जी ने दिया था।
ब... बांकेलाल ने?
ओह, बांकेलाल, इसका मतलब तुम जानते थे कि हम पर गुप्त आक्रमण चन्दन सिंह करवा रहा है।
हम तुरन्त बांकेलाल जी से मिलना चाहते हैं, जिनकी बदौलत आज हमें हमारी खोई बेटी मिल गई।
किन्तु महाराज! पहले कुरूपलता को श्राप से मुक्त होने दीजिए।
तब विक्रमसिंह ने फूलों की माला राजकुमारी कुरूपलता के गले में डाल दी। तुरन्त चमत्कार हुआ—
ओह! मैं अच्छी हो गई।
मेरी बच्ची ठीक हो गई
दीदी ठीक हो गई पिताजी।
तत्पश्चात् सभी विशालगढ़ की ओर चल पड़े—
आज कितना खुशी भरा दिन है। और हमें यह दिन देखना बांकेलाल की बदौलत नसीब हुआ।
आप ठीक कहते हैं महाराज मुझे तो बांके किसी देवता का अवतार महसूस होता है। उसे अवश्य पता था कि कुरूपलता हमारी बेटी है। तभी उसने यह सारा चक्कर चलाया होगा।
इधर बांके उस घड़ी का बेसब्री से इन्तजार कर रहा था, जबकि राजसिंहासन उसे सौंप दिया जाता—
महाराज विक्रमसिंह के पश्चात राज्य में मैं ही अधिक लोकप्रिय हूं। मुझे ही राजा बनाया जाएगा।
किन्तु यह अभी तक दुःख भरा समाचार महल क्यों नहीं पहुंचा?

तभी द्वारपाल ने आकर सूचना दी—
बांकेलाल जी, चलिये। महाराज डोली लेकर महल आ पहुंचे हैं। और वे तुरन्त आपसे मिलना चाहते हैं। उनके साथ राजा चन्द्रनसिंह और कुशलसेन भी हैं।
क्या?
यह सुनते ही बांकेलाल के होश उड़ गए—
य... यह राजा चन्द्रनसिंह और कुशलसेन? लगता है तेरी चालें खुल चुकीं बेटा बांके।
चलिए बांकेलाल-जी!
मरता क्या न करता। उसे द्वारपाल के साथ चलना ही पड़ा—
भगवान! तूने मेरी किस्मत काली स्याही से क्यों लिखी है? तुझे जवाब देना होगा।
किन्तु जैसे ही बांकेलाल महल के मुख्य द्वार पर पहुंचा। महाराज विक्रमसिंह ने उसे गले से लगा लिया—
यही है हमारा प्यारा बांकेलाल।
बांकेलाल की...
जय!
आंय!
सभी बांकेलाल की जय जयकार कर उठे।
और फिर जब बांकेलाल को हकीकत पता चली तो उसने अपना सिर पीट लिया—
राजसिंहासन हाथ आ जाता तो पूरा खजाना मेरा होता। उफ, अगर मुझे पता होता कि यह सब होने वाला है तो मैं कभी महाराज को विवाह के लिए तैयार न करता। बहू हू हू हू अब मेरा क्या होगा?

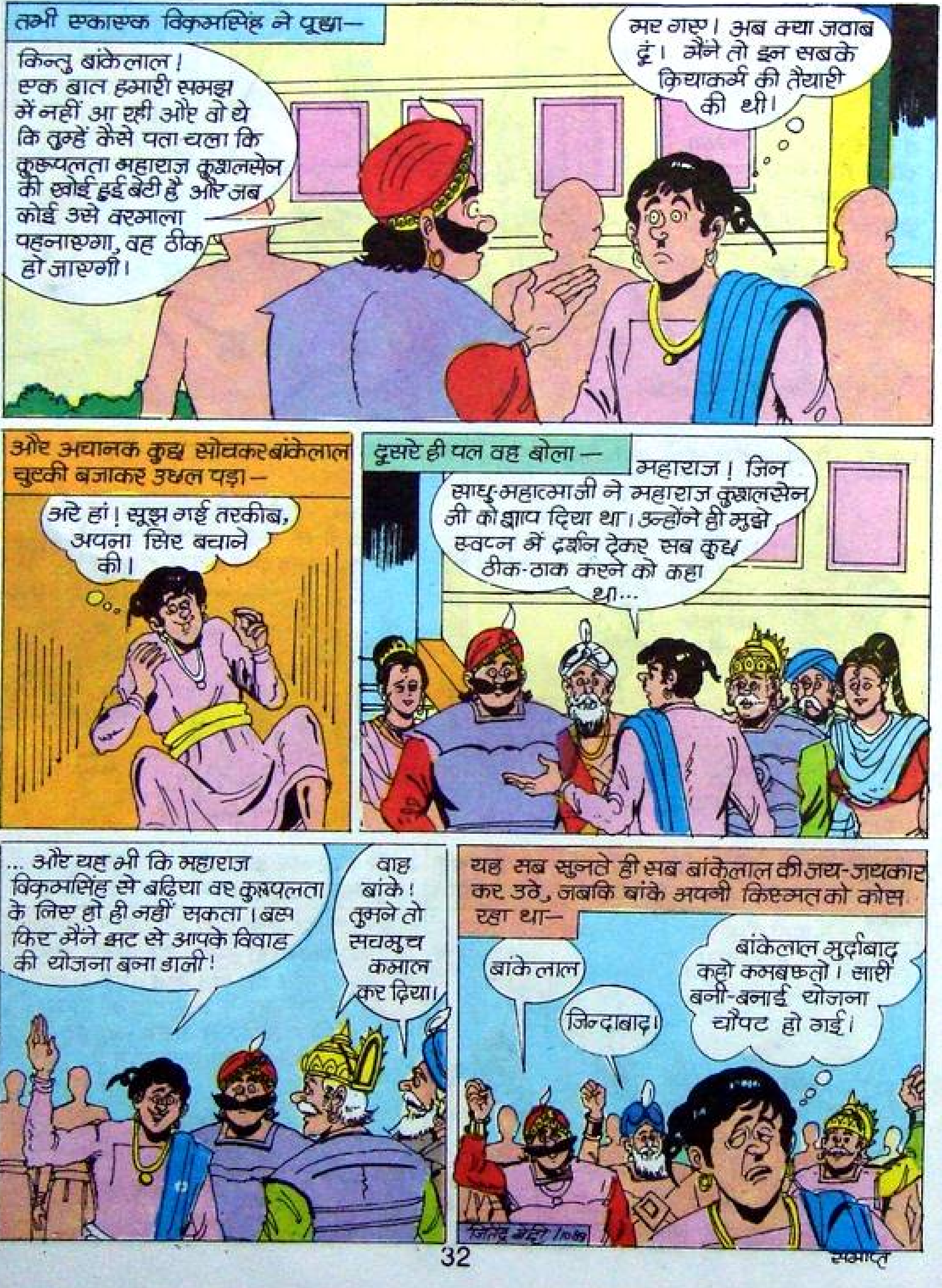
तभी एकाएक विक्रमसिंह ने पूछा—
किन्तु बांकेलाल! एक बात हमारी समझ में नहीं आ रही और वो ये कि तुम्हें कैसे पता चला कि कुरूपलता महाराज कुशलसेन की खोई हुई बेटी है और जब कोई उसे वरमाला पहनाएगा, वह ठीक हो जाएगी।
मर गए। अब क्या जवाब दूं। मैंने तो इन सबके क्रियाकर्म की तैयारी की थी।
और अचानक कुछ सोचकर बांकेलाल चुटकी बजाकर उछल पड़ा—
अरे हां! सूझ गई तरकीब, अपना सिर बचाने की।
दूसरे ही पल वह बोला—
महाराज! जिन साधु-महात्माजी ने महाराज कुशलसेन जी को श्राप दिया था। उन्होंने ही मुझे स्वप्न में दर्शन देकर सब कुछ ठीक-ठाक करने को कहा था...
... और यह भी कि महाराज विक्रमसिंह से बढ़िया वर कुरूपलता के लिए हो ही नहीं सकता। बस फिर मैंने झट से आपके विवाह की योजना बना डाली!
वाह बांके! तुमने तो सचमुच कमाल कर दिया।
यह सब सुनते ही सब बांकेलाल की जय-जयकार कर उठे, जबकि बांके अपनी किस्मत को कोस रहा था—
बांकेलाल
जिन्दाबाद।
बांकेलाल मुर्दाबाद कहो कमबख्तो। सारी बनी-बनाई योजना चौपट हो गई।
समाप्त

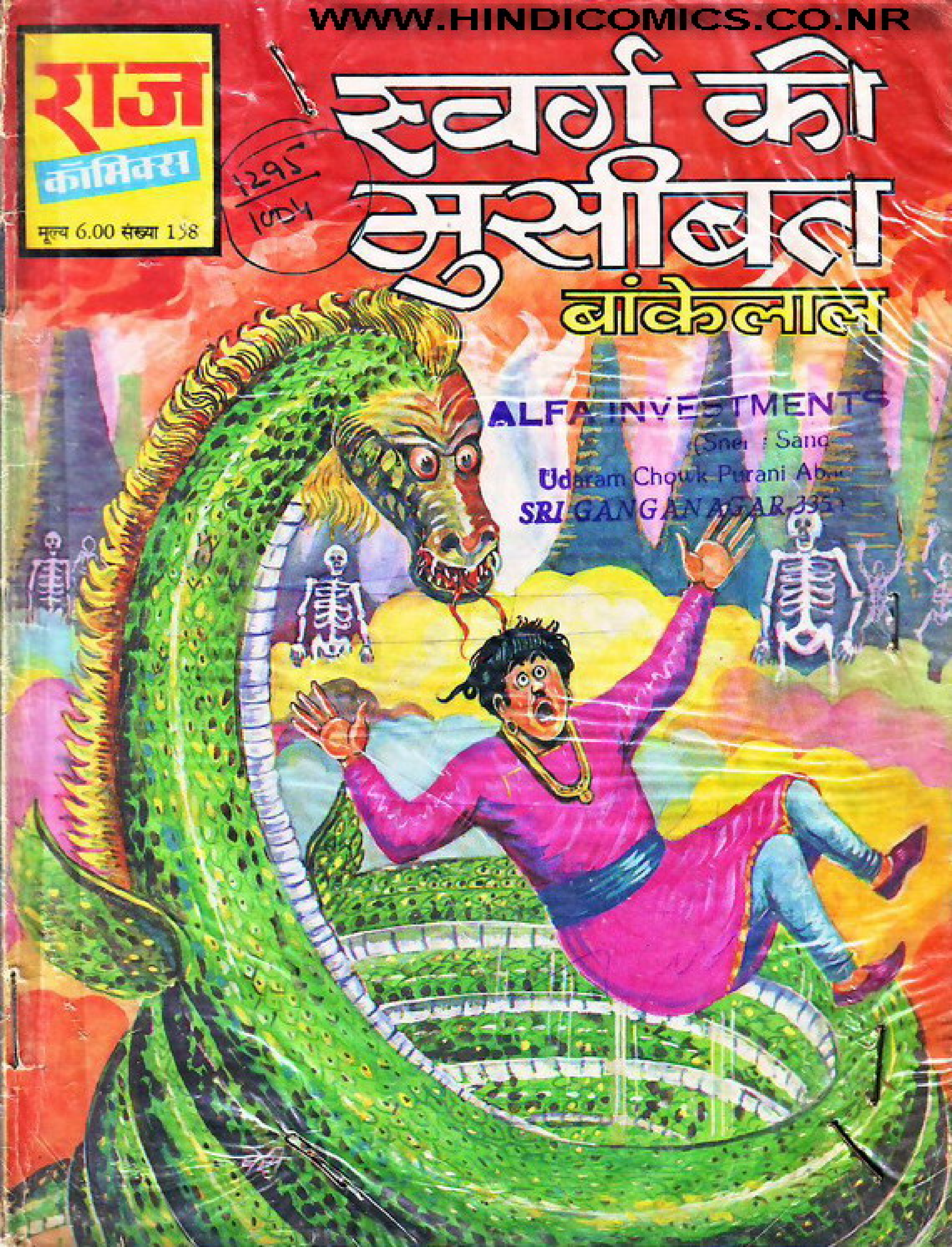
WWW.HINDICOMICS.CO.NR
राज
कॉमिक्स
मूल्य 6.00 संख्या 158
स्वर्ग की मुसीबत
बांकेलाल
ALFA INVESTMENTS
SRI GANGANAGAR

बांकेलाल और स्वर्ग की मुसीबत

चित्रांकन : बेदी
कथा : तरुण कुमार वाही
संपादक : मनीष चंद्र गुप्त

शिव के वरदान के कारण बांकेलाल जिस व्यक्ति का भी बुरा करना चाहता, उसका भला हो जाता था। साथ ही बांके को भी उससे कुछ लाभ अवश्य हो जाता था। लेकिन बांकेलाल की एक महान इच्छा थी कि वह किसी देश का राजा बने। इसके लिए उसने कई तिकड़में भी लगाईं, किन्तु हर बार पासा उल्टा ही पड़ता और राजसिंहासन उसके हाथ आते-आते रह जाता। एक दिन–

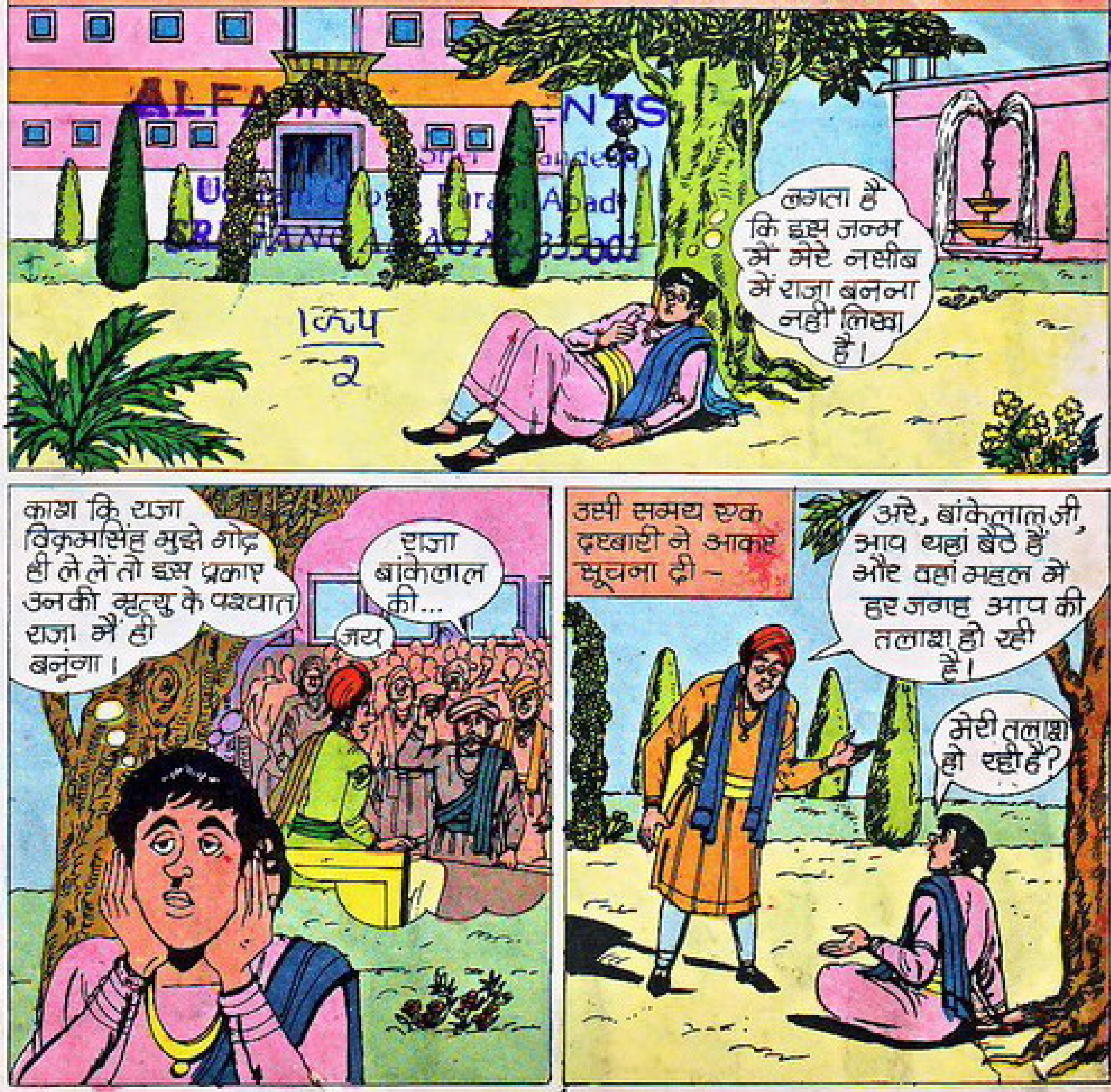

यह सुनते ही बांकेलाल चौंक पड़ा-
कहीं राजा विक्रमसिंह का देहान्त तो नहीं हो गया और मुझे राजगद्दी सौंपने के लिए मेरी तलाश की जा रही है।
यह सोचकर बांकेलाल मन ही मन प्रसन्न होता हुआ बोला-
लेकिन आखिर बात क्या है?
रानी स्वर्णलता ने चांद से पुत्र को जन्म दिया है। बांकेलाल जी...
कुरूपलता का नाम विक्रमसिंह ने स्वर्णलता रख दिया है।
क्या?
महाराज का कहना है कि सबसे पहले आप ही उनके पुत्र की मुंह दिखाई करेंगे तभी वे अपने पुत्र का मुंह देखेंगे।
ओह, तो यह बात है। ठीक है, तुम चलो मैं कपड़े बदल कर आता हूं।
दरबारी लौट गया।
दरबारी के जाने के बाद बांकेलाल तुरन्त उठ खड़ा हुआ और तेजी के साथ महल से बाहर की ओर चल पड़ा-
हुंह! पुत्र हुआ है तो हुआ करे। मैं क्यों जाऊं उसकी मुंह दिखाई करने। कम्बख्त वह कंजूस, विक्रमसिंह कौन सा इनाम में मुझे अपना...
...राजसिंहासन सौंप देने वाला है।

चलता-चलता बांकेलाल महल से बहुत दूर निकल आया —
एक ही आस थी कि एक दिन शायद राजा विक्रमसिंह मुझे ही अपना पुत्र मानकर राजगद्दी मुझे सौंप देंगे, किन्तु अब तो वह आस भी टूट गई। अब तो मेरा जीना व्यर्थ है। मुझे जीवित रहने का कोई अधिकार नहीं।
मुझे मर जाना चाहिए। अब मुझे आत्महत्या कर लेनी चाहिए।
और बांकेलाल का वह एक वाक्य यमराज के दरबार में गूंज उठा और—
मुझे आत्महत्या कर लेनी चाहिए!
आत्महत्या?
कौन है ये दुष्ट इन्सान, जो भगवान की इस अनुपम भेंट अपनी मनुष्य योनि का त्याग करना चाहता है।
अगर आपकी आज्ञा हो तो हम पृथ्वी पर झांककर पता लगाएं महाराज?
जाओ, जल्दी से पता लगाकर हमें तुरन्त खबर करो।
जी आज्ञा!!

दोनों यमदूतों ने पृथ्वी पर झांककर देखा-
अरे! यह तो बांकेलाल है, जिसका जन्म भगवान शिव के आशीर्वाद से हुआ था।
ओह! यह बांकेलाल तो बेहद शरारती व उद्दंड है। चलो, जल्दी से महाराज को सूचित करें।
मुझे आत्महत्या करलेनी चाहिये।
दोनों यमदूतों ने जैसे ही यमराज को यह सूचना दी-
क्या? बांकेलाल आत्महत्या करने वाला है?
जी हां महाराज! किन्तु अभी वह एक वृक्ष के नीचे सोता हुआ यही वाक्य बड़बड़ा रहा है।
ओह! इस बांकेलाल ने तो अपनी शरारत से भगवान शिव को भी नहीं बख्शा था। अगर यह वक्त से पूर्व स्वर्ग चला आया तो गजब हो जायेगा!
मुझे तुरन्त इन्द्र के दरबार में जाकर यह सूचना देवताओं को देनी होगी।
यमराज तुरन्त भैंसे पर सवार होकर इन्द्र के दरबार की ओर चल पड़े।
उधर इन्द्र की रंगशाला में सभी देवता स्वर्ग की अप्सराओं के मनमोहक नृत्य का आनन्द उठा रहे थे-
वाह! अद्भुत!

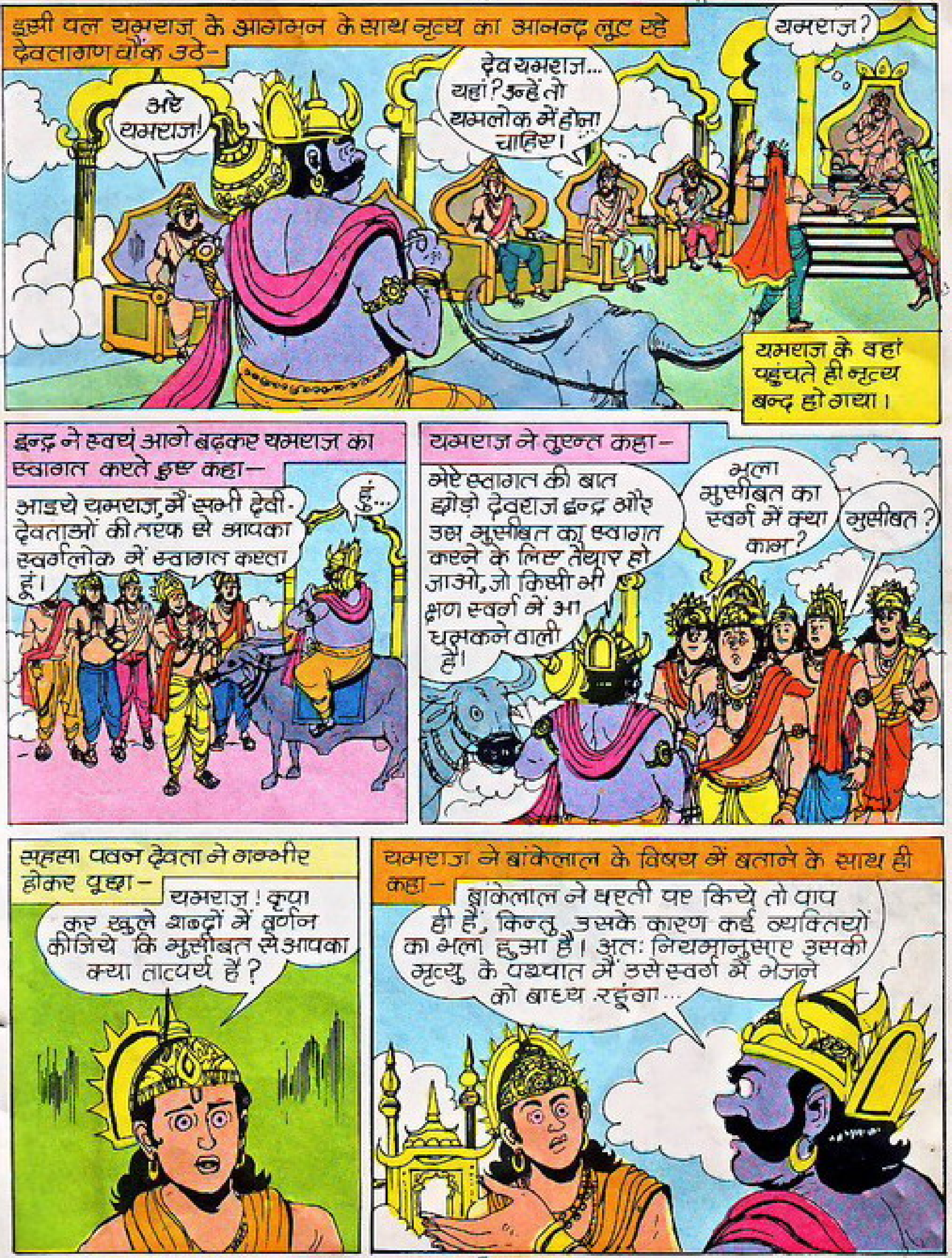
इसी पल यमराज के आगमन के साथ नृत्य का आनन्द लूट रहे देवतागण चौंक उठे–
अरे यमराज!
देव यमराज... यहां? उन्हें तो यमलोक में होना चाहिए।
यमराज?
यमराज के वहां पहुंचते ही नृत्य बन्द हो गया।
इन्द्र ने स्वयं आगे बढ़कर यमराज का स्वागत करते हुए कहा–
आइये यमराज, मैं सभी देवी-देवताओं की तरफ से आपका स्वर्गलोक में स्वागत करता हूं।
हूं...
यमराज ने तुरन्त कहा–
मेरे स्वागत की बात छोड़ो देवराज इन्द्र और उस मुसीबत का स्वागत करने के लिए तैयार हो जाओ, जो किसी भी क्षण स्वर्ग में आ धमकने वाली है।
भला मुसीबत का स्वर्ग में क्या काम?
मुसीबत?
सहसा पवन देवता ने गम्भीर होकर पूछा–
यमराज! कृपा कर खुले शब्दों में वर्णन कीजिये कि मुसीबत से आपका क्या तात्पर्य है?
यमराज ने बांकेलाल के विषय में बताने के साथ ही कहा–
बांकेलाल ने धरती पर किये तो पाप ही हैं, किन्तु उसके कारण कई व्यक्तियों का भला हुआ है। अतः नियमानुसार उसकी मृत्यु के पश्चात मैं उसे स्वर्ग में भेजने को बाध्य रहूंगा...

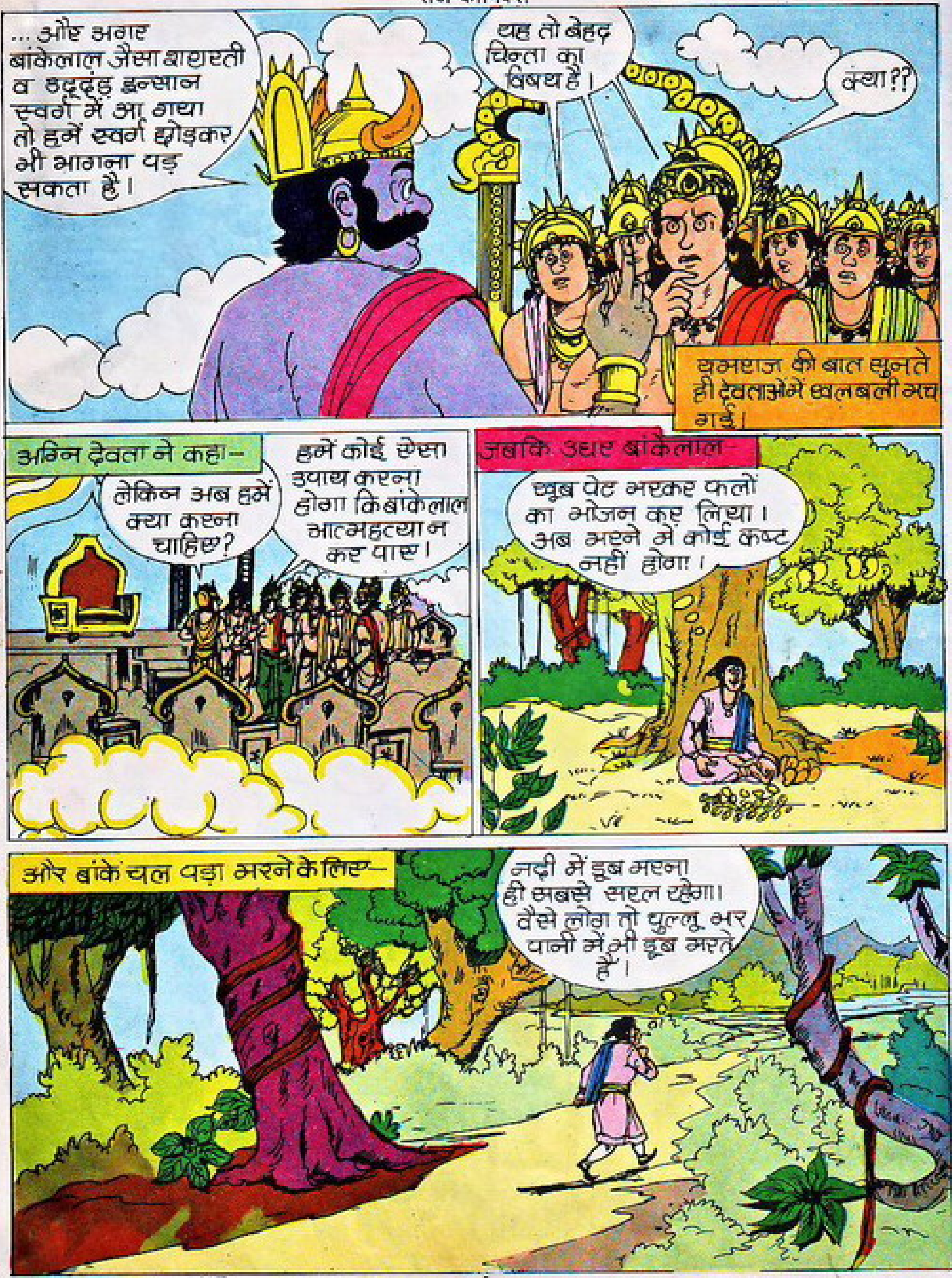
...और अगर बांकेलाल जैसा शरारती व उद्दंड इन्सान स्वर्ग में आ गया तो हमें स्वर्ग छोड़कर भी भागना पड़ सकता है।
यह तो बेहद चिन्ता का विषय है।
क्या??
यमराज की बात सुनते ही देवताओं में खलबली मच गई।
अग्नि देवता ने कहा—
लेकिन अब हमें क्या करना चाहिए?
हमें कोई ऐसा उपाय करना होगा कि बांकेलाल आत्महत्या न कर पाए।
जबकि उधर बांकेलाल—
खूब पेट भरकर फलों का भोजन कर लिया। अब मरने में कोई कष्ट नहीं होगा।
और बांके चल पड़ा मरने के लिए—
नदी में डूब मरना ही सबसे सरल रहेगा। वैसे लोग तो चुल्लू भर पानी में भी डूब मरते हैं।

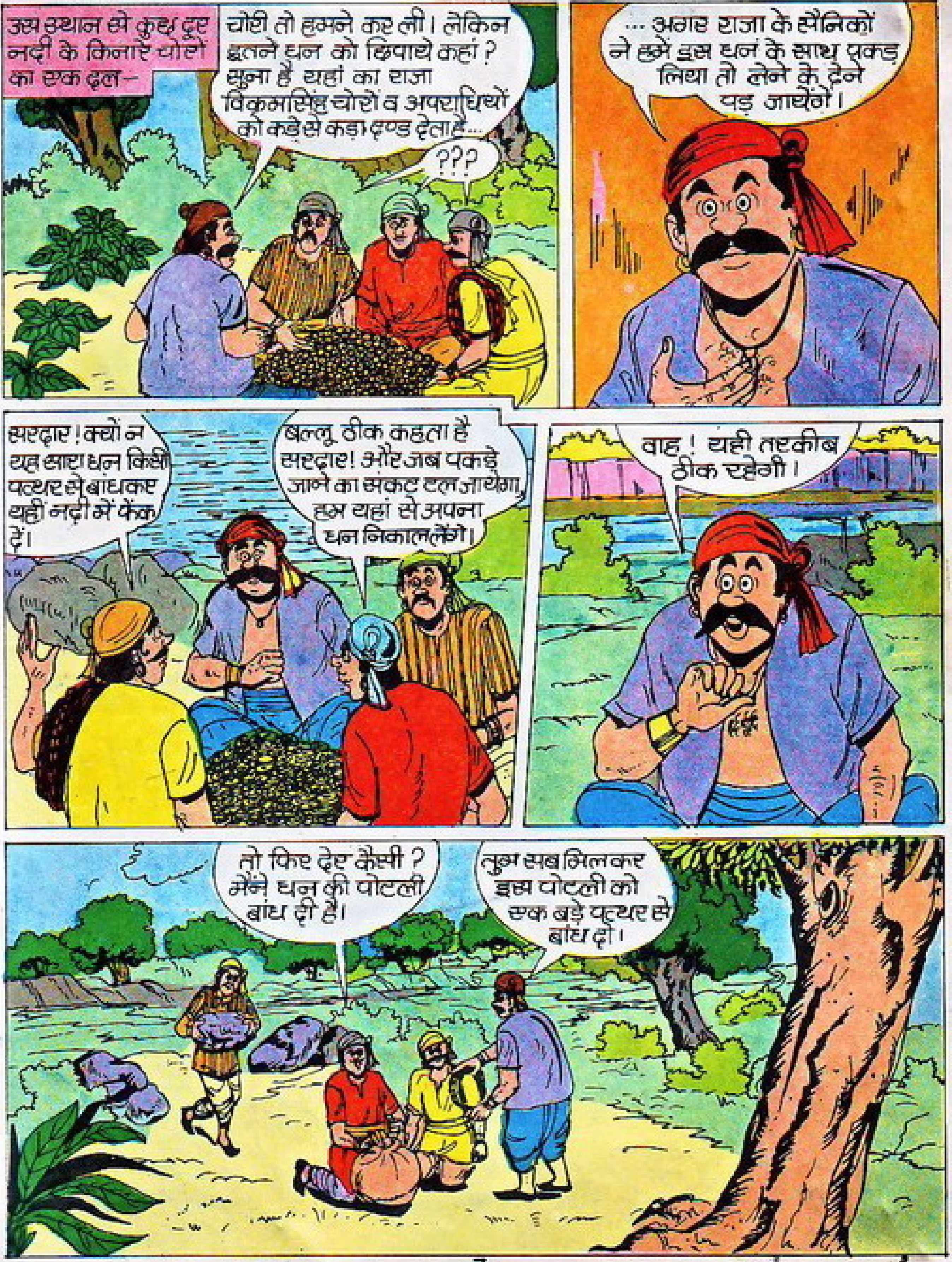

उस स्थान से कुछ दूर नदी के किनारे चोरों का एक दल—
चोरी तो हमने कर ली। लेकिन इतने धन को छिपाये कहां? सुना है यहां का राजा विक्रमसिंह चोरों व अपराधियों को कड़े से कड़ा दण्ड देता है...
???
... अगर राजा के सैनिकों ने हमें इस धन के साथ पकड़ लिया तो लेने के देने पड़ जायेंगे।
सरदार! क्यों न यह सारा धन किसी पत्थर से बांधकर यहीं नदी में फेंक दें।
बल्लू ठीक कहता है सरदार! और जब पकड़े जाने का संकट टल जायेगा, हम यहां से अपना धन निकाल लेंगे।
वाह! यही तरकीब ठीक रहेगी।
तो फिर देर कैसी? मैंने धन की पोटली बांध दी है।
तुम सब मिल कर इस पोटली को एक बड़े पत्थर से बांध दो।

कुछ ही देर में पोटली को एक बड़े पत्थर के साथ बांधकर नदी में लुढ़का दिया गया—
यह गई धन की पोटली पानी में!
छपाक
चलो! अब यहां रुकना ठीक नहीं!
हां सरदार! वैसे भी यहां सारा धन अब सुरक्षित रहेगा।
उधर बांकेलाल भी मरने के लिए किसी अच्छे स्थान की तलाश में था। सो, वह वहीं पहुंचकर रुका—
हां, यह स्थान मरने के लिए बिल्कुल ठीक है।
ओ भगवान! तू जीते जी मुझे राजा तो न बना सका, लेकिन मरने के बाद भूत बनने से मुझे बचा लेना! भगवान आ रहा हूं मैं...
कहने के साथ ही बांकेलाल नदी में कूद गया—
डुबुक
गुलुप ऽऽ गुलुप

शीघ्र ही वह डूबता हुआ नदी के तल तक जा पहुंचा—
बस! कुछ ही देर में मेरा बोलो राम हो जायेगा।
अचानक बांकेलाल चौंक उठा—
अरे! वह उस पोटली में क्या बंधा है और पोटली उस पत्थर से क्यों बंधी है?
उत्सुकतावश बांके उस पोटली के निकट जा पहुंचा! तभी उसके मस्तिष्क में एक विचार कौंधा—
कहीं इस पोटली में हीरे-पन्ने तो नहीं बंधे? अगर इतने हीरे-पन्ने मेरे हाथ लग जायें तो मैं बड़े से बड़ा राज्य भी चुटकियों में खरीद सकता हूं!...
...इस पोटली को ऊपर ले जाकर खोलना चाहिए।
बांकेलाल ने पोटली को रस्सी के बन्धन से मुक्त किया...
...और मरने की बात भूलकर पोटली लेकर वह नदी के बाहर निकल आया—
लगता है अभी मेरे दिन पूरे नहीं हुए।
जल्दी से पोटली खोल डालूं। इसमें अवश्य हीरे-पन्ने ही होंगे!

लेकिन पोटली खोलते ही उसके सभी मनसूबों पर पानी फिर गया–
सिर्फ थोड़ी सी स्वर्णमुद्राएं।
हे भगवान! यह तू मेरे साथ कैसे कैसे खेल खेलता है रे।
अब क्या होगा? उफ! मैं भी कितना बड़ा बेवकूफ हूं जो गया था मरने और इस पोटली के चक्कर में अपनी लुटिया डुबोकर वापस आ गया।
उधर स्वर्ग में यह तमाशा देख रहे सभी देवताओं ने जब बांके को हाथ ऊपर उठाकर कुछ कहते सुना–
देखो-देखो! हमारा चलाया चोरोंका चक्कर आखिर कामयाब हो गया है। धन मिलने से वह प्रसन्न हो उठा है।
ऐसा ही लगता है। वह हाथ उठाकर हमें धन्यवाद दे रहा है।
अब वह अवश्य अपनी आत्महत्या का इरादा स्थगित कर देगा।
शुक्र है, बला टली।
फिर भी मैं दो यमदूतों को इस पर नजर रखने का कार्य सौंप दूंगा।
जबकि दूसरे दिन–
आज मैं ऊंचे पर्वत से कूदकर अपनी जान दे दूंगा ताकि फिर कोई धन की पोटली मुझे अपनी ओर आकर्षित न कर सके।

जैसे ही यह सूचना यमराज को मिली–
क्या? बांकेलाल फिर आत्महत्या करने के लिये पर्वत पर चढ़ रहा है!
जी, यमराज!
यह सुनते ही यमराज भैंसे पर पर चढ़कर तुरन्त इन्द्र के दरबार की ओर भागे–
देवताओं को यह सूचना तुरन्त देनी होगी।
इन्द्र के पास पहुंचकर यमराज ने सारा किस्सा कह सुनाया तब–
अब तो एक ही उपाय है। बांकेलाल को किसी प्रकार यहां कुछ दिन स्वर्ग में रखा जाए। हो सकता है कि हम आत्महत्या का विचार उसके मन से निकाल दें।
यही उचित है। यह कार्य शीघ्र ही होना चाहिए अन्यथा बांकेलाल पर्वत से कूदकर जान दे देगा।
यमराज! आप अपने दो दूतों को इस कार्य पर लगा दीजिये।
जो आज्ञा देवराज इन्द्र!
उधर बांकेलाल पर्वत की चोटी पर जा पहुंचा था–
यहां से नीचे कूदूंगा तो मेरी एक भी हड्डी-पसली साबुत नहीं बचेगी। मुझे पहले ही मरने के लिये यह स्थान चुनना चाहिए था।

अगले ही पल बांकेलाल ने पर्वत की उस चोटी से नीचे छलांग लगा दी—
पर्वत देवता, मुझे अपनी गोद में शरण दो।
फिर इससे पहले कि बांकेलाल का शरीर धरती से टकरा कर टुकड़े-टुकड़े हो जाता—
आ जाओ बेटा बांकेलाल, हम कब से तुम्हारा ही इन्तजार कर रहे थे।
इतनी ऊंचाई से गिरने के बाद भी जब बांके ने स्वयं को धरती से न टकराकर किसी नर्म जगह पर गिरते पाया—
अरे, यह क्या? यह मैं बीच में ही कहां अटक गया?
यमदूतों ने उसे उड़न खटोले पर खड़ा कर दिया—
फिर बांकेलाल ने निगाहें घुमाकर जैसे ही यमदूतों को देखा, चौंककर बोला—
क...कौन हो तुम?
यमदेव के दूत।
हमें यमदूत भी कहते हैं।

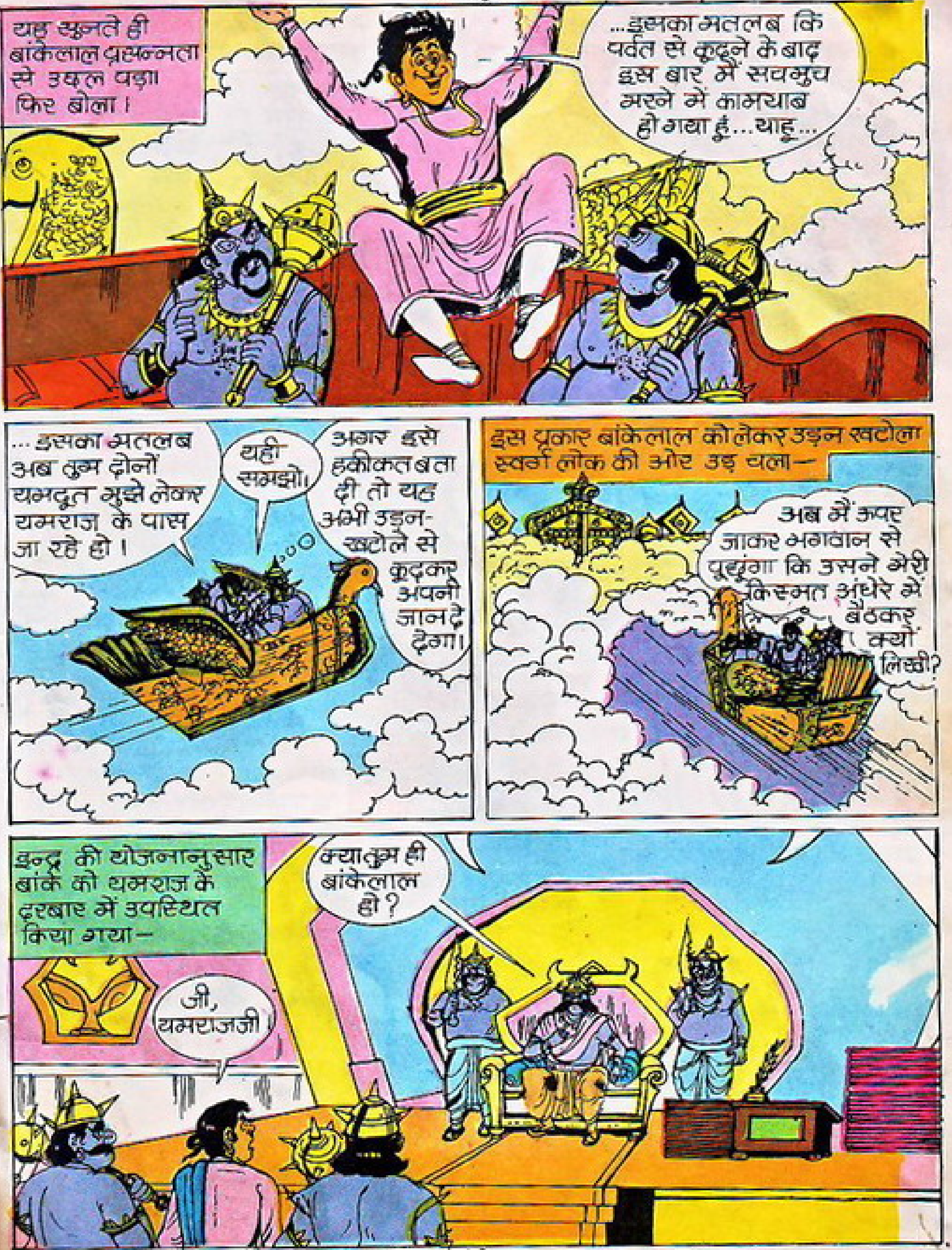
यह सुनते ही बांकेलाल प्रसन्नता से उछल पड़ा। फिर बोला।
...इसका मतलब कि पर्वत से कूदने के बाद इस बार मैं सचमुच मरने में कामयाब हो गया हूं...याहू...
...इसका मतलब अब तुम दोनों यमदूत मुझे लेकर यमराज के पास जा रहे हो।
यही समझो।
अगर इसे हकीकत बता दी तो यह अभी उड़न-खटोले से कूदकर अपनी जान दे देगा।
इस प्रकार बांकेलाल को लेकर उड़न खटोला स्वर्ग लोक की ओर उड़ चला–
अब मैं ऊपर जाकर भगवान से पूछूंगा कि उसने मेरी किस्मत अंधेरे में बैठकर क्यों लिखी?
इन्द्र की योजनानुसार बांके को यमराज के दरबार में उपस्थित किया गया–
क्या तुम ही बांकेलाल हो?
जी, यमराजजी

यमराज ने अपने दूत को आदेश देते हुए कहा—
बांकेलाल की जिन्दगी के पाप और पुण्यों का बहीखाता निकालो ताकि ये निश्चित किया जा सके कि बांकेलाल को स्वर्ग भेजना है या नरक।
जो आज्ञा।
यमदूत ने बांकेलाल के पाप-पुण्यों का बहीखाता निकालकर यमराज को सौंप दिया—
लीजिये महाराज! यह रहा बांके के पाप-पुण्यों का हिसाब-किताब।
ओह!
??
यमराज कुछ देर तक हिसाब-किताब देखते रहे। फिर बहीखाता बन्द करते हुए बोले—
बांकेलाल को स्वर्ग भेज दो...
स्वर्ग? वाह!! वहां तो इन्द्र के दरबार की अप्सराएं भी होंगी।
योजनानुसार यमदूत बांकेलाल को स्वर्ग की ओर ले गए।
उधर सभी देवता अपनी योजना पर प्रसन्न थे। अग्नि देवता कह रहे थे—
वाह, देवराज इन्द्र! योजनानुसार बांकेलाल स्वयं को सचमुच मरा हुआ समझ रहा है।
यमदूत उसे लेकर स्वर्गलोक की ओर आ रहे हैं।

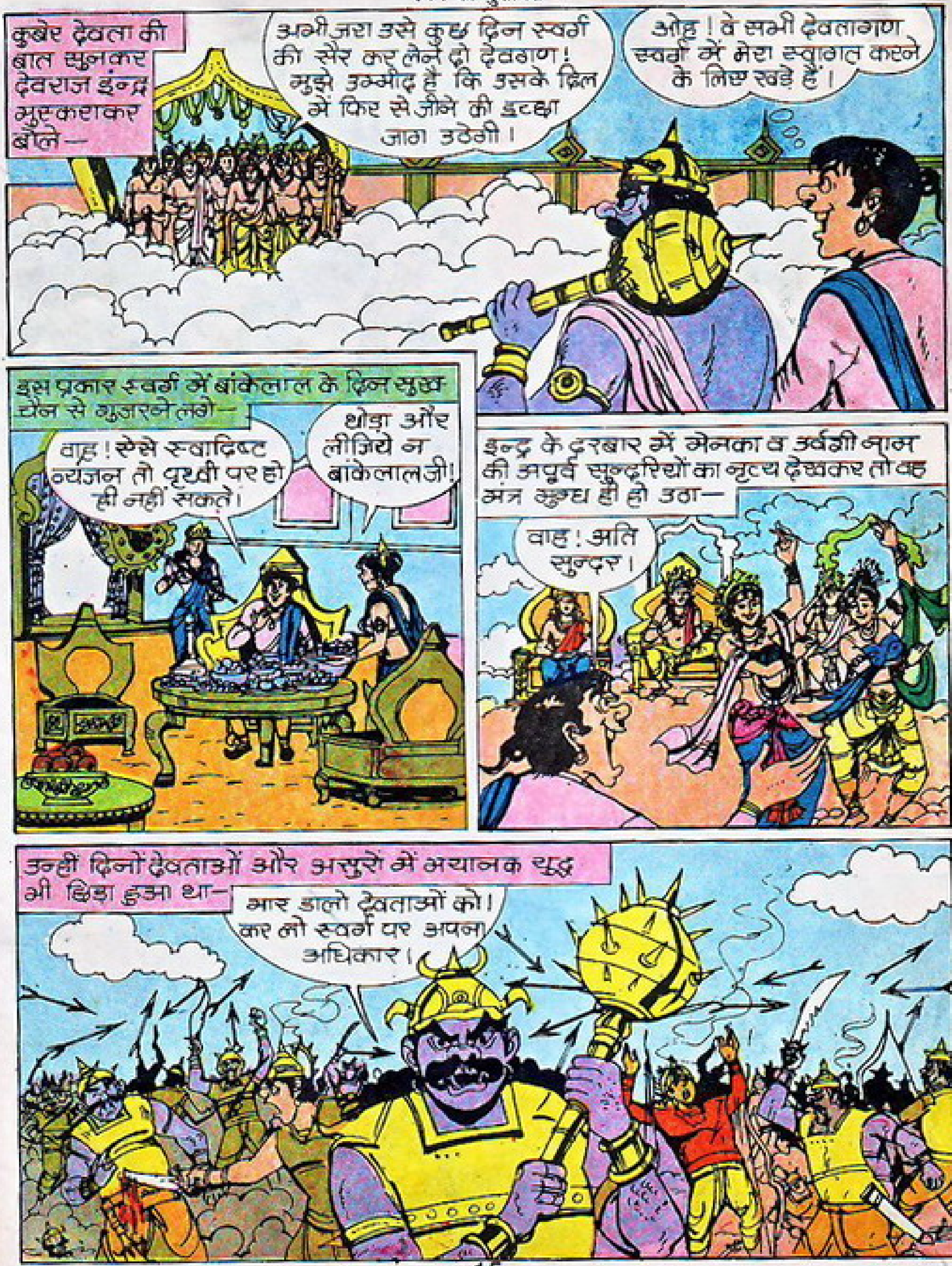
कुबेर देवता की बात सुनकर देवराज इन्द्र मुस्कराकर बोले—
अभी जरा उसे कुछ दिन स्वर्ग की सैर कर लेने दो देवगण! मुझे उम्मीद है कि उसके दिल में फिर से जीने की इच्छा जाग उठेगी।
ओह! वे सभी देवतागण स्वर्ग में मेरा स्वागत करने के लिए खड़े हैं।
इस प्रकार स्वर्ग में बांकेलाल के दिन सुख चैन से गुजरने लगे—
वाह! ऐसे स्वादिष्ट व्यंजन तो पृथ्वी पर हो ही नहीं सकते।
थोड़ा और लीजिये न बांकेलालजी!
इन्द्र के दरबार में मेनका व उर्वशी नाम की अपूर्व सुन्दरियों का नृत्य देखकर तो वह मंत्र मुग्ध ही हो उठा—
वाह! अति सुन्दर।
उन्हीं दिनों देवताओं और असुरों में भयानक युद्ध भी छिड़ा हुआ था—
मार डालो देवताओं को! कर लो स्वर्ग पर अपना अधिकार।

असुरराज दुदुम्भकर के नेतृत्व में असुर सेना ने देवताओं पर चढ़ाई कर दी थी—
कोई भी देवता बचने न पाए।
भयानक युद्ध हुआ था —
उफ
ओह! मेरा धनुष।
तड़ाक
??
अन्ततः दुदुम्भकर और उस की सेना को जान बचाकर भागना पड़ा था—
भागो! देवताओं ने हमारे सारे हथियार काट डाले हैं।
अपनी इस हार पर दुदुम्भकर बुरी तरह तिलमिलाया हुआ था—
देवता इस भ्रम में होंगे कि हम अपनी हार मान-कर लौट आए हैं...
...लेकिन नहीं, दुदुम्भकर ने कभी हार नहीं मानी। वह पुनः युद्ध करेगा।

दुदुम्भकर के महागुरु कपालतंत्र ने चिन्तित स्वर में कहा –
किन्तु दुदुम्भकर, यह मत भूलो कि पिछले युद्ध में देवताओं ने सभी शस्त्र काट व नष्ट कर हमें पंगु बना दिया है...
...अब अगर देवता चाहें तो हम पर चढ़ाई करके हमारा नामो निशान मिटा सकते हैं।
हमें शस्त्रों के निर्माण तक युद्ध से बचना होगा।
किन्तु गुरुदेव, मैं अब और अधिक इन्तजार नहीं कर सकता। मैं चुपके से देवताओं के शस्त्रागार से उनके सभी शस्त्र चुरा लाऊंगा... हा... हा... हा!
इधर दुदुम्भकर अपनी योजना बना रहा था...
...उधर बांकेलाल अपनी –
अहा!! कितना ही अच्छा होता अगर इन्द्र का सिंहासन मेरे हाथ लग जाता।
और जैसे उसकी पुकार भगवान ने सुन ली। एक दिन रंगशाला में –
आइये पवन देवता। स्वागत है आपका। कहिये, क्या समाचार लाए हैं?
समाचार मिला है कि असुर दुदुम्भकर पुनः युद्ध की तैयारी कर रहा है।
असुरराज दुदुम्भकर?

ओह! इसका मतलब युद्ध एक बार फिर होगा।
पवन देवता! अब हमें हर पल चौकस रहना होगा, न जाने कब दुदुम्भकर आक्रमण कर बैठे। और हमें उसका जवाब देना पड़े!
??
जबकि इधर बांकेलाल कुछ और ही सोच रहा था—
असुरराज दुदुम्भकर की मदद करूं तो शायद प्रसन्न होकर असुरराज इन्द्र का सिंहासन ही मुझे सौंप दे।
अचानक बांकेलाल कुछ सोचकर प्रसन्नता से उछल पड़ा—
वो मारा। अगर मेरी यह तरकीब काम कर गई तो बस फिर दुदुम्भकर मुझसे अवश्य प्रसन्न हो जायेगा।
फिर उसी रात—
यही मौका है। सब तरफ गहरी खामोशी छाई हुई है।
यह रहा शस्त्रागार
शस्त्रागार
आखिर इतने दिन स्वर्ग में रह कर मैंने झक तो नहीं मारी।

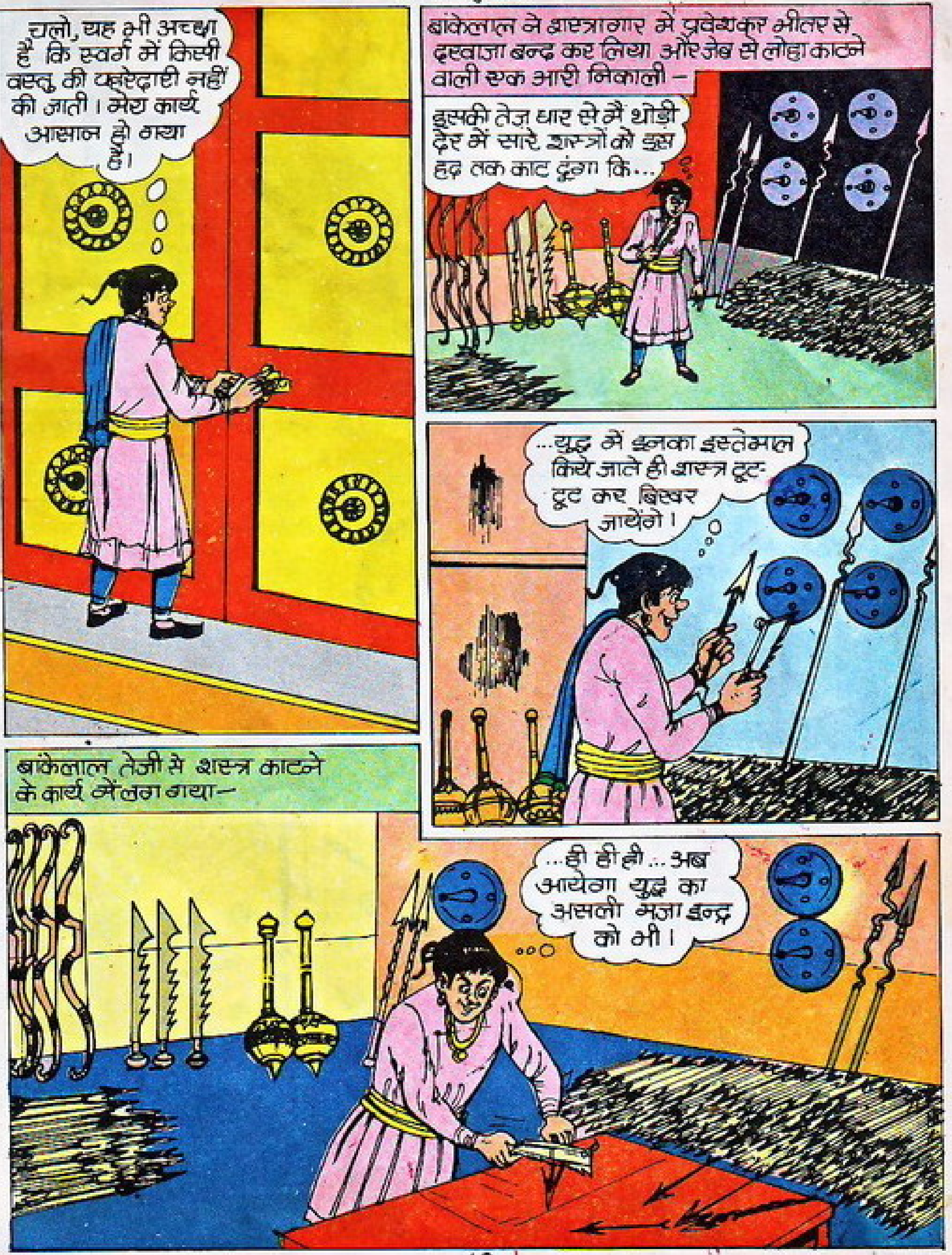
चलो, यह भी अच्छा है कि स्वर्ग में किसी वस्तु की पहरेदारी नहीं की जाती। मेरा कार्य आसान हो गया है।
बांकेलाल ने शस्त्रागार में प्रवेशकर भीतर से दरवाजा बन्द कर लिया और जेब से लोहा काटने वाली एक आरी निकाली –
इसकी तेज़ धार से मैं थोड़ी देर में सारे शस्त्रों को इस हद तक काट दूंगा कि...
...युद्ध में इनका इस्तेमाल किये जाते ही शस्त्र टूट-टूट कर बिखर जायेंगे।
बांकेलाल तेजी से शस्त्र काटने के कार्य में लग गया–
...ही ही ही... अब आयेगा युद्ध का असली मजा इन्द्र को भी।

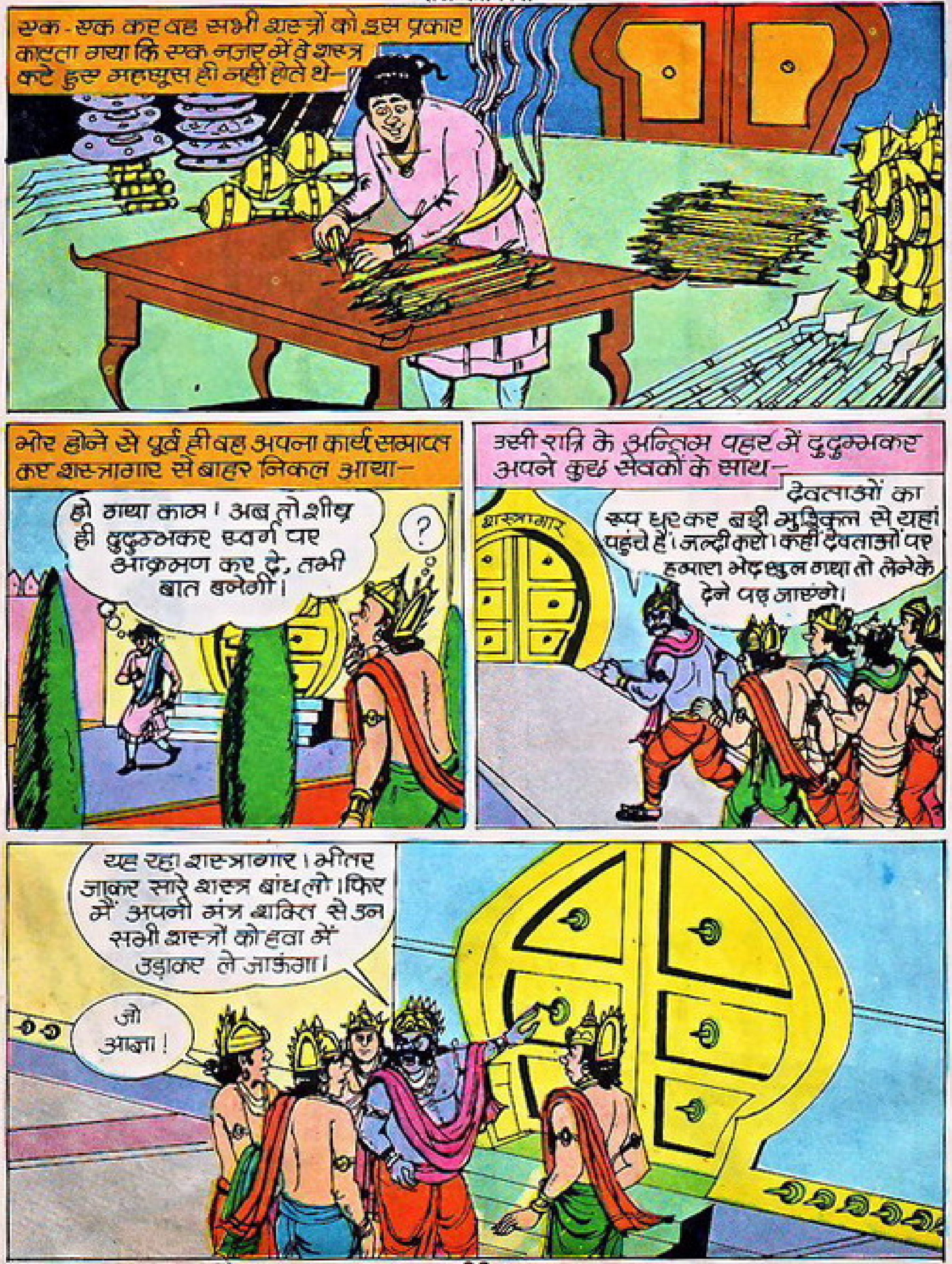

एक-एक कर वह सभी शस्त्रों को इस प्रकार काटता गया कि एक नजर में वे शस्त्र कटे हुए महसूस ही नहीं होते थे—
भोर होने से पूर्व ही वह अपना कार्य समाप्त कर शस्त्रागार से बाहर निकल आया—
हो गया काम। अब तो शीघ्र ही दुदुम्भकर स्वर्ग पर आक्रमण कर दे, तभी बात बनेगी।
?
उसी रात्रि के अन्तिम पहर में दुदुम्भकर अपने कुछ सेवकों के साथ—
शस्त्रागार
देवताओं का रूप धर कर बड़ी मुश्किल से यहां पहुंचे हैं। जल्दी करो। कहीं देवताओं पर हमारा भेद खुल गया तो लेने के देने पड़ जाएंगे।
यह रहा शस्त्रागार। भीतर जाकर सारे शस्त्र बांध लो। फिर मैं अपनी मंत्र शक्ति से उन सभी शस्त्रों को हवा में उड़ाकर ले जाऊंगा।
जो आज्ञा!

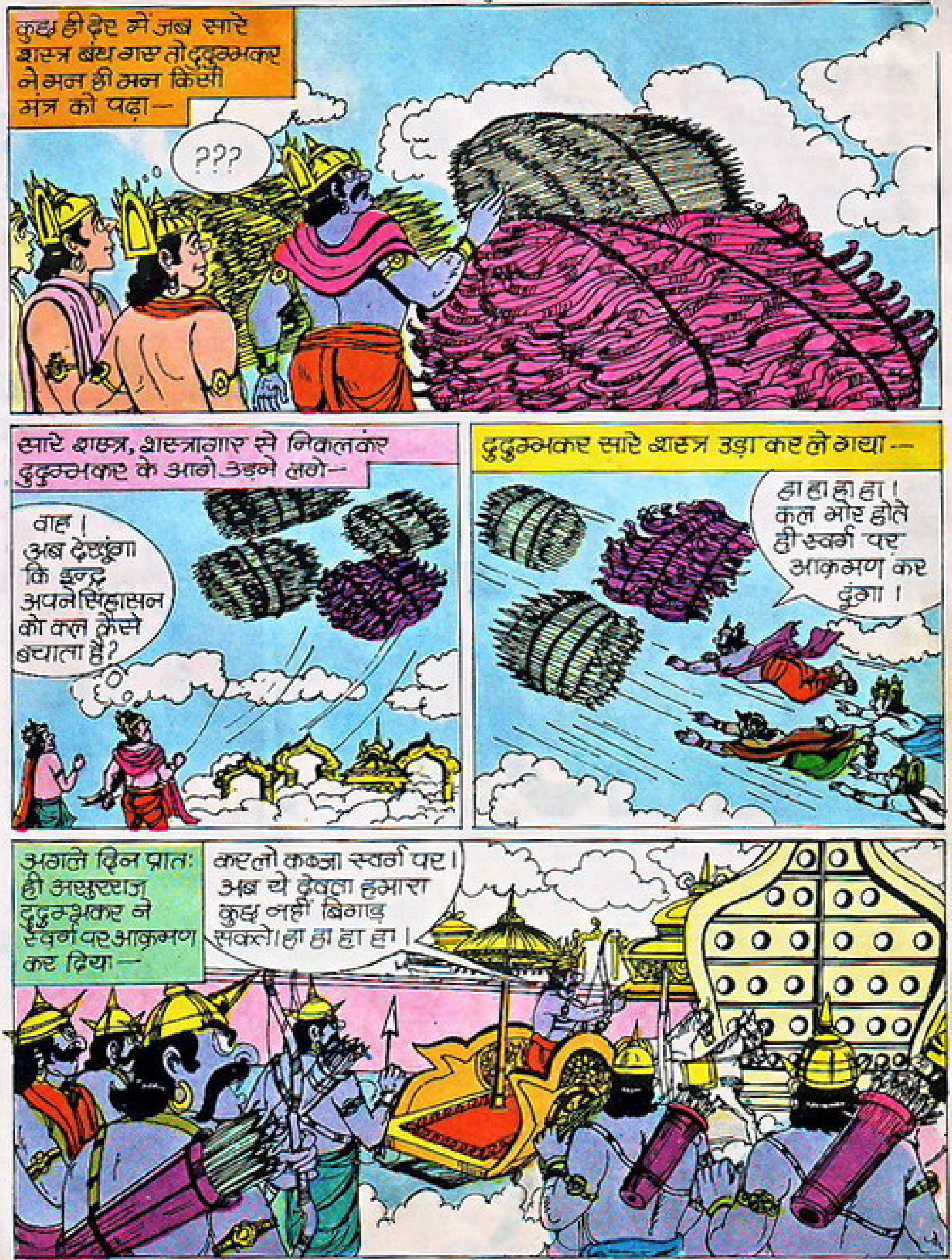
कुछ ही देर में जब सारे शस्त्र बंध गए तो दुदुम्भकर ने मन ही मन किसी मंत्र को पढ़ा—
???
सारे शस्त्र, शस्त्रागार से निकलकर दुदुम्भकर के आगे उड़ने लगे—
वाह! अब देखूंगा कि इन्द्र अपने सिंहासन को कल कैसे बचाता है?
दुदुम्भकर सारे शस्त्र उड़ा कर ले गया—
हा हा हा हा! कल भोर होते ही स्वर्ग पर आक्रमण कर दूंगा!
अगले दिन प्रातः ही असुरराज दुदुम्भकर ने स्वर्ग पर आक्रमण कर दिया—
कर लो कब्जा स्वर्ग पर। अब ये देवता हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। हा हा हा हा।

यह सुनते ही स्वर्ग में खलबली मच गई। इन्द्र व्याकुल हो कह उठे—
असुरों ने आक्रमण कर दिया? तो फिर आप सब लोग यहां क्यों खड़े हैं। जाइये, इनका मुकाबला कीजिये। मैं भी इस युद्ध में आप लोगों के साथ हूं।
हां, हां, क्यों नहीं। युद्ध लड़ो बच्चू... यही तो मैं चाहता हूं।
तभी नाग देवता वासुकी ने आकर कहा—
युद्ध कैसे होगा? हमारे सारे अस्त्र चोरी हो गए हैं।
क्या?
च... चोरी?
ओह! लगता है दुदुम्भकर ने ही वे अस्त्र चोरी किये हैं। अब क्या होगा?
तभी वरुण देव बोले—
हमें विष्णु भगवान की शरण में चलना चाहिये।
अब इसका भी समय नहीं है। असुर बेहद निकट आ चुके हैं।
हो गई फिर गड़बड़। रे दुदुम्भकर! ये तूने क्या किया रे! हाय!
कुछ भी हो। युद्ध तो हमें लड़ना ही है। हम अपनी सिद्ध शक्तियों से युद्ध लड़ेंगे।

देवताओं ने सेना के साथ कूच किया। मजबूरन बांके को भी साथ देना पड़ा—
अगर मेरी पोल खुल गई तो ये देवता लोग मुझे अवश्य ही नरक में भेज देंगे।
उधर असुरों की सेना स्वर्ग-लोक दिखाई पड़ते ही बाणों की वर्षा करने के लिए तैयार हो गई—
इतने बाण बरसाओ कि स्वर्ग लोक तहस-नहस हो जाये।
किन्तु बाण छोड़ते ही—
कट
कड़ाक
कड़ड़
अरे, मेरा धनुष!
अरे! यह बाणों को क्या हुआ?

वह दृश्य देखते ही असुरराज दुदुम्भकर घबरा-कर बोला–
अरे! यह क्या? हमारे तीर तो यहीं टूटकर गिर पड़े हैं।
उसने तुरन्त बाणों का निरीक्षण किया तो भय से कांप ही उठा–
यह क्या? सभी तीर कटे हुए हैं। तो देवताओं ने यह चाल चली है। उफ।
तभी स्वर्गलोक की ओर से तेज शोर उभरा उस शोर को सुनते ही दुदुम्भकर और भी घबरा गया–
लगता है देवताओं की सेना आक्रमण का जवाब देने आ रही है। अब तो भागने में ही भलाई है।
मारो! मारो!
असुरों को मार डालो!
??
??
??

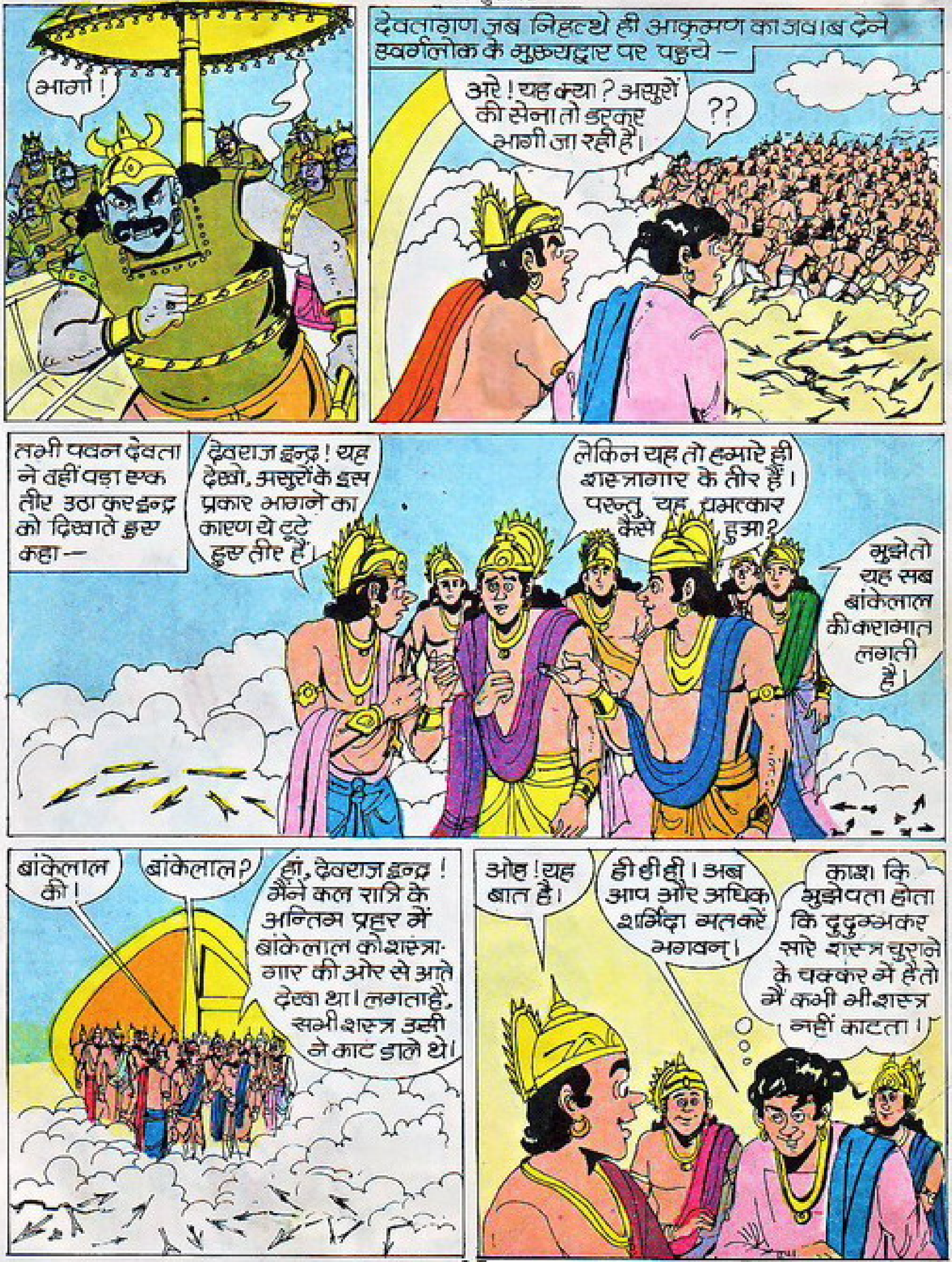
भागो !
देवतागण जब निहत्थे ही आक्रमण का जवाब देने स्वर्गलोक के मुख्यद्वार पर पहुंचे —
अरे ! यह क्या ? असुरों की सेना तो डरकर भागी जा रही है।
??
तभी पवन देवता ने वहीं पड़ा एक तीर उठा कर इन्द्र को दिखाते हुए कहा —
देवराज इन्द्र ! यह देखो, असुरों के इस प्रकार भागने का कारण ये टूटे हुए तीर हैं।
लेकिन यह तो हमारे ही शस्त्रागार के तीर हैं। परन्तु यह चमत्कार कैसे हुआ ?
मुझे तो यह सब बांकेलाल की करामात लगती है।
बांकेलाल की !
बांकेलाल ?
हां, देवराज इन्द्र ! मैंने कल रात्रि के अन्तिम प्रहर में बांकेलाल को शस्त्रागार की ओर से आते देखा था। लगता है, सभी शस्त्र उसी ने काट डाले थे।
ओह ! यह बात है।
ही ही ही। अब आप और अधिक शर्मिंदा मत करें भगवन्।
काश। कि मुझे पता होता कि दुदुम्भकर सारे शस्त्र चुराने के चक्कर में है तो मैं कभी भी शस्त्र नहीं काटता।

लेकिन इन्द्र से उसके मन की बात छिपी न रही—
बांकेलाल, तुमने तो कमाल कर दिया।
ही ही ही यह सब आप देवताओं के ही आशीर्वाद का फल है।
हुम्म! तो बांकेलाल ने यहां भी अपना चक्कर चला दिया। अगर ये स्वर्ग में कुछ दिन और रुका रहा तो कहीं ऐसा न हो कि एक दिन सचमुच मेरा सिंहासन भी हथिया ले।
इन्द्र को अपना सिंहासन डोलता नजर आया तो—
अब इसे वापस धरती पर भेजने का इन्तजाम करना होगा। लेकिन कैसे? क्यों न अब इसे नरक की सैर कराई जाए, ताकि भयभीत होकर, यह धरती पर वापस चला जाए!
अगले ही पल इन्द्र ने कृत्रिम क्रोध प्रदर्शित करते हुए कहा—
बांकेलाल! मैं जानता हूं तुमने सारे अस्त्र इसलिए काट डाले ताकि युद्ध में हमारी हार हो जाए और तुम मेरा सिंहासन हथिया सको।
ल... लेकिन!
तुमने ऐसा सोचकर स्वर्ग में रहने का अधिकार खो दिया है। अब तुम्हें नरक में रहना होगा।
नरक!
दूसरे ही पल दो यमदूत वहां पहुंच चुके थे। तभी इन्द्र गम्भीर होकर बोले—
बांकेलाल! तुम्हें नरक तो अब जाना ही होगा। हां, तुमने असुरों से हमारे प्राण बचाकर जो पुण्य कमाया है, उसके फल के रूप में तुम जब भी नरक छोड़कर पृथ्वी पर वापस जाना चाहो, जा सकोगे।

हमें दुःख है बांकेलाल कि हम तुम्हारे लिये कुछ नहीं कर सकते। ले जाओ इसे।
चलो।
नहीं! मैं स्वर्ग में रहूंगा। मुझे नरक में नहीं जाना।
बांके को नरक के द्वार से भीतर धकेल दिया गया—
अब यहीं तुम्हारे रहने का स्थान है।
ओह! नहीं बचाओ!
नरक द्वार
बांके नरक में आ गिरा—
उफ!
?
धाड़
यह कैसी गिलगिली सी जगह पर ला पटका है कमबख्तों ने मुझे!
अभी बांके उठने की सोच ही रहा था कि—
ही ही ही मया पापी!
आ गया तू नरक में मेरा भोजन बनने!
क... कौन है? कौन बोला?

गर्दन घुमाते ही बांकेलाल के छक्के छूट गए—
ईई ई ऽऽऽऽ यह क्या बला है?
दूसरे ही पल बांकेलाल समझ गया कि वह किस गिलगिली वस्तु पर बैठा है। यह समझते ही—
बऽऽबऽऽ बचाओ।
फच्च
एक पल के लिये नरक का वह भयानक जीव अपने होश खो बैठा और इतना समय बांकेलाल के लिये भाग निकलने के लिये काफी था—
भागो। वरना ये मेरी चटनी बनाकर चाट जायेगा।
किन्तु, अगले ही पल होश में आते ही वह भयानक जीव बांकेलाल के पीछे लपका—
नरक में आकर कोई मुझसे नहीं बच सकता। उसे मेरा भोजन बनना ही पड़ता है। हा हा हा। यम...यम।
ओह! वह मेरा पीछा कर रहा है। अब क्या होगा?
मुझे तुझे खाने की कोई जल्दी नहीं है, क्योंकि मेरा पेट तो पापियों को खाकर हमेशा भरा ही रहता है। लेकिन फिर भी मैं तुझे नहीं छोड़ूंगा। ही ही ही।

तभी बांकेलाल की निगाह एक व्यक्ति पर पड़ी—
ओह! शायद यह मेरी कुछ मदद कर सके।
बांके उस व्यक्ति के पांवों से लिपट गया—
भैया! मुझे बचालो भैया। मैं तुम्हारे पांव... अरे...
ई ई ई ई
फिर बांकेलाल ने जैसे ही निगाहें ऊपर कीं—
ही ही ही। यहां कोई किसी की मदद नहीं करता। सब पापियों को अपने पाप का दण्ड भुगतना ही पड़ता है। मैंने अपने पड़ोसी का घर जलाया था, यह देखो, नरक में आकर मेरा चेहरा जला हुआ है। ही ही ही ही
ई ई ई
नरक का भयानक जीव निरन्तर उसके निकट आता जा रहा था। यह देखकर बांकेलाल पुनः जान बचाने के लिए भागा—
उफ! भागो!
तेरा पीछा मैं नहीं छोड़ूंगा बांके!
अभी बांके भागकर कुछ ही कदम आगे गया था कि एकाएक ठिठककर रुक गया—
आऽऽह ऽऽह बचाओऽऽ
उफ! यह क्या हो रहा है यहां?

तभी एक यमदूत कोड़ा फटकारते हुए बोला—
हा हा हा। आ गया तू भी बांके। आ जा। देख, ये सब वो पापी हैं, जिन्होंने अपने मां-बाप को बहुत दुःख दिए और उनके बुढ़ापे की लाठी बनने की बजाए उन्हें घर से ही निकाल दिया।
??
अब इन सबको खौलते तेल में डाला जायेगा।
आऽऽहऽऽह। मुझे छोड़ दो। नहींऽऽऽ
यह तो मेरा ही नाम ले रहा है। कहीं मुझे भी पकड़कर तेल की कड़ाही में न डाल दे?
और तभी—
अब तेरा नम्बर है बांके!
नहीं!
बांके सिर पर पांव रखकर भागने ही वाला था कि पीछा करते नरक के उस भयानक जीव ने उसका रास्ता रोक लिया—
ही ही ही। अब तू बचकर कहां जायेगा, बांके?
ई ई ई मरे गया मैं तो।
मौत को सामने देखते ही बांके चिल्ला उठा—
हे भगवान! यह तूने मुझे कहां फंसा दिया। इससे भला तो मैं पृथ्वी पर था। मुझे पृथ्वी पर ही भेज दे भगवान!

बांके का इतना कहना था कि—
अरे! यह तो मैं वापस राजा विक्रमसिंह के उद्यान में पहुंच गया।
??
उसी समय महामंत्री भी वहां से गुजर रहे थे। बांके को देखते ही वे प्रसन्न हो गए और उसके पास पहुंचकर बोले—
अरे, बांकेलाल! तुम कहां चले गए थे? सब तुम्हें ढूंढ-ढूंढकर परेशान हो गए हैं।...
??
... और महाराज ने तो अभी तक अपने पुत्र का मुंह भी नहीं देखा। उनका कहना है कि जब तक बांकेलाल आकर नन्हें राजकुमार का मुंह न देख लें, वे अपने पुत्र का मुंह न देखेंगे।
तब फिर देर कैसी महामंत्री जी। चलिये, मुझे तुरन्त महाराज के पास ले चलिये।
जान बची तो लाखों पाए। लौट के बुद्धू घर को आए।
ओह, चलो!
कक्ष में बांकेलाल को देखते ही सबके चेहरे खिल उठे—
अरे वाह! बांकेलाल जी आ गए।
क्या बांकेलाल आ गया?
तब बांके लाल ने नन्हें राजकुमार को मुंह दिखाई दी—
यह सब लोग मुझे कितना चाहते हैं और एक मैं हूं कि... हीं... आज से सारे बुरे काम बन्द!
लुलुलु। वाह महाराज, यह तो सचमुच चांद का टुकड़ा है। भगवान करे ये आपका नाम रौशन करे।
महाराज! अब तो आप भी आंखों से पट्टी हटाकर राजकुमार का मुंह देख लीजिए।

ALFA INVESTMENTS
SRI GANGANAGAR-335001

• समाप्त •

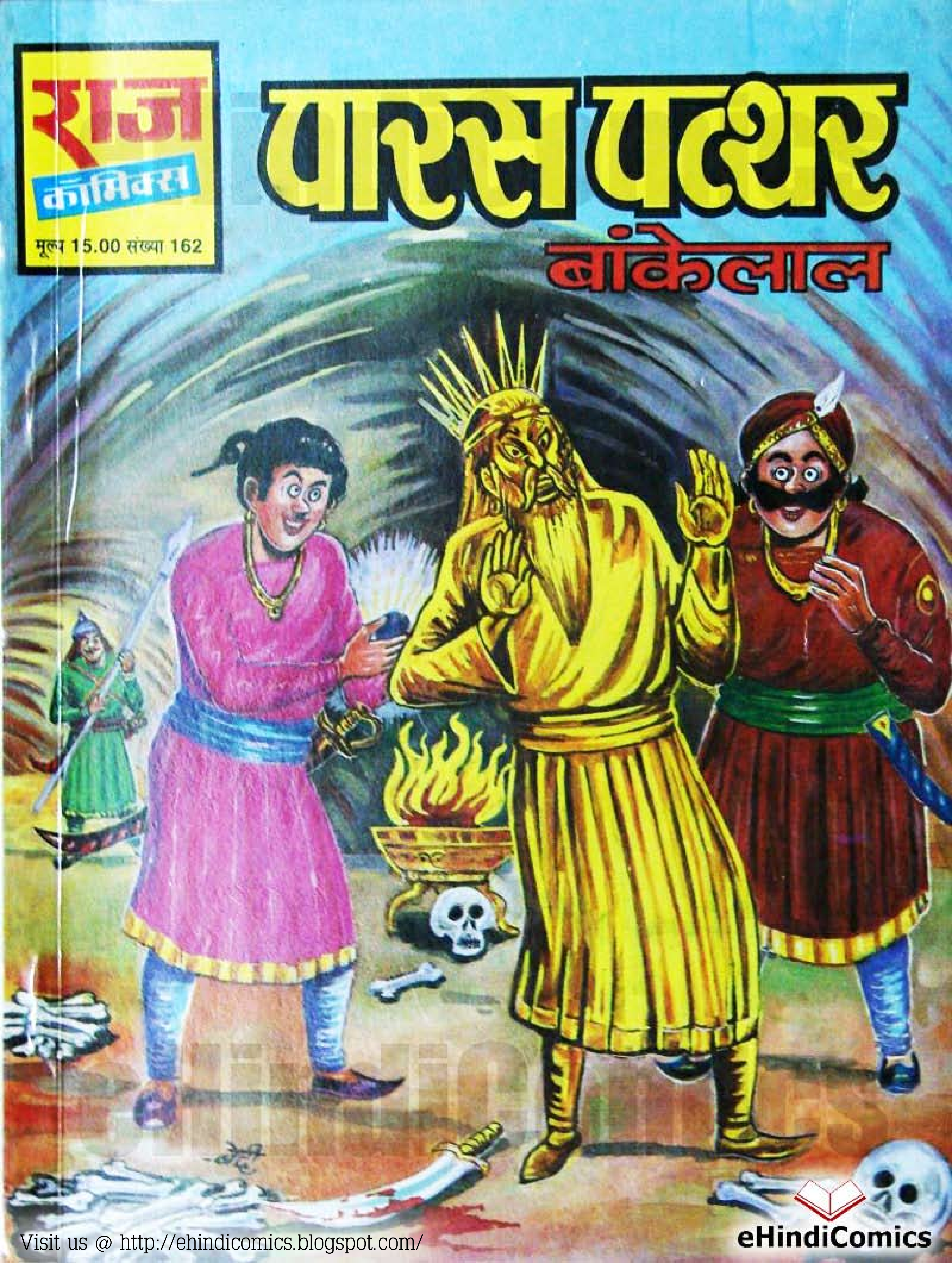

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/
eHindiComics

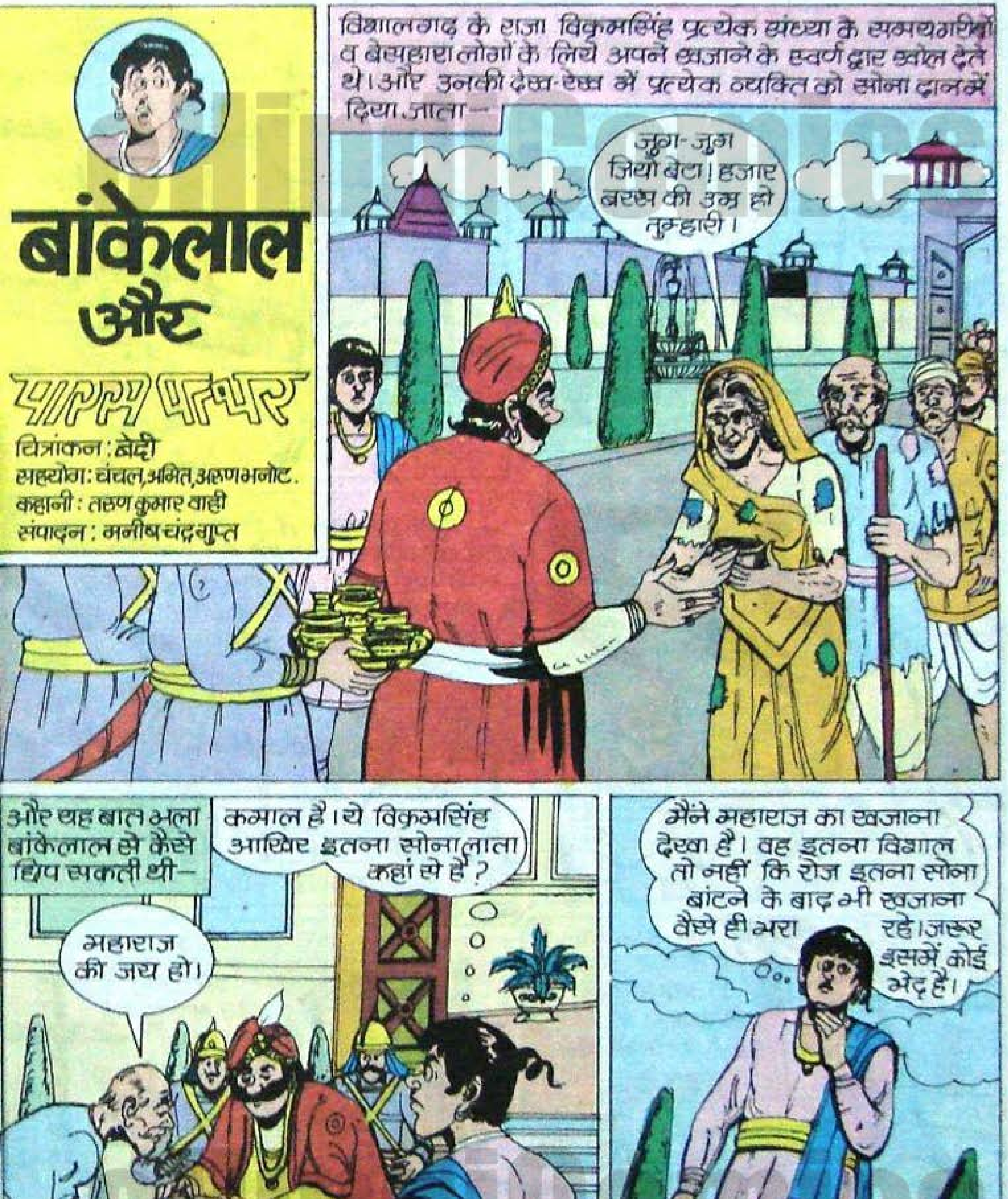

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

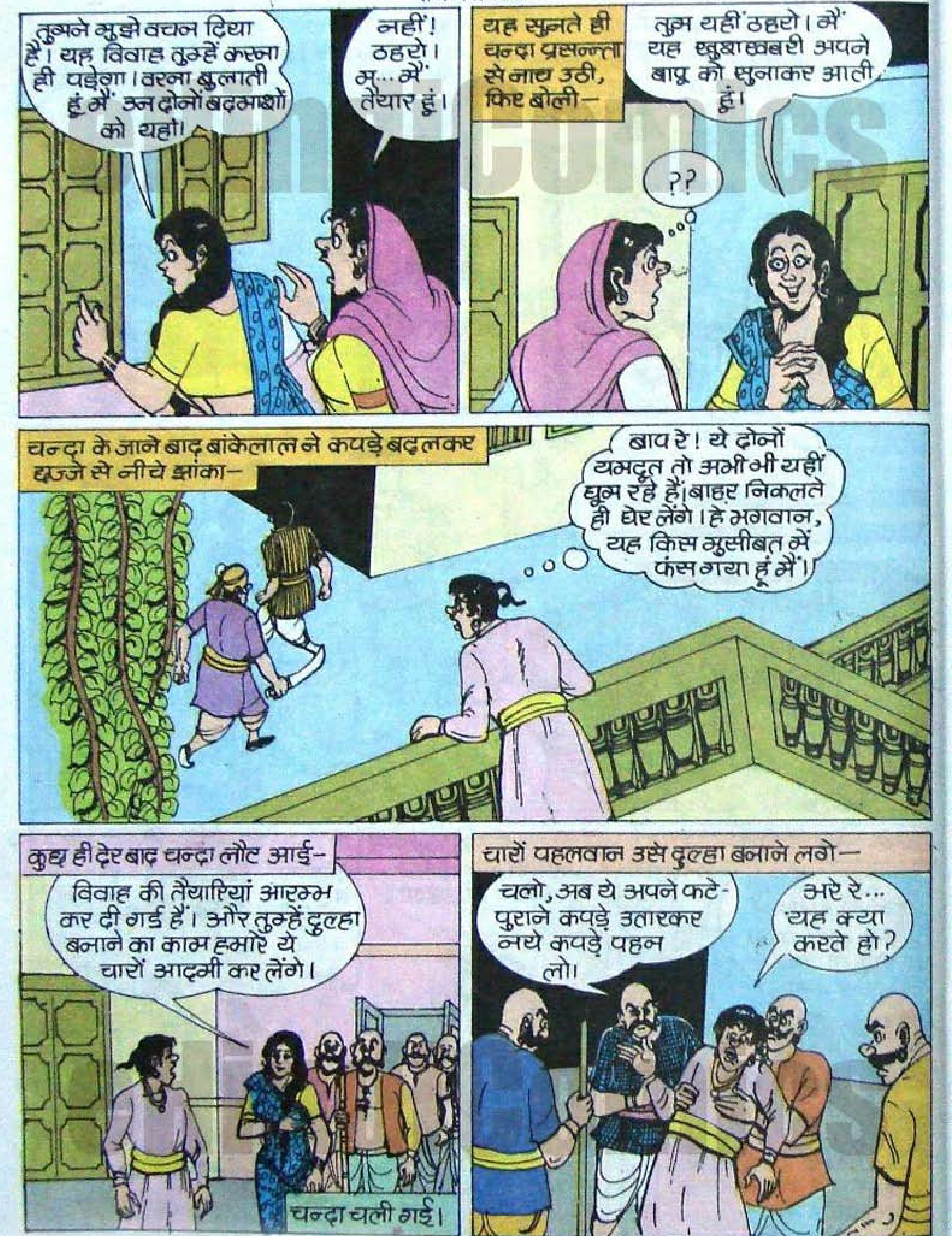

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

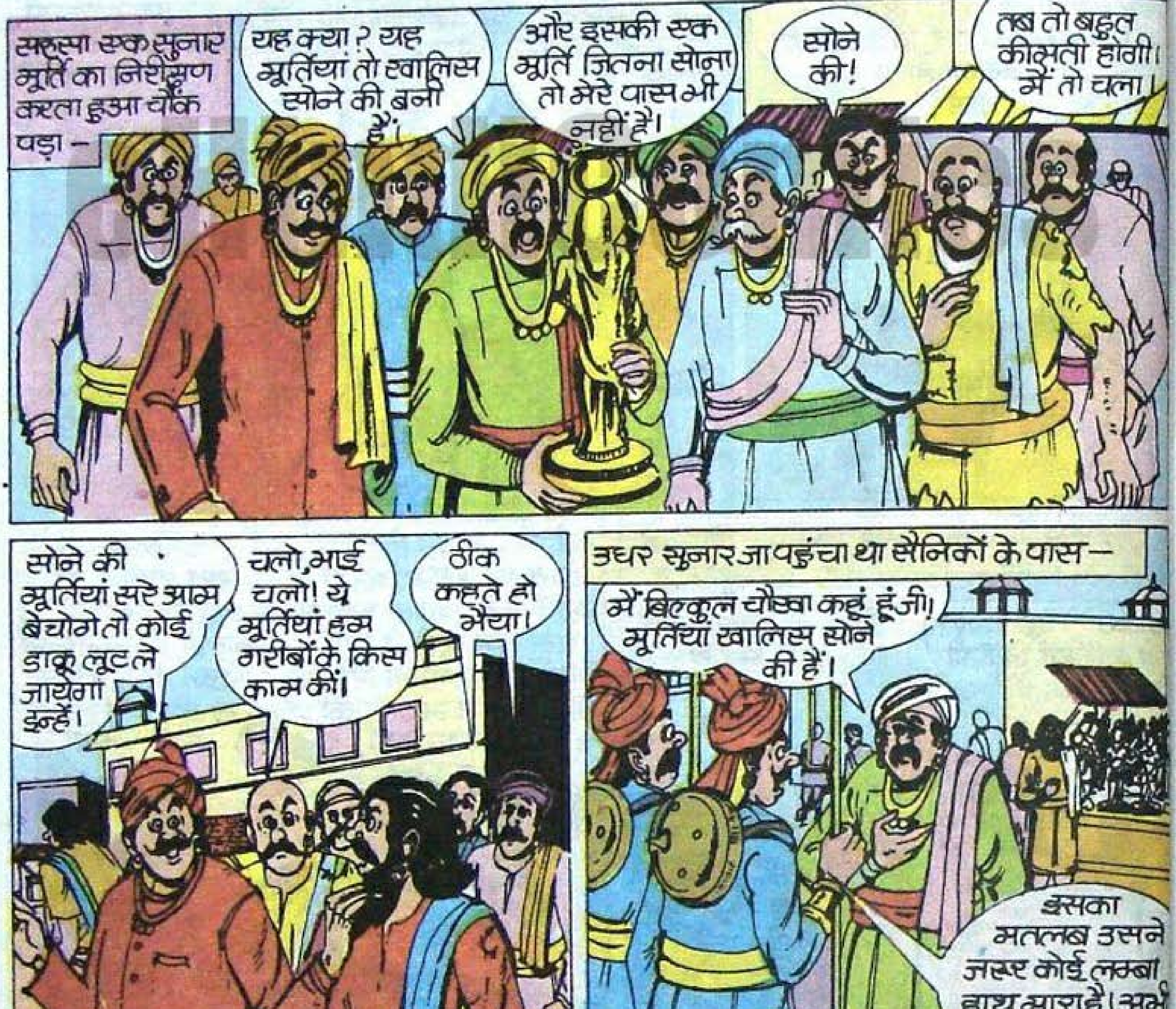

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

समाप्त

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

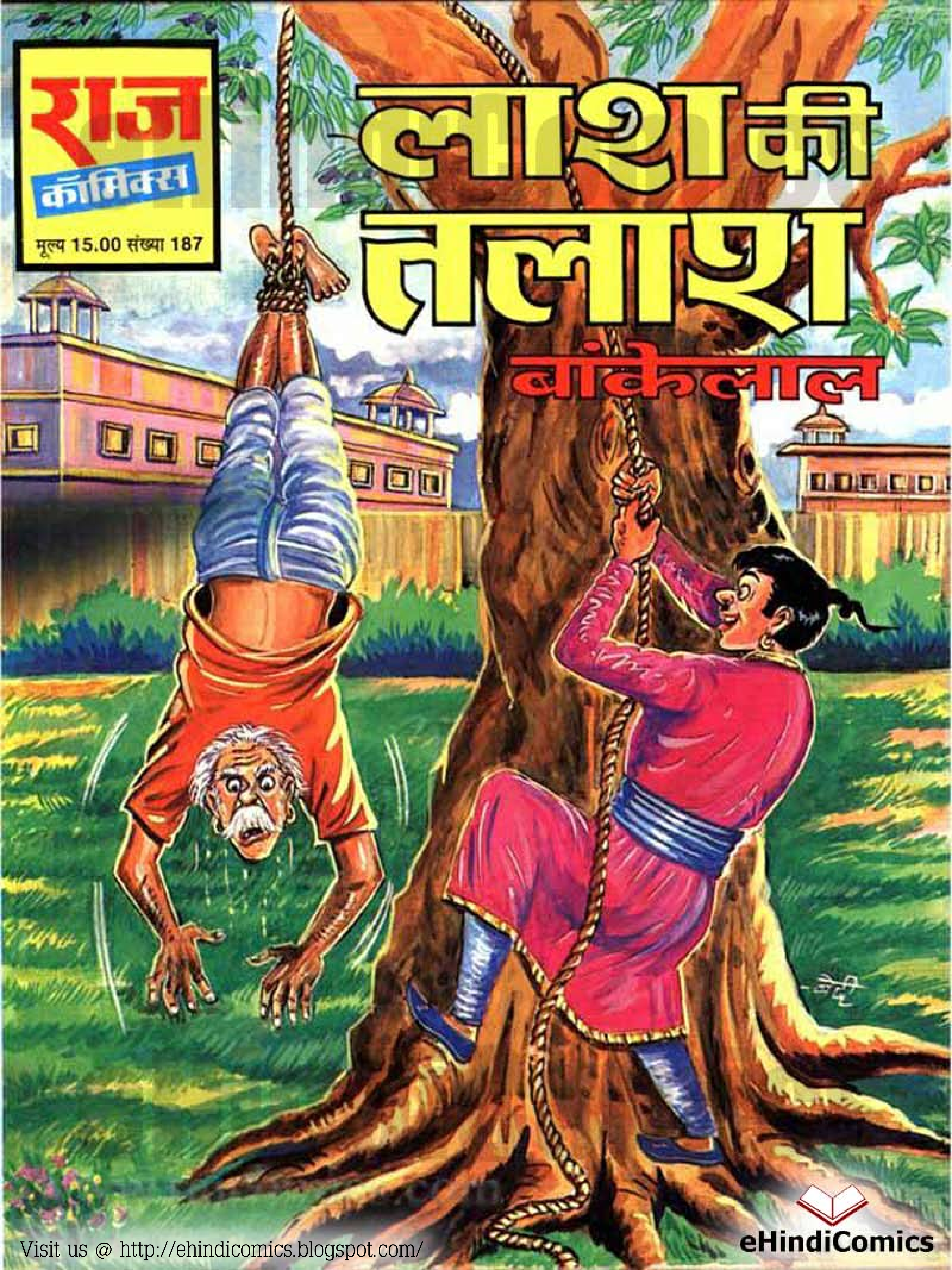

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

लाश की तलाश

चित्रांकन : बेदी
सहयोग : चंचल, अमित, अरुण भनोट
लेखक : तरुण कुमार वाही
सम्पादक : मनीष चन्द्र गुप्त

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

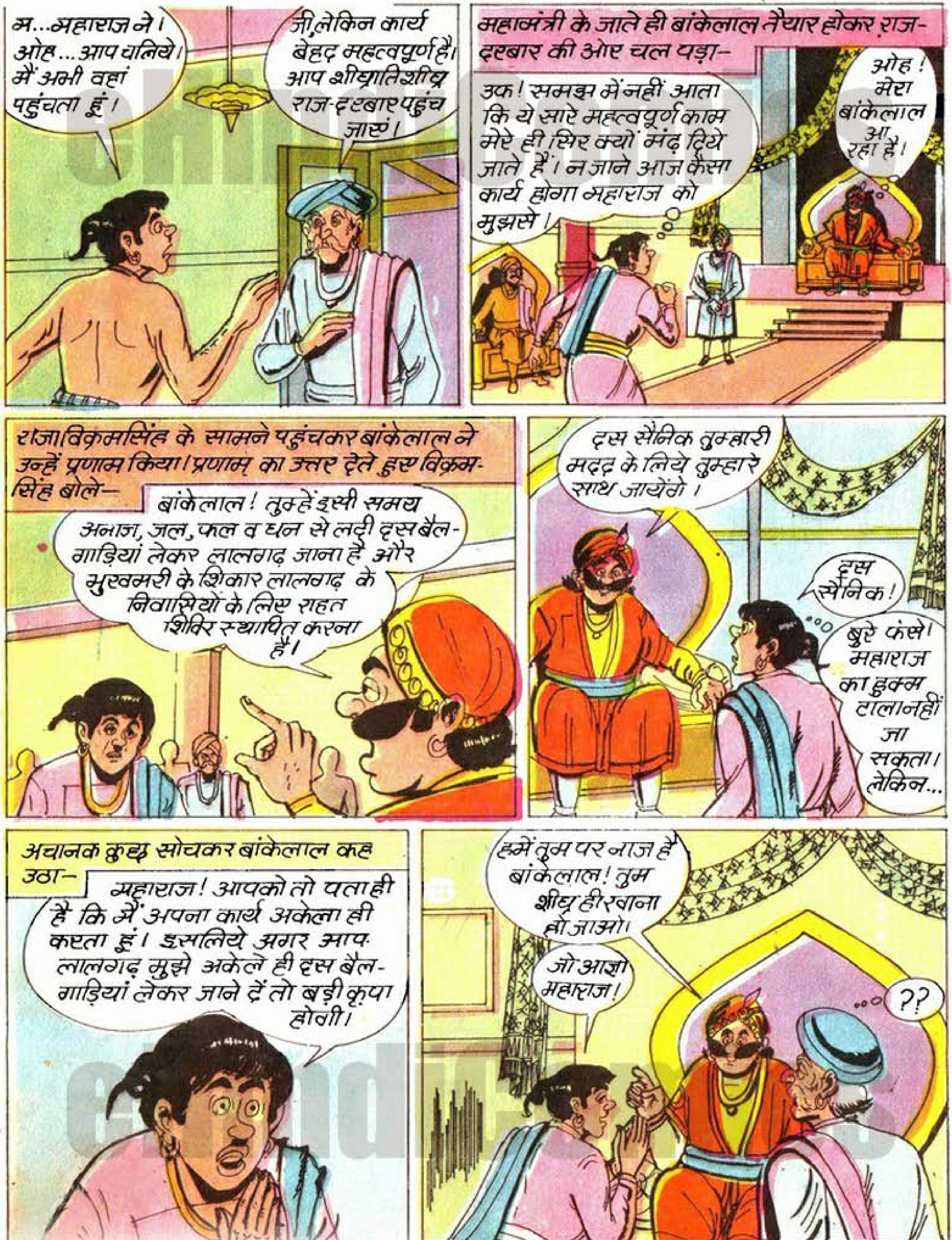

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

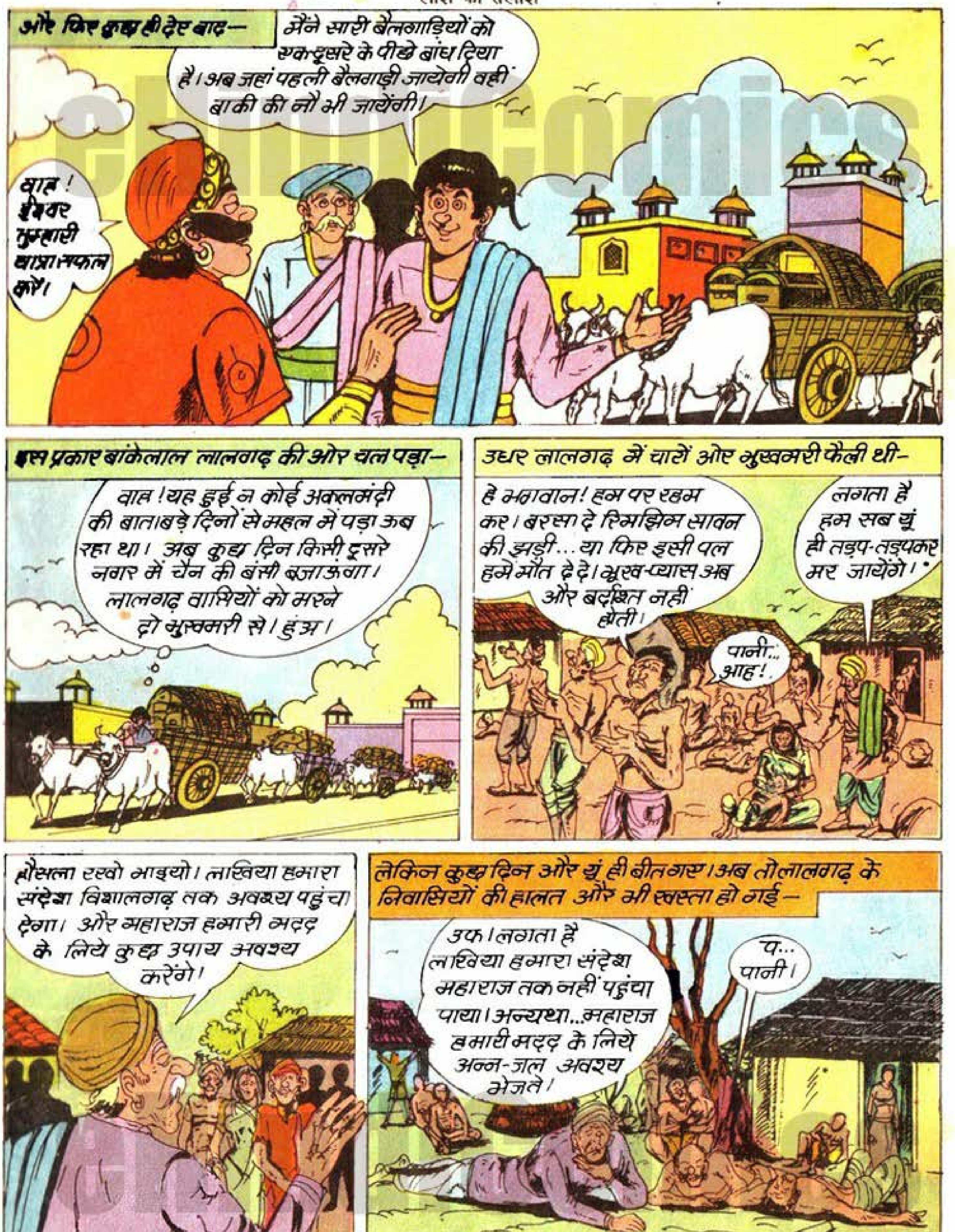

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

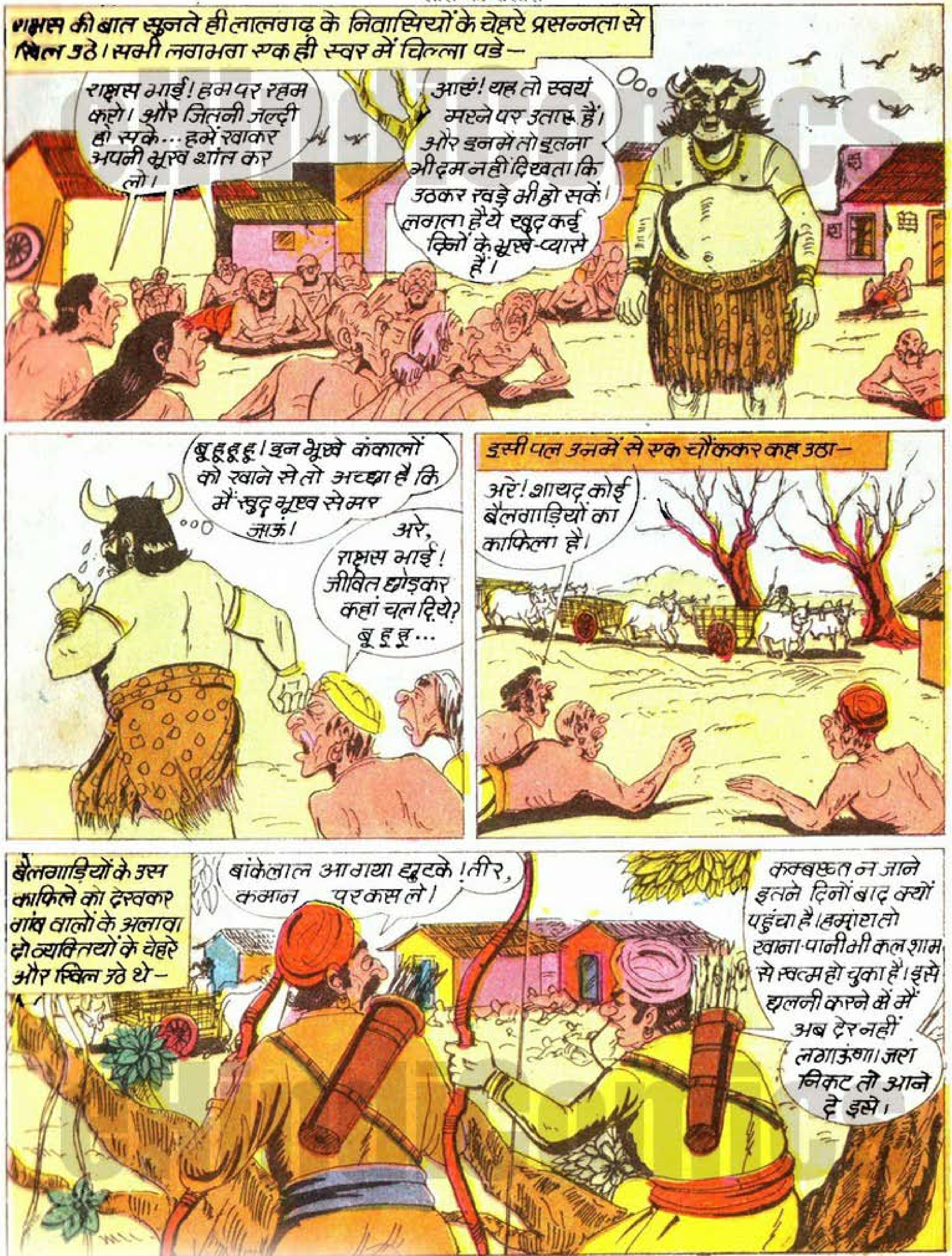

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

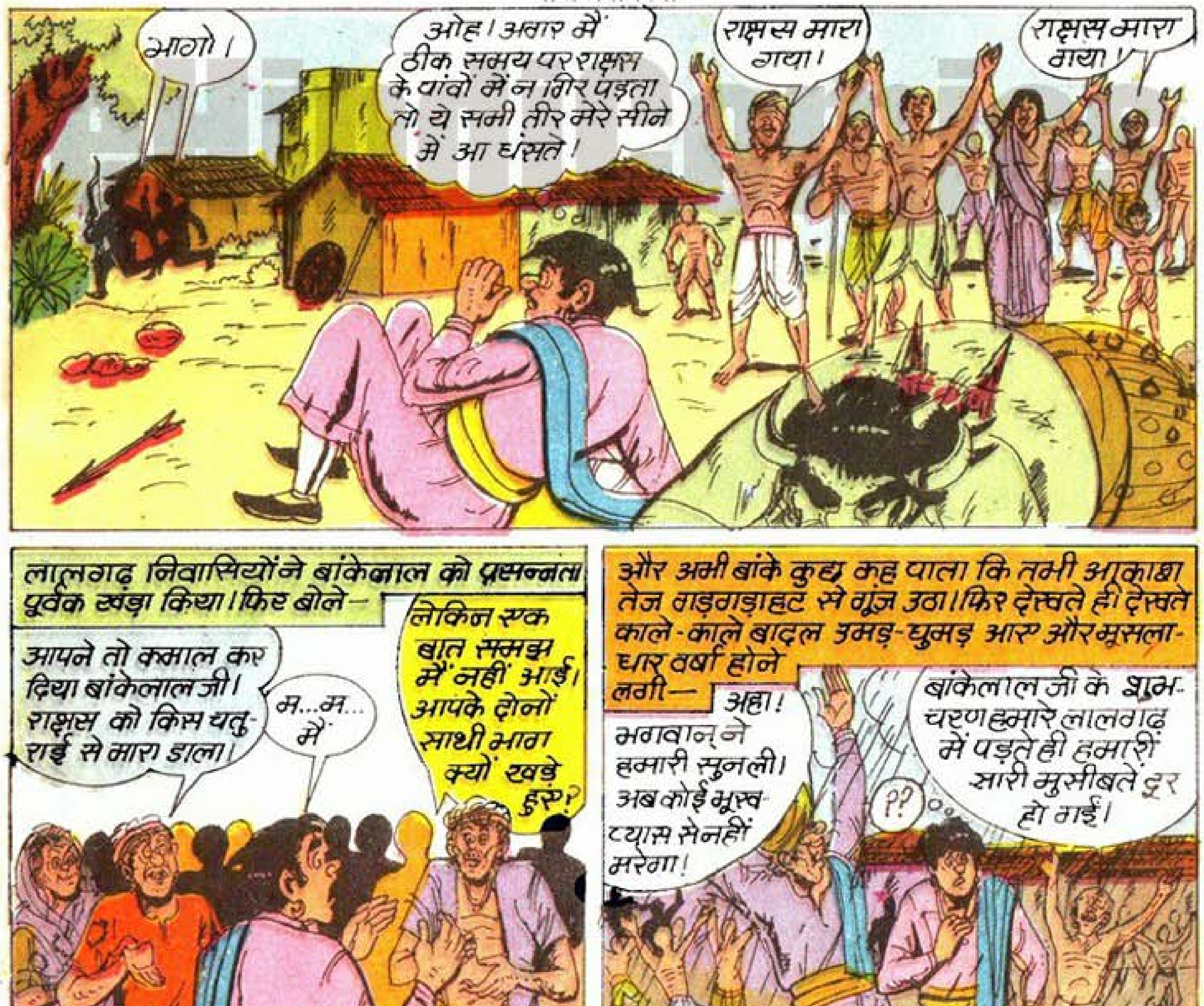

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

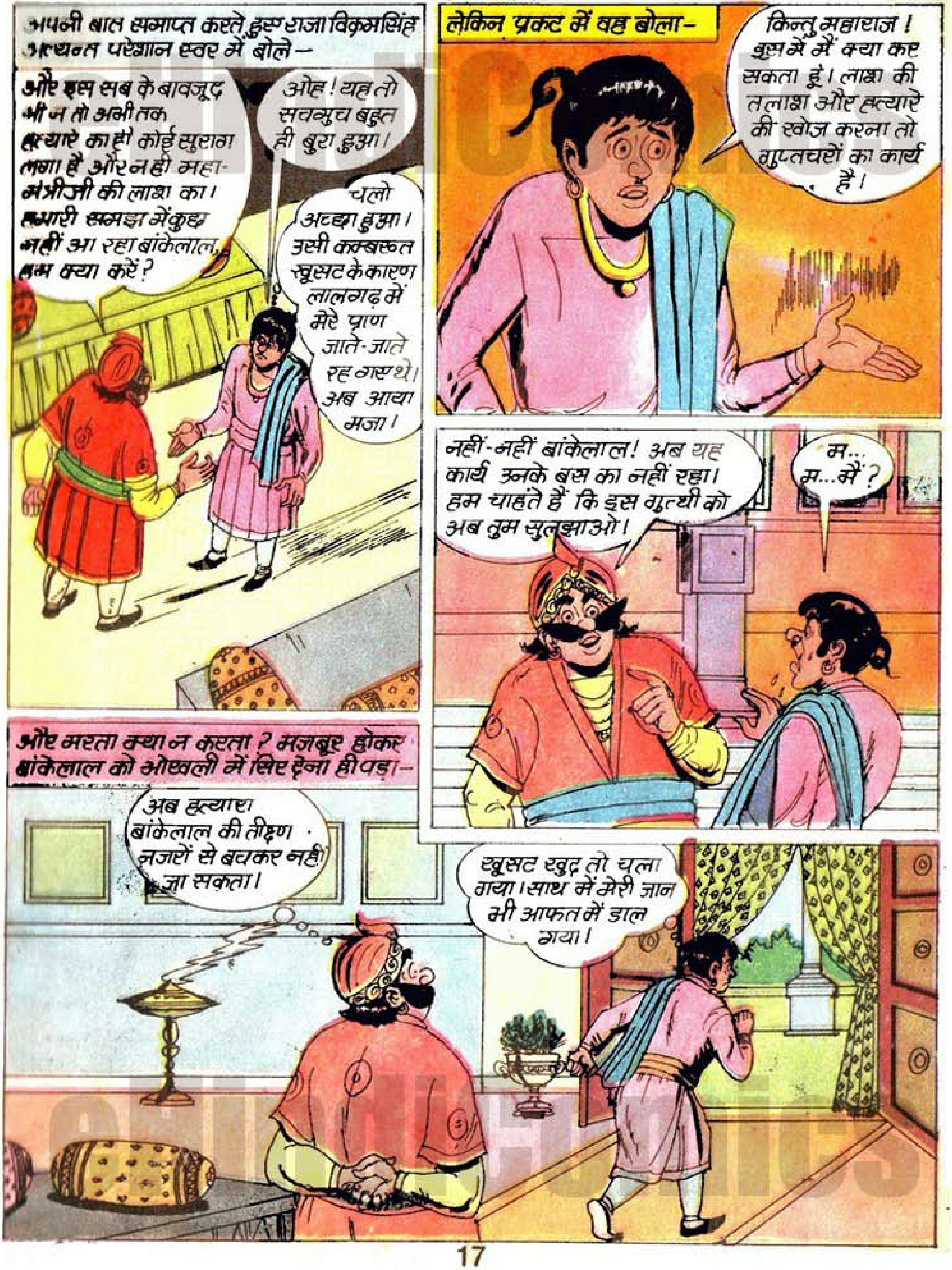

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

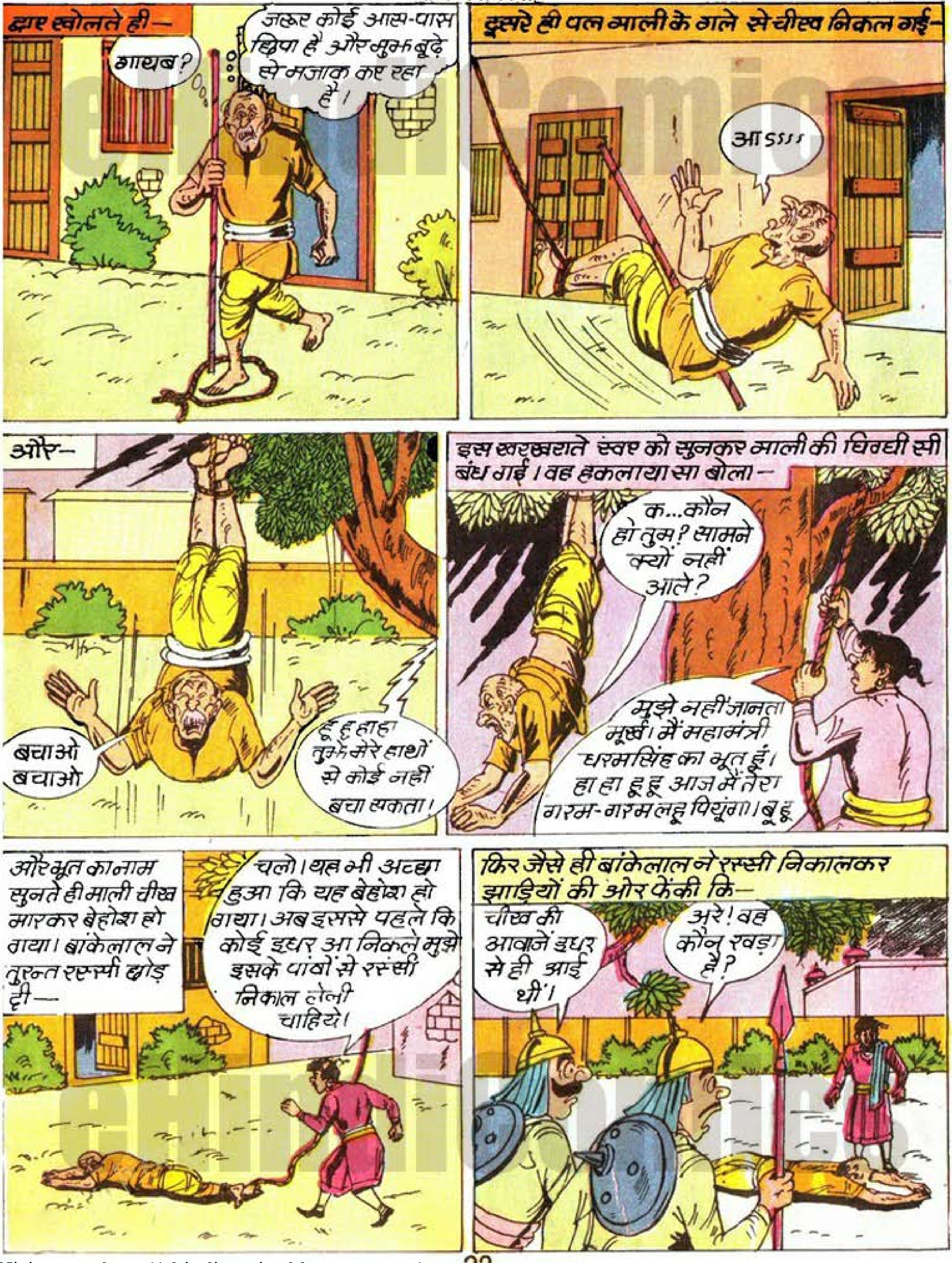

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

ब...बांकेलाल जी... आप
मैं तो यहां चीख की आवाज सुनकर आया था। किंतु अब तुम देख क्या रहे हो। जल्दी से इसे उठाकर राजवैद्यजी के पास ले चलो
??
और फिर होश में आते ही माली अपना बोरिया-बिस्तर समेट कर वहां से ऐसे भागा, जैसे उसके पीछे सैकड़ों भूत पड़े हों—
अरे! सुनो तो रामसिंह! कहां भागे जा रहे हो?
यह महल अब भुतिया महल बन गया है। अब मैं यहां एक पल नहीं रुकूंगा।
रातों-रात भूत का इतना प्रचार हो गया कि सूरज उगने से पूर्व ही महल के आधे कर्मचारी महल छोड़कर भाग चुके थे। अगले दिन—
बांकेलाल! यह सब क्या हो रहा है। हमारी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा।
समझ में तो मेरी भी कुछ नहीं आ रहा।
मैं तो केवल इतना कहूंगा महाराज कि इतने सारे लोग झूठ नहीं बोल सकते। फिर स्वयं मैंने अपनी आंखों से भी भूत देखा है।
महाराज! मेरी तो राय है कि यह महल खाली करके आप भी दूसरे महल में चले जाएं।
मैं इस रहस्य का पता लगाने की चेष्टा करूंगा। लेकिन अगर इसी बीच आपको कुछ हो गया तो मैं किसी को मुंह दिखाने के लायक नहीं रहूंगा।
भूतों का क्या भरोसा? वह किसी के साथ कैसी भी दुष्ट हरकत कर सकते हैं।
आ...

महाराज की जय हो। महाराज, हम अब इस महल में नहीं रहेंगे। अगर हमें कुछ हो गया तो हमारे बीवी-बच्चों का क्या होगा। अत: हम सब ने यहां से जाने का निश्चय किया है।
हम आपसे यही प्रार्थना करने आए हैं महाराज, कि आप भी यह महल छोड़कर दूसरे महल में चले जाएं
ये ठीक कहते हैं, महाराज!
और इस प्रकार राजा विक्रमसिंह दूसरे महल में आ गए—
वाह! मेरी योजना सफल हो गई। अब आज रात ही मैं चुपके से यहां से गायब होकर महल जाऊंगा। जहां मुझे किसी लाश की तलाश में सिर नहीं खपाना पड़ेगा।
उसी रात बांकेलाल पुराने महल में आ गया—
अहा। कितनी शांति है यहां। अब कुछ दिन चैन से कटेंगे। बाद में देखी जायेगी।
आधी रात के समय अचानक बांकेलाल की नींद उचट गई—
अरे! यह कौन है? शायद कई चोर कक्ष में घुसने की चेष्टा कर रहे हैं। ल...लेकिन महल में तो इस वक्त मैं अकेला हूं। बाप रे! अब क्या होगा?
वे तीनों व्यक्ति बड़े ही रहस्यमय ढंग से भीतर आ गए। उसके निकट पहुंच कर उनमें से एक बोला—
क्या इसे जगाऊं?
नहीं। ऐसे ही उतार दो गर्दन। बड़के! जल्दी कर।
गर्दन! मर गए बांके बेटा अब तो...

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

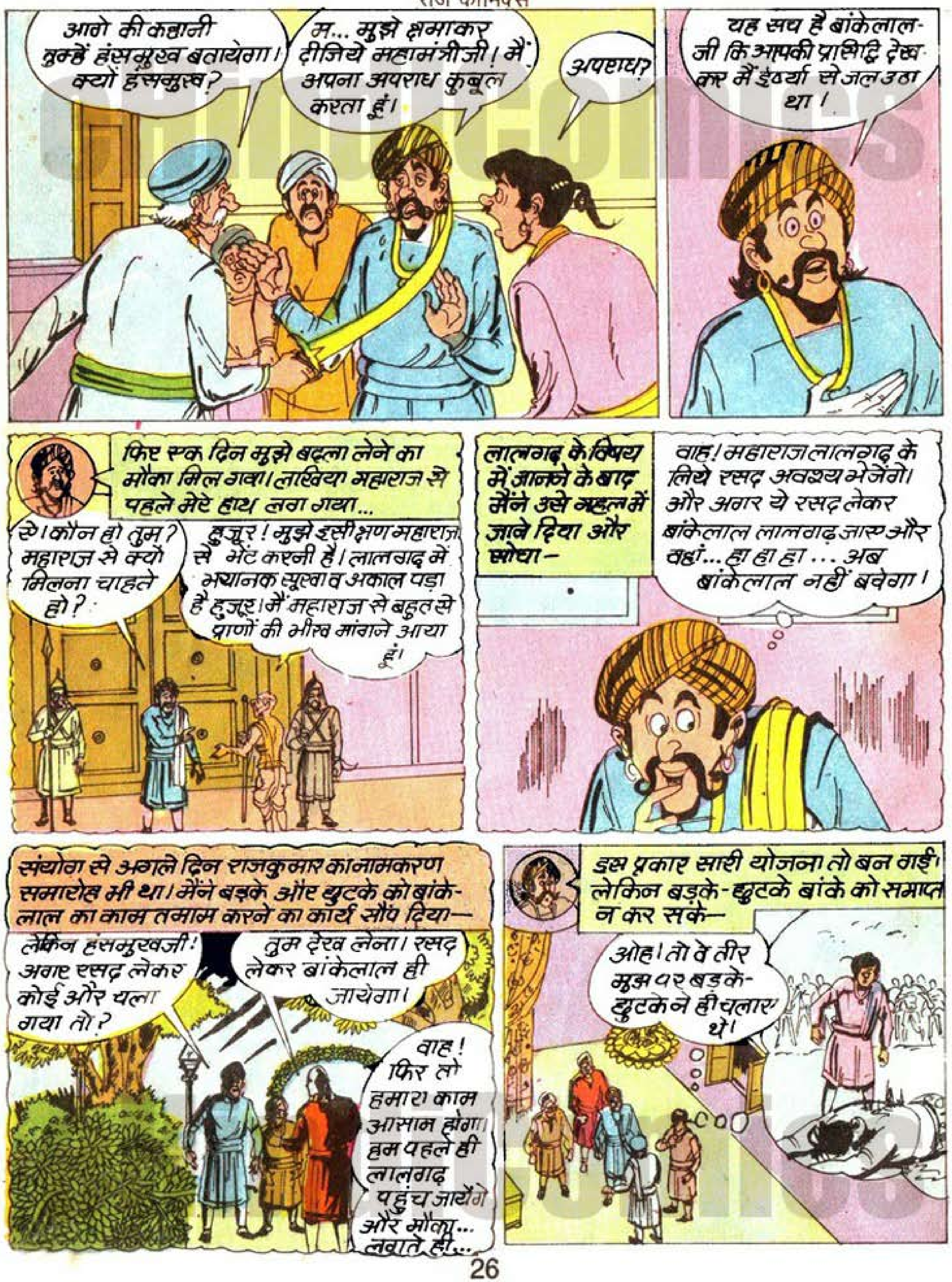

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

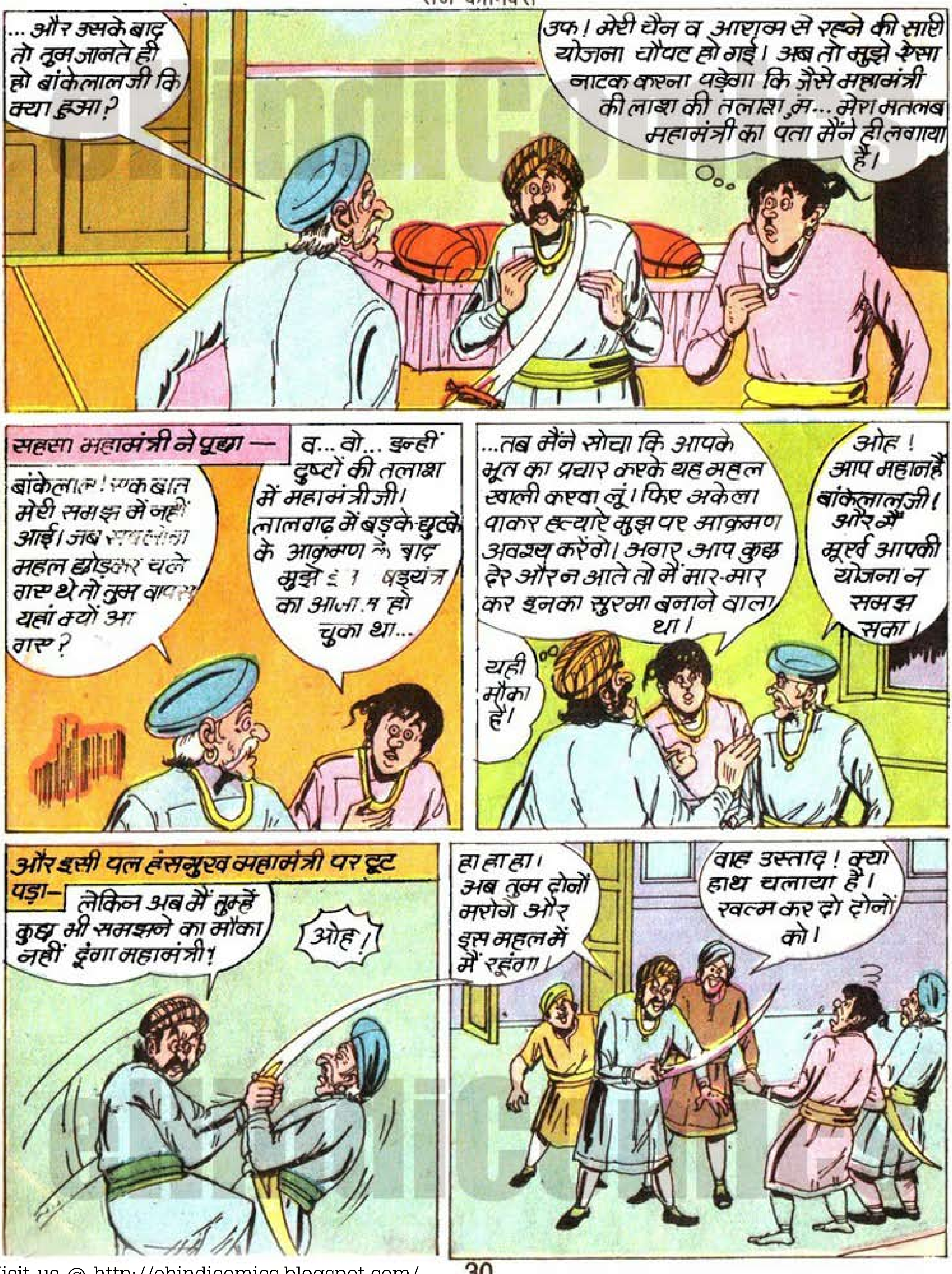

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

• समाप्त •

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

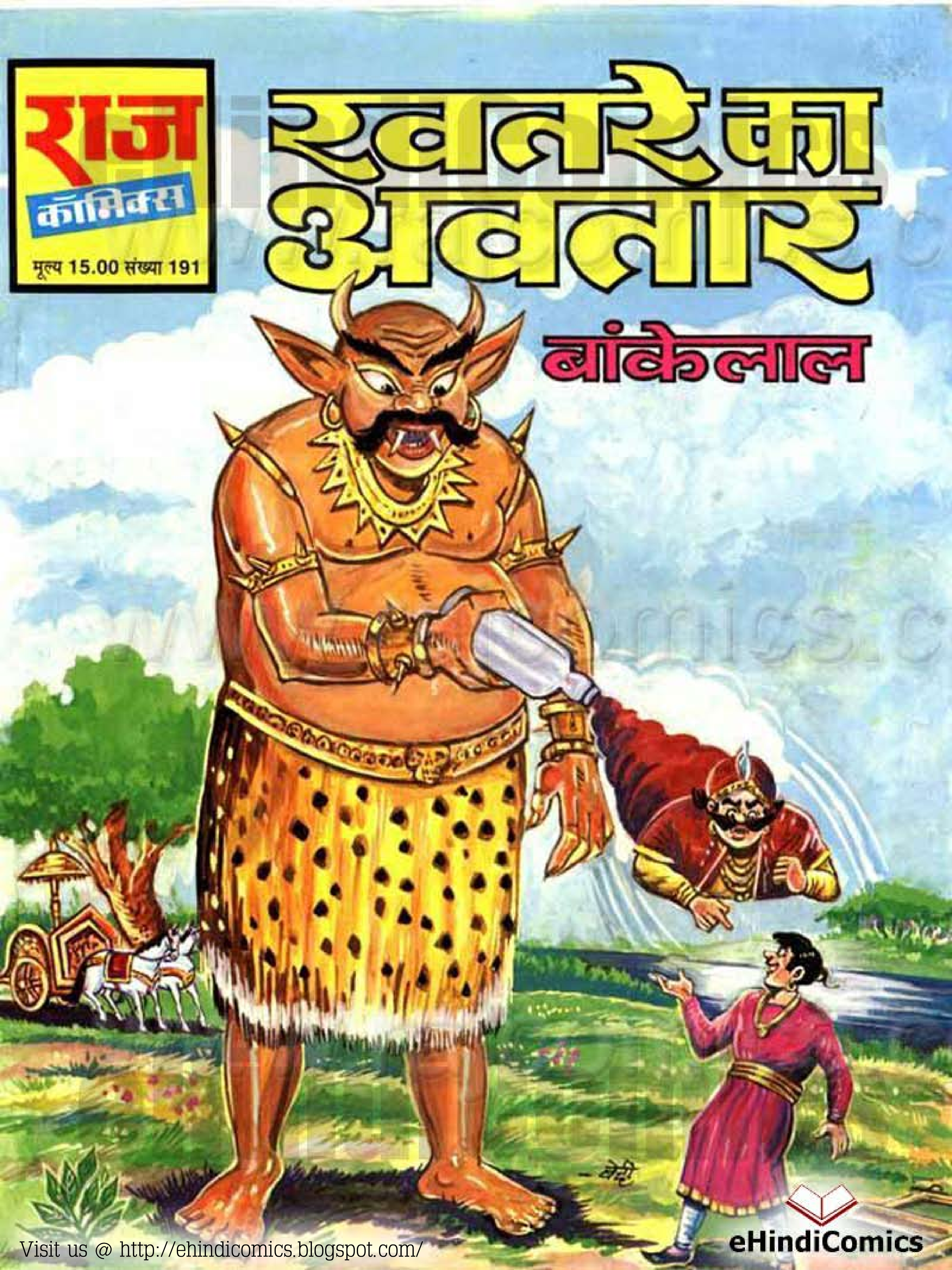

eHindiComics
Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

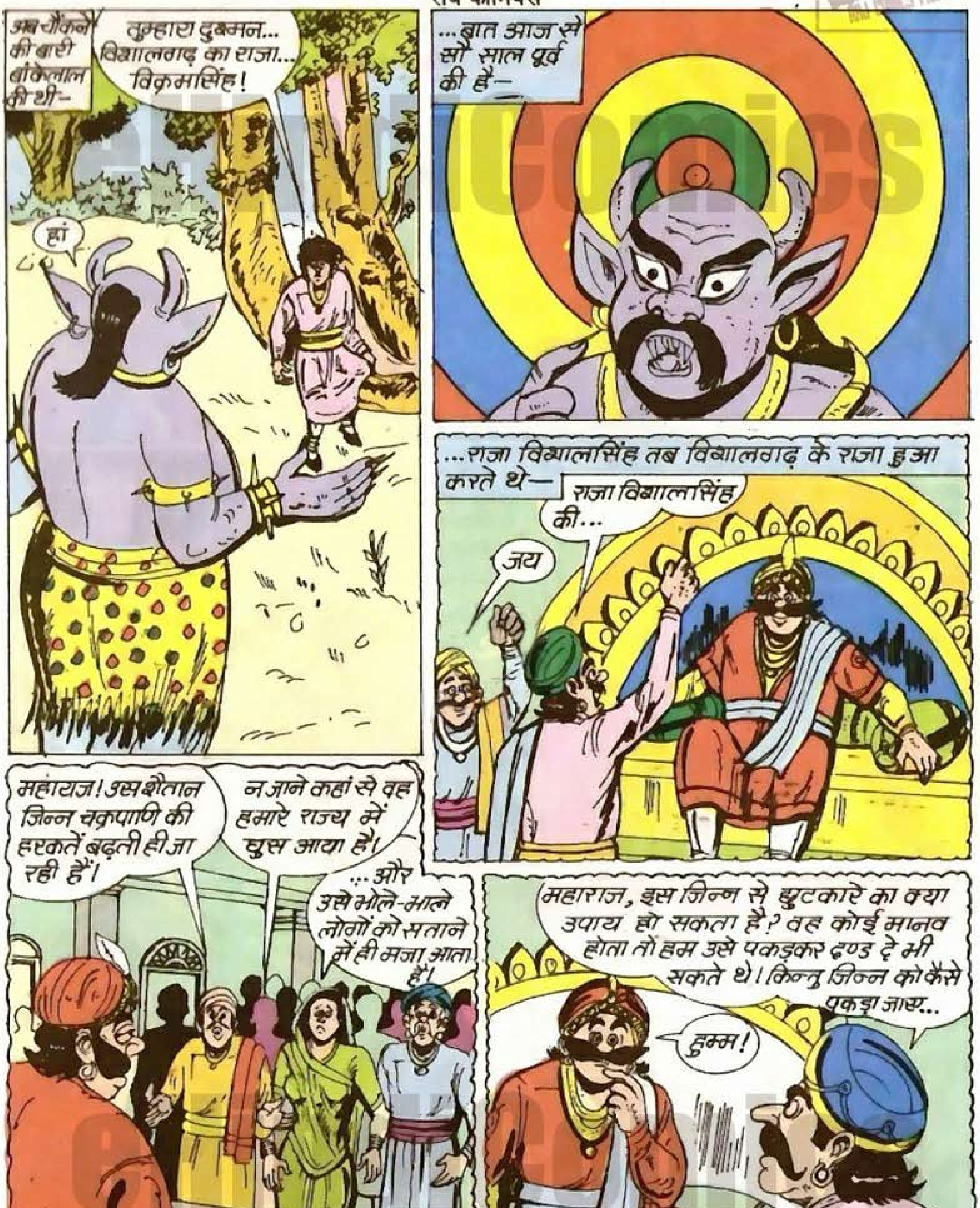

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

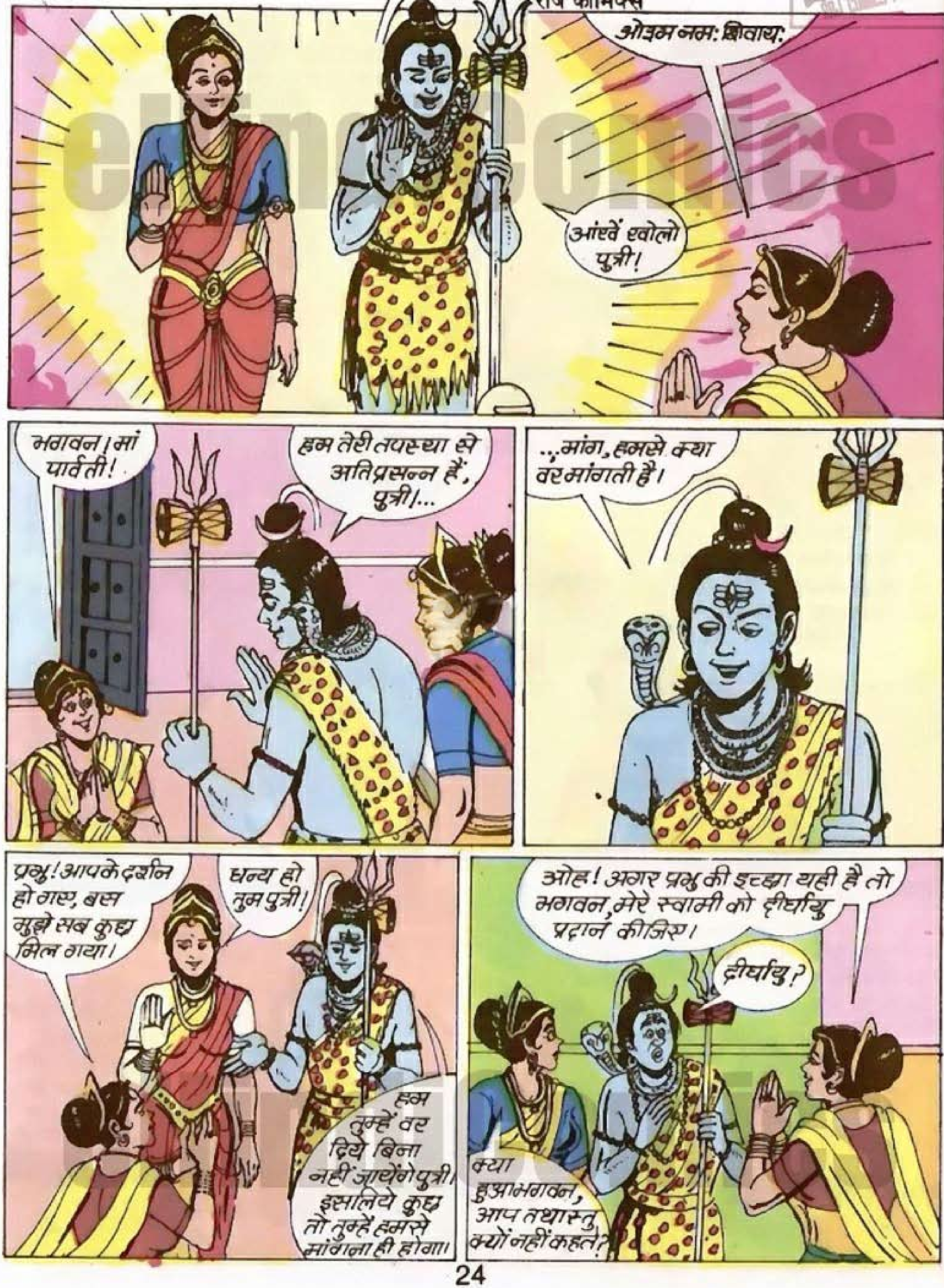

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

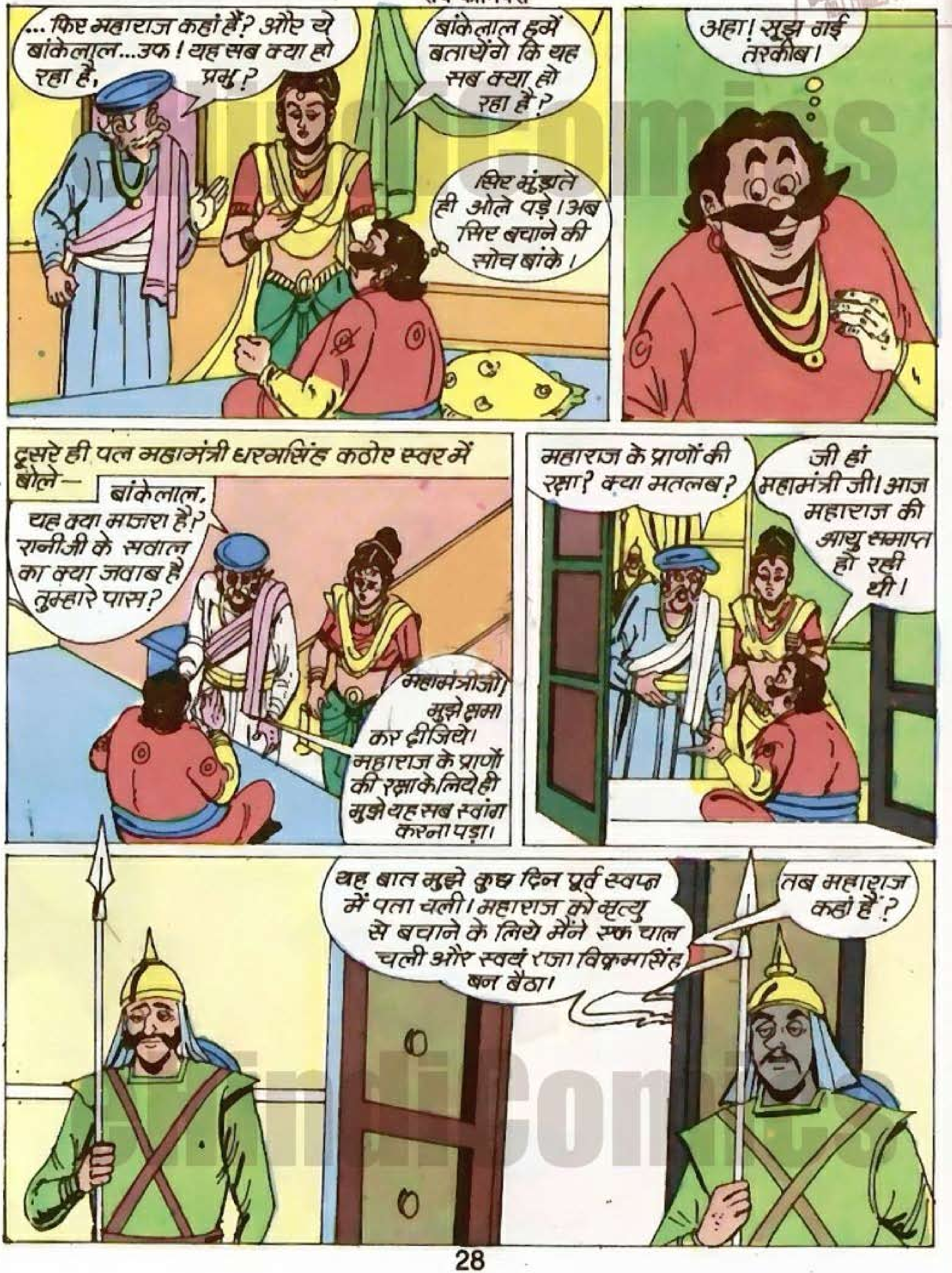

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

Visit us @ http://ehindicomics.blogspot.com/

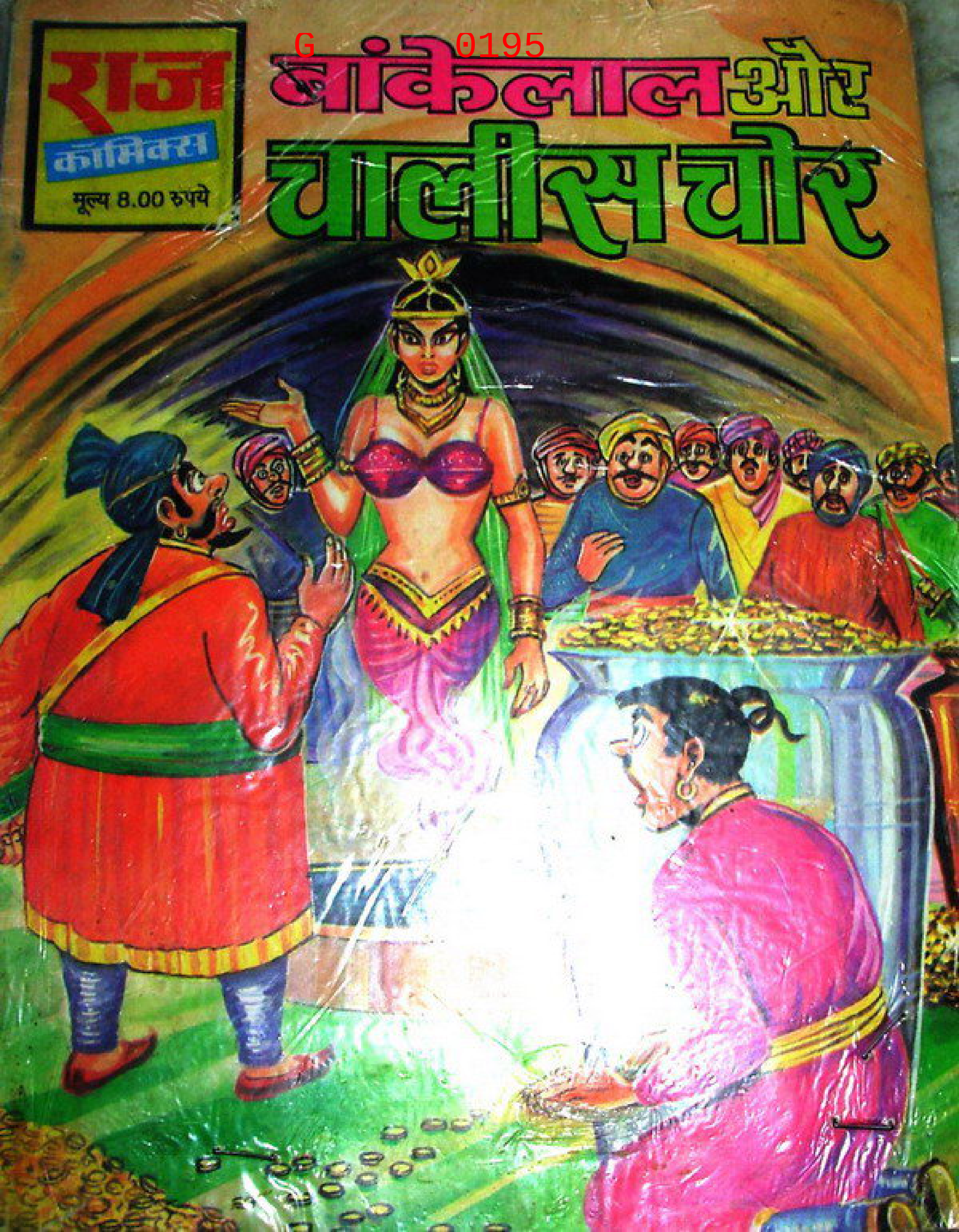
G 0195
राज कॉमिक्स
मूल्य 8.00 रुपये
बांकेलाल और
चालीस चोर

बांकेलाल और चालीस चोर
चित्रांकन: बेदी
कहानी : तरुण कुमार वाही
संपादन : मनीष चन्द्र गुप्त
बांकेलाल का जन्म शिव के आशीर्वाद से हुआ था। बचपन में उसकी एक शरारत से क्रोधित होकर शिव ने उसे शाप दिया था—
बांके जब किसी को हानि पहुंचाने के लिए कोई शरारत करेगा, तो उस व्यक्ति को हानि के बजाए बहुत लाभ होगा। उसका थोड़ा सा लाभ इसे भी मिलेगा।
अपनी शरारतों के कारण शिव के शाप से बांकेलाल विशालगढ़ के राजा विक्रमसिंह के महल में पहुंचकर ठाठ से रहने लगा—
बांकेलाल इतना कुछ पा लेने के बाद भी शरारत करके दूसरों को हानि पहुंचाने से बाज नहीं आता था। राजा विक्रमसिंह ने उसे बहुत सम्मान दिया था, लेकिन वह राज-सिंहासन पर अधिकार करने की योजना बना रहा था—
उन्हीं दिनों की बात है। विशालगढ़ के पड़ोसी देश सूरजपुर में चोरों के एक गिरोह ने अपना आतंक फैला रखा था। राजा सूरजसिंह चोरों को पकड़ने का प्रत्येक यत्न करके देख चुके थे, किन्तु एक भी चोर हाथ न लगा था—
चालीस चोर
चालीस चोर
चालीस चोर
जबकि इधर चालीस चोरों के गिरोह का आतंक बढ़ता ही चला जा रहा था—
लूट लो हा हा हा।
डाकू आ गए।

एक दिन —
ओह! लगता है वे चोर कभी पकड़े न जा सकेंगे। और हमारी निर्दोष प्रजा पर अत्याचार होते रहेंगे।
सहसा राजकुमारी चंद्रमुखी ने गम्भीर
कर कहा —
पिताश्री, अगर आप मेरी राय मानें तो वे दुर्दान्त चोर कुछ ही दिनों में पकड़े जा सकते हैं।
वह कैसे, राजकुमारी चन्द्रमुखी?
हमारे पड़ोसी देश विशालगढ़ में आजकल बांकेलाल के नाम की बहुत धूम है।...
बांकेलाल!
बांकेलाल?
ओह, बांकेलाल! उसके चर्चे तो हमने भी सुन रखे हैं।
महाराज! राजकुमारी जी उचित फरमा रही हैं। हमें उन चोरों का सफाया करने के लिये बांकेलाल-जी की मदद लेनी चाहिए।
विशालगढ़ के राजा विक्रमसिंह हमारे गहरे मित्र हैं। वे बांकेलाल को हमारी मदद के लिये अवश्य भेजेंगे।

सूरजपुर से एक दूत तुरन्त विशालगढ़ आ पहुंचा, और–
महाराज विक्रमसिंह को हमारा व हमारी पुत्री राजकुमारी चन्द्रमुखी का प्रणाम। सूरजपुर संकट में है। बांकेलाल की मदद की आवश्यकता है। अगर वे चालीस चोर...
ओह! सूरजपुर संकट में है। और देर-सवेर यह संकट विशालगढ़ पर भी मंडरा सकता है।
बांकेलाल, तुमने यह पत्र सुन लिया होगा। हम तुम्हारे विचार जानना चाहते हैं।
उफ! एक और मुसीबत!
बांकेलाल! हम तुम्हारी स्वीकारोक्ति चाहते हैं।
अब आप कहें तो भला मैं कैसे इनकार कर सकता हूं, महाराज!
ओखली में सिर देना ही होगा।
महाराज! पड़ोसी देश होने के नाते हमें मदद का, उनका ये निवेदन स्वीकार करना ही चाहिए था। बांकेलाल जी उनकी मदद के लिये तैयार हो गए हैं, यह बहुत खुशी की बात है।
महामंत्री जी! आप बांकेलाल के तुरंत प्रस्थान की तैयारी करवा दें।
जो आज्ञा महाराज!

दूसरे दिन बांकेलाल ने सूरजपुर जाने के लिए महाराज और महामंत्री से विदा ली—
अच्छा महाराज! अब उन चालीस चोरों की मृत्यु की खबर के साथ ही मैं आपसे भेंट करूंगा!
शीघ्र ही बांकेलाल विशालगढ़ की सरहद पार कर गया—
अहा! कितना मनमोहक दृश्य है!
इस झरने के पास ही भोजन का आनन्द लिया जाए। वाह!
भोजन इत्यादि से निबटकर—
वाह! कैसी शीतल हवा चल रही है। क्यों न कुछ देर यहां आराम किया जाए!
और लेटते ही एक विचार बांकेलाल के मन में कौंधने लगा—
उन चालीस चोरों ने तो लोगों को लूटकर बहुत बड़ा खजाना एकत्रित कर लिया होगा। बिल्कुल अलीबाबा और चालीस चोरों के खजाने की तरह!

काश! इन चोरों के खजाने की गुफा मुझे दिखाई पड़ जाती, और मैं कहता...
...खुल जा सिम-सिम...
...मेरे इतना कहते ही गुफा के द्वार पर बहता झरना रुक जाता...
...गुफा के मुंह पर पड़ा विशाल पत्थर हट जाता...
गड़ गड़ गड़
...और एक विशाल खजाने की गुफा का द्वार मेरे सामने होssssssता।

अरे!
कुछ देर बाद—
ये तो सचमुच गुफा का द्वार है।...
...जो मेरे खुलजा सिम-सिम कहते ही खुल गया।
इसका मतलब मैं अलीबाबा की कहानी वाले चालीस चोरों की गुफा में आगया हूं।
अगर ये वही गुफा है तो अभी इसका द्वार बंद हो जायेगा।
बन्द हो जा सिम-सिम
द्वार बन्द हो रहा है।
गड़ गड़ गड़

बांकेलाल शीघ्रता के साथ आगे बढ़ा—
एक विशाल खजाना कहीं मेरा इंतजार तो नहीं कर रहा।
और यह पल बांके के लिये महान प्रसन्नता से भरा था—
खजाना ही खजाना?!
जय भोले शंकर! तेरी जय हो आज तूने सुनली मेरी पुकार!
खन
अब इस खजाने से मैं एक ऐसा राज्य बनाऊंगा जहां मेरे जैसे लोग ही रहेंगे!
लेकिन तभी वह बुरी तरह से चौंक पड़ा—
अरे! ये तो गुफा का द्वार खुलने की आवाज है!
गड़ गड़ गड़

और सचमुच वह गुफा का द्वार खुलने की ही आवाज थी—
चालीस चोर
चालीस चोर
चालीस चोर
फिर एक स्थान पर पहुंचने के बाद—
ठहरो!
एकाएक सरदार मन ही मन कुछ बुदबुदाने के साथ कह उठा—
सिमसिम! प्रकट हो!
और फव्वारे के बीच से लहराती हुई एक आकृति उठने लगी—
हुक्म आका!
बोल सिम-सिम! यहां कोई आया तो नहीं! मैंने बाहर एक घोड़ा चरता हुआ देखा है।

हा हा हा तेरा घोड़े वाला शिकार गुफा में ही मौजूद है, आका! नाम है उसका बांकेलाल।
क्या?
साथियो, पूरी गुफा को घेर लो। दुश्मन को ढूंढकर सिर धड़ से अलग कर दो।
यह सुनते ही चालीस चोर गुफा के चप्पे-चप्पे पर फैल गए—
चालीस चोर
चालीस चोर
यहां नहीं है।
मर गए
यहां भी नहीं है।
ओह! स्वर्ण मुद्राओं का यह ढेर हिल कैसे रहा है?
हुम्म! यहां छिपा है
अरे, बाप रे! यह क्या है?
खनन
और चोर ने उसे बाहर खींच लिया।

अरे! तुम्हारे पीछे कौन है?
??
बांकेलाल की तरकीब काम कर गई–
क... कौन है पीछे?
पीछे तेरे पिताश्री हैं कम्बख्त!
धड़ाक
भाग बांके! वरना ये तुझे गाजरमूली की तरह काट डालेंगे।
ओह! वह रहा। उस गुफा में।
पकड़ो! जाने न पाए।
पकड़ो!
पकड़ो! इधर ही गया है।
अरे बाप रे! ये तो मेरे ही पीछे आ रहे हैं।

बचकर कहां जायेगा बच्चू ?
कहां गया?
इधर ही आया था।
ठीक इसी पल बांकेलाल की नजरें एक शैतान पर चिपक गई
ब... ब... बिच्छू !
बचाओ। आ...ह!
???
भागो!
वह रहा कम्बख्त।
उड़ा दो गर्दन।
उफ ! कहां फंस गया खजाने के चक्कर में।

हे भोले भण्डारी, बाहर निकलने का रास्ता दिखा रे।
रास्ता?
लेकिन—
अरे बाप रे! मैं तो फिर वहीं आ पहुंचा।
वह रहा।
अब कहां जायेगा बचकर!
बांकेलाल लपककर फिर उसी गुफा में घुस गया, और—
अब वह इस गुफा से बाहर निकलेगा चलो।
ही ही ही, बच्चो! मेरा नाम भी बांकेलाल ऐसे-वैसे ही नहीं है।

लेकिन बाहर निकलते ही—
ओह! चप्पे-चप्पे पर चोर ही चोर मेरी तलाश में हैं। भागो।
वह रहा। पकड़ो शैतान को।
बेटा बांके, लगता है आज तेरी कब्र इन्हीं गुफाओं में... ओह, यह क्या...
जैसे ही बांकेलाल ने मुड़कर देखा—
हेऽऽऽऽ ईईईई बचाओऽऽ
ओह! मैं तो बेकार ही डर गया था। यह तो केवल कंकाल है बुहुहुहु
चीख की आवाज। वह इधर ही है।
कुछ क्षण बाद—
कहां गया?
आवाज तो इधर से ही आई थी।
तभी—
किसे ढूंढ रहे हो। मैं तो यहां हूं।
क... कौन...
भम... भूत!
हुहुहु हा हा हा.. अब कहां जाओगे बचकर!
बचाओऽऽ

जबकि बांके एक अन्य गुफा के मुंह की ओर लपका—
यह गुफा सीधी मुख्य द्वार पर ही जाती लग रही है।
आ रहा है। होशियार!
लेकिन—
ओह! ये दोनों जाल लेकर मुझे फांसने की तैयारी में हैं। अभी मजा चखाता हूं इन्हें।
होशियार!
कदमों की आवाजें आ रही हैं।
और पीछे तुम्हारी मौत।
आया कि नहीं!
शी ईऽऽ आ रहा है।
धप धप
मेरे कूदो कहते ही कूद पड़ना।
हां!
कूदो!
कूदो!
क्या?
अगले ही पल—
अरे कमबख्तो, यह मैं हूं।
तुम...फिर वह कहां गया?
वह रहा!
भागो!

लेकिन इस बार वह भागने में सफल नहीं हो पाया, और—
हा हा हा
हा हा हा हा
??
हा हा हा हा।
हा हा हा हा।
इस तिलस्मी गुफा से बच निकलना आसान नहीं है। खलील, खत्म कर दो इसे।
एक ही झटके में हलाल कर दूंगा, सरदार!
नहीं!
खलील की तलवार हवा में उठी, लेकिन—
झनन
ओह! यह कहां फंस गई तलवार?
नहीं!
खलील क्या हुआ?
तलवार फंस गई थी सरदार...
??
लेकिन अब नहीं छोड़ूंगा सरदार! एक ही वार में बकरे की तरह हलाल कर दूंगा।

याऽऽईऽऽ
टन्न
आ... ह!
ओह! यह तो गया काम से। लगता है मुझे ही यह कार्य करना होगा।
सरदार का तलवार वाला हाथ हवा में लहराया –
हा हा हा
नहीं!
सायं
अरे! कहां गया?
सरदार! मुझे छोड़ दो। मैं...मैं तो बड़े काम का आदमी हूं सरदार। तुम्हारे काम आऊंगा।

देर मत करो सरदार! यह राजा का जासूस लगता है, खत्म कर दो इसे।
नहीं सरदार! मैं जासूस नहीं हूं बल्कि... बल्कि...
...अगर तुम कहो तो मैं तुम्हें एक ऐसी योजना बनाकर दे सकता हूं कि राजा का पूरा खजाना पलक झपकते तुम्हारे हाथ लग जाये।
राजा का खजाना?
हां सरदार! गुफा का वह खाली कोना बिल्कुल अच्छा नहीं लग रहा, अगर वहां राजा का खजाना आ जाए तो गुफा की सुंदरता में चार चांद लग जाएं...
??
...सरदार! मैं सूरजपुर की राजकुमारी चन्द्रमुखी का अपहरण कर यहां ले आऊंगा और फिरौती में तुम राजा का पूरा खजाना मांग लेना।...
...फिर राजकुमारी को मुझे सौंपकर अपने दल में शामिल कर लेना।

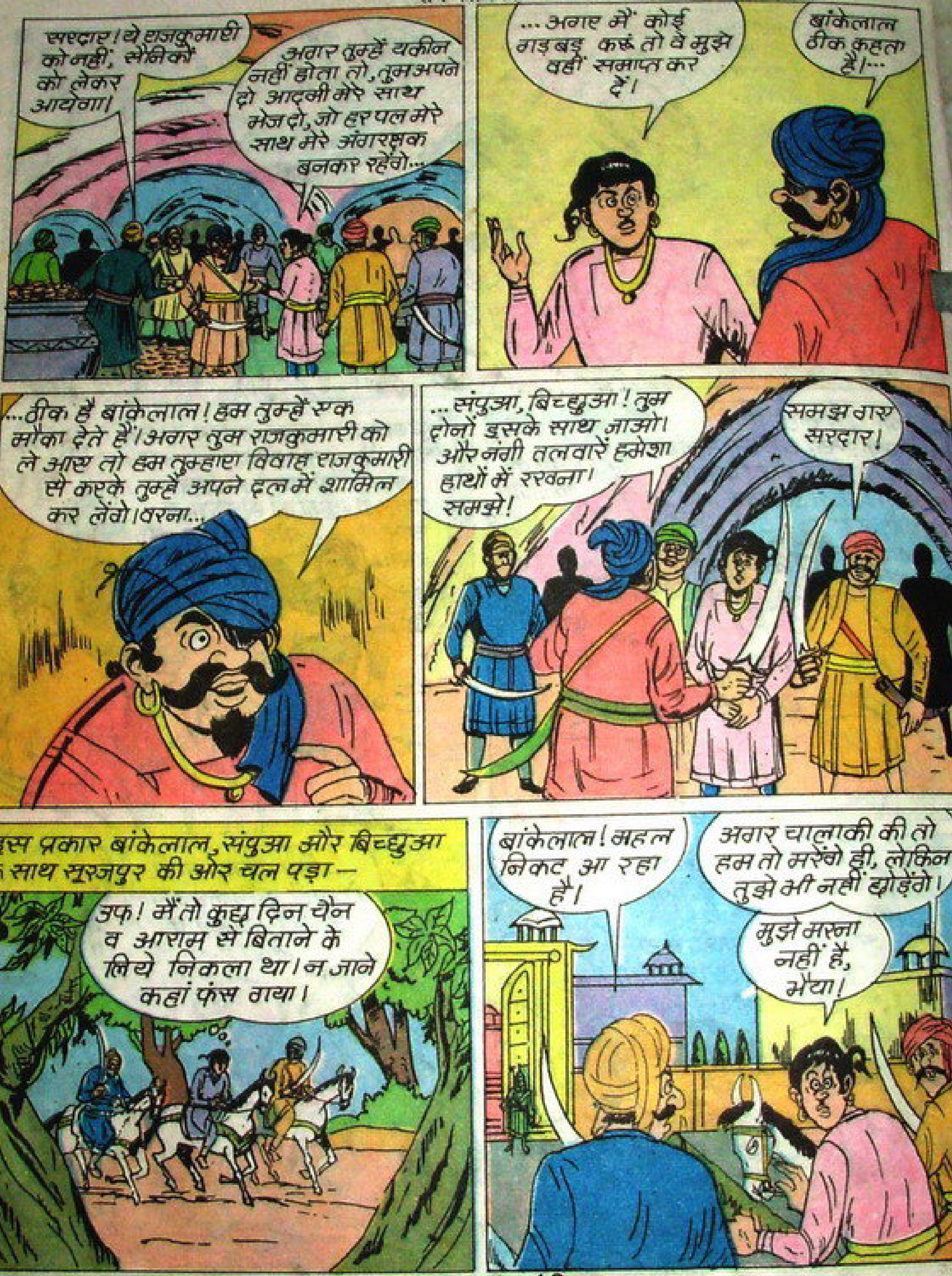
सरदार! ये राजकुमारी को नहीं, सैनिकों को लेकर आयेगा।
अगर तुम्हें यकीन नहीं होता तो, तुम अपने दो आदमी मेरे साथ भेज दो, जो हर पल मेरे साथ मेरे अंगरक्षक बनकर रहेंगे...
...अगर मैं कोई गड़बड़ करूं तो वे मुझे वहीं समाप्त कर दें।
बांकेलाल ठीक कहता है।...
...ठीक है बांकेलाल! हम तुम्हें एक मौका देते हैं। अगर तुम राजकुमारी को ले आए तो हम तुम्हारा विवाह राजकुमारी से करके तुम्हें अपने दल में शामिल कर लेंगे। वरना...
...संपुआ, बिच्छुआ! तुम दोनों इसके साथ जाओ। और नंगी तलवारें हमेशा हाथों में रखना। समझे!
समझ गए सरदार!
इस प्रकार बांकेलाल, संपुआ और बिच्छुआ के साथ सूरजपुर की ओर चल पड़ा—
उफ! मैं तो कुछ दिन चैन व आराम से बिताने के लिये निकला था। न जाने कहां फंस गया।
बांकेलाल! महल निकट आ रहा है।
अगर चालाकी की तो हम तो मरेंगे ही, लेकिन तुझे भी नहीं छोड़ेंगे।
मुझे मरना नहीं है, भैया!

महल के मुख्य द्वार पर—
जाओ! महाराज से कहो कि बांकेलाल आए हैं।
बांकेलाल?
महाराज आपका ही इंतजार कर रहे हैं।
लेकिन आपके साथ ये दोनों...
य... ये मेरे अंग-भक्षक... मेरा मतलब अंगरक्षक हैं।
आप भीतर आ सकते हैं, बांकेलालजी!
ओह!
चलो भाई!
महल में महाराज सूरजसिंह ने बांकेलाल का भव्य स्वागत किया—
आइये बांकेलालजी! हम तो कब से आपका ही इंतजार कर रहे थे।
उफ! कम्बख्त बिल्कुल पास-पास खड़े हैं! कान में फुसफुसा भी नहीं सकता!
वाह! क्या बांका जवान है बांके!
पर बांकेलाल, ये दोनों शस्त्रधारी कौन हैं?
ये मेरे अंगरक्षक हैं, महाराज! हमेशा मुझसे चिपके रहते हैं। महाराज का आदेश है न...
??

...अब क्या करूं। महाराज विक्रमसिंह मुझे इतना चाहते हैं कि वे तो आधी सेना ही मेरे साथ भेजना चाहते थे, किन्तु मैंने केवल इन्हें ही चुना। क्यों मित्रो?
हां जी, हां।
हां - हां!
बांकेलाल! कुछ भी करो, पर उन चालीस चोरों को पकड़ो या समाप्त करो।
आप चिंता मत कीजिए, महाराज! बस, एक बड़ा सा संदूक, जिसमें कुछ पत्थर भरे हों, मंगवा दीजिए। फिर देखिए बांकेलाल का कमाल।
और संदूक का बांकेलाल क्या करेगा, यह प्रश्न किसी ने नहीं पूछा।
और फिर उसी रात्रि –
कार्य बेहद जोखिम भरा है, सावधानी से होना चाहिये।
चिन्ता मत करो। मैं राजकुमारी को ले आऊंगा और किसी को कानों-कान भी खबर न होगी।
मैं यहीं बांकेलाल के पास रुकता हूं।
संपुआ राजकुमारी चंद्रमुखी के कक्ष की ओर जाने लगा –
देखो, जब तक संपुआ राजकुमारी को लेकर आए तुम इस संदूक को खाली कर लो।
हुम्म! और तुम मौका पाकर राजकुमारी की जगह मुझे ही इस संदूक में बन्द कर दो।
मजबूरन बांकेलाल को ही संदूक खाली करना पड़ा –
बेटा! गिन-गिनकर बदले न लिये तो मेरा भी नाम बांकेलाल नहीं।
अब ठीक है। ही ही ही!

कुछ ही देर में संपुआ राजकुमारी चन्द्रमुखी को ले आया —
राजकुमारी बेहोश है। इसे तुरन्त सन्दूक में डालो।
जल्दी करो। अगर किसी ने देख लिया तो तुम्हारे साथ मैं भी मारा जाऊंगा!
और फिर —
बांकेलालजी! आप आधी रात के वक्त...? और इस सन्दूक में क्या है?
दरबान! क्या तुम्हें महाराज का आदेश प्राप्त नहीं हुआ कि मुझसे कैसा भी प्रश्न न किया जाए।
क्षमा बांकेलालजी! भूल हो गई। आप जा सकते हैं।
चलो।
कुछ दूर पहुंचते ही —
सुनो! यहां से तुम दोनों लौट जाओ। मैं राजकुमारी के कक्ष में फिरौती की चिट्ठी पहुंचा दूंगा। और फिर शीघ्र ही सारे खजाने के साथ सिमसिम गुफा पहुंच जाऊंगा।
ठीक है। लेकिन अगर कोई चाल की तो हम राजकुमारी को जान से मार डालेंगे और इसी खाली संदूक में उसकी लाश महल में भेज देंगे...
...और उसके बाद तुम भी नहीं बचोगे।

अगले दिन महल में हंगामा मच गया—
महाराज! राजकुमारी जी गायब हैं।
क्या?
जी हां महाराज! उन चालीस चोरों के गिरोह ने उनका अपहरण कर लिया है!
??
पत्र पढ़ते ही सूरजसिंह के होश उड़ गए—
महाराज सूरजसिंह, राजकुमारी की सलामती चाहते हो तो पूरा राज-कोष बक्सों में भरकर किसी एक आदमी के हाथ पहाड़ वाले दरिया के किनारे भेजो। —चालीस चोर
बांकेलालजी! यह सब क्या हो गया। न जाने वे मेरी बच्ची के साथ क्या सुलूक करेंगे! आप कुछ करिये बांकेलालजी!
महाराज!
??
हमें आपसे कुछ कहना है।
जो कहना है जल्दी कहो। आह, मेरी बच्ची!
??
महाराज! बांकेलाल जी के दोनों अंगरक्षक कहीं दिखाई नहीं पड़ रहे।
??
??
??

महामंत्री ने तुरन्त प्रश्न किया —
बांकेलाल जी! यह तो हम भी बहुत देर से महसूस कर रहे हैं।
कहां हैं आपके अंगरक्षक?
जी... वो?
हम बताते हैं, महाराज! वे दोनों अंगरक्षक रात में ही एक संदूक के साथ बांकेलालजी ने कहीं फरार कर दिये हैं। और उस संदूक में क्या था... यह तो बांकेलालजी ही जाने।
अ... उस संदूक में तो पत्थर... पत्थर भरे थे।
महाराज! मुझे लगता है उस सन्दूक में ही राजकुमारीजी का अपहरण किया गया है।
क्या?
बोलो बांकेलाल! क्या ये सच है? और अगर नहीं तो फिर तुम्हारे अंगरक्षक संदूक के साथ रातों-रात कहां गायब हो गए?
बोलो बांकेलाल! चुप क्यों हो?
ओह! अब सच्चाई प्रकट करने का वक्त आ गया है।
दूसरे ही क्षण —
महाराज! लगता है अब सब कुछ बताना ही होगा।
हां महाराज! वे दोनों मेरे अंगरक्षक नहीं, बल्कि चोरों के साथी थे।
क्या?

...जब मैं विशालगढ़ से चला तो न जाने कैसे उन्हें इस बात की खबर लग गई, और–
अगर तुमने हमारा काम न किया तो हम अभी तुम्हारा सिर धड़ से अलग कर देंगे।
...और महाराज... मजबूरन मुझे उन के दो साथियों को अंग-रक्षक बनाकर महल में लाना पड़ा...
...लेकिन तब तक मैं उन चोरों के गिरोह को समाप्त करने की एक तरकीब भी सोच चुका था...
..और महाराज, अब मैं उन सबको उन्हीं के फैंके जाल में फंसाऊंगा।
वो कैसे?

एक सन्दूक में स्वर्ण मुद्राएं और शेष सभी संदूकों में सैनिकों को सिमसिम गुफा में ले जाकर...
??
वाह! महाराज, बांकेलाल जी ने योजना तो पुख्ता तैयार की है।
तब देर किस बात की। आज ही योजना पर कार्य आरम्भ हो।
हे भगवान! मेरी पुत्री की रक्षा करना।
योजना पर अमल शुरू हो गया —
वाह! अब आयेगा मजा। इन चालीस सैनिकों का भेद मैं सिमसिम गुफा पहुंचते ही खोल दूंगा..
...प्रसन्न होकर सरदार अवश्य ही मुझे अपने दल में शामिल कर लेगा। फिर सैनिकों का भेद खुलने के बाद राजकुमारी को छोड़ने के लिये...
...सरदार फिरौती का खजाना भी मंगा लेगा।
...और एक दिन सरदार का टेटुंआ दबाकर मैं खुद सरदार बन जाऊंगा। और पूरे खजाने का मालिक भी। वाह। लगता है इस बार मेरा स्वप्न पूरा होकर रहेगा।

खुल जा सिमसिम...
अन्दर पहुंचते ही सबने बांकेलाल को घेर लिया—
कहो बांकेलाल। ले आए खजाना।
हां, सरदार। बक्से खोल कर देख लो।
बांकेलाल!
एक डाकू ने बक्सा खोलकर देखा—
सरदार! बक्सों में खजाना ही है।
वाह!
सभी बक्से नीचे उतार लिये गए—
??
हा हा हा!
हा हा हा
अब इन्हें बक्सों की हकीकत बता दूं।
सरदार... इन बक्सों में खजाना...
...हा हा हा। हम जानते हैं बांकेलाल! और अब तुम हमारे अड्डे का राज जान चुके हो। इसलिये हम तुम्हें जीवित नहीं छोड़ सकते... हा हा हा।
नहीं!
हा हा हा!

...ऽ है इस खूबसूरत शहज़ादी से हम विवाह करेंगे हा हा हा।
शैतान! मत छू हमें।
हा हा हा। उड़ा दो बांकेलाल की गर्दन!
ओह! यह तो चक्कर उल्टा ही हो गया।
लेकिन अभी भी बाजी मेरे ही हाथ में है।
दूसरे ही पल—
बांकेलाल का संकेत मिलते ही संदूकों में बन्द सैनिक बाहर निकल आए—
मारो!
मारो!
एक भी बचने न पाए!

धोखा!
मुकाबिला करो।
राजकुमारी जी, घबराइये नहीं। अब ये चोर हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे।
जबकि इधर महासंग्राम सा छिड़ गया—
मारो! मारो!
खच्च
आह...
हाय मरा!
बांकेलाल! अब तू मेरे हाथों से नहीं बचेगा!
ओह!
नहीं!
आ... ह...
??
खच्चाक
बचा!

नीचे बैठने के साथ ही बांकेलाल ने सरदार की दोनों टांगें पकड़कर खींच लीं –
ओह!
मेरी गर्दन उड़ायेगा, काने सरदार! अभी मजा चखाता हूं।
बांकेलाल सरदार की छाती पर चढ़ बैठा –
ले, उड़ा मेरी गर्दन... उड़ा।
धूम्म
धूम्म
आ...ह
क्रोध से गरजते हुए सरदार ने तलवार वाला हाथ अभी ऊपर उठाया ही था कि –
फलाक
हाय, मर गया।
राजकुमारी चन्द्रमुखी कहीं से रस्सी ढूंढ लाई, और –
कम्बख्त! मुझसे विवाह करेगा। अभी पता चल जायेगा, जब उल्टा लटकाऊंगी तुझे।
ओह! राजकुमारी
उधर सैनिकों ने सभी चोरों पर विजय प्राप्त कर ली। फिर –
सैनिकों! इन सभी नामुराद चोरों को इन बक्सों में बन्द कर दो। और सारी गुफा पर अपना कब्जा कर लो।
आह!
मर गया!

बांकेलाल घायल पड़े बिच्छुआ के निकट पहुंचा—
ओह, बिच्छुआ, तुझे तो मैं बिच्छू से ही कटवाऊंगा।
नहीं। बांकेलाल! मुझे क्षमा कर दो।
बिच्छू मैंने छोड़ दिया है। अगर ये तुझे काटे बिना निकल गया तो समझ कि मैंने बख्श दिया तुझे।
नहीं?
ही ही ही। अब भला मैं अपनी काटने की आदत से बाज थोड़े आऊंगा। ही ही ही
यह किया मैंने इस बंदे के साथ पंगा।
आऽऽऽऽ
वाह। यह राग सुनकर मजा आ गया मुझे तो। पर अब खिसकने में ही भलाई है।
बांकेलाल संपुआ के पास पहुंचा—
और संपुआ! तू भी तो मेरा अंगरक्षक बना था। तुझे तो मैं इस पोटली में बन्द सांप से ही डसवाऊंगा।
म... माफ कर दो बांकेलाल, मुझे सांप से मत डसवाना।
लेकिन बांके ने पोटली संपुआ के ऊपर पलट दी—
देखा राजकुमारी जी। रस्सी देखकर तो इसके प्राण निकल गए। सांप देख लेता तो शायद इसकी सात पुश्तें मृत पैदा होतीं।
वाह! बांकेलाल! तुमने तो कमाल ही कर दिया।

अंत में, अब चोरों व खज़ाने से गुफा खाली कर ली गई—
क्यों सरदार? अब कर दूं तेरी गर्दन धड़ से जुदा।
नहीं! मुझे क्षमा कर दो।
नहीं बांकेलाल! इसे जीवित मत छोड़ना।
नहीं राजकुमारी जी! इसे मारकर मैं अपने हाथ गंदे क्यों करूं? इसे ऐसे ही लटका रहने देते हैं। यहीं लटके-लटके एक दिन इसके प्राण निकल जायेंगे।
नहीं, मुझे अकेला छोड़कर मत जाओ।
गुफा से बाहर निकलते ही—
बन्द हो जा सिमसिम।
गड़-गड़
??
जबकि भीतर—
सिमसिम! प्रकट हो सिमसिम!
हा हा हा। आखिर तूने भी वही भूल कर दी न, जो एक दिन अबुहसन और उसके चालीस चोरों ने की थी... स्त्री को यहां लाया...
अब परिणाम भुगत। मैं केवल उसे ही आका मानती हूं... जिसके पास चालीस चोरों का दल होता है। अब तू अकेला है। मैं जा रही हूं। हा हा हा।
नहीं!

उधर महल में—
पिताश्री!
मेरी बच्ची!
पिताश्री! अगर आज बांके-लाल जी न होते तो शायद आपकी बेटी मर गई होती।
चुप खड़ा रह बांके! तेरी योजना की टंगड़ी तो टूट चुकी है।
बांकेलाल! हमें तुम पर और विशालगढ़ के महाराज विक्रमसिंह पर नाज है, जिनके पास तुम जैसा हीरा है।
यह तो मेरा फर्ज था, महाराज!
और फिर जब बांकेलाल वापिस विशाल-गढ़ की ओर रवाना हुआ—
बांकेलाल जी! यह सफेद गुलाब का पुष्प आपको हमारी याद दिलाता रहेगा।
ओह! धन्यवाद राजकुमारी!
काश! पुष्प की जगह राजकुमारी ने मेरे गले में वर-माला डाली होती।

राज
कॉमिक्स
मूल्य 8.0
बांकेलाल और
परियों की
मुसीबत

1574

बांकेलाल और परियों की मुसीबत
चित्रांकन : बेदी
कहानी : पपिन्दर जुनेजा
संपादन : मनीष चंद्र गुप्त
एक दिन बांकेलाल अपने शयनकक्ष में लेटा हुआ सोच रहा था कि—
किसी तरह से मैं विशालगढ़ के राजा विक्रमसिंह का सिंहासन हथिया सकूं तो मजा आ जाए।
लेकिन कैसे सम्भव हो सकता है यह? हो न हो मेरी किस्मत में ही कुछ खोट है। क्योंकि जब भी मैं अपने लाभ के लिए कोई योजना बनाता हूं तो भाग्यवश मेरी योजना की टांग टूट जाती है और मैं हाथ मलता रह जाता हूं।
तभी उसे बाहर कुछ लोगों के चीखने-चिल्लाने की आवाजें सुनाई पड़ीं तो वह उठकर बैठ गया—
बचाओ!!
कोई बचाओऽ!
यह शोर कैसा है? मुझे बाहर निकलकर देखना चाहिए...
फिर बाहर राजमहल के दृश्य देखते ही वह चौंक पड़ा—
अरे! यह क्या? रात के इस पहर में महामंत्री, सेनापति व इतने सारे सैनिक ये सब यहां क्या कर रहे हैं? हो न हो कोई खास बात जरूर है।

शीघ्र ही-
क्या बात है महामंत्रीजी ! आप लोग रात के इस पहर यहां क्या कर रहे हैं? और अभी-अभी मैंने 'बचाओ-बचाओ' जैसा शोर सुना था। यह सब चक्कर क्या है?
ओह! बांकेलाल जी आ गये।
हां! देखें अब यह क्या कार्यवाही करते हैं?
गजब हो गया बांकेलाल जी! अपने महाराज को कुछ परियां उन के शयन-कक्ष से पलंग सहित उठा ले गयी हैं।
क्या?
एक पल के लिए तो महामंत्री के मुंह से परियों द्वारा राजा के अपहरण की खबर सुनकर बांकेलाल चौंक पड़ा...
...लेकिन अगले ही पल उसका दिल मारे खुशी के बल्लियों उछलने लगा—
वो मारा पापड़ वाले को, मेरे रास्ते की रुकावट अपने आप ही दूर हो गयी है...अब जल्दी ही मेरे विशालगढ़ का राजा बनने का सपना पूरा होगा।
क्या सोचने लगे बांकेलाल? अब तो सारी उम्मीदें तुम्हीं से हैं।
मेरे योग्य क्या सेवा है? मुझे बताएं।
बांकेलाल, अब मैं कैसे कहूं कि महाराज की तलाश तो सैनिकों के वश की बात नहीं है। अतः तुम ही अपने बुद्धि व विवेक से महाराज की खोज का कोई मार्ग ढूंढ निकालो।
ज...जी, मैं भला क्या प्रयास कर सकता हूं!...
...हां! यदि महाराज के अपहरण में साधारण मनुष्यों का हाथ होता तो मैं अपनी जान की बाजी लगा देता, लेकिन परियों द्वारा किये अपहरण की खोज में कहां और कैसे कर सकता हूं?

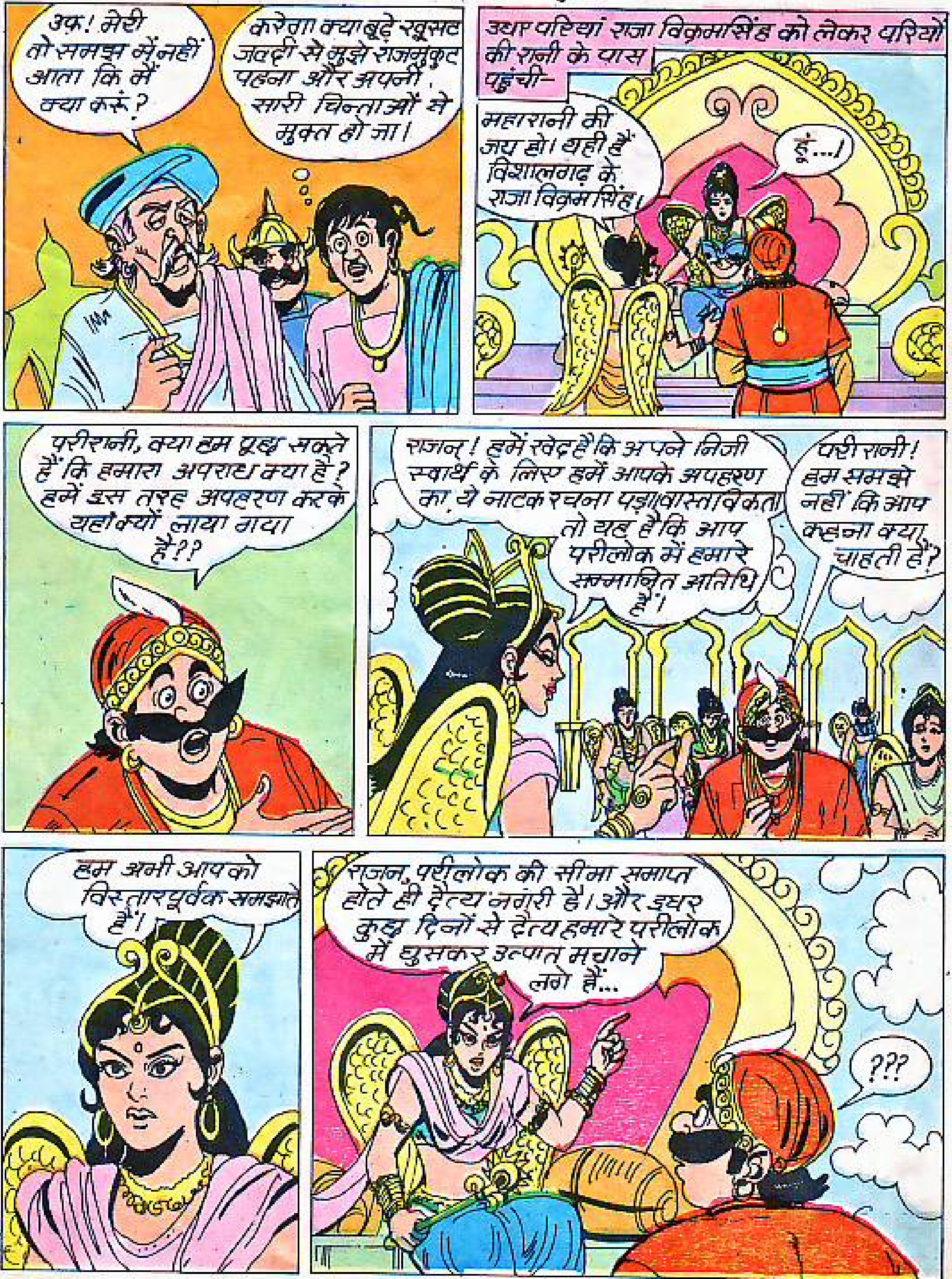
उफ़! मेरी तो समझ में नहीं आता कि मैं क्या करूं?
करेगा क्या बूढ़े खूसट जल्दी से मुझे राजमुकुट पहना और अपनी सारी चिन्ताओं से मुक्त हो जा।
उधर परियां राजा विक्रमसिंह को लेकर परियों की रानी के पास पहुंची—
महारानी की जय हो। यही हैं विशालगढ़ के राजा विक्रम सिंह।
हूं...!
परीरानी, क्या हम पूछ सकते हैं कि हमारा अपराध क्या है? हमें इस तरह अपहरण करके यहां क्यों लाया गया है??
राजन्! हमें खेद है कि अपने निजी स्वार्थ के लिए हमें आपके अपहरण का ये नाटक रचना पड़ा। वास्तविकता तो यह है कि आप परीलोक में हमारे सम्मानित अतिथि हैं।
परी रानी! हम समझे नहीं कि आप कहना क्या चाहती हैं?
हम अभी आपको विस्तारपूर्वक समझाते हैं।
राजन, परीलोक की सीमा समाप्त होते ही दैत्य नगरी है। और इधर कुछ दिनों से दैत्य हमारे परीलोक में घुसकर उत्पात मचाने लगे हैं...
???

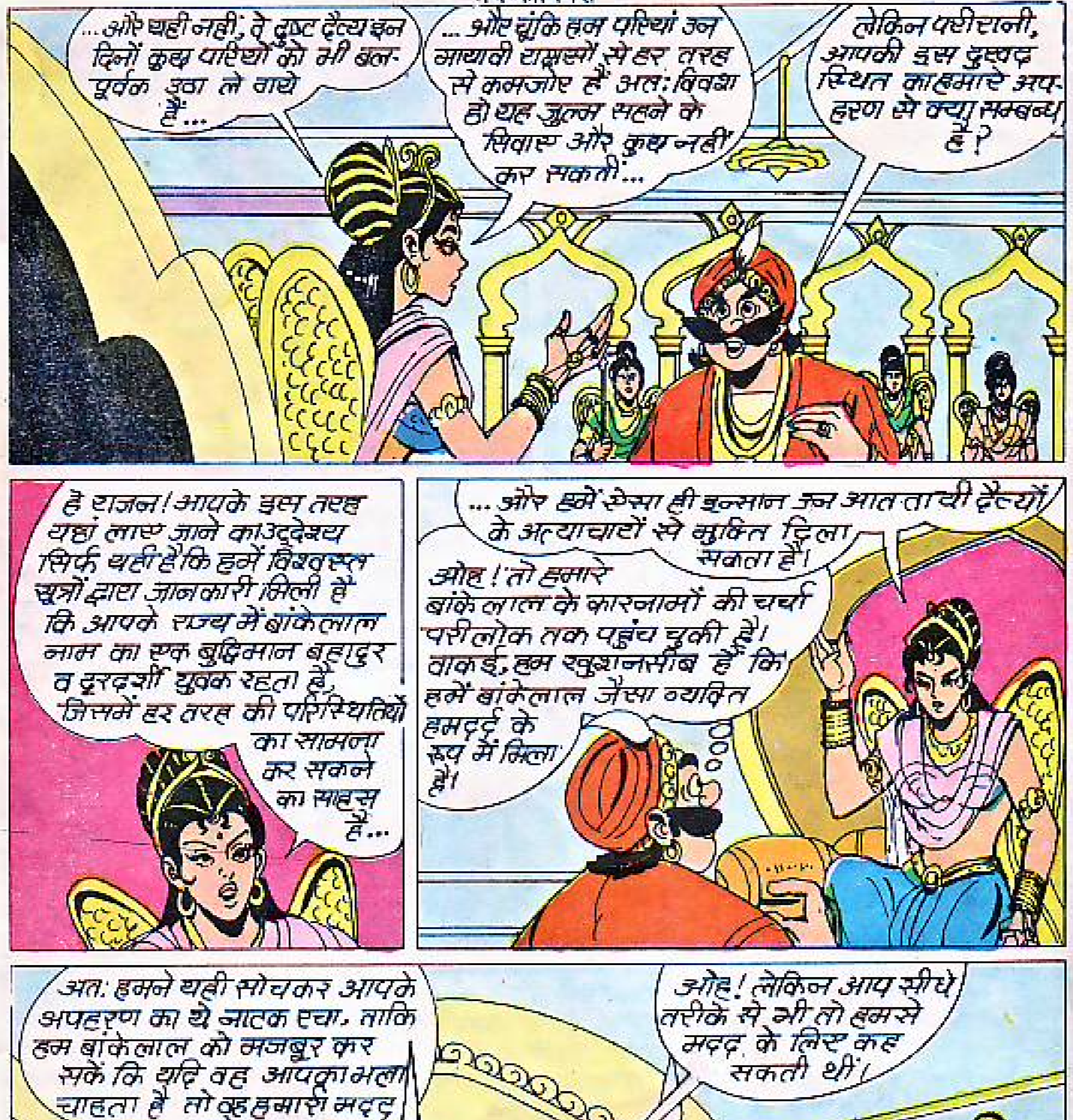
...और यही नहीं; वे दुष्ट दैत्य इन दिनों कुछ परियों को भी बल-पूर्वक उठा ले गये हैं...
...और चूंकि हम परियां उन मायावी राक्षसों से हर तरह से कमजोर हैं अत: विवश हो यह जुल्म सहने के सिवाए और कुछ नहीं कर सकतीं...
लेकिन परीरानी, आपकी इस दुखद स्थित का हमारे अपहरण से क्या सम्बन्ध है?
हे राजन! आपके इस तरह यहां लाए जाने का उद्देश्य सिर्फ यही है कि हमें विश्वस्त सूत्रों द्वारा जानकारी मिली है कि आपके राज्य में बांकेलाल नाम का एक बुद्धिमान बहादुर व दूरदर्शी युवक रहता है, जिसमें हर तरह की परिस्थितियों का सामना कर सकने का साहस है...
...और हमें ऐसा ही इन्सान उन आततायी दैत्यों के अत्याचारों से मुक्ति दिला सकता है।
ओह! तो हमारे बांकेलाल के कारनामों की चर्चा परीलोक तक पहुंच चुकी है। वाकई, हम खुशनसीब हैं कि हमें बांकेलाल जैसा व्यक्ति हमदर्द के रूप में मिला है।
अत: हमने यही सोचकर आपके अपहरण का ये नाटक रचा, ताकि हम बांकेलाल को मजबूर कर सकें कि यदि वह आपका भला चाहता है तो वह हमारी मदद करे।
ओह! लेकिन आप सीधे तरीके से भी तो हमसे मदद के लिए कह सकती थीं।

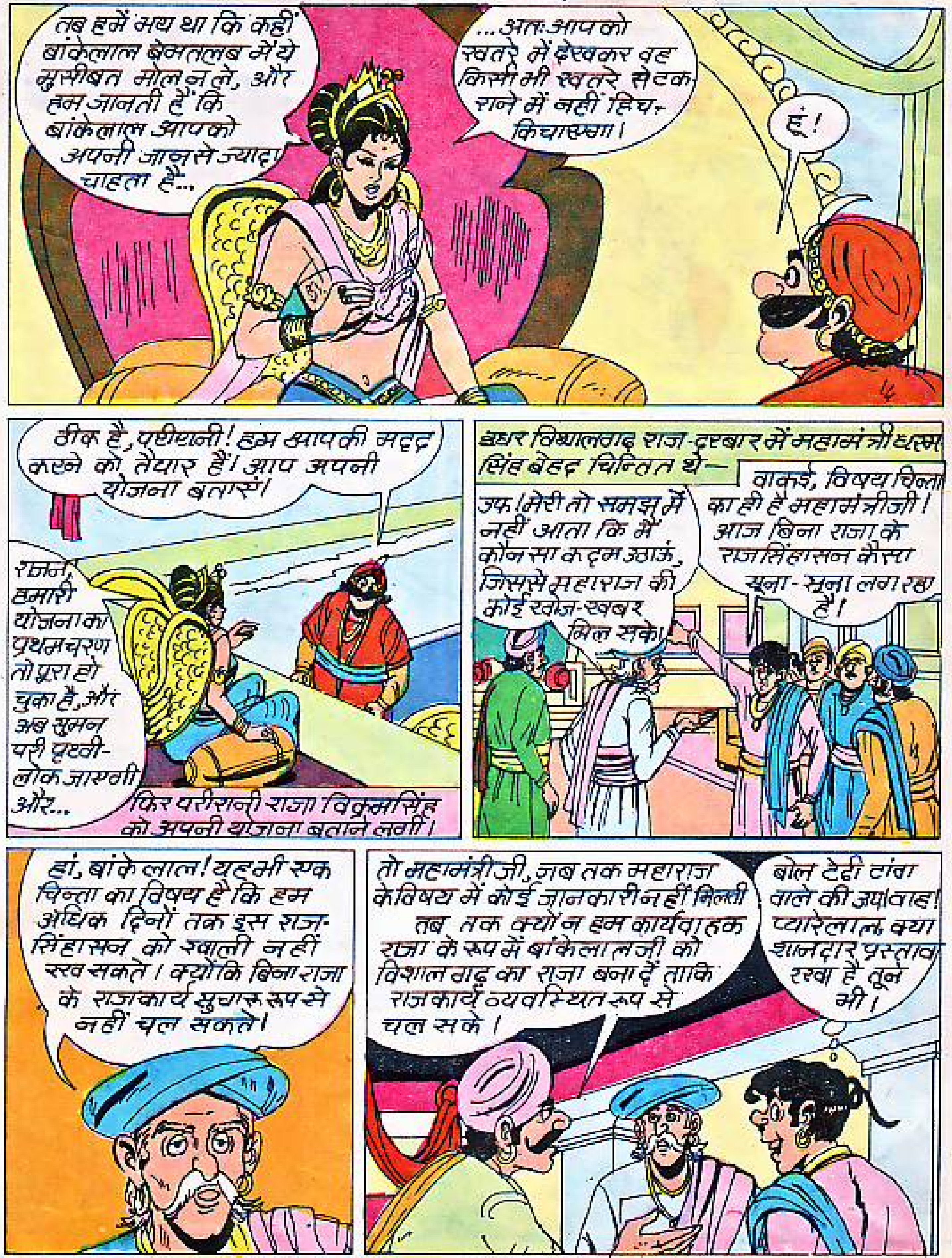
तब हमें भय था कि कहीं बांकेलाल बेमतलब में ये मुसीबत मोल न ले, और हम जानती हैं कि बांकेलाल आपको अपनी जान से ज्यादा चाहता है...
...अतः आपको खतरे में देखकर वह किसी भी खतरे से टकराने में नहीं हिचकिचाएगा।
हूं!
ठीक है, परीरानी! हम आपकी मदद करने को तैयार हैं। आप अपनी योजना बताएं।
राजन्, हमारी योजना का प्रथम चरण तो पूरा हो चुका है, और अब सुमन परी पृथ्वी-लोक जाएगी और...
फिर परीरानी राजा विक्रमसिंह को अपनी योजना बताने लगी।
उधर विशालगढ़ राज-दरबार में महामंत्री धरम सिंह बेहद चिन्तित थे—
उफ! मेरी तो समझ में नहीं आता कि मैं कौन सा कदम उठाऊं, जिससे महाराज की कोई खोज-खबर मिल सके।
वाकई, विषय चिन्ता का ही है महामंत्रीजी! आज बिना राजा के राजसिंहासन कैसा सूना-सूना लग रहा है!
हां, बांके लाल! यह भी एक चिन्ता का विषय है कि हम अधिक दिनों तक इस राजसिंहासन को खाली नहीं रख सकते। क्योंकि बिना राजा के राजकार्य सुचारू रूप से नहीं चल सकते।
तो महामंत्री जी, जब तक महाराज के विषय में कोई जानकारी नहीं मिलती तब तक क्यों न हम कार्यवाहक राजा के रूप में बांकेलाल जी को विशालगढ़ का राजा बना दें ताकि राजकार्य व्यवस्थित रूप से चल सके।
बोल टेढ़ी टांग वाले की जयवाह! प्यारेलाल, क्या शानदार प्रस्ताव रखा है तूने भी।

मैं आपकी बात का समर्थन करता हूं। मेरी नजर में बांकेलाल से ज्यादा योग्य और कोई भी इस राजदरबार में नहीं...
महामंत्री धरमसिंह!
इससे पहले की महामंत्री अपनी बात पूरी कर पाते कि तभी दरबार में एक अदृश्य आवाज गूंजी।
क... कौन हो तुम? सामने आकर बात करो।
अगले ही पल वहां एक परी प्रकट हुई और बोली–
महामंत्री, यदि तुम अपने राजा व राज्य की भलाई चाहते हो तो मेरी बात ध्यान से सुनो।
???
परी!
??
उफ! परी की बच्ची, तुझे भी इसी समय टपकना था। अरे, कम्बख्त, मुझे राजसिंहासन पर तो बैठ जाने देती... हाय रे मेरी किस्मत...!
ओह! तो तुम उन परियों में से एक हो जिन्होंने हमारे महाराज का अपहरण किया है।
तुम ठीक समझे, महामंत्री!
सैनिको, गिरफ्तार कर लो इस दुष्टा को।

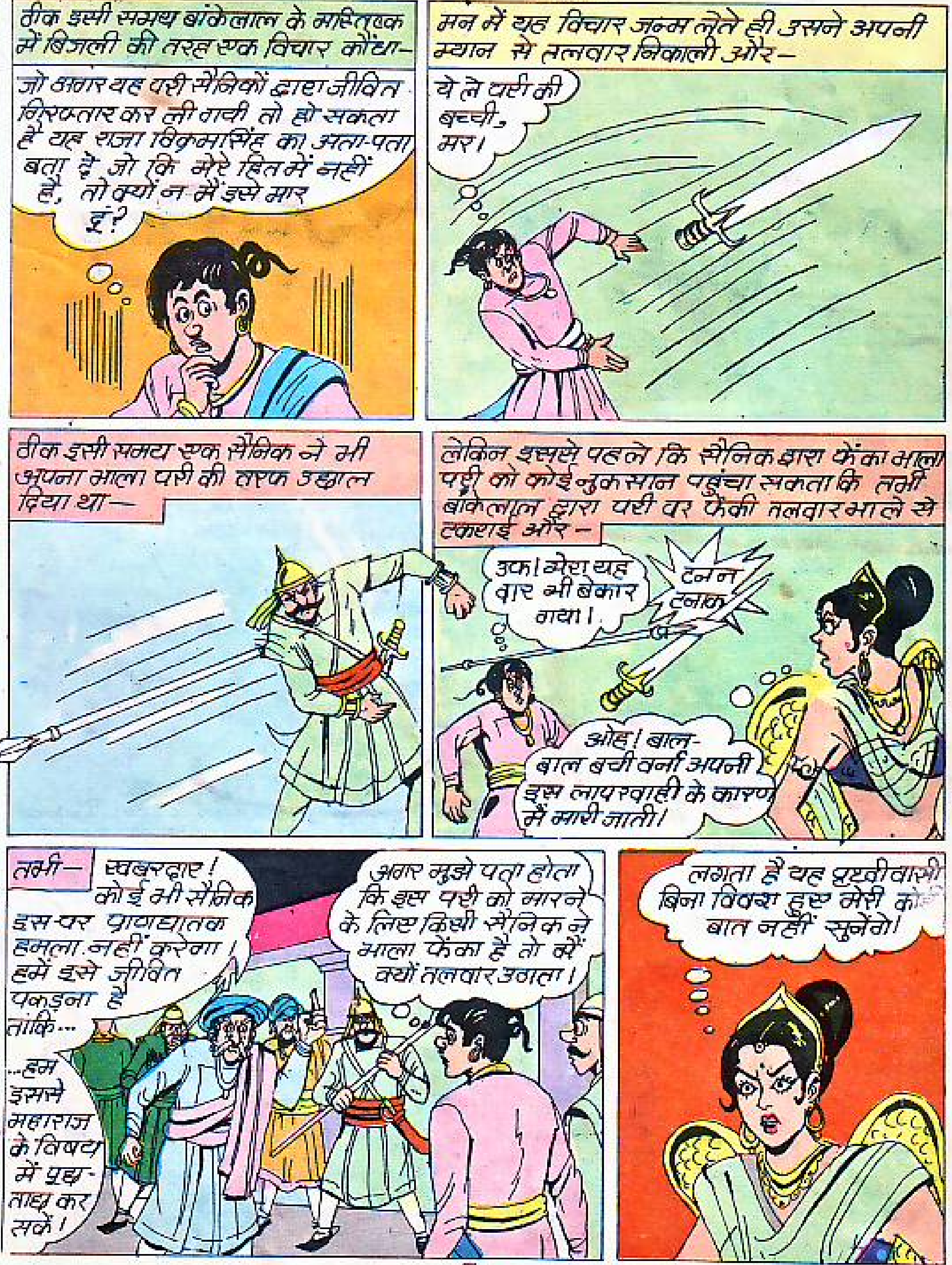
ठीक इसी समय बांकेलाल के मस्तिष्क में बिजली की तरह एक विचार कौंधा—
जो अगर यह परी सैनिकों द्वारा जीवित गिरफ्तार कर ली गयी तो हो सकता है यह राजा विक्रमसिंह का अता-पता बता दे जो कि मेरे हित में नहीं है, तो क्यों न मैं इसे मार दूं?
मन में यह विचार जन्म लेते ही उसने अपनी म्यान से तलवार निकाली और—
ये ले परी की बच्ची, मर।
ठीक इसी समय एक सैनिक ने भी अपना भाला परी की तरफ उछाल दिया था—
लेकिन इससे पहले कि सैनिक द्वारा फेंका भाला परी को कोई नुकसान पहुंचा सकता कि तभी बांकेलाल द्वारा परी पर फेंकी तलवार भाले से टकराई और—
उफ! मेरा यह वार भी बेकार गया।
टनन टनाक
ओह! बाल-बाल बची वर्ना अपनी इस लापरवाही के कारण मैं मारी जाती।
तभी—
खबरदार! कोई भी सैनिक इस पर प्राणघातक हमला नहीं करेगा। हमें इसे जीवित पकड़ना है ताकि...
...हम इससे महाराज के विषय में पूछ-ताछ कर सकें।
अगर मुझे पता होता कि इस परी को मारने के लिए किसी सैनिक ने भाला फेंका है तो मैं क्यों तलवार उछालता।
लगता है यह पृथ्वीवासी बिना विवश हुए मेरी कोई बात नहीं सुनेंगे।

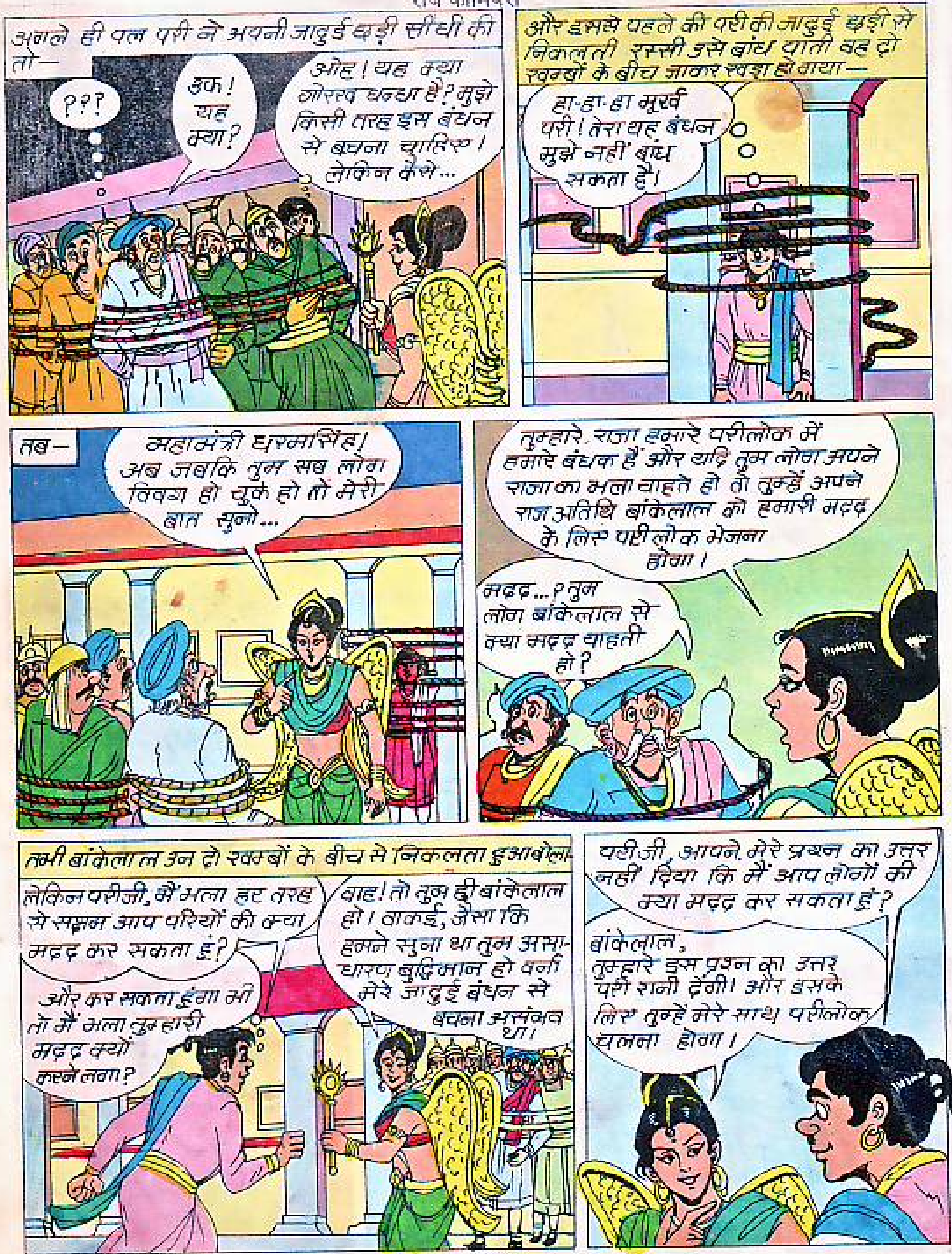
अगले ही पल परी ने अपनी जादुई छड़ी सीधी की तो—
???
उफ! यह क्या?
ओह! यह क्या गोरख धन्धा है? मुझे किसी तरह इस बंधन से बचना चाहिए। लेकिन कैसे...
और इससे पहले की परी की जादुई छड़ी से निकलती रस्सी उसे बांध पाती वह दो खम्भों के बीच जाकर खड़ा हो गया—
हा-हा-हा मूर्ख परी! तेरा यह बंधन मुझे नहीं बांध सकता है।
तब—
महामंत्री धरमसिंह! अब जबकि तुम सब लोग विवश हो चुके हो तो मेरी बात सुनो...
तुम्हारे राजा हमारे परीलोक में हमारे बंधक हैं और यदि तुम लोग अपने राजा का भला चाहते हो तो तुम्हें अपने राज अतिथि बांकेलाल को हमारी मदद के लिए परीलोक भेजना होगा।
मदद...? तुम लोग बांकेलाल से क्या मदद चाहती हो?
तभी बांकेलाल उन दो खम्भों के बीच से निकलता हुआ बोला
लेकिन परीजी, मैं भला हर तरह से सक्षम आप परियों की क्या मदद कर सकता हूं?
और कर सकता हूंगा भी तो मैं भला तुम्हारी मदद क्यों करने लगा?
वाह! तो तुम ही बांकेलाल हो। वाकई, जैसा कि हमने सुना था तुम असाधारण बुद्धिमान हो वर्ना मेरे जादुई बंधन से बचना असंभव था।
परीजी, आपने मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं दिया कि मैं आप लोगों की क्या मदद कर सकता हूं?
बांकेलाल, तुम्हारे इस प्रश्न का उत्तर परी रानी देंगी। और इसके लिए तुम्हें मेरे साथ परीलोक चलना होगा।

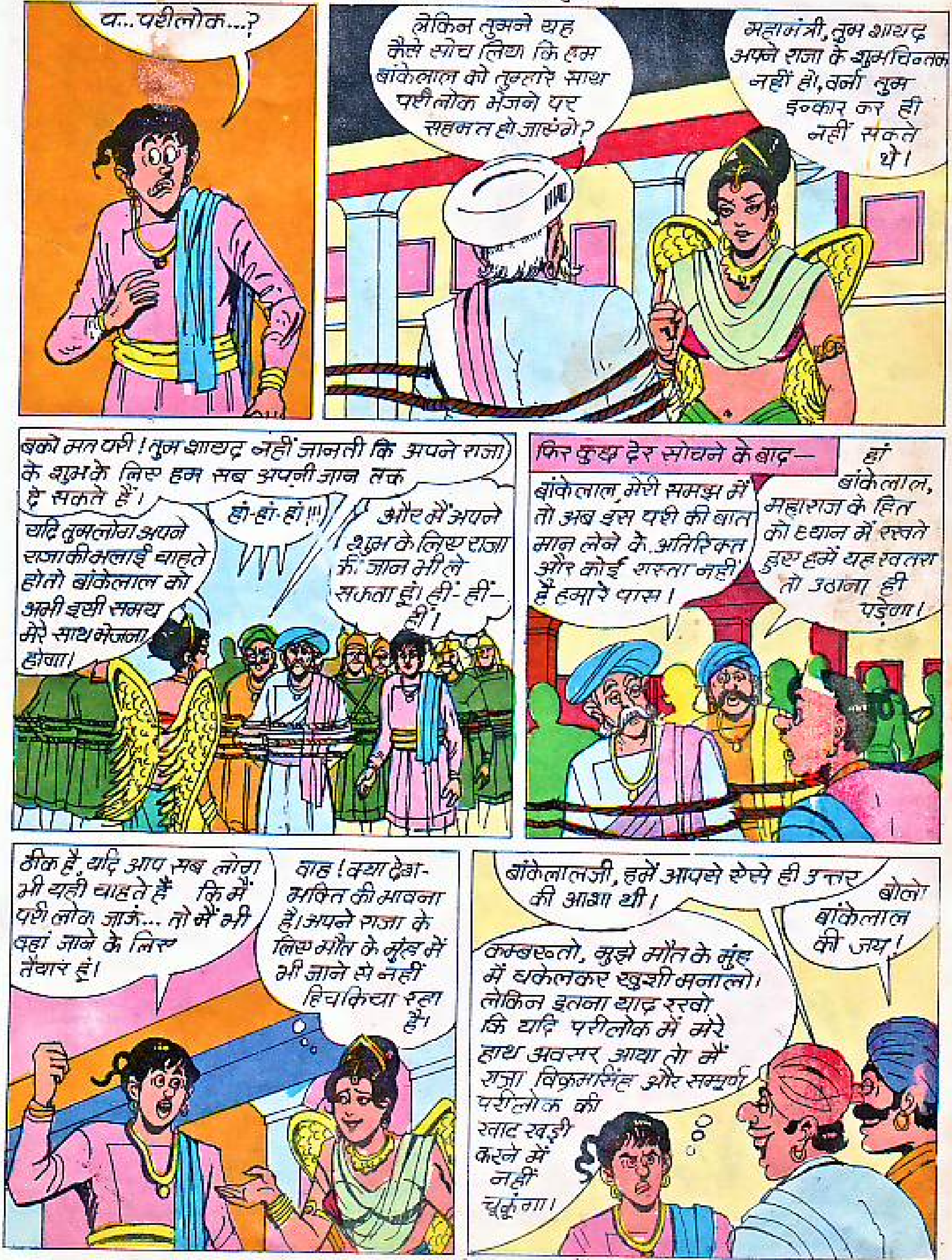
प..परीलोक...?
लेकिन तुमने यह कैसे सोच लिया कि हम बांकेलाल को तुम्हारे साथ परीलोक भेजने पर सहमत हो जाएंगे?
महामंत्री, तुम शायद अपने राजा के शुभचिन्तक नहीं हो, वर्ना तुम इन्कार कर ही नहीं सकते थे।
बको मत परी! तुम शायद नहीं जानती कि अपने राजा के शुभ के लिए हम सब अपनी जान तक दे सकते हैं।
हां-हां-हां!!!
और मैं अपने शुभ के लिए राजा की जान भी ले सकता हूं! ही-ही-ही!
यदि तुमलोग अपने राजा की भलाई चाहते हो तो बांकेलाल को अभी इसी समय मेरे साथ भेजना होगा।
फिर कुछ देर सोचने के बाद—
बांकेलाल, मेरी समझ में तो अब इस परी की बात मान लेने के अतिरिक्त और कोई रास्ता नहीं है हमारे पास।
हां बांकेलाल, महाराज के हित को ध्यान में रखते हुए हमें यह खतरा तो उठाना ही पड़ेगा।
ठीक है, यदि आप सब लोग भी यही चाहते हैं कि मैं परीलोक जाऊं... तो मैं भी वहां जाने के लिए तैयार हूं।
वाह! क्या देश-भक्ति की भावना है। अपने राजा के लिए मौत के मुंह में भी जाने से नहीं हिचकिचा रहा है।
बांकेलालजी, हमें आपसे ऐसे ही उत्तर की आशा थी।
बोलो बांकेलाल की जय!
कम्बख्तो, मुझे मौत के मुंह में धकेलकर खुशी मना लो। लेकिन इतना याद रखो कि यदि परीलोक में मेरे हाथ अवसर आया तो मैं राजा विक्रमसिंह और सम्पूर्ण परीलोक की खाट खड़ी करने में नहीं चूकूंगा।

तब सुमन परी ने अपनी जादुई छड़ी का रुख जमीन की ओर किया तो तुरन्त ही वहां एक सफेद हंस प्रगट हुआ—
ज..जी!
बांकेलाल, तुम इस हंस पर बैठ जाओ। यह तुम्हें मेरे साथ-साथ परीलोक ले चलेगा।
फिर देखते ही देखते—
हमारी शुभ-कामनाएं तुम्हारे साथ हैं बांकेलाल! ईश्वर करे तुम शीघ्र ही महाराज के साथ सकुशल वापस लौटो।
फिर बांकेलाल और सुमन परी जैसे ही परीलोक की सीमा में प्रविष्ट हुए तो—
अरे! यह क्या? परीलोक में भला पृथ्वीमानव का क्या काम? मुझे तुरन्त ही यह सूचना दैत्यराज को देनी चाहिए।
इधर परीलोक पहुंचने पर बांकेलाल को भी परीरानी के दरबार में पेश किया गया—
महारानी की जय हो। मैं बांकेलाल को अपने साथ लाने में सफल रही हूं।
हूं... तो बांकेलाल, तुम जान ही चुके हो कि तुम्हारे महाराज इस समय हमारे बंदी हैं..
...और यदि तुम उनका भला चाहते हो तो तुम्हें हमारी मदद करनी होगी।
मूर्ख परी, वक्त आने दे फिर मैं तेरी और राजा विक्रमसिंह की ऐसी खाट खड़ी करूंगा कि तू भी याद करेगी कि किसी बांकेलाल से पाला पड़ा था।
और फिर परीरानी ने बांकेलाल को परीलोक लाने का प्रयोजन बता दिया।

सुनते ही बांकेलाल के होश फाख्ता हो गए—
??
बुरे फंसे बेटा बांकेलाल! ये परियां तुझे दैत्यों के हाथों मर-वाने परीलोक लाई हैं।
ल...लेकिन परीरानी! मैंने तो सुना है कि दैत्य बड़े शक्तिशाली व मायावी होते हैं। फिर भला मैं एक साधारण इन्सान उन दैत्यों से आपकी रक्षा कैसे कर सकता हूं?
बांकेलाल, हमने तुम्हारी बुद्धि व विवेक की जो चर्चा सुनी है इसके अनुसार तुम्हारे लिए कोई कार्य असम्भव नहीं है।...
...अब आप आराम कीजिए। बाद में परीकुमारी मीना आपको परीलोक की सैर कराएगी।
उधर तुरन्त ही वह दैत्य, दैत्यराज के पास पहुंचा और—
दैत्यराज की जय हो। पृथ्वी के एक मानव ने अभी-अभी एक परी के साथ परीलोक में प्रवेश किया है।
क्या?
दैत्य द्वारा मिली जानकारी पर दैत्यराज एकाएक बुरी तरह चौंक उठा।
सेनापति, मुझे कुछ गड़बड़ लगती है, तुम कुछ सैनिकों सहित परीलोक चलने की तैयारी करो। मैं भी तुम लोगों के साथ चलूंगा।
जो महाराज की आज्ञा!
इधर परी कुमारी मीना बांके-लाल को परीलोक के विभिन्न रमणीक स्थलों की सैर करा रही थी—
बांकेलालजी, यह है परीलोक का सबसे सुन्दर और ऊंचा महल यहां...
वाह! अति सुन्दर!

बांकेलालजी, यह हम परियों की आराध्य देवी हैं।
अरे! इस प्रतिमा की तीसरी आंख की चमक तो असाधारण है।
लगता है परियों की आराध्य देवी की प्रतिमा की तीसरी आंख किसी बहुमूल्य हीरे की है। अगर किसी प्रकार मैं यह तीसरी आंख निकाल सकूं तो पृथ्वीलोक में मुझे इसकी अच्छी कीमत मिल सकती है।
किस सोच में डूब गये बांकेलाल जी! आइए, आगे चलें।
आं-हां! चलो।
फिर कुछ आगे बढ़ने पर—
बांकेलाल जी, यह है हमारे परीलोक की सीमा। आगे दैत्य नगरी है।
हूं!
तभी एकाएक परीकुमारी मीना चौंक पड़ी—
बांकेलाल जी खतरा! वह देखो राक्षसी सेना हमारी तरफ बढ़ रही है, भागो!
??

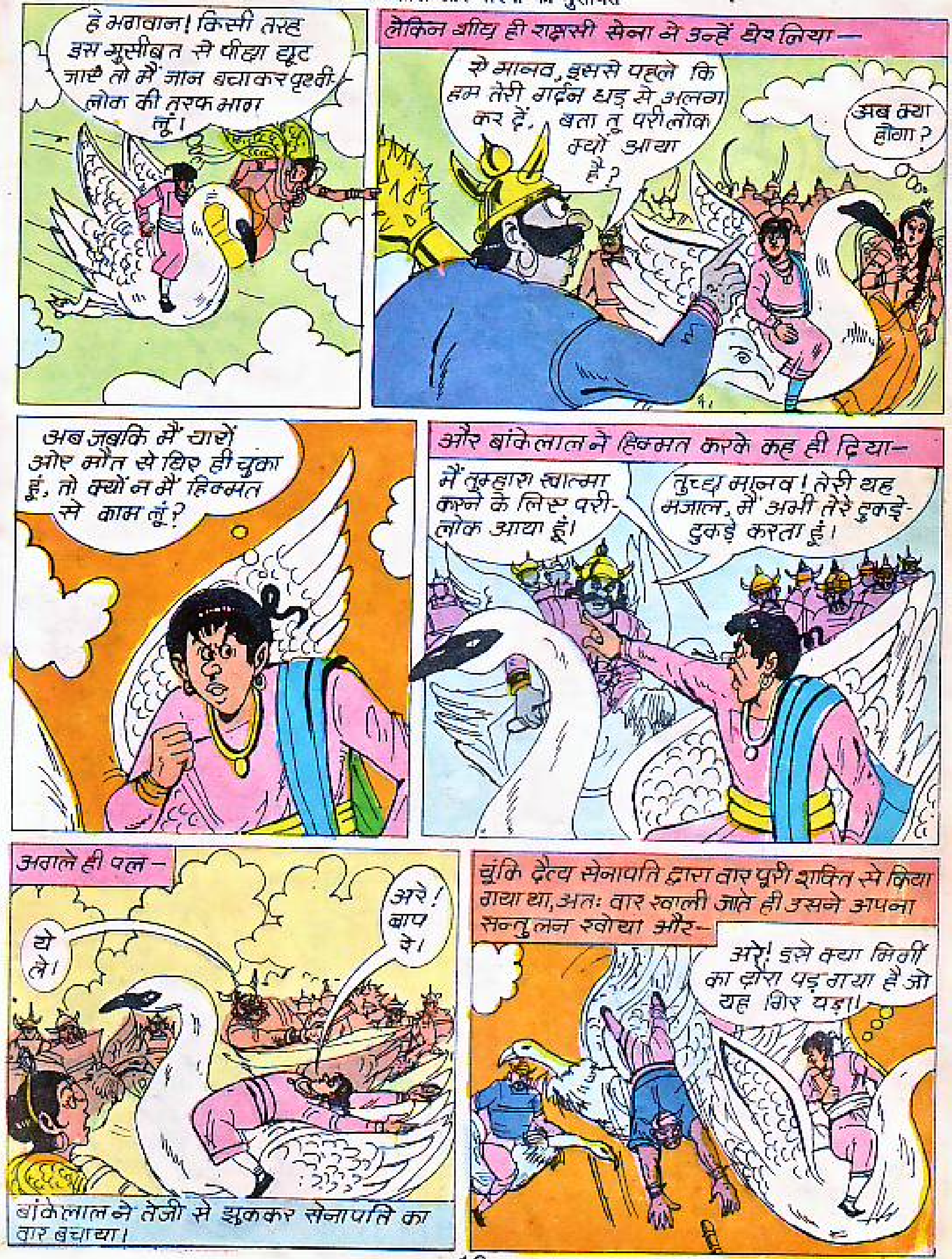
हे भगवान! किसी तरह इस मुसीबत से पीछा छूट जाए तो मैं जान बचाकर पृथ्वी-लोक की तरफ भाग लूं।
लेकिन शीघ्र ही राक्षसी सेना ने उन्हें घेर लिया—
ऐ मानव, इससे पहले कि हम तेरी गर्दन धड़ से अलग कर दें, बता तू परीलोक क्यों आया है?
अब क्या होगा?
अब जबकि मैं चारों ओर मौत से घिर ही चुका हूं, तो क्यों न मैं हिम्मत से काम लूं?
और बांकेलाल ने हिम्मत करके कह ही दिया—
मैं तुम्हारा खात्मा करने के लिए परी-लोक आया हूं।
तुच्छ मानव! तेरी यह मजाल, मैं अभी तेरे टुकड़े-टुकड़े करता हूं।
अगले ही पल—
ये ले!
अरे! बाप रे!
बांकेलाल ने तेजी से झुककर सेनापति का वार बचाया।
चूंकि दैत्य सेनापति द्वारा वार पूरी शक्ति से किया गया था, अतः वार खाली जाते ही उसने अपना सन्तुलन खोया और—
अरे! इसे क्या मिर्गी का दौरा पड़ गया है जो यह गिर पड़ा।

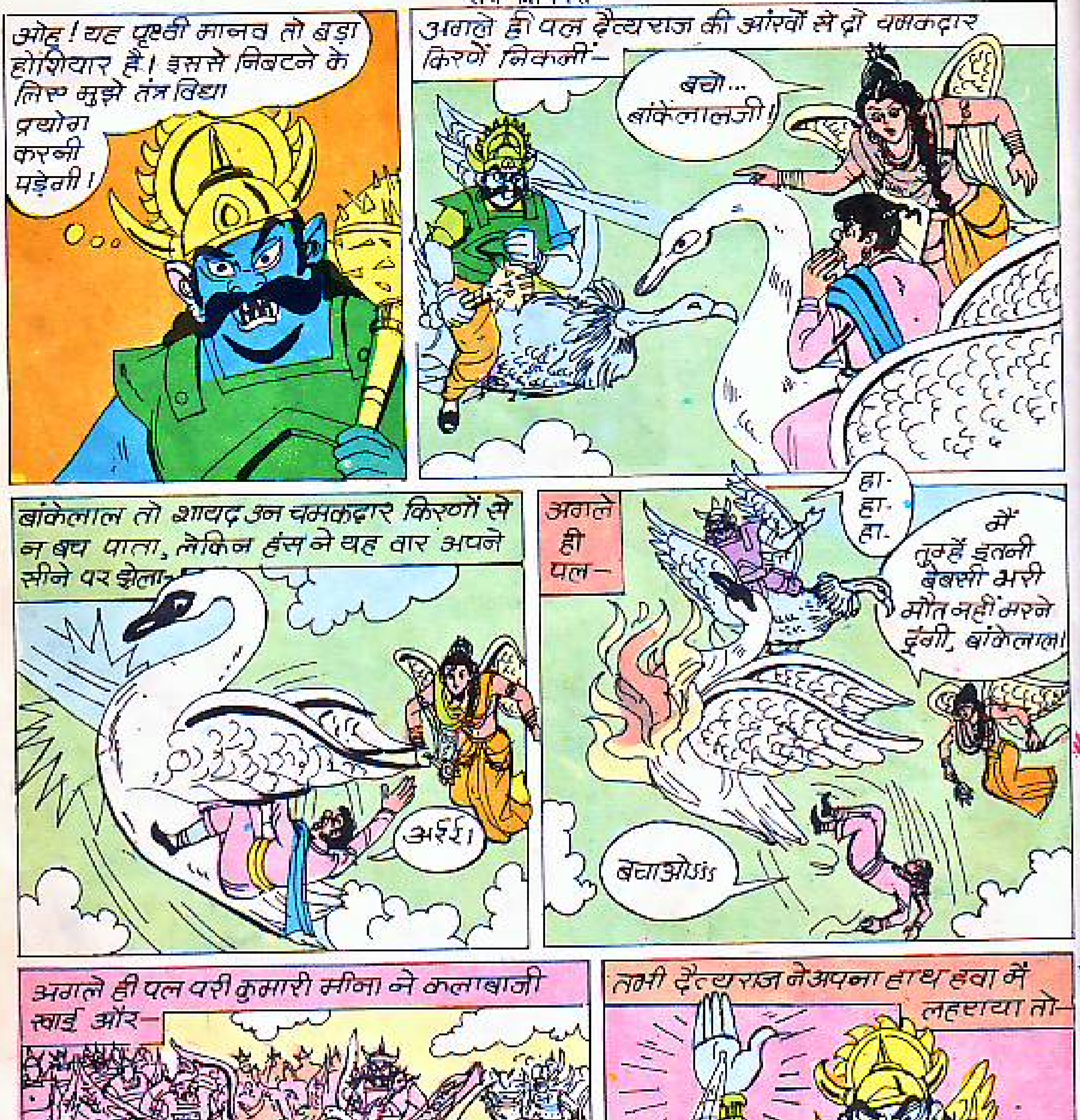
ओह! यह पृथ्वी मानव तो बड़ा होशियार है। इससे निबटने के लिए मुझे तंत्र विद्या प्रयोग करनी पड़ेगी।
अगले ही पल दैत्यराज की आंखों से दो चमकदार किरणें निकलीं—
बचो... बांकेलालजी!
बांकेलाल तो शायद उन चमकदार किरणों से न बच पाता, लेकिन हंस ने यह वार अपने सीने पर झेला—
अईई!
अगले ही पल—
हा-हा-हा-
मैं तुम्हें इतनी बेबसी भरी मौत नहीं मरने दूंगी, बांकेलाल!
बचाओऽऽ
अगले ही पल परी कुमारी मीना ने कलाबाजी खाई और—
चिन्ता न करना बांकेलालजी! मैं आपकी मदद के लिये आ गयी हूं!
तभी दैत्यराज ने अपना हाथ हवा में लहराया तो—
हा-हा-हा! अब तुम दोनों मेरे इस मायाजाल से नहीं बच सकते हा-हा-हा!

अगले ही पल —
तभी राजा विक्रमसिंह और सुमन परी वहां पहुंचे। शायद उन्हें दैत्य सेना द्वारा बांकेलाल पर आक्रमण की खबर मिल गयी थी—
ठहरो दैत्यराज! इन्हें छोड़ दो वर्ना तुम सब मारे जाओगे।
?
!!!
हूं, तो एक और पृथ्वी मानव परीलोक आया हुआ है।
दैत्यराज ने अपना दूसरा हाथ हवा में लहराया और—.
सैनिको, पकड़ लो इस मानव को भी। इन दोनों की जिन्दगी और मौत का फैसला हम अपने दरबार में करेंगे।
सब की नजर बचाकर सुमन परी वहां से भाग निकली—
यहां से भाग निकलने में ही भलाई है... ताकि मैं यह सूचना परीरानी तक पहुंचा सकूं।
फिर दैत्यराज, बांकेलाल, परीकुमारी मीना और राजा को लेकर दैत्य नगरी की ओर चल पड़ा—
काश! मैं बांकेलाल और राजा विक्रमसिंह की कोई मदद कर सकती।

फिर दूसरे दिन दैत्य दरबार में—
इस दुष्ट मानव ने हमारे सेनापति को मारकर अक्षम्य अपराध किया है। हमारा जी तो चाहता है कि हम अभी इसी वक्त इसकी बोटी-बोटी काट डालें...
!?
नहीं दैत्यराज! ऐसा गजब मत करना, अभी तो विशालगढ़ के राजा के रूप में मेरा राजतिलक होना है।
...लेकिन चूंकि कई वर्षों बाद हमारे हाथ कोई जीवित मानव आया है, अतः हम परसों अमावस्या की रात को इसकी बलि दैत्य भगवान को चढ़ायेंगे।...
बलि! मारे गये।
...और इस परी कुमारी को हम अपनी पटरानी बनाएंगे।
ऐसा कभी नहीं होगा दैत्यराज!
!?
हा-हा-हा- ऐसा अवश्य होगा परीकुमारी।
सैनिको, इसे हमारे रनिवास ले जाओ, और दासियों से कहना इस पर पूरी तरह से नजर रखें।
जी, महाराज!
छोड़ दे मुझे दुष्ट!
और इन दोनों मानवों को ले जाकर कारागार में बंद कर दो...
और फिर बांकेलाल और राजा विक्रमसिंह को कारागार में धकेल दिया गया—
जाओ पृथ्वीवासियो परसों तुम्हारी बलि दैत्य भगवान को दी जायेगी। तब तक तुम दोनों इस कारागार में आराम करो हा-हा-हा।
उफ! परियों की मुसीबत ने तो हमें मुसीबत में फंसा दिया।
ऊंह! बलि दी जायेगी तुम्हारी। तुम्हारे खानदान की। समझे दैत्य की औलाद!

हा-हा-हा लगता है मौत के भय से यह मानव पागल हो गया है।
!!!
पागल तू, तेरा बाप पागल!
आहा-हा-हा! जंगोला, यह पृथ्वी मानव बहुत चालाक है। इसका विशेष ख्याल रखना है तुम्हें।
जी!
उफ! अब तो मैं इस चूहेदान में कैद होकर रह गया हूं, और यहां से निकलने की कोई उम्मीद भी नहीं नजर आ रही है...
...तो क्या मैं यहीं पड़ा-पड़ा अपनी मौत का इन्तजार करूं?
नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। मैं इस तरह बेबसी की मौत नहीं मारा जा सकता। मुझे इस कैद से निकलने का कोई उपाय करना चाहिए।
उधर रनिवास में परीकुमारी मीना अपनी बेबसी पर आंसू बहा रही थी–
सुबक-सुबक
तभी दैत्यों की एक अधेड़ दासी उसके पास आई–
बस चुप हो जा बेटी! अपने ये अनमोल मोती यूं न लुटा।
बेटी..?

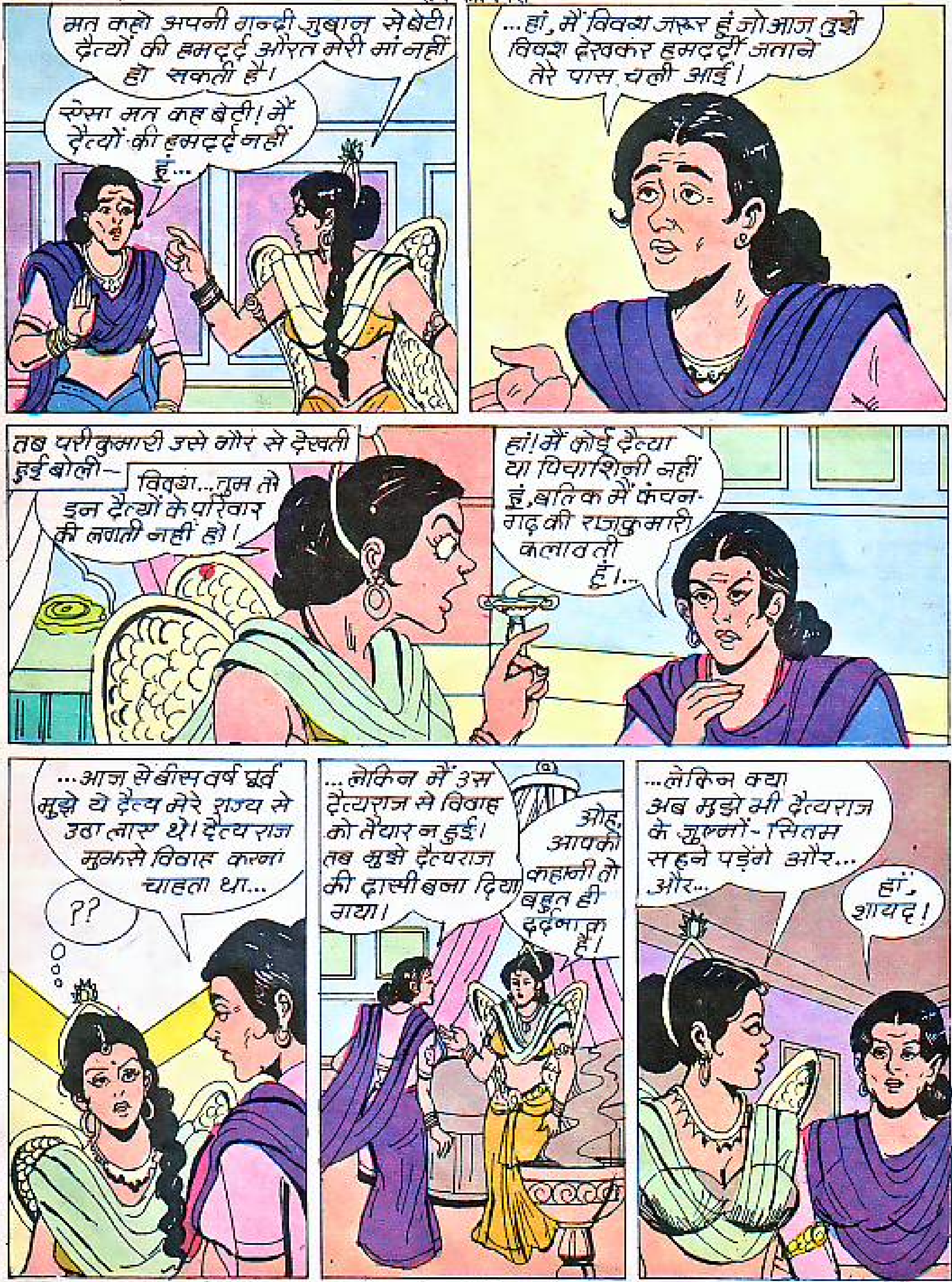
मत कहो अपनी गन्दी जुबान से बेटी। दैत्यों की हमदर्द औरत मेरी मां नहीं हो सकती है।
ऐसा मत कह बेटी! मैं दैत्यों की हमदर्द नहीं हूं...
...हां, मैं विवश जरूर हूं जो आज तुझे विवश देखकर हमदर्दी जताने तेरे पास चली आई।
तब परीकुमारी उसे गौर से देखती हुई बोली—
विवश...तुम तो इन दैत्यों के परिवार की लगती नहीं हो!
हां! मैं कोई दैत्या या पिचाशिनी नहीं हूं, बल्कि मैं कंचनगढ़ की राजकुमारी कलावती हूं।...
...आज से बीस वर्ष पूर्व मुझे ये दैत्य मेरे राज्य से उठा लाए थे। दैत्य राज मुझसे विवाह करना चाहता था...
??
...लेकिन मैं उस दैत्यराज से विवाह को तैयार न हुई। तब मुझे दैत्यराज की दासी बना दिया गया।
ओह, आपकी कहानी तो बहुत ही दर्दनाक है!
...लेकिन क्या अब मुझे भी दैत्यराज के जुल्मों-सितम सहने पड़ेंगे और... और...
हां, शायद!

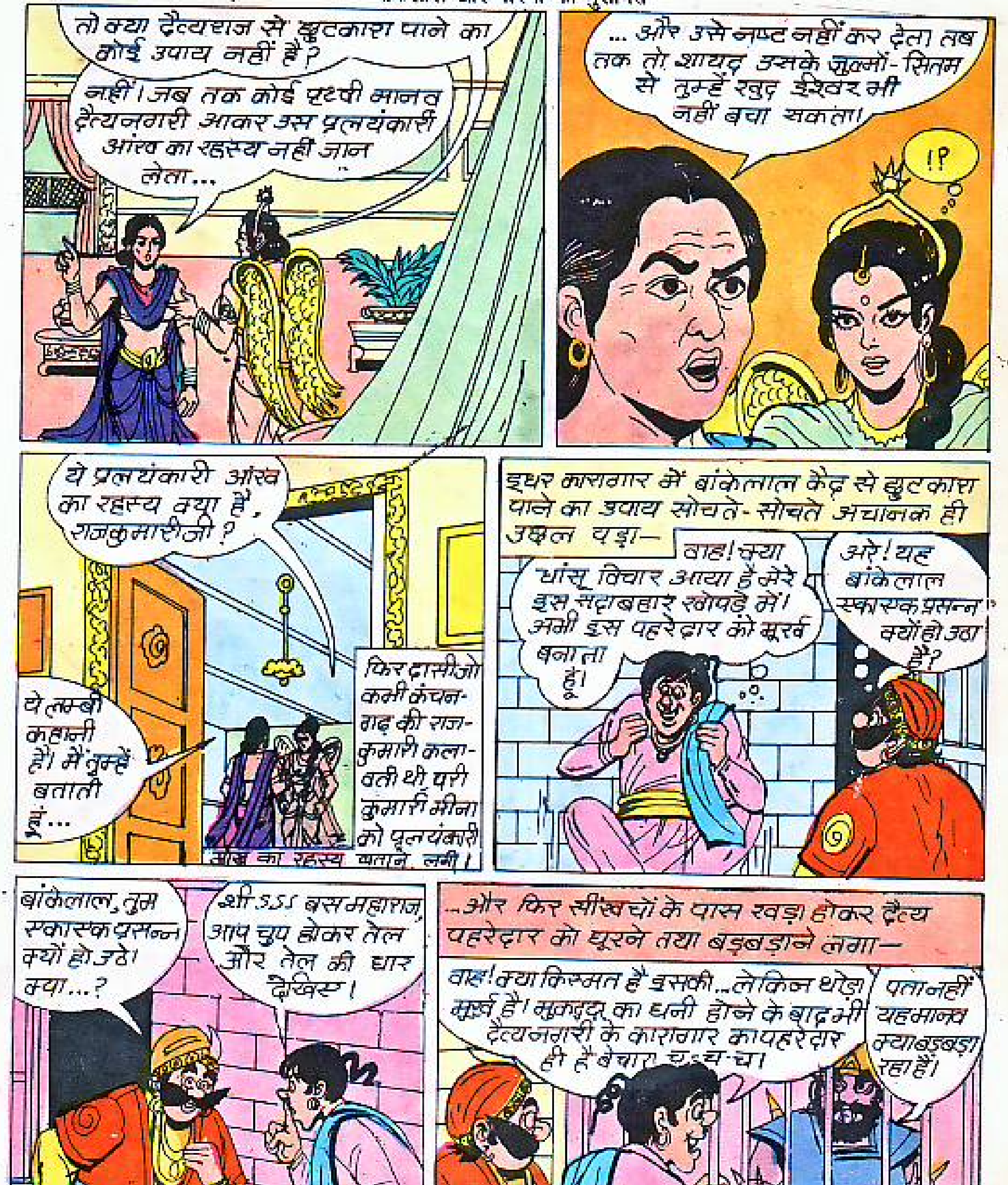

तो क्या दैत्यराज से छुटकारा पाने का कोई उपाय नहीं है?
नहीं। जब तक कोई पृथ्वी मानव दैत्यनगरी आकर उस प्रलयंकारी आंख का रहस्य नहीं जान लेता...
...और उसे नष्ट नहीं कर देता तब तक तो शायद उसके जुल्मों-सितम से तुम्हें खुद ईश्वर भी नहीं बचा सकता।
!?
ये प्रलयंकारी आंख का रहस्य क्या है, राजकुमारीजी?
ये लम्बी कहानी है। मैं तुम्हें बताती हूं...
फिर दासीजो कभी कंचनगढ़ की राजकुमारी कलावती थी, परी कुमारी मीना को प्रलयंकारी आंख का रहस्य बताने लगी।
इधर कारागार में बांकेलाल कैद से छुटकारा पाने का उपाय सोचते-सोचते अचानक ही उछल पड़ा—
वाह! क्या धांसू विचार आया है मेरे इस सदाबहार खोपड़े में। अभी इस पहरेदार को मूर्ख बनाता हूं।
अरे! यह बांकेलाल एकाएक प्रसन्न क्यों हो उठा है?
बांकेलाल, तुम एकाएक प्रसन्न क्यों हो उठे। क्या...?
श्श्ऽऽऽ बस महाराज, आप चुप होकर तेल और तेल की धार देखिए।
बांकेलाल धीमे से फुसफुसाया...
...और फिर सींखचों के पास खड़ा होकर दैत्य पहरेदार को घूरने तथा बड़बड़ाने लगा—
वाह! क्या किस्मत है इसकी... लेकिन थोड़ा मूर्ख है! मुकद्दर का धनी होने के बाद भी दैत्यनगरी के कारागार का पहरेदार ही है बेचारा, च-च-च।
पता नहीं यह मानव क्या बड़बड़ा रहा है।

ऐ भाई, ज़रा इधर आकर मुझे अपना दायां हाथ दिखाना।
यह मेरा दायां हाथ क्यों देखना चाहता है?
फिर—
हूं! बाकी तो सब ठीक है बस यह रेखा थोड़ी गड़बड़ कर रही है वर्ना...
वर्ना क्या मानव?
वर्ना क्या मूर्ख! यदि तेरे हाथ की यह रेखा थोड़ी तिरछी होती तो तेरे भाग्य में दैत्यनगरी का राजवैभव होता। यानी तू यहां का राजा होता।
रा... रा... जा?
तो मानव! ऐसा कोई उपाय है जिसके करने से मेरे हाथ की यह रेखा तिरछी हो सके और मैं यहां का राजा बन सकूं।
उपाय तो है दैत्यराज, लेकिन मेरे उपाय करने से तुम्हें तकलीफ बहुत होगी।
दैत्यनगरी का राजा बनने के लिए मैं कोई भी तकलीफ बर्दाश्त कर सकता हूं। तुम उपाय करो मानव।
आखिर बांकेलाल क्या खिचड़ी पका रहा है?
वाह! फंस गया पंछी जाल में।
तो फिर जल्दी से दरवाज़ा खोल कर अन्दर आ जाओ, ताकि मैं उपाय कर सकूं।
मैं अभी आया।
आ बेटा! मैं अभी तुझे जहन्नुम का राजा बनाए देता हूं।
??

जंगोला, अब तुम यहां बैठ जाओ और अपनी तलवार मुझे दे दो, ताकि मैं तुम्हारे हाथ की रेखा को थोड़ी तिरछी कर सकूं।
यह लो। लेकिन रेखा जरा ठीक ही बनाना ताकि कोई कमी न रह जाए, और मैं दैत्यनगरी का राजा बन सकूं।
तुम फिक्र मत करो, मैं सब ठीक कर दूंगा।
फिर तलवार हाथ में आते ही बांकेलाल ने उसकी गर्दन एक झटके में उड़ा दी—
यह ले मूर्ख! बन जा नरक का राजा!
वाह! बहुत खूब!
आई ऽऽऽ
बांकेलाल तेजी से बाहर निकला और—
अरे, बांकेलाल, यह क्या कर रहे हो? मुझे तो बाहर निकल आने दो।
महाराज, आप कुछ देर यहीं रुकिये, मैं बाहर की स्थिति का जायजा ले आऊं।
बांकेलाल जैसे ही थोड़ा आगे बढ़ा कि तभी उसे गलियारे के अन्त में दो दैत्य पहरा देते दिखाई पड़े तो वह ठिठक गया—
अरे, यह क्या? यहां तो दो दैत्य पहरेदार हैं, और इनसे आंख बचाकर निकलना असम्भव है फिर...?

फिर कुछ सोच वह बेख़ौफ होकर आगे बढ़ा —
अरे! यह क्या? यह मानव कारागार से कैसे निकल आया?
ऐ हां!
अगले ही पल —
ठहरो मानव! वर्ना तुम्हारी गर्दन धड़ से उड़ा दी जाएगी।
तब —
हा हा हा...
!!!
...आखिर तुम लोग भी धोखा खा गये!
मूर्खों, मैं पृथ्वीवासी नहीं, बल्कि तुम्हारा साथी जंगोला हूं।
मानव, तू हमें मूर्ख समझता है जो...
बकवास करता है।
बकवास नहीं दोस्तो! मैंने उसी पृथ्वीवासी से किसी भी व्यक्ति के रूप को धारण करने की विद्या सीखी है!
हमें तुम्हारी बात पर जराभी यकीन नहीं है।
अभी यकीन आया जाता है तुम दोनों को। बस एक पल के लिए तुमलोग अपनी-अपनी आंखें बन्द कर लो। मैं अभी अपने असली रूप में आया जाता हूं।

ठीक है। हम आंखें बन्द करते हैं, तुम जल्दी से अपने वास्तविक रूप में आओ।
यदि ऐसा हुआ तो यह बहुत बड़ा चमत्कार होगा।
मूर्खों, बस एक बार तुम्हारे आंख बन्द करने की देर है कि फिर तुमलोग कभी अपनी आंखें नहीं खोल पाओगे।
फिर जैसे ही उन दोनों ने अपनी-अपनी आंखें बन्द कीं तो —
आह!!
खचाक
यह देखो प्यारो, मेरा असली रूप।
यह दृश्य बुर्ज पर खड़े एक अन्य राक्षस ने देखा —
ओह! यह पृथ्वीमानव तो मेरे साथियों की हत्या करके भाग रहा है।
अगले ही पल —
पृथ्वीवासी कारागार से भाग रहा है। उसे पकड़ो!
मानव, तू चारों ओर से घिर चुका है। अतः अब अपने आपको हमारे हवाले कर दे।
मारे गये!
तभी —
अरे रे, यह क्या? ऐसा लगता है कि कोई अदृश्य शक्ति मेरा हाथ पकड़कर ऊपर खींच रही है।
अरे! यह मानव तो ऊपर हवा में उड़ रहा है।

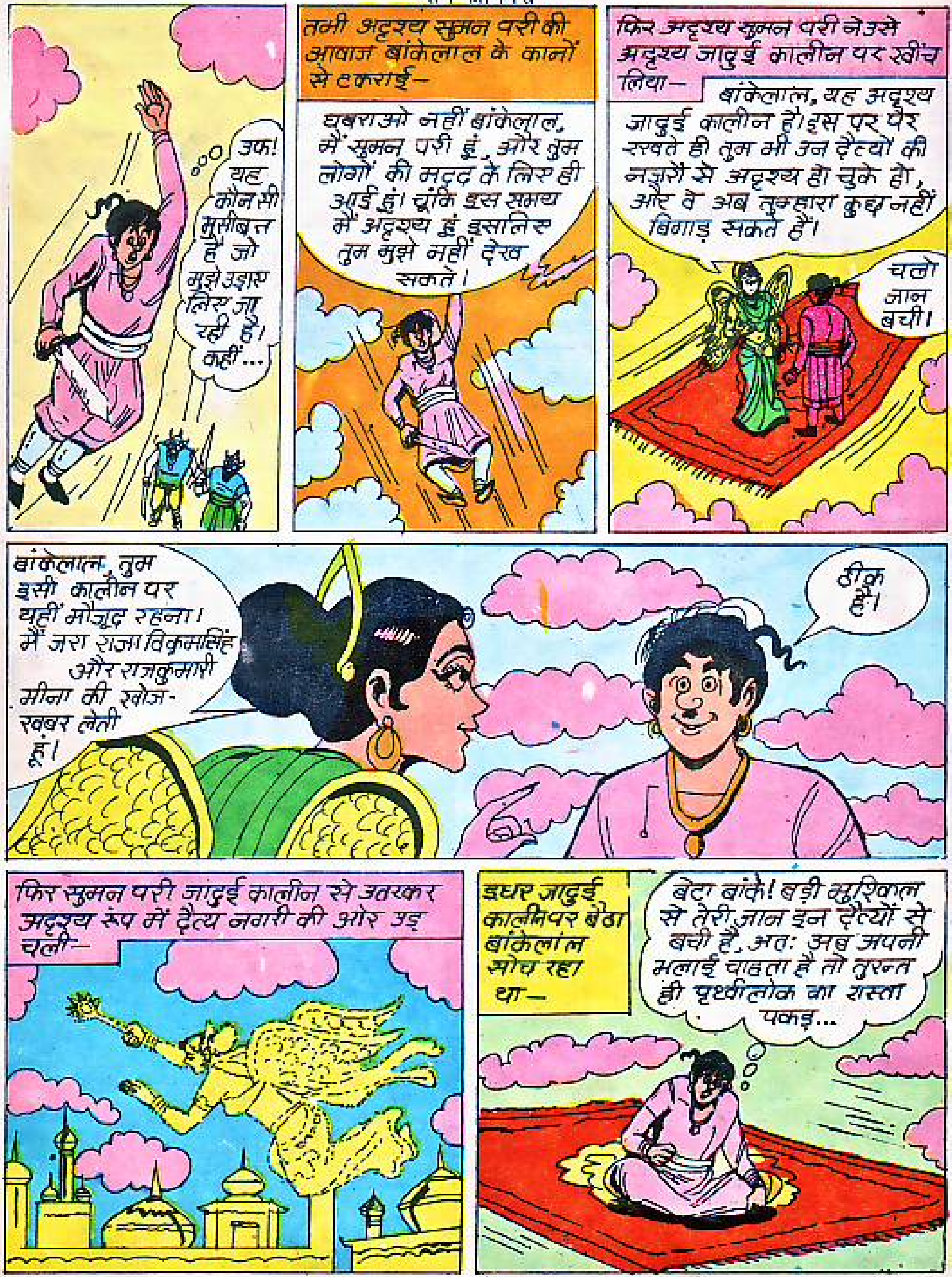
उफ! यह कौन सी मुसीबत है जो मुझे उड़ाए लिए जा रही है। कहीं...
तभी अदृश्य सुमन परी की आवाज बांकेलाल के कानों से टकराई—
घबराओ नहीं बांकेलाल, मैं सुमन परी हूं, और तुम लोगों की मदद के लिए ही आई हूं। चूंकि इस समय मैं अदृश्य हूं इसलिए तुम मुझे नहीं देख सकते।
फिर अदृश्य सुमन परी ने उसे अदृश्य जादुई कालीन पर खींच लिया—
बांकेलाल, यह अदृश्य जादुई कालीन है। इस पर पैर रखते ही तुम भी उन दैत्यों की नज़रों से अदृश्य हो चुके हो, और वे अब तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते हैं।
चलो जान बची।
बांकेलाल, तुम इसी कालीन पर यहीं मौजूद रहना। मैं जरा राजा विक्रमसिंह और राजकुमारी मीना की खोज-खबर लेती हूं।
ठीक है।
फिर सुमन परी जादुई कालीन से उतरकर अदृश्य रूप में दैत्य नगरी की ओर उड़ चली—
इधर जादुई कालीन पर बैठा बांकेलाल सोच रहा था—
बेटा बांके! बड़ी मुश्किल से तेरी जान इन दैत्यों से बची है, अतः अब अपनी भलाई चाहता है तो तुरन्त ही पृथ्वीलोक का रास्ता पकड़...

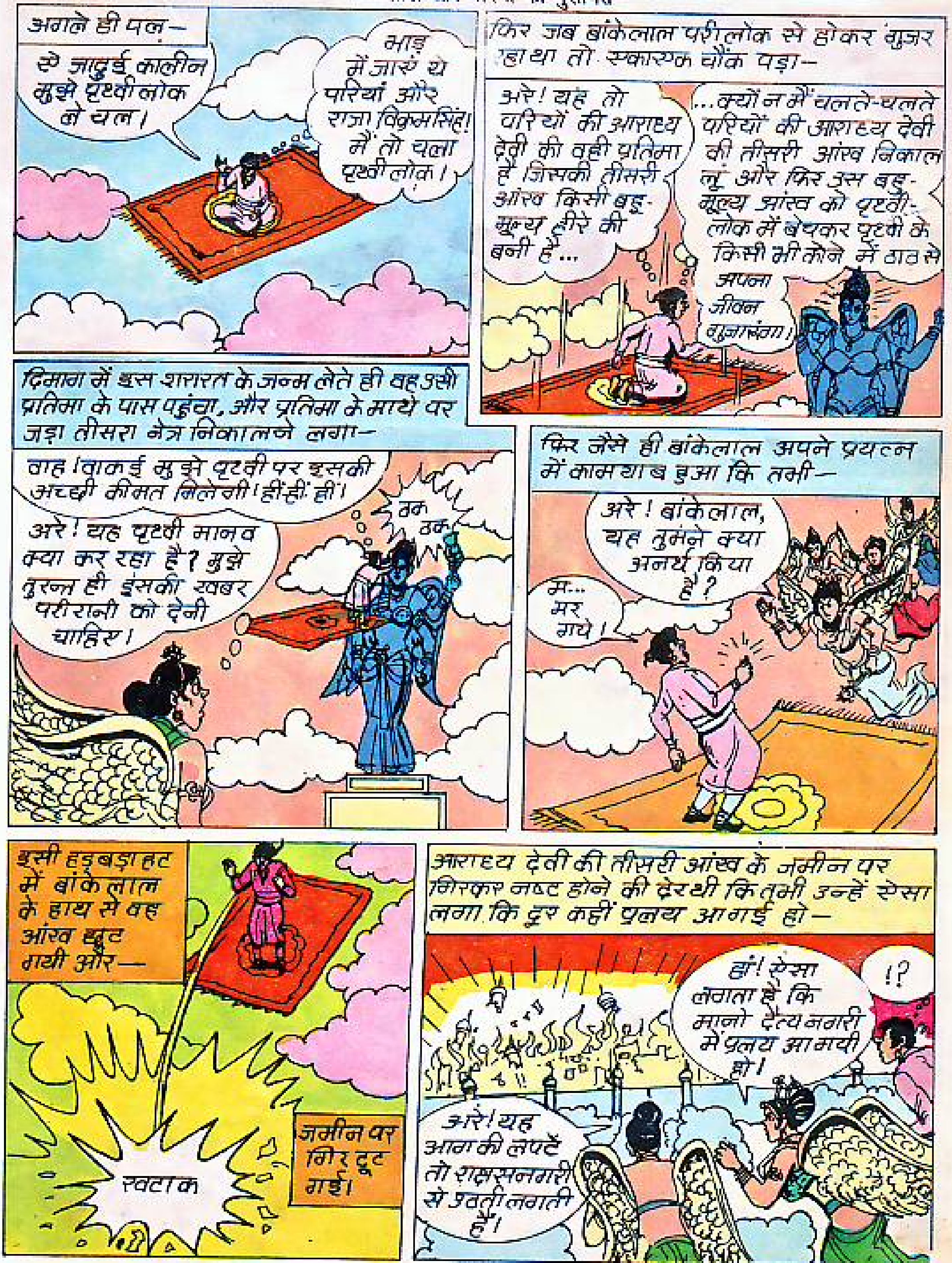
अगले ही पल—
ऐ जादुई कालीन मुझे पृथ्वीलोक को चल।
भाड़ में जाएं ये परियां और राजा विक्रमसिंह! मैं तो चला पृथ्वीलोक।
फिर जब बांकेलाल परीलोक से होकर गुजर रहा था तो एकाएक चौंक पड़ा—
अरे! यह तो परियों की आराध्य देवी की वही प्रतिमा है जिसकी तीसरी आंख किसी बहुमूल्य हीरे की बनी है...
...क्यों न मैं चलते-चलते परियों की आराध्य देवी की तीसरी आंख निकाल लूं और फिर उस बहु-मूल्य आंख को पृथ्वी-लोक में बेचकर पृथ्वी के किसी भी कोने में ठाठ से अपना जीवन गुजारूंगा।
दिमाग में इस शरारत के जन्म लेते ही वह उसी प्रतिमा के पास पहुंचा, और प्रतिमा के माथे पर जड़ा तीसरा नेत्र निकालने लगा—
वाह! वाकई मुझे पृथ्वी पर इसकी अच्छी कीमत मिलेगी! हीं हीं हीं!
ठक ठक
अरे! यह पृथ्वी मानव क्या कर रहा है? मुझे तुरन्त ही इसकी खबर परीरानी को देनी चाहिए।
फिर जैसे ही बांकेलाल अपने प्रयत्न में कामयाब हुआ कि तभी—
अरे! बांकेलाल, यह तुमने क्या अनर्थ किया है?
म... मर गये!
इसी हड़बड़ाहट में बांकेलाल के हाथ से वह आंख छूट गयी और—
खटाक
जमीन पर गिर टूट गई।
आराध्य देवी की तीसरी आंख के जमीन पर गिरकर नष्ट होने की देर थी कि तभी उन्हें ऐसा लगा कि दूर कहीं प्रलय आ गई हो—
हां! ऐसा लगता है कि मानो दैत्यनगरी में प्रलय आ गयी हो।
!?
अरे! यह आग की लपटें तो राक्षसनगरी से उठती लगती हैं।

बांकेलाल ने एक पल के लिए परियों का ध्यान अपनी तरफ से हटा पाया तो –
बांके बेटा! भाग ले यहां से मौका अच्छा है। किसी का भी ध्यान तेरी तरफ नहीं है।
लेकिन तभी–
महारानी जी, वह देखिए पृथ्वीवासी भागने की कोशिश कर रहा है।
???
अगले ही पल परीरानी के आदेश पर उसे पकड़ लिया गया –
फंस गये बेटा बांकेलाल! अब तेरी वह दुर्गत होगी कि तू खून के आंसू रोएगा।
ले चलो इस मूर्ख को। इसने हमारी आराध्य देवी का तीसरा नेत्र निकाल कर न केवल हमारी आराध्य देवी को अपमानित किया है, साथ ही इसके ऐसा करने से सम्पूर्ण परीलोक गहरे संकट में फंस गया है...
...अब हम इसे ऐसा कठोर दण्ड देंगे कि दुनिया याद करेगी।
ज... जी, परी रानी, मुझे क्षमा कर दो?
बांकेलाल अपनी बात पूरी कर पाता कि...
तभी–
मां!
अरे, मेरी बेटी वापस आ गई!
क्या? परीकुमारी मीना... राजा विक्रमसिंह व सुमन परी देवियों की कैद से वापस आ गये हैं।

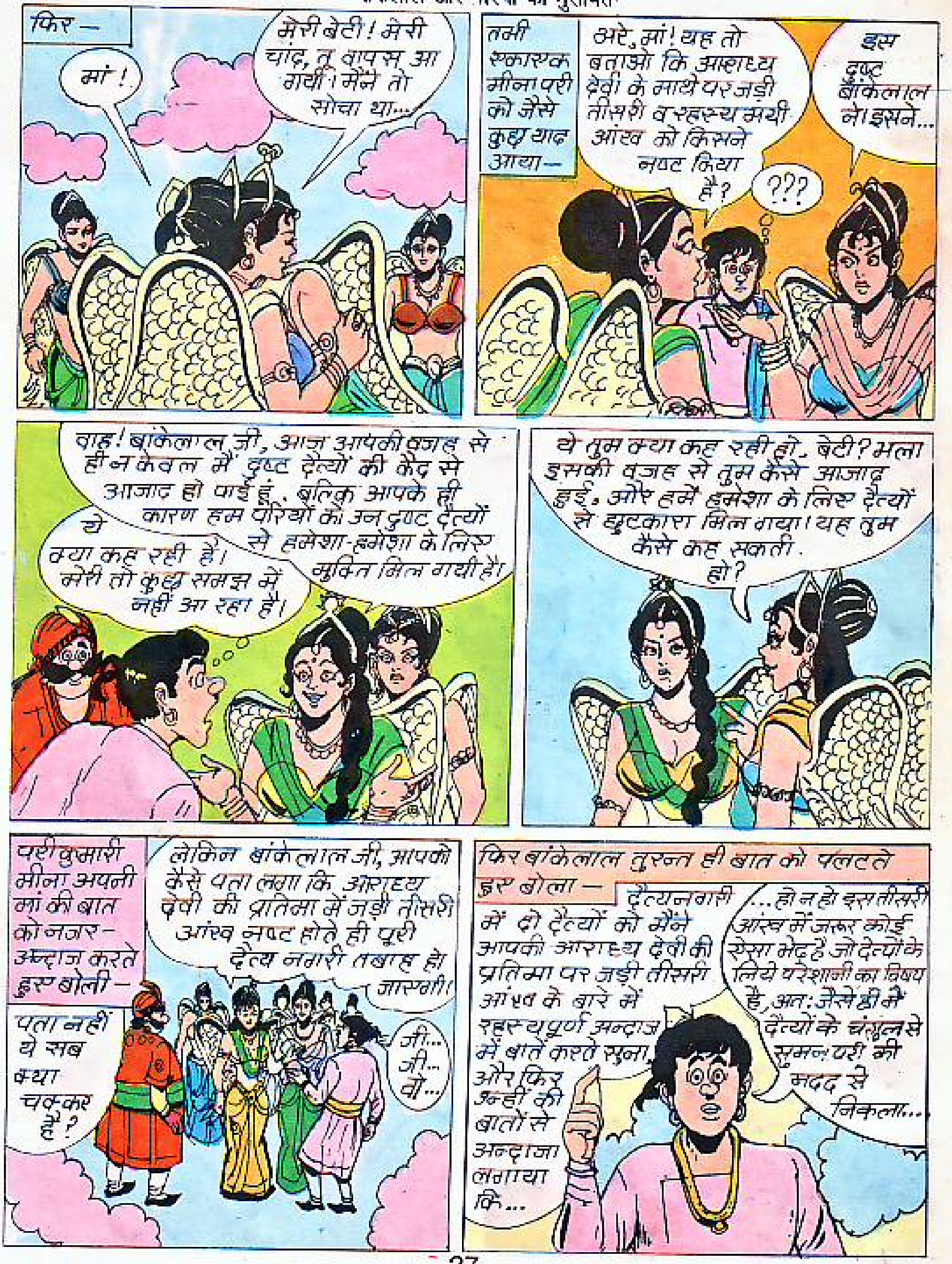
फिर —
मां!
मेरी बेटी! मेरी चांद, तू वापस आ गयी! मैंने तो सोचा था...
तभी एकाएक मीना परी को जैसे कुछ याद आया —
अरे, मां! यह तो बताओ कि आराध्य देवी के माथे पर जड़ी तीसरी व रहस्यमयी आंख को किसने नष्ट किया है?
???
इस दुष्ट बांकेलाल ने! इसने...
वाह! बांकेलाल जी, आज आपकी वजह से ही न केवल मैं दुष्ट दैत्यों की कैद से आजाद हो पाई हूं, बल्कि आपके ही कारण हम परियों को उन दुष्ट दैत्यों से हमेशा-हमेशा के लिए मुक्ति मिल गयी है।
ये क्या कह रही है। मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा है।
ये तुम क्या कह रही हो, बेटी? भला इसकी वजह से तुम कैसे आजाद हुई, और हमें हमेशा के लिए दैत्यों से छुटकारा मिल गया! यह तुम कैसे कह सकती हो?
परीकुमारी मीना अपनी मां की बात को नजर-अन्दाज करते हुए बोली —
लेकिन बांकेलाल जी, आपको कैसे पता लगा कि आराध्य देवी की प्रतिमा में जड़ी तीसरी आंख नष्ट होते ही पूरी दैत्य नगरी तबाह हो जाएगी!
पता नहीं ये सब क्या चक्कर है?
जी... जी... वो...
फिर बांकेलाल तुरन्त ही बात को पलटते हुए बोला —
दैत्यनगरी में दो दैत्यों को मैंने आपकी आराध्य देवी की प्रतिमा पर जड़ी तीसरी आंख के बारे में रहस्यपूर्ण अन्दाज में बातें करते सुना, और फिर उन्हीं की बातों से अन्दाजा लगाया कि...
...हो न हो इस तीसरी आंख में जरूर कोई ऐसा भेद है जो दैत्यों के लिये परेशानी का विषय है, अत: जैसे ही मैं दैत्यों के चंगुल से सुमन परी की मदद से निकला...

...तो सीधा यहीं आकर उस आंख का रहस्य जानने का यत्न कर ही रहा था कि तभी परीरानी आ गयी और फिर हड़बड़ाहट में आंख मुझसे गिरी और नष्ट हो गयी।
और फिर मैं तुम्हें गलत समझ बैठी जो कि मेरी गलती थी...
...और अब मुझे याद आ रही है आज से करीब बीस वर्ष पूर्व की वो बात जब कुछ राक्षसों ने पहली बार परीलोक पर आक्रमण किया था और वे हमारी कुलदेवी की प्रतिमा को भी उठा ले गये थे...
... लेकिन फिर दूसरे दिन ही वे इस प्रतिमा को लेकर वापस भी आए...
परी रानी! ये लो अपनी आराध्य देवी की प्रतिमा। हम दैत्य अवश्य हैं, लेकिन फिर भी हमें यह अच्छा नहीं लगा कि हम किसी के धर्म-कर्म में रोड़े अटकाएं...
...और चूंकि हमारे सैनिकों से यह अपराध हुआ है अतः हमने प्रायश्चित के रूप में इस मूर्ति में एक बहुमूल्य तीसरी आंख जड़वाई है जो कि हमारा प्रायश्चित है...
...लेकिन खबरदार परीरानी! इस तीसरी आंख को भूल कभी नष्ट न करना, वर्ना हम समझेंगे कि तुमने हमसे विद्रोह कर दिया है, और तुम्हारे विद्रोह के दण्ड स्वरूप हम पूरे परीलोक को तबाह कर देंगे।
दैत्यराज, हम इस तीसरी आंख को कभी नष्ट नहीं करेंगे।
हां, मां! यही रहस्य था कुल-देवी की तीसरी आंख का।
ल...लेकिन दैत्यराज ने यह प्रलयंकारी आंख हमारी कुलदेवी की प्रतिमा में ही क्यों जड़वाई। वह उसे अपने पास ही रखता तो शायद वह ज्यादा सुरक्षित थी।

इस रहस्य के पीछे एक कहानी है। मैं बताती हूं...
...जो कि मुझे दैत्य नगरी में दासी के रूप में रह रही कंचनगढ़ की राजकुमारी कलावती से पता लगी थी।
तब मीनापरी कंचनगढ़ की राजकुमारी के विषय में सविस्तार बताते हुए बोली-
और मां, इसी राजकुमारी कलावती ने मुझे उस प्रलयंकारी आंख का रहस्य बताया...
...एक दिन दैत्यराज के एक गुप्तचर ने आकर सूचना दी...
दैत्यराज! मैंने पृथ्वीलोक के एक ऐसे संन्यासी का पता लगाया है, जिसने अपनी तपस्या द्वारा ब्रह्मा जी को प्रसन्न कर उनसे एक ऐसा चमत्कारी...
...तीसरा नेत्र प्राप्त किया है...
...कि यदि संन्यासीजी उस तीसरे नेत्र से किसी रोगी को देख लें तो उसका रोग दूर हो जाता है।...
...यदि वे उस नेत्र से सूखे कुएं को देख लें तो, उसमें पानी भर जाता है, और...
बस-बस गुप्तचर! हम उस तीसरे नेत्र का महत्व जान चुके हैं। और हम अभी पृथ्वीलोक जाकर उस नेत्र को दैत्य नगरी ले आएंगे।
...फिर पृथ्वीलोक पहुंचकर दैत्यराज ने संन्यासी सिद्धनाथ के तीसरे नेत्र का चमत्कार देखा...
आहा! मैं ठीक हो गया हूं!
वाह! चमत्कार हो गया। संन्यासीजी के देख भर लेने से हमारा वर्षों से कोढ़ रोग से त्रस्त बेटा ठीक हो गया है।
जय... जय...

...और फिर आगे बढ़कर तलवार के एक ही वार से...
???
ओह! दैत्य भागो!
आई..ई...
खचाक
...संन्यासी सिद्धनाथ का तीसरा नेत्र निकाल लिया।
...तब...
उद्दण्ड दैत्य! तूने जिस प्रयोजन से मेरा तीसरा नेत्र निकाला है, तेरा यह प्रयोजन इस नेत्र से कभी नहीं पूरा होगा...
!?
...यानी एक प्रकार से तेरे लिए यह नेत्र एक चमकदार पत्थर ही साबित होगा...
...लेकिन जिस दिन यह पत्थर नष्ट होगा, उस दिन तेरा ही नहीं तेरी समूल जाति का सर्वनाश हो जाएगा...
...और यह भी याद रखना कि यह पत्थर रूपी आंख पृथ्वी लोक के ही किसी मानव के हाथों ही नष्ट होगी।
उफ! मैंने सुना है कि इन सिद्ध पुरुषों का श्राप कभी खाली नहीं जाता है!
...इतना कहकर संन्यासी ने अपने प्राण त्याग दिये...
...फिर दैत्यराज उस आंख को दैत्य नगरी ले आया, लेकिन वह चिन्तित था कि...
उफ! अब मैं इस मुसीबत को कहां सुरक्षित रखूं जिससे यह नष्ट न होने पाए, क्योंकि इसके नष्ट होने का अर्थ है मेरी और इस पूरी दैत्य नगरी की तबाही।

...दैत्यराज अभी उस आंख की सुरक्षा का कोई उपाय सोच ही रहा था कि तभी...
दैत्यराज की जय हो। हम आपके लिए यह खूबसूरत उपहार लाए हैं।
ओह! परी!
मुझे छोड़ दे दुष्ट!
...फिर एकाएक वह चौंक पड़ा–
यह मूर्ति कैसी है?
ज...जी दैत्यराज, यह परियों की आराध्य देवी की मूर्ति है। हम इसे इनके पवित्र स्थान से लूटकर लाए हैं।
...तब उस मूर्ति को देखकर दैत्यराज सोचने लगा–
क्यों न इस प्रलयंकारी आंख को इस मूर्ति में प्रतिष्ठित कर किसी बहाने वापस परीलोक छोड़ आऊं। तब न कोई पाएगा और न ही इस आंख का रहस्य जान कभी मेरा या दैत्य-नगरी का विनाश होगा।
पता नहीं दैत्यराज किस सोच में पड़ गये हैं।
...और इस तरह दैत्यराज ने अपनी तबाही और बर्बादी को तुम्हारी आराध्य देवी की मूर्ति में तीसरी आंख के रूप में प्रतिष्ठित कर मूर्ति परीलोक पहुंचा दी है...
ओह यह दैत्यराज तो बहुत ही चालाक है।
हूं, तो यह था कुलदेवी की तीसरी आंख का रहस्य।
हां, मां!
काश! मुझे यह रहस्य पहले मालूम होता तो मैं यह आंख कभी नष्ट न करता।

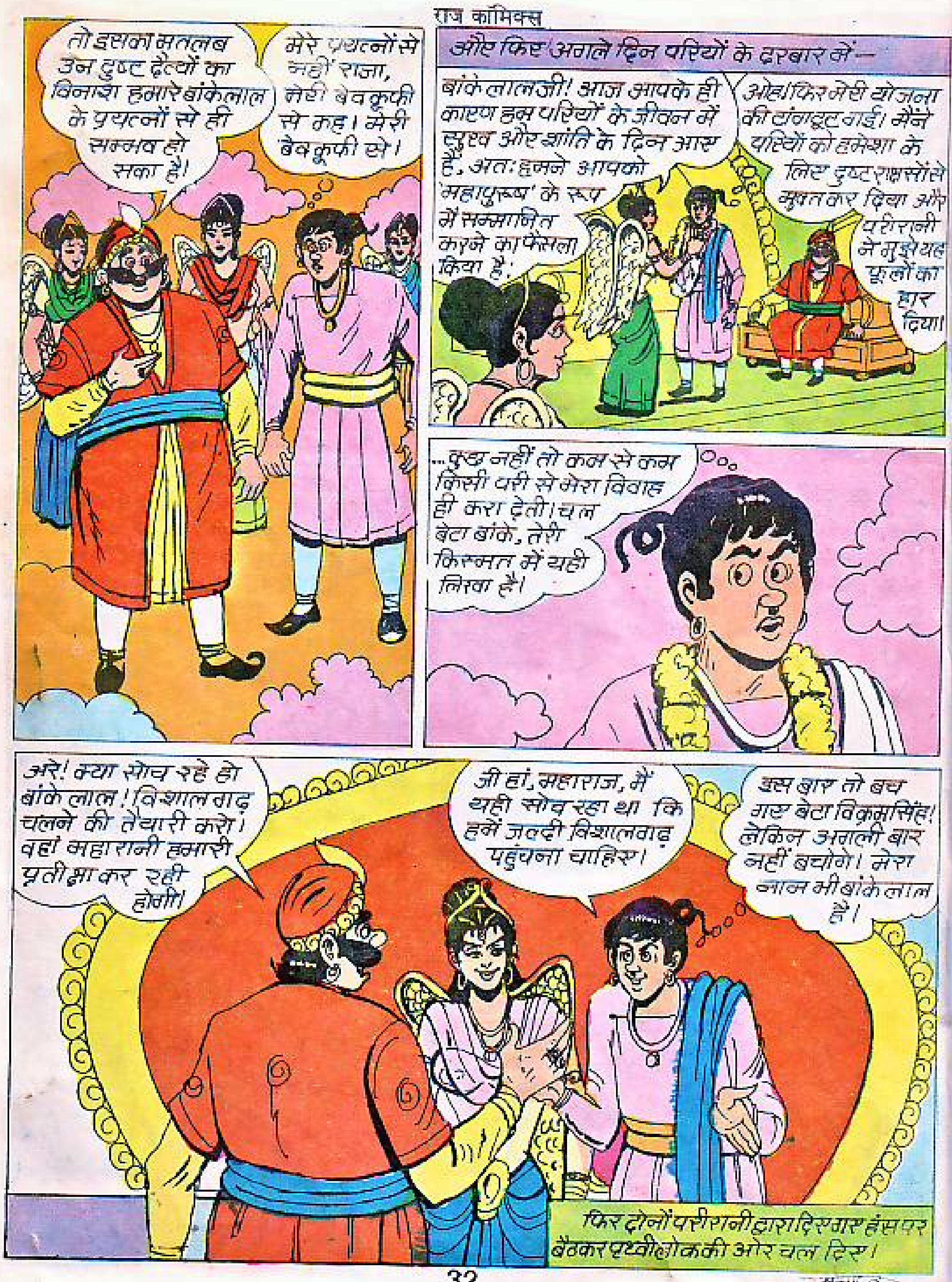

समाप्त

मुद्रक: जापान आर्ट प्रेस

Anubhav's scan

Anubhav's scan
RAJ COMICS FAN NATION
BRINGING HOME THE JUNOON

Anubhav's scan

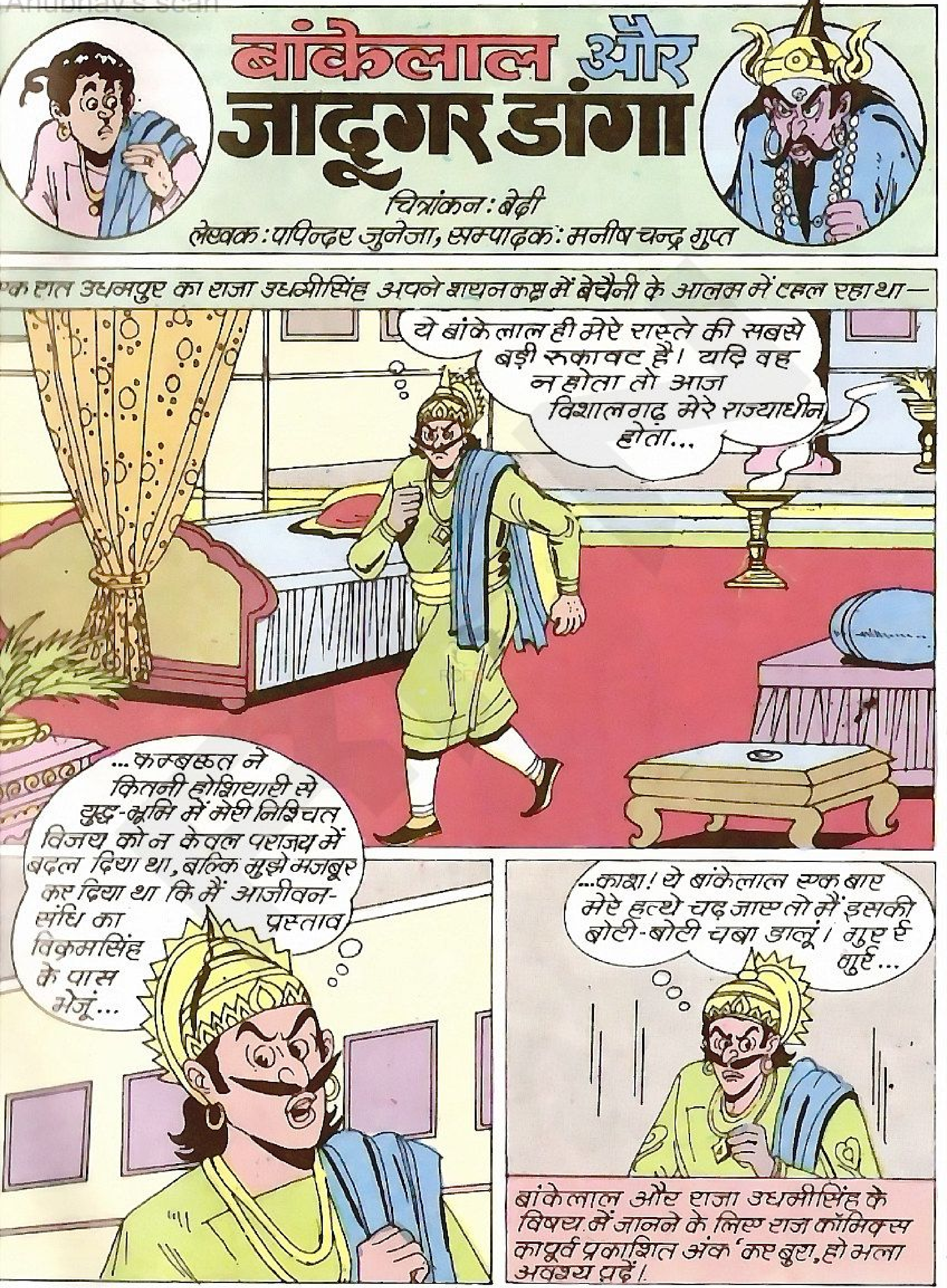

Anubhav's scan

Anubhav's scan

Anubhav's scan

Anubhav's scan

Anubhav's scan

Anubhav's scan

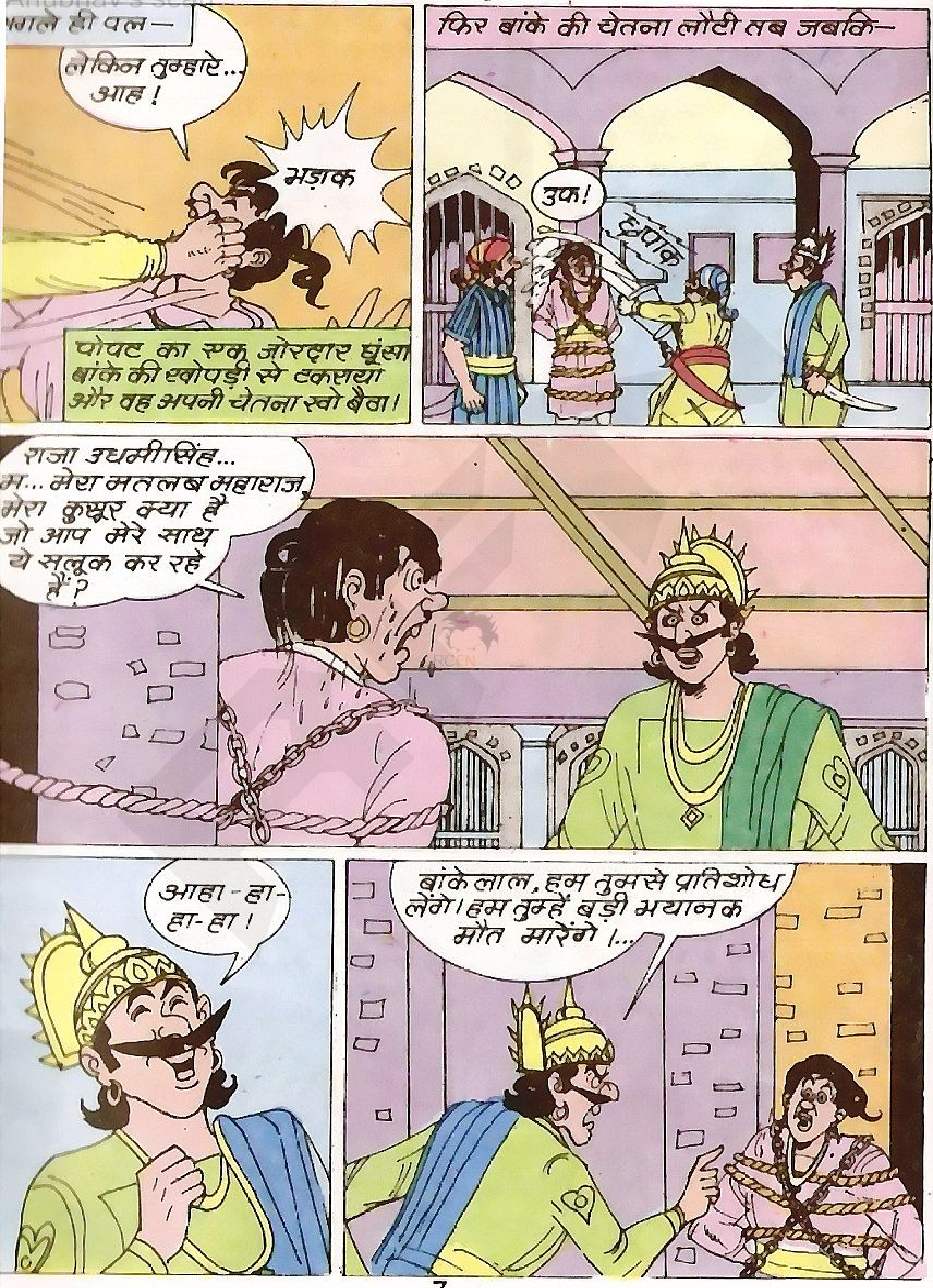

Anubhav's scan

Anubhav's scan

इधर पोपट और चौपट विशालगढ़ पहुंचकर बांकेलाल की योजनानुसार जगह-जगह प्रचार करने लगे –
अरे, भाई! तुमने सुना उधमपुर के राजा उधमीसिंह ने अपने बांकेलालजी का अपहरण करवा लिया है।
सुना तो मैंने भी कुछ ऐसा ही है, भइया!
???
बांकेलाल का अपहरण
क्या? बांकेलालजी का अपहरण! लेकिन उधमपुर के राजा ने ऐसा क्यों किया?
यह तो वही जाने!
???
शीघ्र ही यह खबर राजा विक्रमसिंह तक पहुंची –
महाराज की जय हो। पूरे नगर में चर्चा है कि बांकेलालजी का अपहरण हो गया।
क्या बकते हो?
महाराज, मुझे भी कुछ गड़बड़ नजर आती है, क्योंकि बांकेलाल कल से न तो राजदरबार में आए हैं, और न ही उनको कल से किसी ने देखा है।
लेकिन महामंत्रीजी, भला बांकेलाल का अपहरण कौन और क्यों करेगा?
महाराज, नगर में चर्चा है कि बांकेलालजी के अपहरण में उधमपुर के राजा का हाथ है।

Anubhav's scan

Anubhav's scan

Anubhav's scan

Anubhav's scan

Anubhav's scan

Anubhav's scan

Anubhav's scan

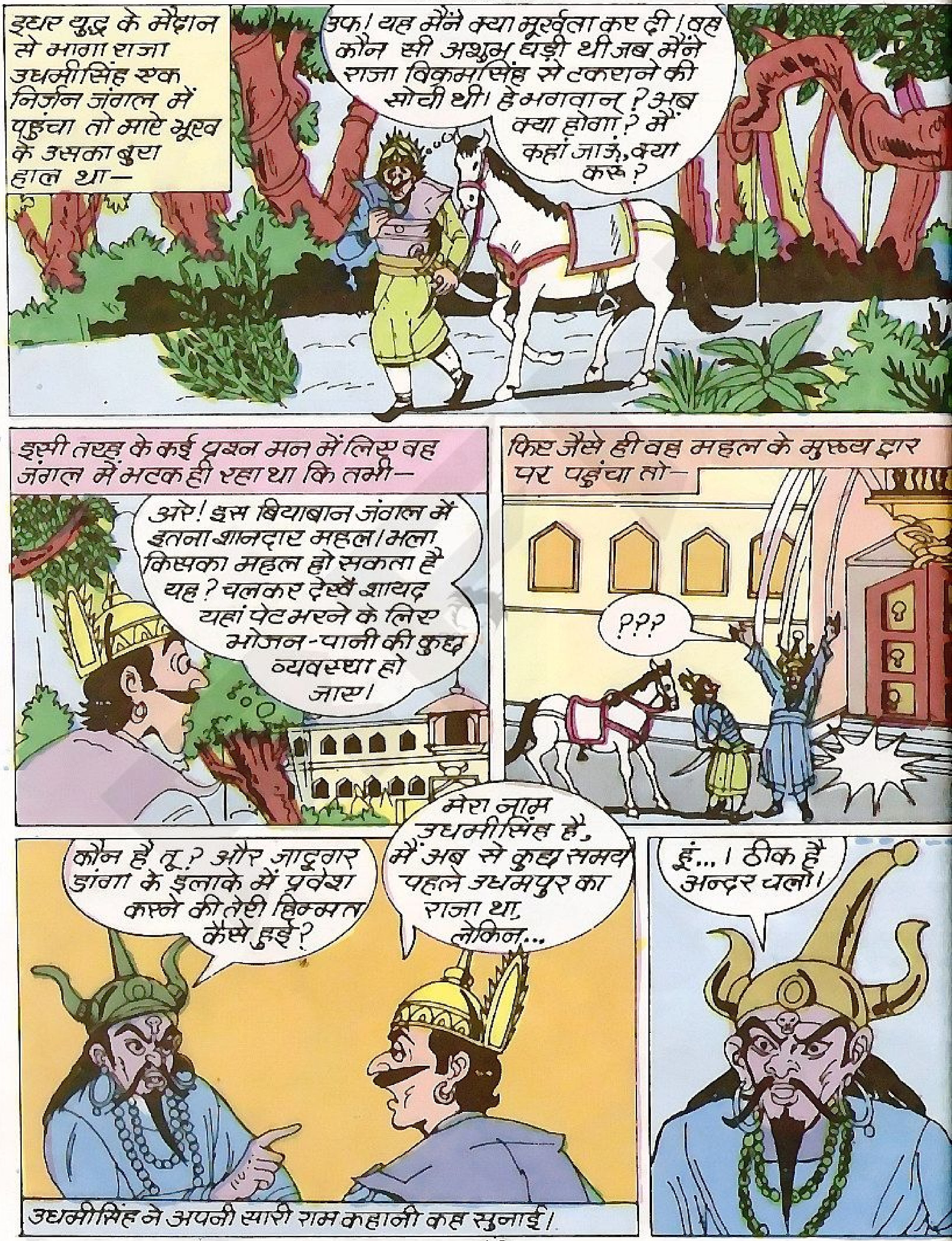
इधर युद्ध के मैदान से भागा राजा उधमीसिंह एक निर्जन जंगल में पहुंचा तो मारे भूख के उसका बुरा हाल था—
उफ! यह मैंने क्या मूर्खता कर दी। वह कौन सी अशुभ घड़ी थी जब मैंने राजा विक्रमसिंह से टकराने की सोची थी। हे भगवान? अब क्या होगा? मैं कहां जाऊं, क्या करूं?
इसी तरह के कई प्रश्न मन में लिए वह जंगल में भटक ही रहा था कि तभी—
अरे! इस बियाबान जंगल में इतना शानदार महल। भला किसका महल हो सकता है यह? चलकर देखें शायद यहां पेट भरने के लिए भोजन-पानी की कुछ व्यवस्था हो जाए।
फिर जैसे ही वह महल के मुख्य द्वार पर पहुंचा तो—
???
कौन है तू? और जादूगर झांगा के इलाके में प्रवेश करने की तेरी हिम्मत कैसे हुई?
मेरा नाम उधमीसिंह है, मैं अब से कुछ समय पहले उधमपुर का राजा था, लेकिन...
हूं...। ठीक है अन्दर चलो।
उधमीसिंह ने अपनी सारी राम कहानी कह सुनाई।

Anubhav's scan

Anubhav's scan

Anubhav's scan

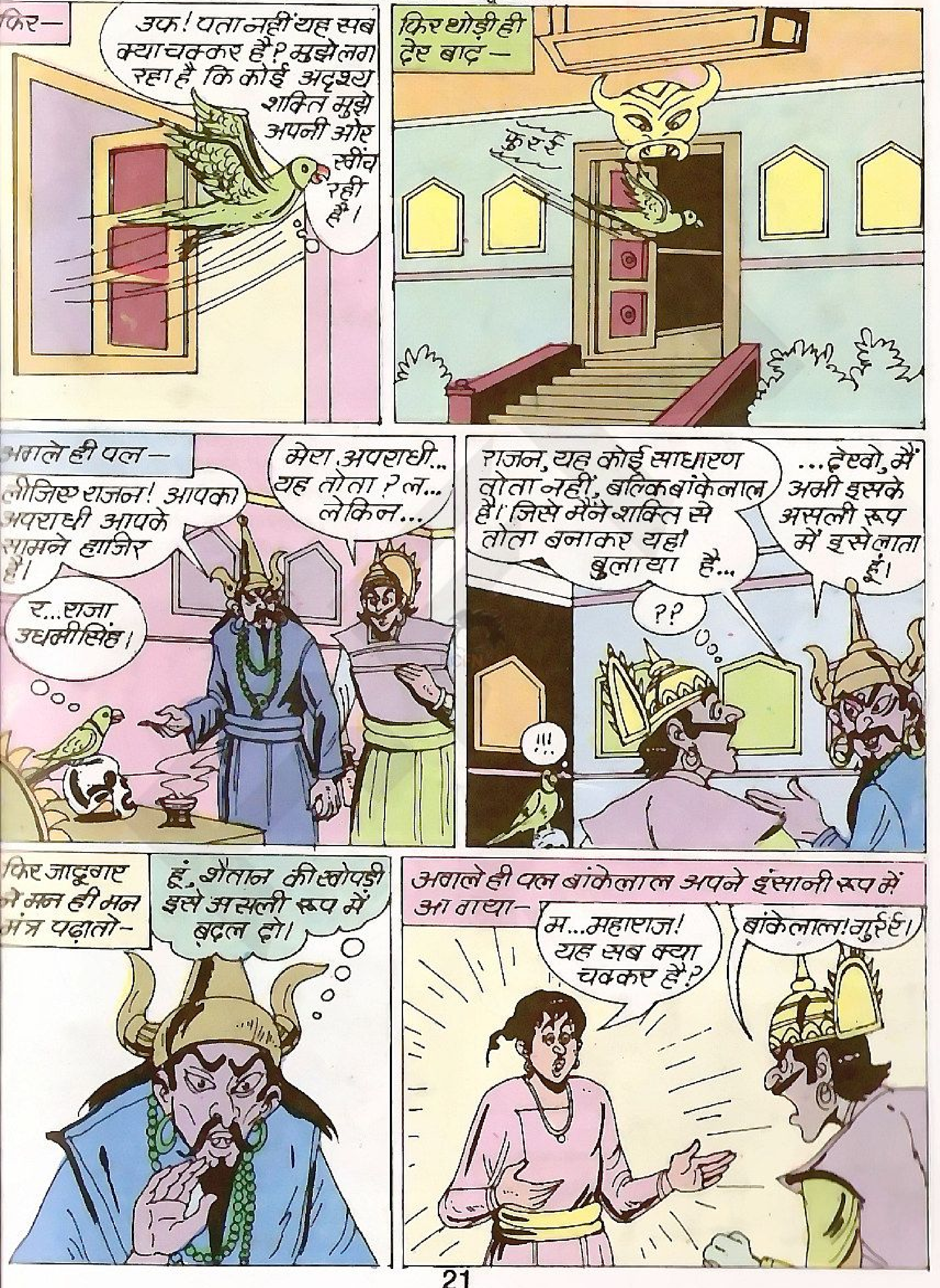

Anubhav's scan

Anubhav's scan

Anubhav's scan

Anubhav's scan

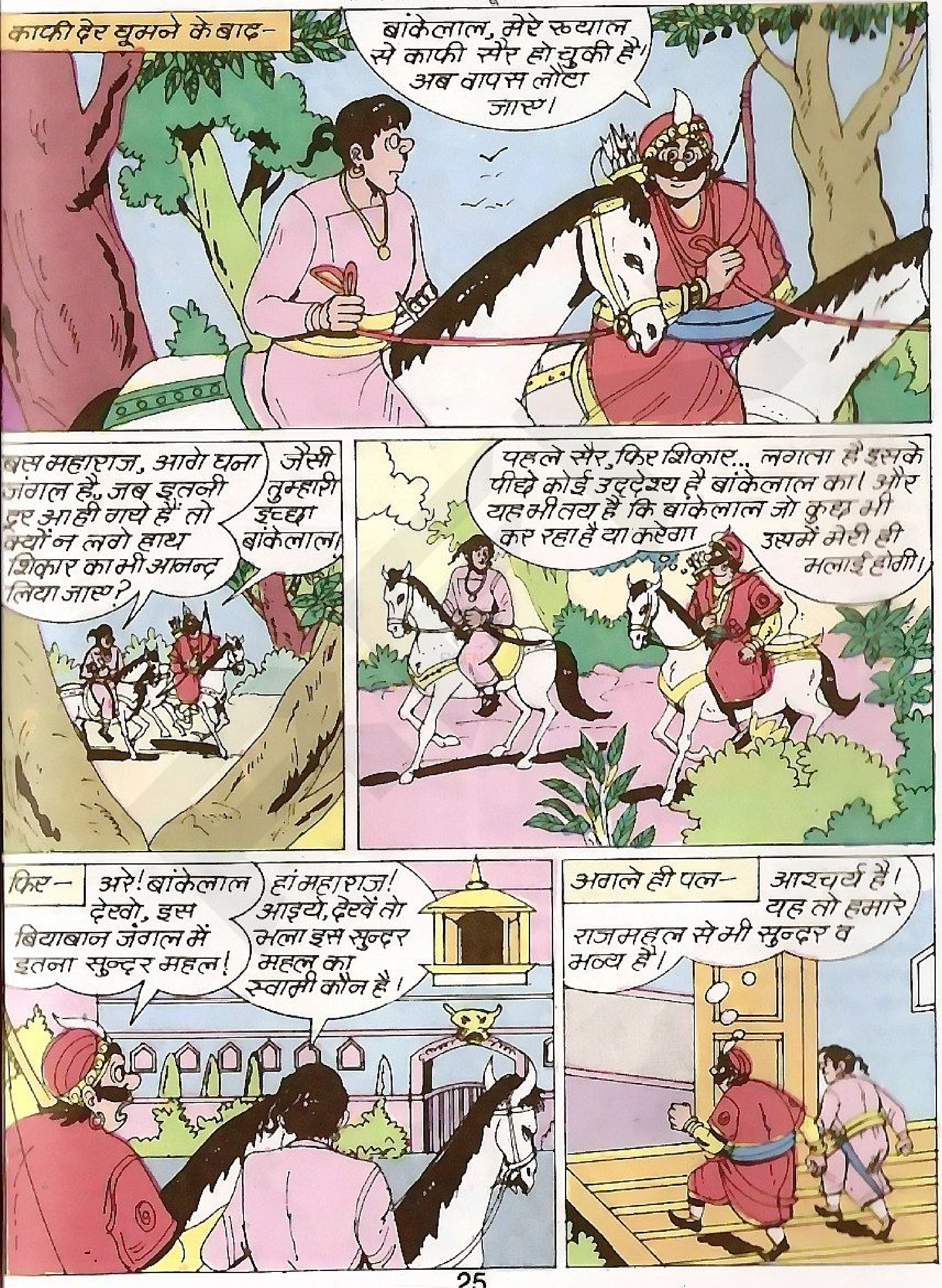

Anubhav's scan

Anubhav's scan

Anubhav's scan

Anubhav's scan

Anubhav's scan

Anubhav's scan

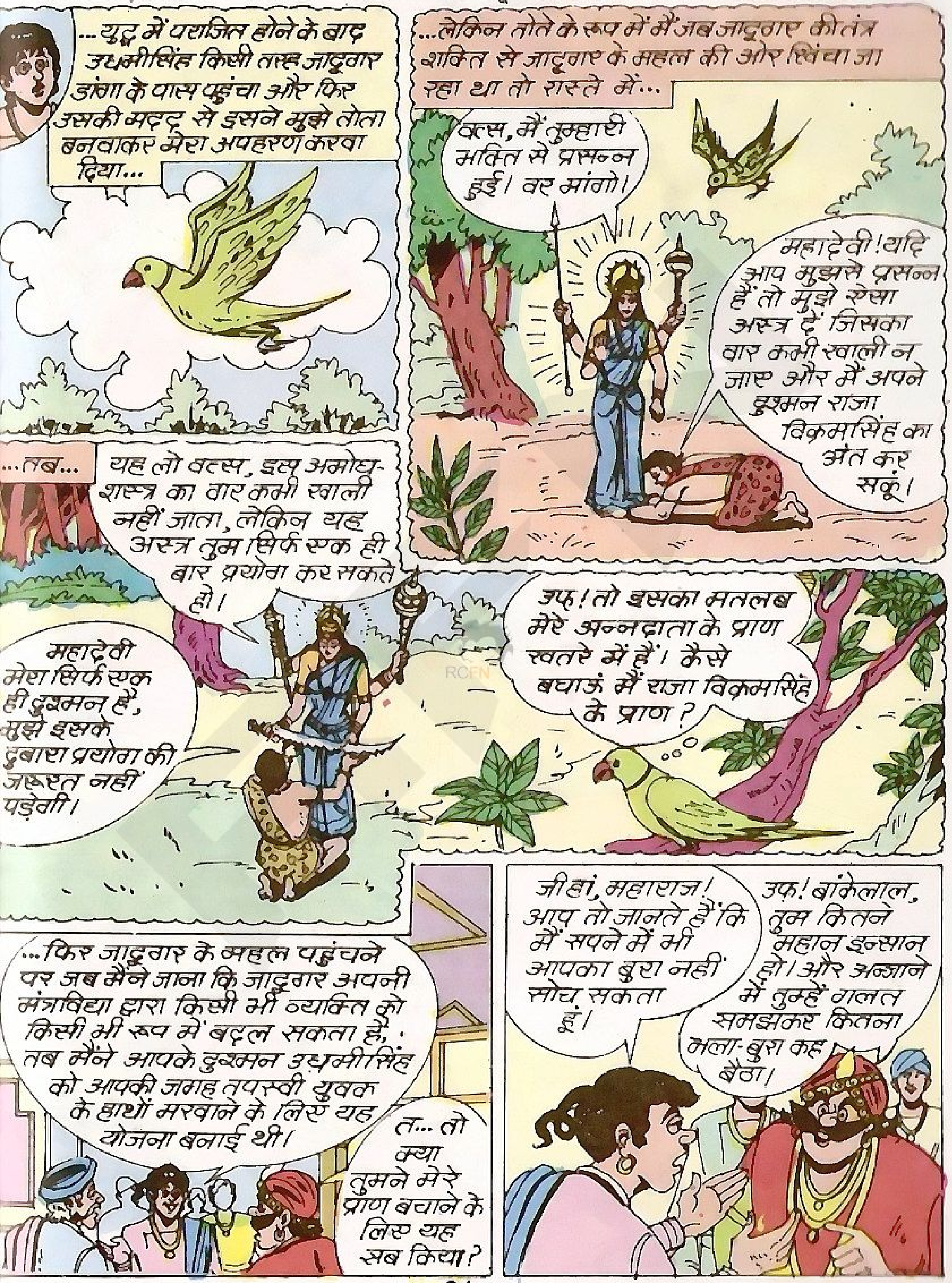

Anubhav's scan

समाप

Sarfaroshi Ki Tamanna...Ab Hamare Dil me hai...dekhna hai zor kitna...bazuye katil me hai!
MUMBAI
26/11
THE SPIRIT WONT DIE...

R.F.N
CYBERDEJAVU a.k.a MANAS

RAJ COMICS FAN NATION
BRINGING THE JANOON BACK

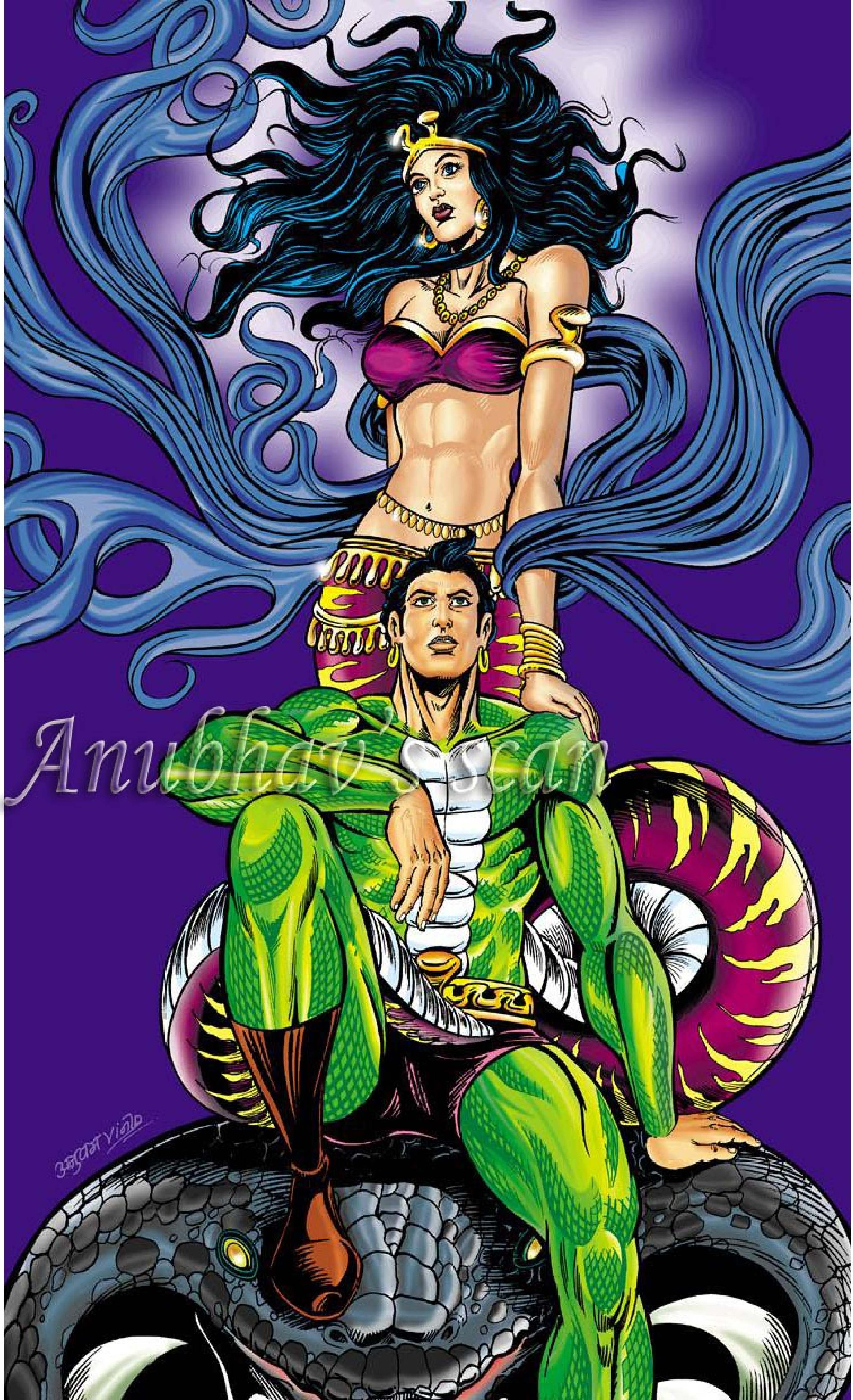
Anubhav's scan

RAJ COMICS FAN NATION
BRINGING THE JANOON BACK

Anubhav's scan

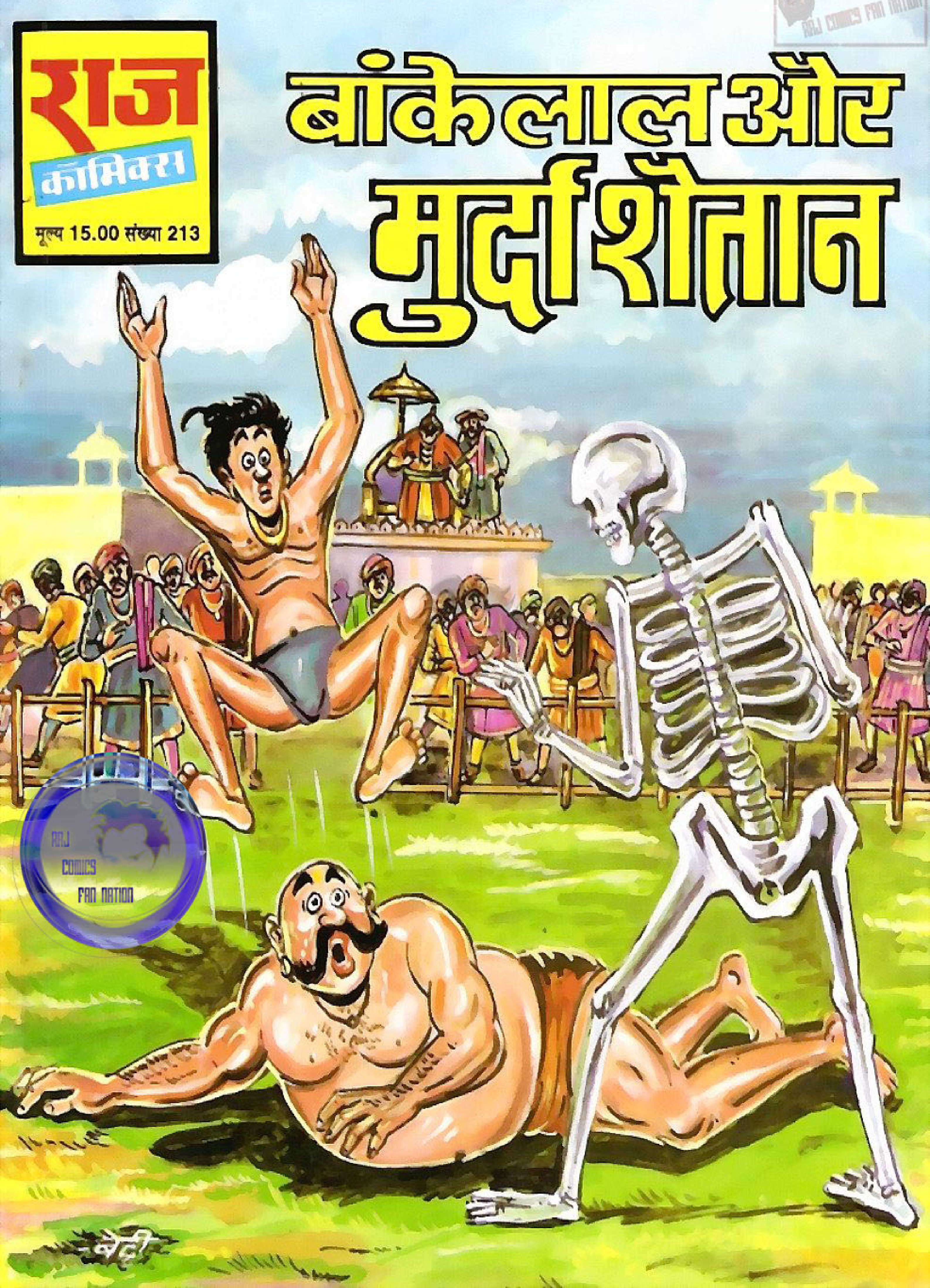

बांकेलाल और
मुर्दा शैतान
चित्रांकन: बेदी
कहानी: तरुण कुमार वाही
संपादन: मनीष चंद्र गुप्त
विक्रमगढ़ में आजकल तीन-दिवसीय कुश्ती समारोह चल रहा था। जिसमें दारापुर का टुंडा पहलवान दारा विक्रमगढ़ के जाने-माने पहलवानों को चुनौती देने के बाद उनकी चुनौतियां कुबूल कर रहा था—
दारा ऽऽ दारा
दारा ही जीतेगा।
नहीं। विक्रमगढ़ का पहलवान चिलप्पों जीतेगा।
हा हा
बन गया मेरी हड्डियों का सुरमा।
आ...ह।
बचाओऽऽऽ
हाय!

Anubhav's scan

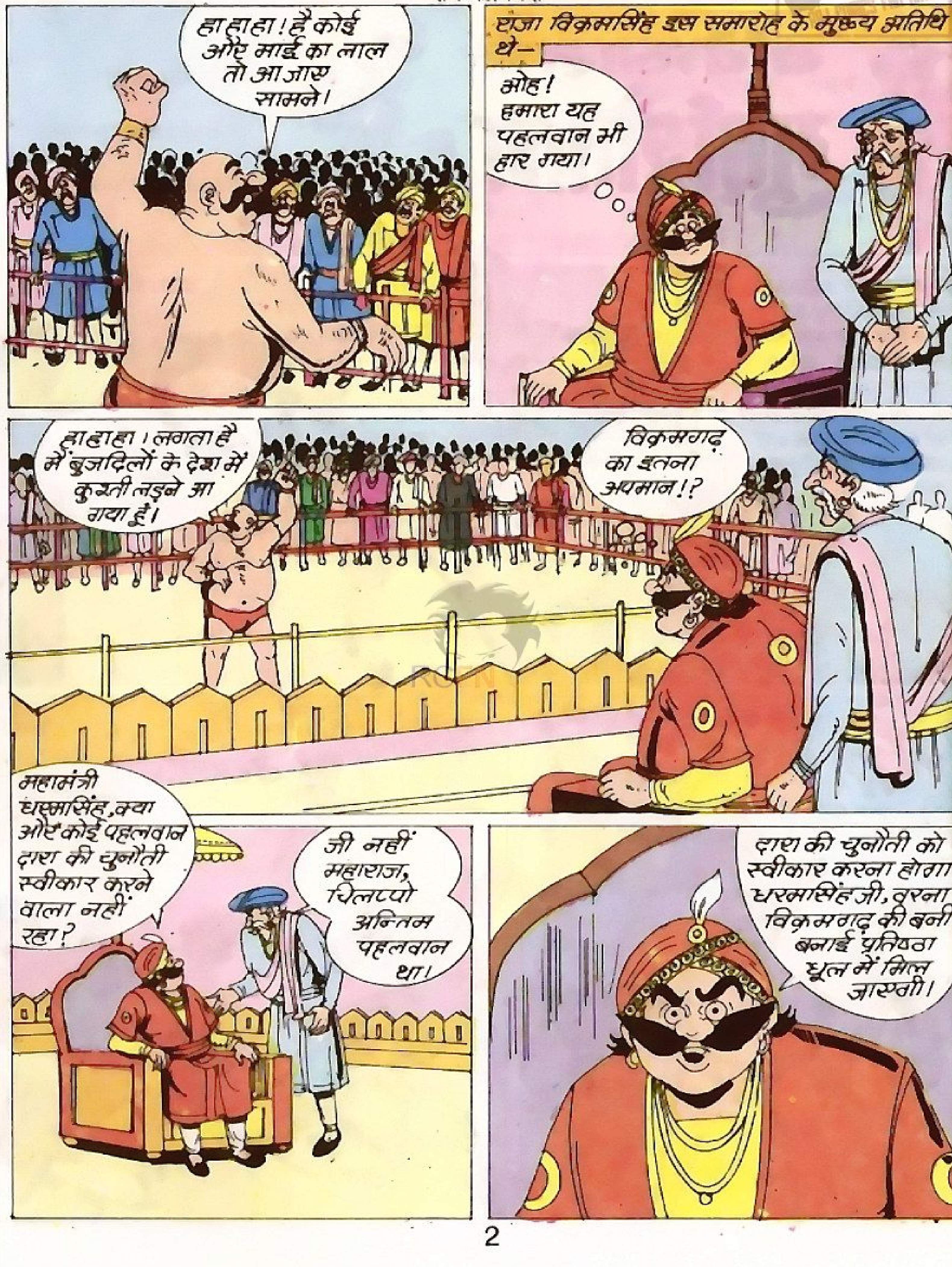

Anubhav's scan

Anubhav's scan

Anubhav's scan

Anubhav's scan

Anubhav's scan

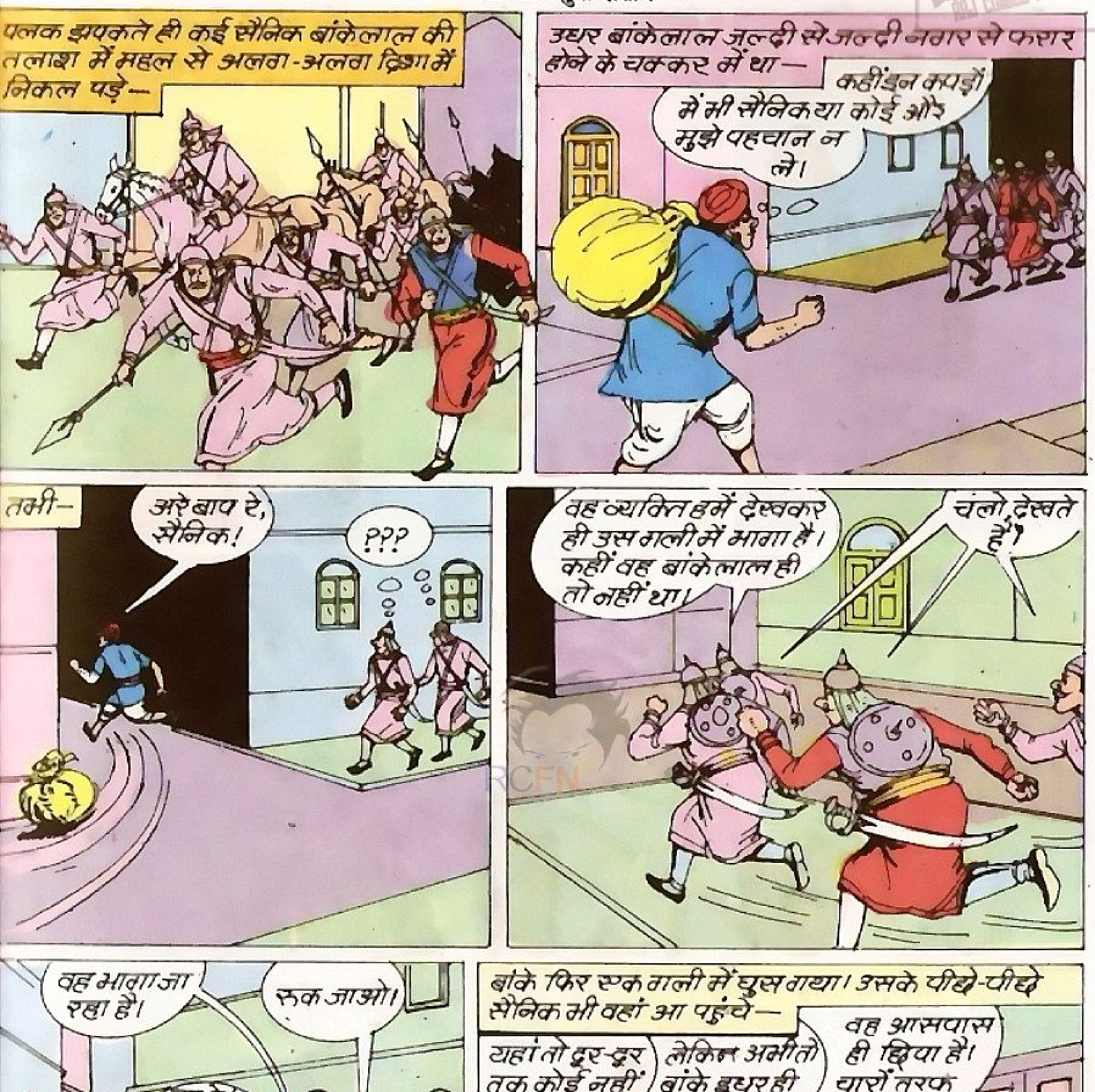

Anubhav's scan

Anubhav's scan

Anubhav's scan

Anubhav's scan

Anubhav's scan

Anubhav's scan

Anubhav's scan

तुम मेरी जान बख्श रहे हो। मैं तुमसे गद्दारी नहीं करूंगा शैतान भाई...
...देखते जाओ। सबसे पहले मैं तुम्हें पिलाऊंगा एक तगड़े पहलवान दारा का खून।
ही ही ही। अब बनी बात। बांके का नाम भी बना रहेगा और दुश्मन भी खत्म होजायेंगे।
हा हा हा। अब आयेगा मजा कुश्ती लड़ने का।
विक्रमसिंह! अब तेरी भी खैर नहीं। शैतान को तेरा सारा खून पिलाकर तेरी गद्दी पर मैं बैठूंगा। ही ही ही। मजे आ गए मेरे तो।
अरे! वह कौन जा रहा है सैनिक की वर्दी में।
वह बांकेलाल ही होगा। पकड़ो उसे।
शीघ्र ही सैनिकों ने बांकेलाल को जा घेरा—
ठहरो बांकेलाल! तुम्हें हमारे साथ महल में चलना है।
ओह! ठीक है चलो।

Anubhav's scan

Anubhav's scan

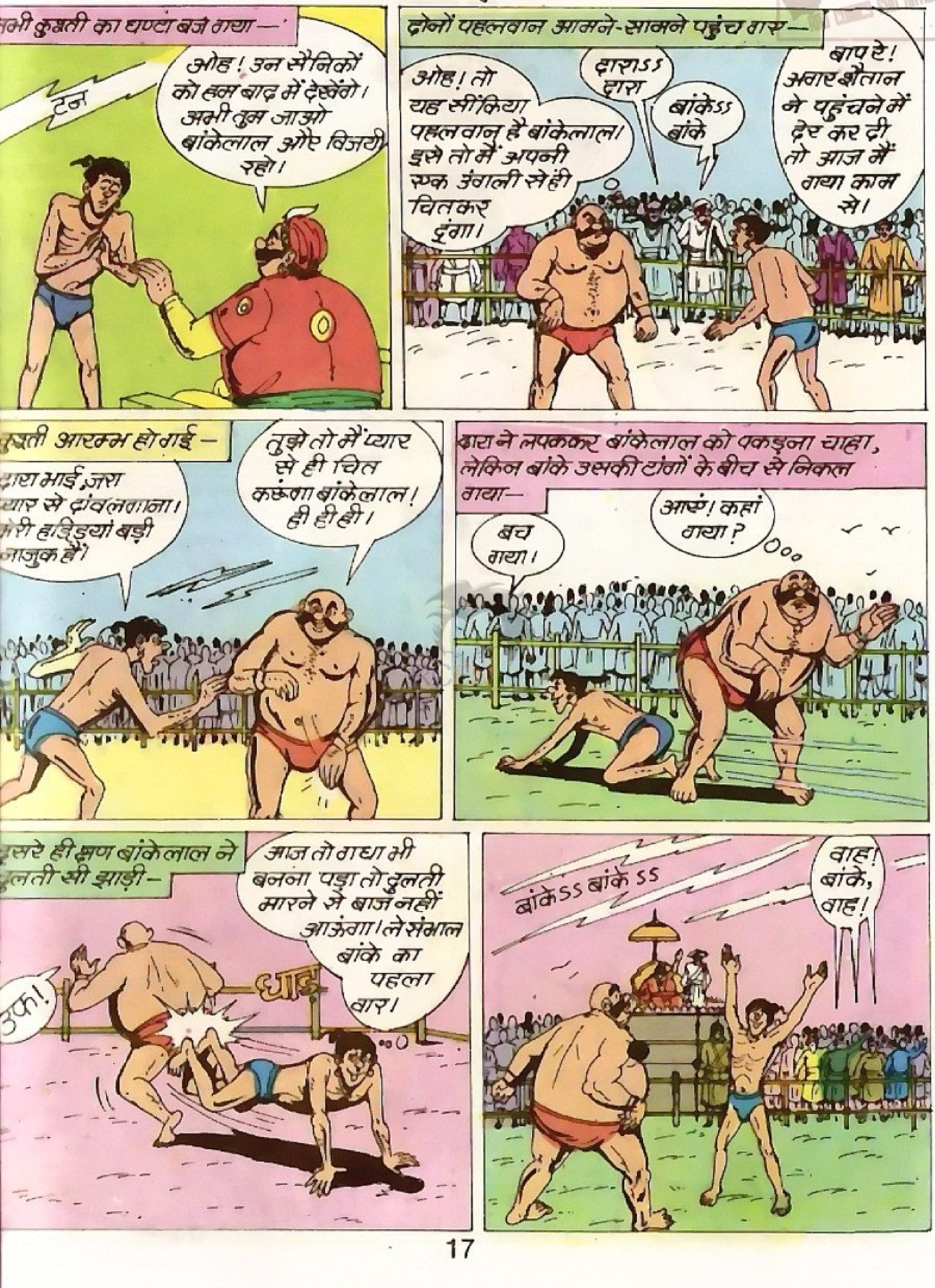

Anubhav's scan

RAJ COMICS FAN NATION
BUY COMICS
SAVE COMICS INDUSTRY

Anubhav's scan

Anubhav's scan

Anubhav's scan

Anubhav's scan

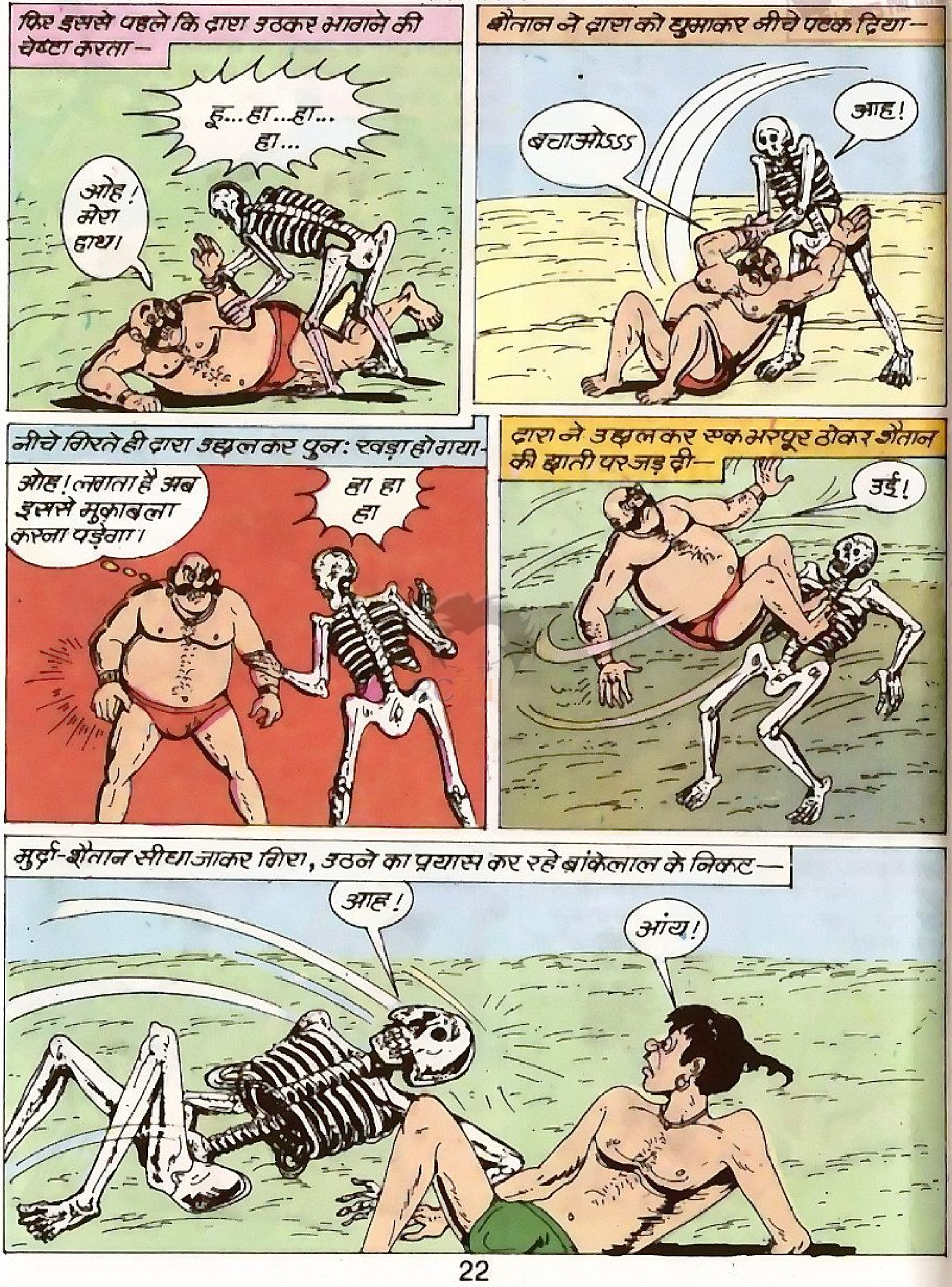

Anubhav's scan

Anubhav's scan

Anubhav's scan

Anubhav's scan

Anubhav's scan

Anubhav's scan

Anubhav's scan

Anubhav's scan

Anubhav's scan

मनोरंजक बाल साहित्य (सम्पूर्ण रंगीन चित्रों सहित)

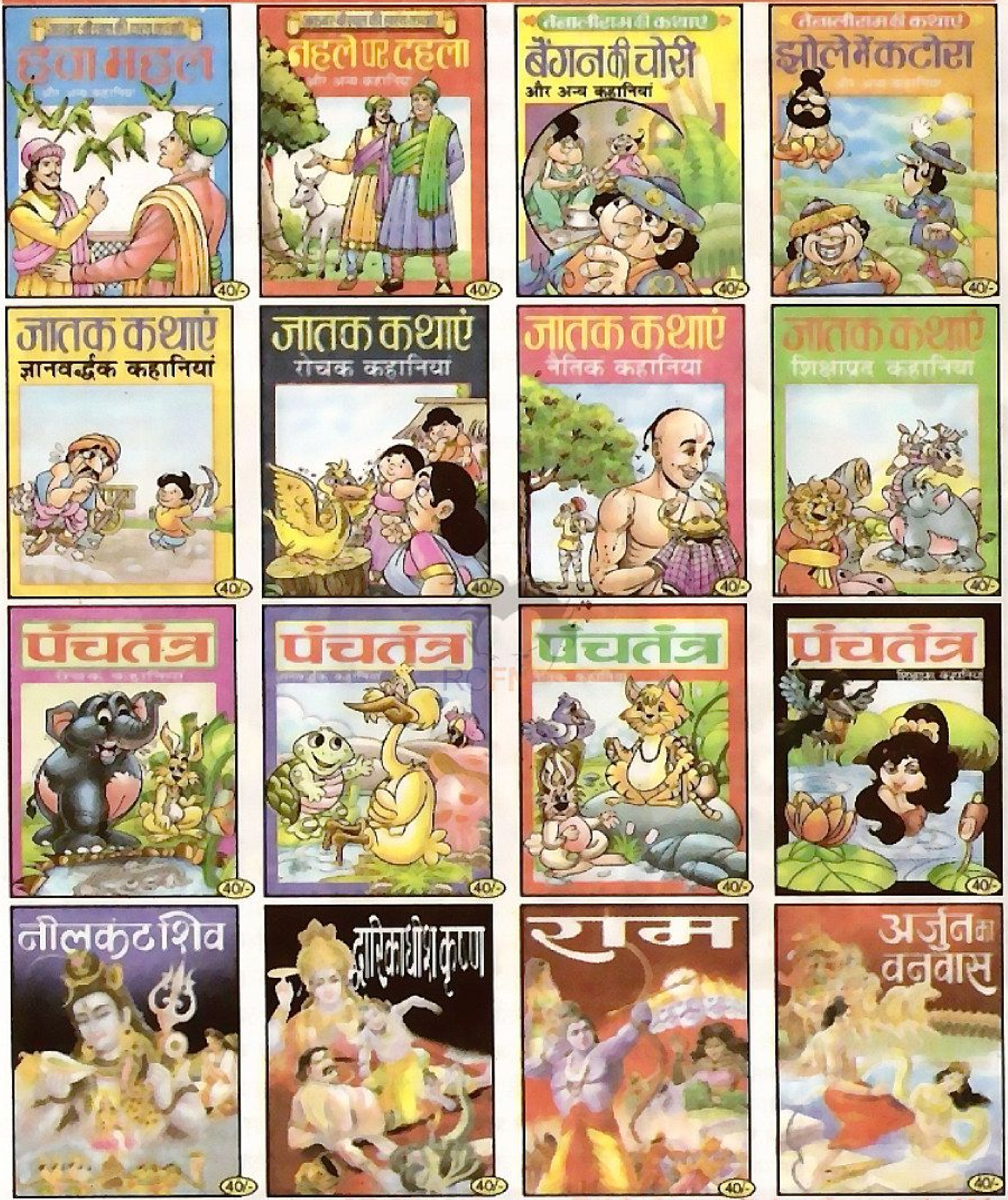

All titles also available in english price each 40/-

अपने निकट के पुस्तक विक्रेता, ए.एच.व्हीलर एंड कंपनी के रेलवे बुक स्टाल, रोडवेज बुक स्टाल व सभी रेलवे स्टेशन के बुक स्टालों से खरीदें न मिलने पर कोई तीन पुस्तकों के मूल्य का मनीऑर्डर भेजकर घर बैठे प्राप्त करें। डाक व्यय माफ।

राजा पॉकेट बुक्स 112 फर्स्ट फ्लोर, दरीबा कलां, दिल्ली-6, ✆: 23251109, 23251092

बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए अति उपयोगी पुस्तके

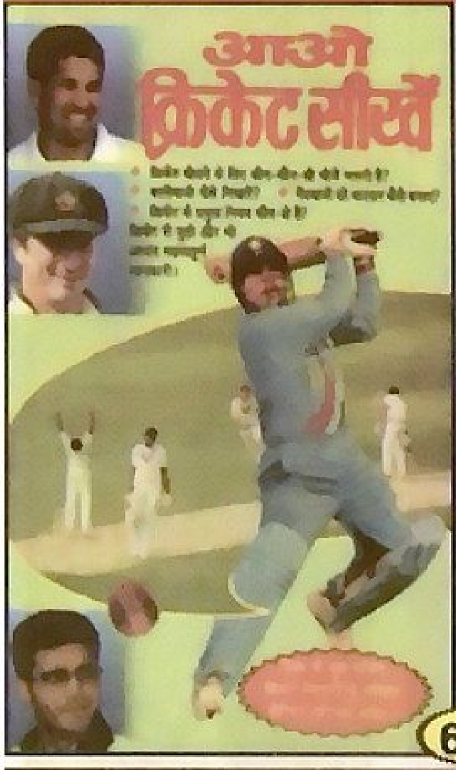

60/-

द्रोणाचार्य पुरस्कार से सम्मानित पूर्व राष्ट्रीय क्रिकेट को गुरुचरण सिंह द्वारा लिखित इस पुस्तक में क्रिकेट सीखने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश, सफल बल्लेबाज व गेंदबाज बन के गुर, उम्दा विकेट कीपिंग, क्षेत्ररक्षण और कप्तानी करने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश, क्रिकेट के नियम, शब्दार्थ तथ तकनीक से सम्बंधित महत्त्वपूर्ण जानकारी दी गई है। साथ ह विश्व के ख्यातिप्राप्त क्रिकेटर किस प्रकार इतने अच्छे क्रिकेट बन सके, उनका संक्षिप्त विवरण व जीवन-परिचय भी रंगी चित्रों सहित पुस्तक में दिया गया है। इस पुस्तक की मदद से आ बगैर किसी कोच के ही योग्य क्रिकेटर बन सकते हैं।

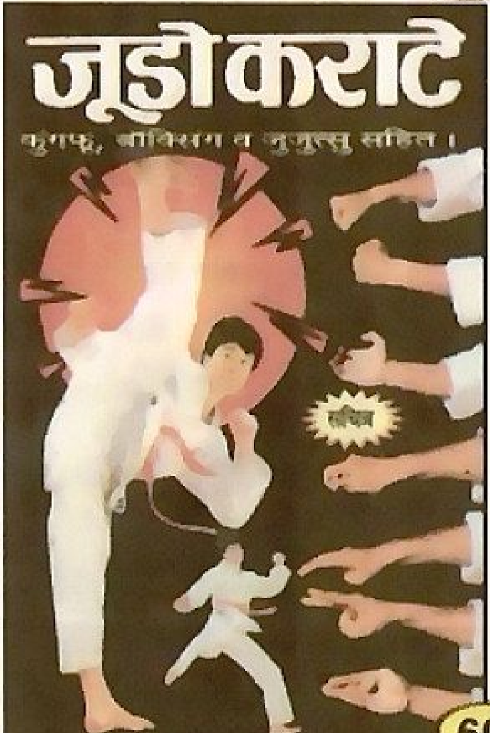

60/-

इस पुस्तक में जूडो-कराटे के साथ-साथ कुंगफू, बॉक्सिंग व जुजुत्सु के विषय में भी विस्तृत जानकारी दी गई है। इस पुस्तक की सहायता से आप शीघ्र ही इन कलाओं में पारंगत होकर अपनी रक्षा स्वयं कर सकते हैं।

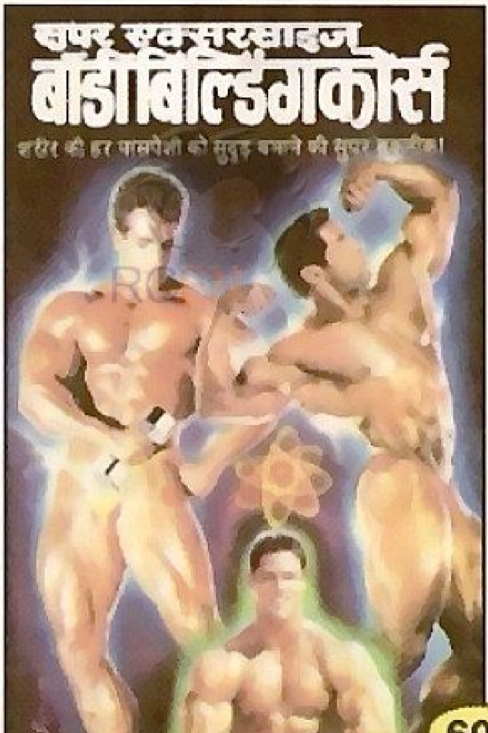

60/-

प्रस्तुत पुस्तक की मदद से आप भी रॉनी कोलमेन, जय कटलर, डेनिस जेम्स, प्रेमचंद डेगरा व धर्मेन्द्र यादव की तरह अपने शरीर को मनचाही शेप देकर उन जैसे बन सकते हैं।

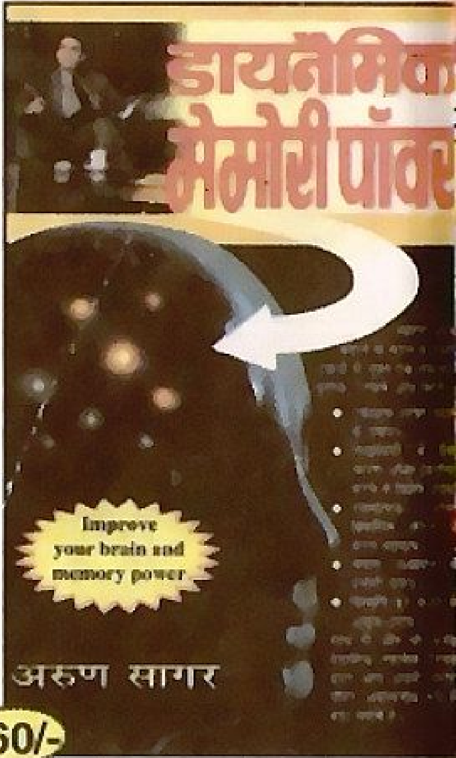

60/-

'डायनैमिक मेमोरी पॉव मस्तिष्क व स्मरण-शक्ति व विकसित करने वाली ए अत्यंत उपयोगी पुस्तक है इस दी गई विधियों को अपनाक आप अपनी बुद्धि को 10 गुणा अधिक सजग औ कुशाग्र बना सकते हैं।

अपने निकट के पुस्तक विक्रेता, ए.एच.व्हीलर एंड कंपनी के रेलवे बुक स्टाल, रोडवेज बुक स्टाल व सभी रेलवे स्टेश के बुक स्टालों से खरीदें न मिलने पर कोई दो पुस्तकों के मूल्य का मनीऑर्डर भेजकर घर बैठे प्राप्त करें। डाक व्यय माफ

राजा पॉकेट बुक्स 112 फर्स्ट फ्लोर, दरीबा कलां, दिल्ली-6, ✆: 23251109, 232510

Anubhav's scan

राजकॉमिक्स की गुदगुदाती पेशकश

हीहीही! मित्रो वर्षों पहले आपने बांकेलाल के जिन मजेदार कॉमिकों को पढ़ा और आज तक हंस रहे हैं, वे अगले कई और वर्षों तक हंसाने के लिए दोबारा प्रस्तुत हैं।

बांकेलाल के 16 खिलखिलाते कॉमिक

प्रत्येक का मूल्य 15/-

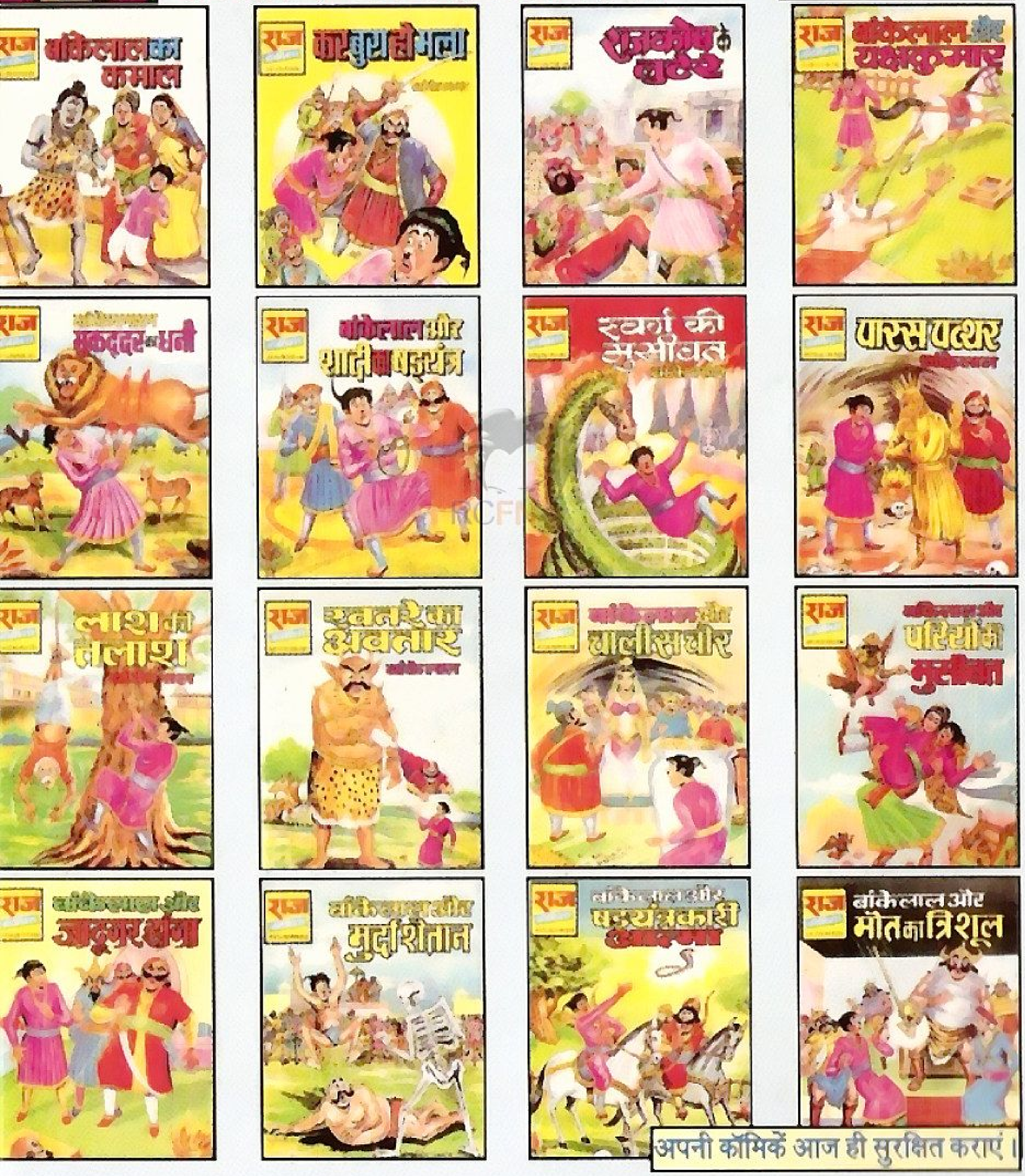

अपनी कॉमिकें आज ही सुरक्षित कराएं।

Come To www.PyareToons.com For More Comics

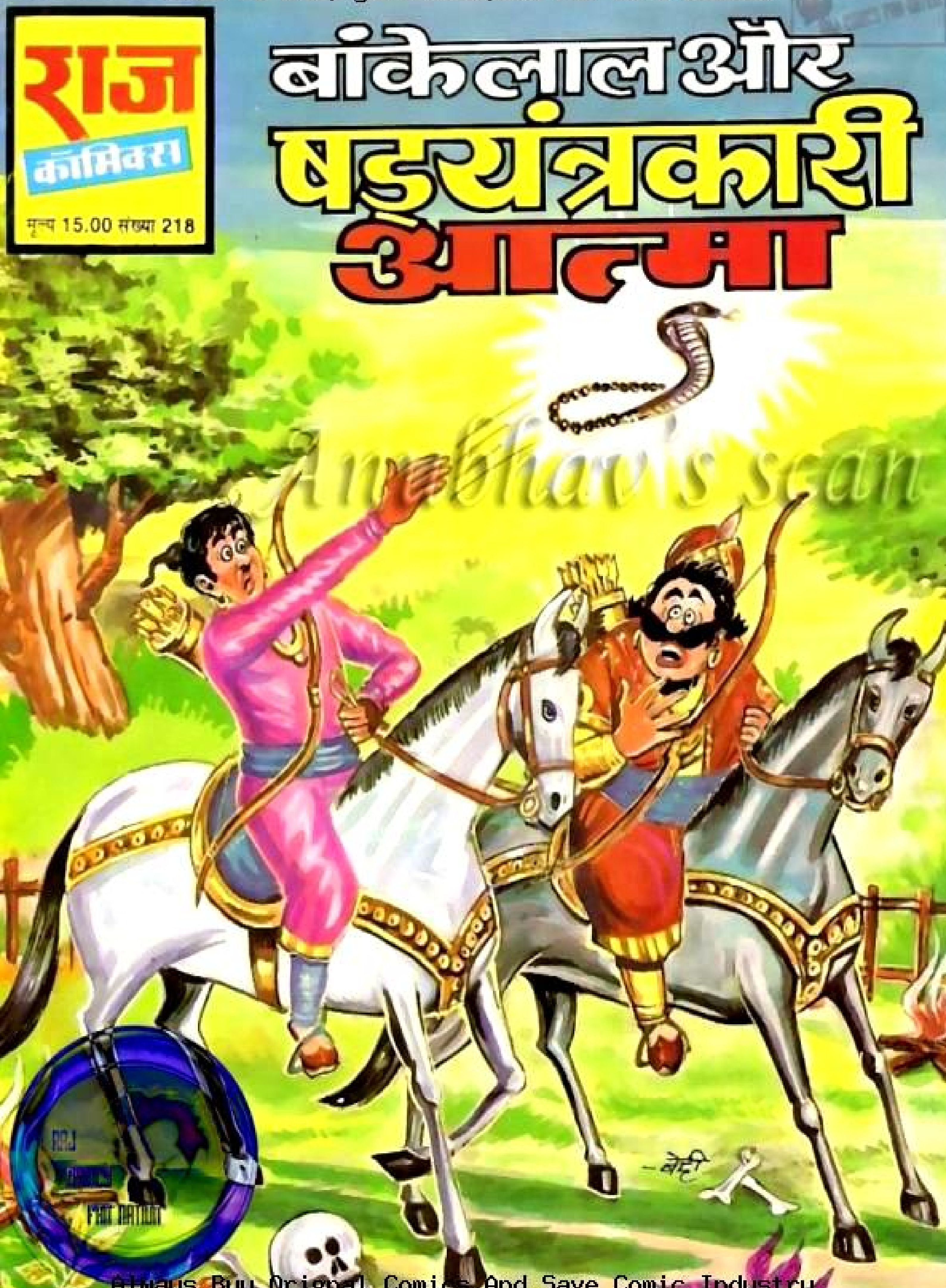

Always Buy Original Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

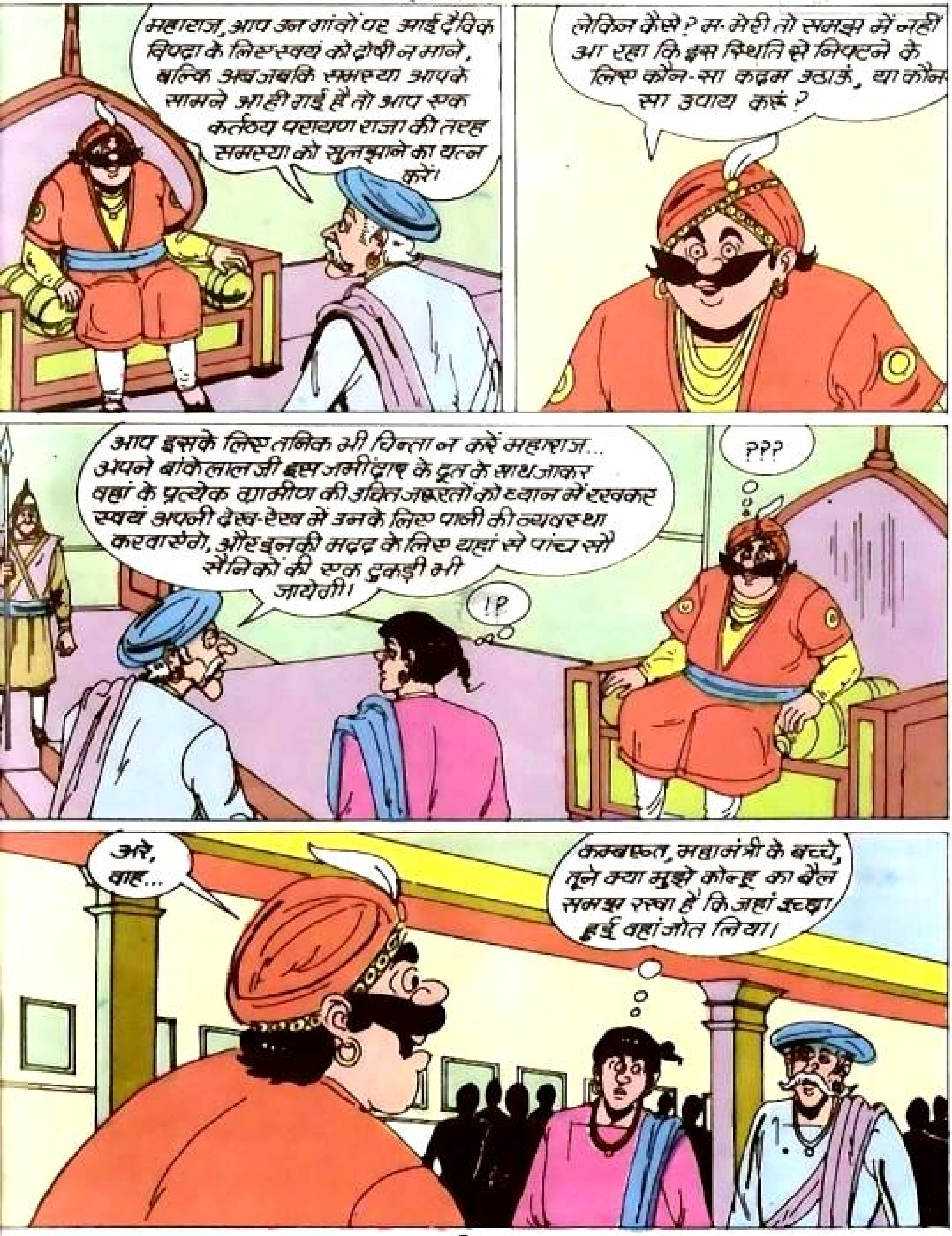

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

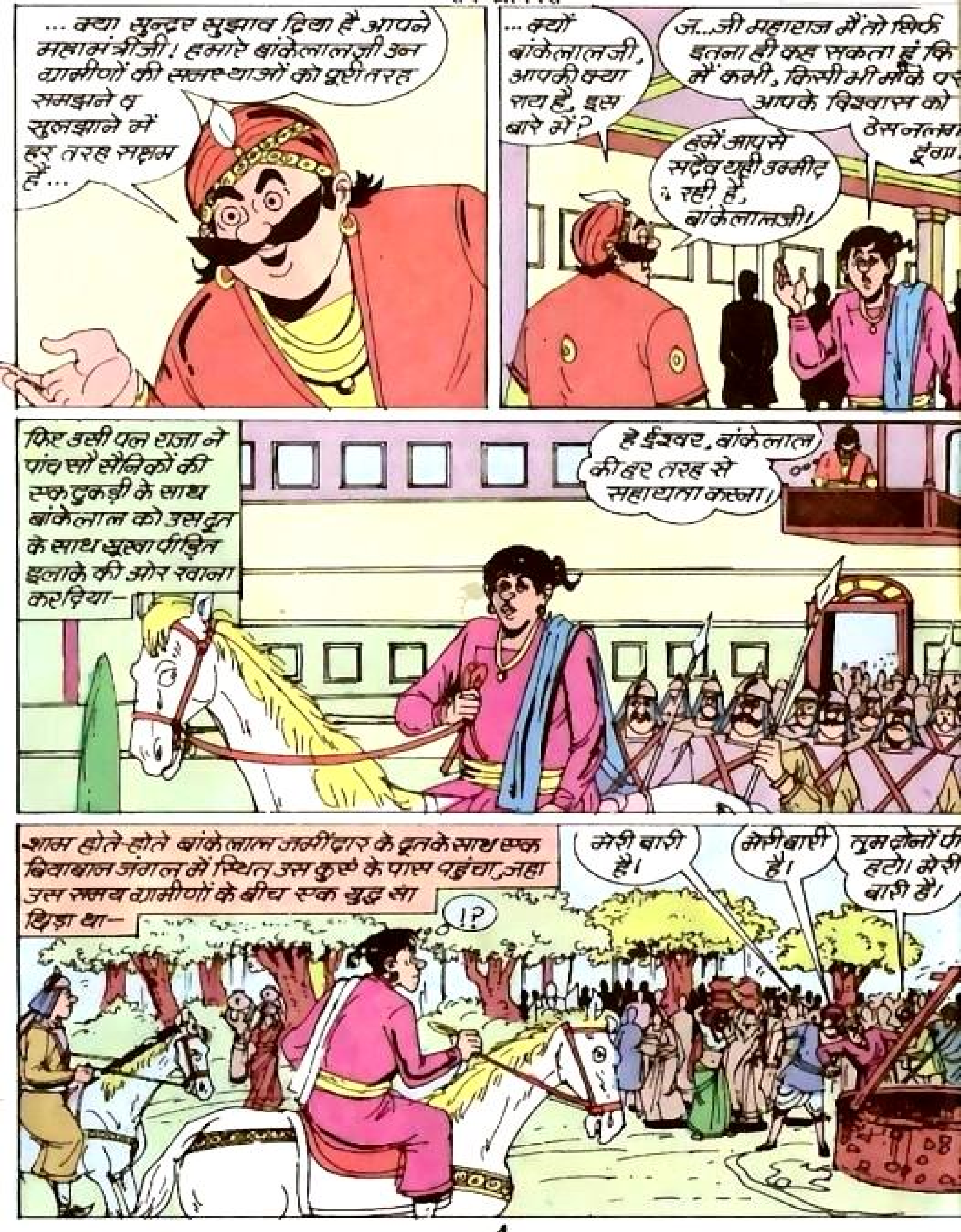

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

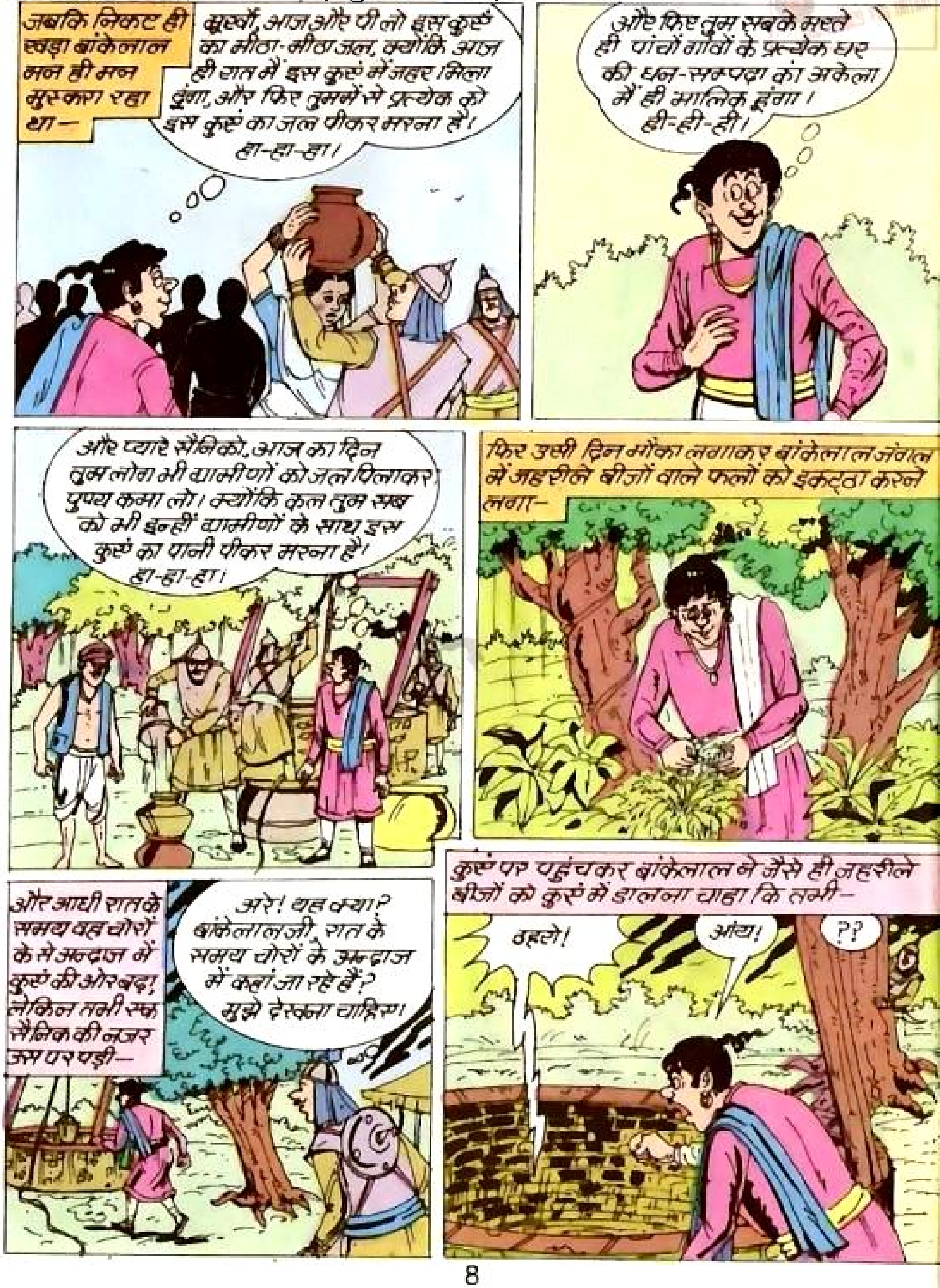

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.Pyaretoons.com For More Comics

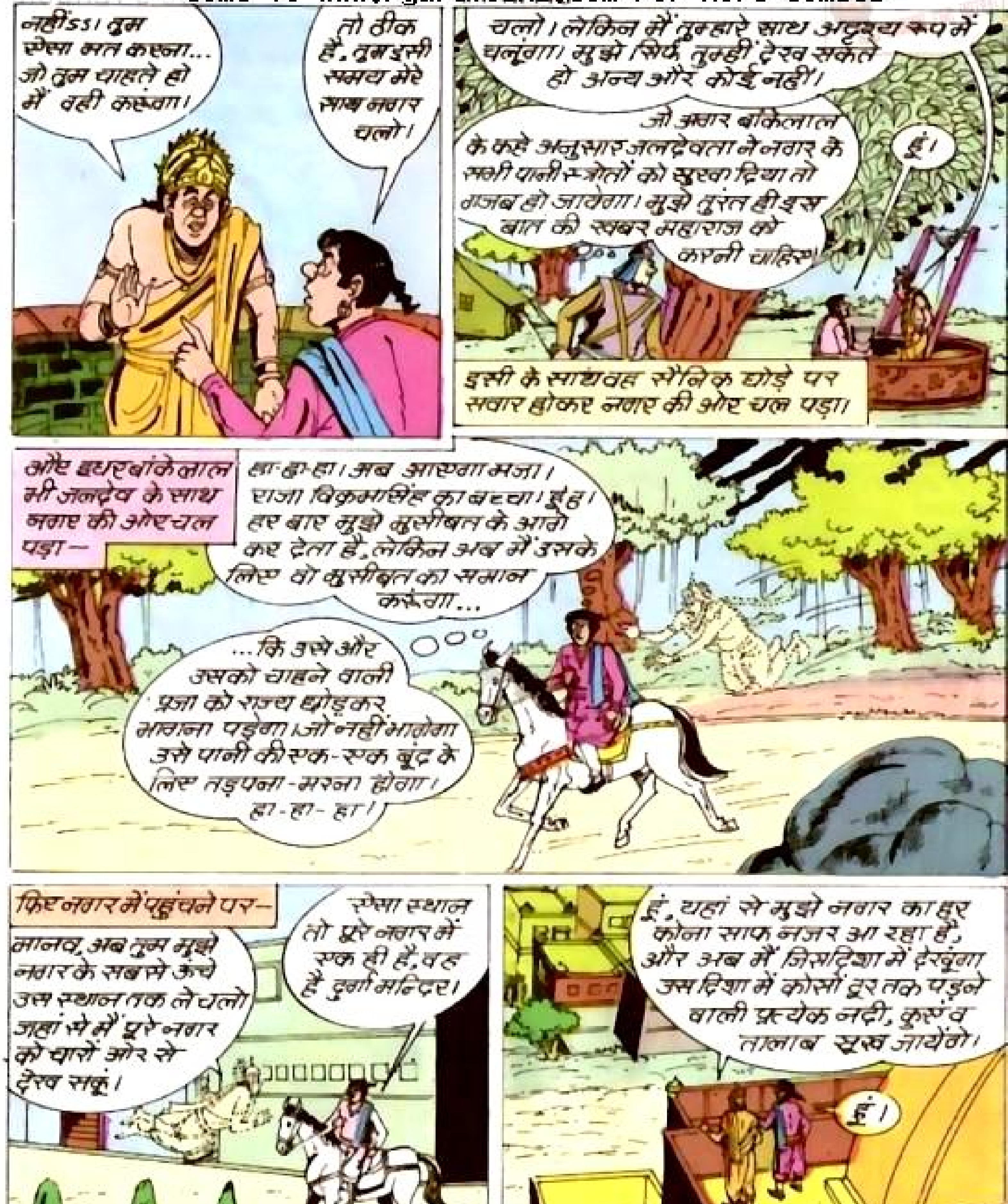

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareTоons.com For More Comics

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

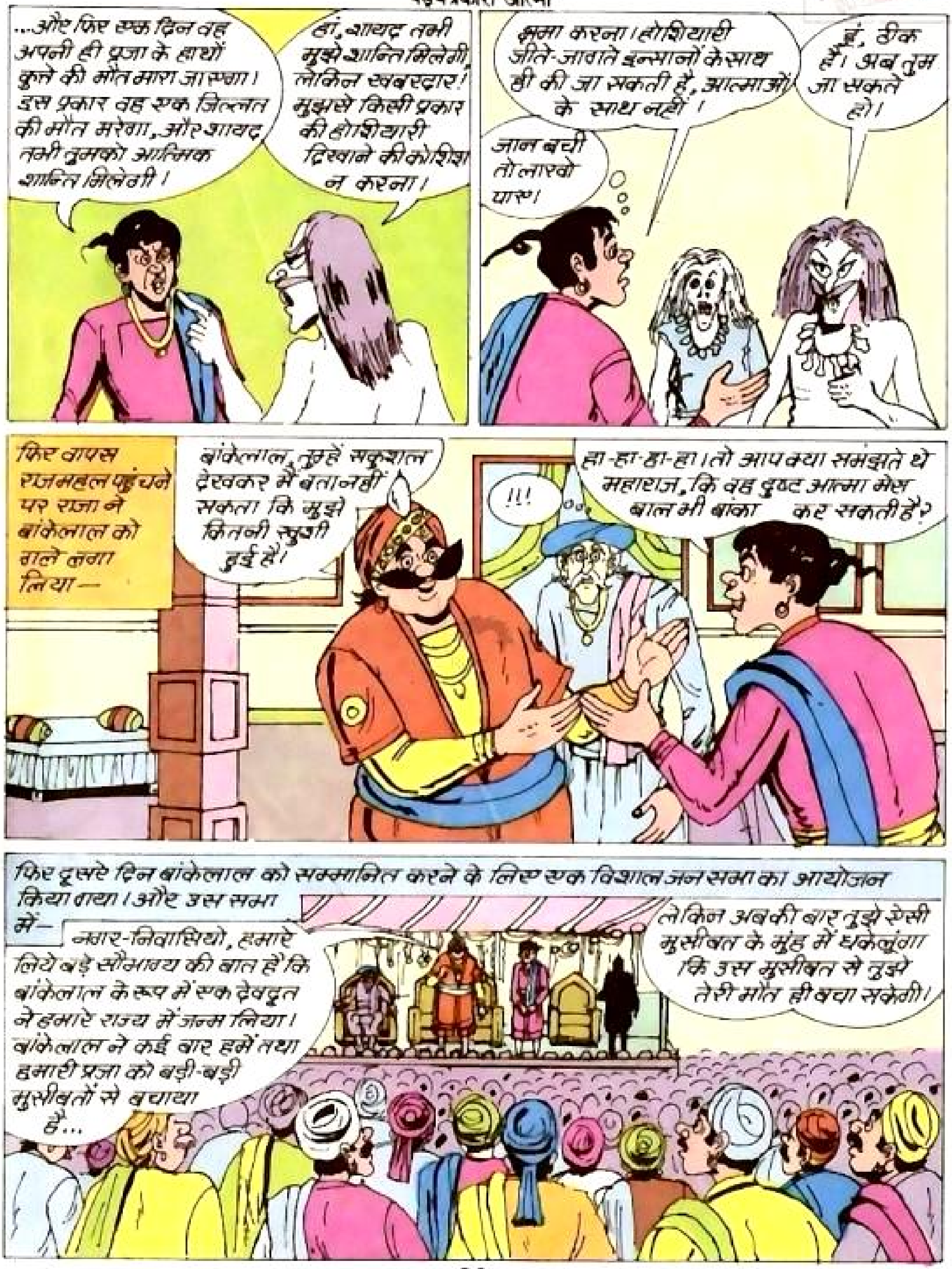

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

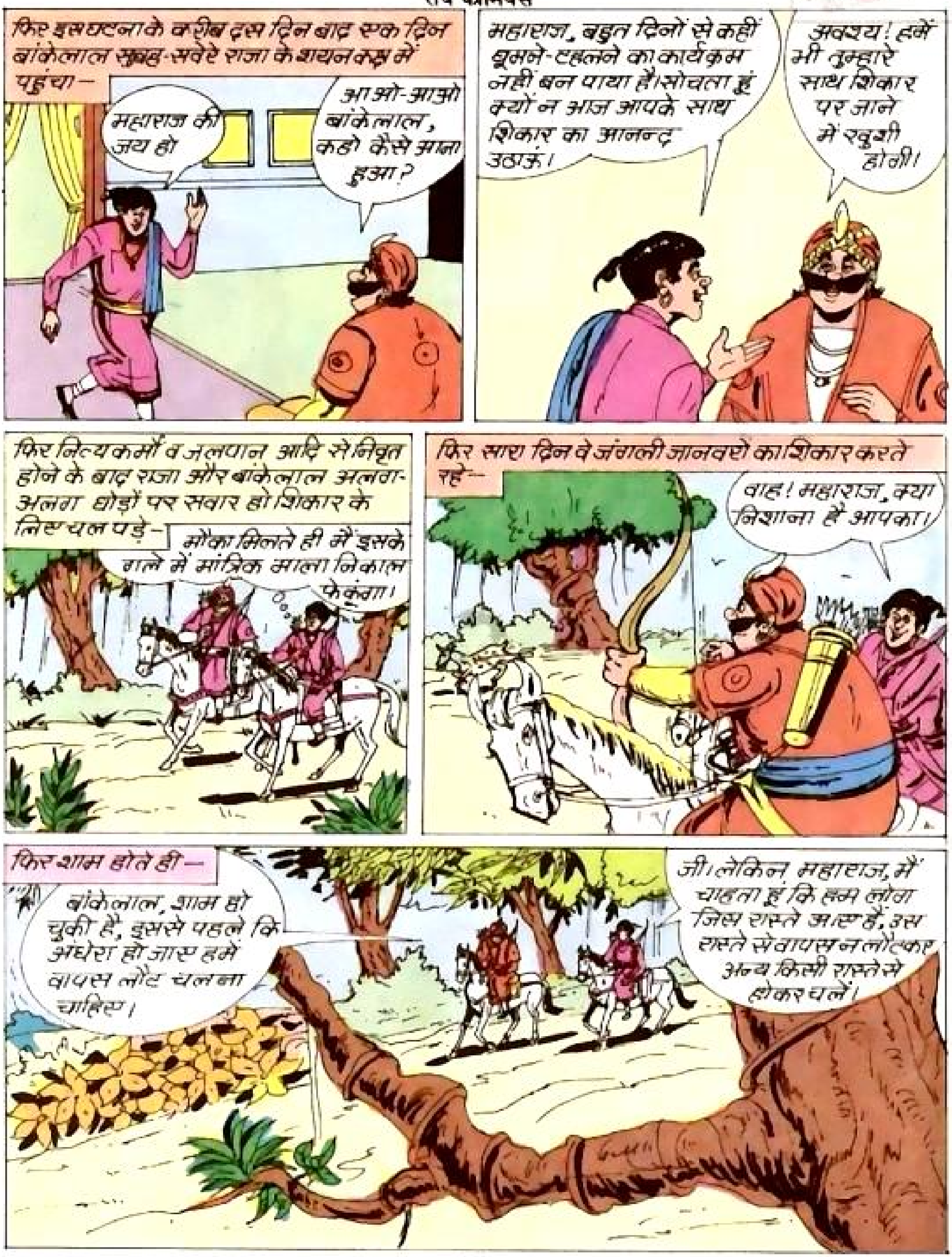

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyaraToons.com For More Comics

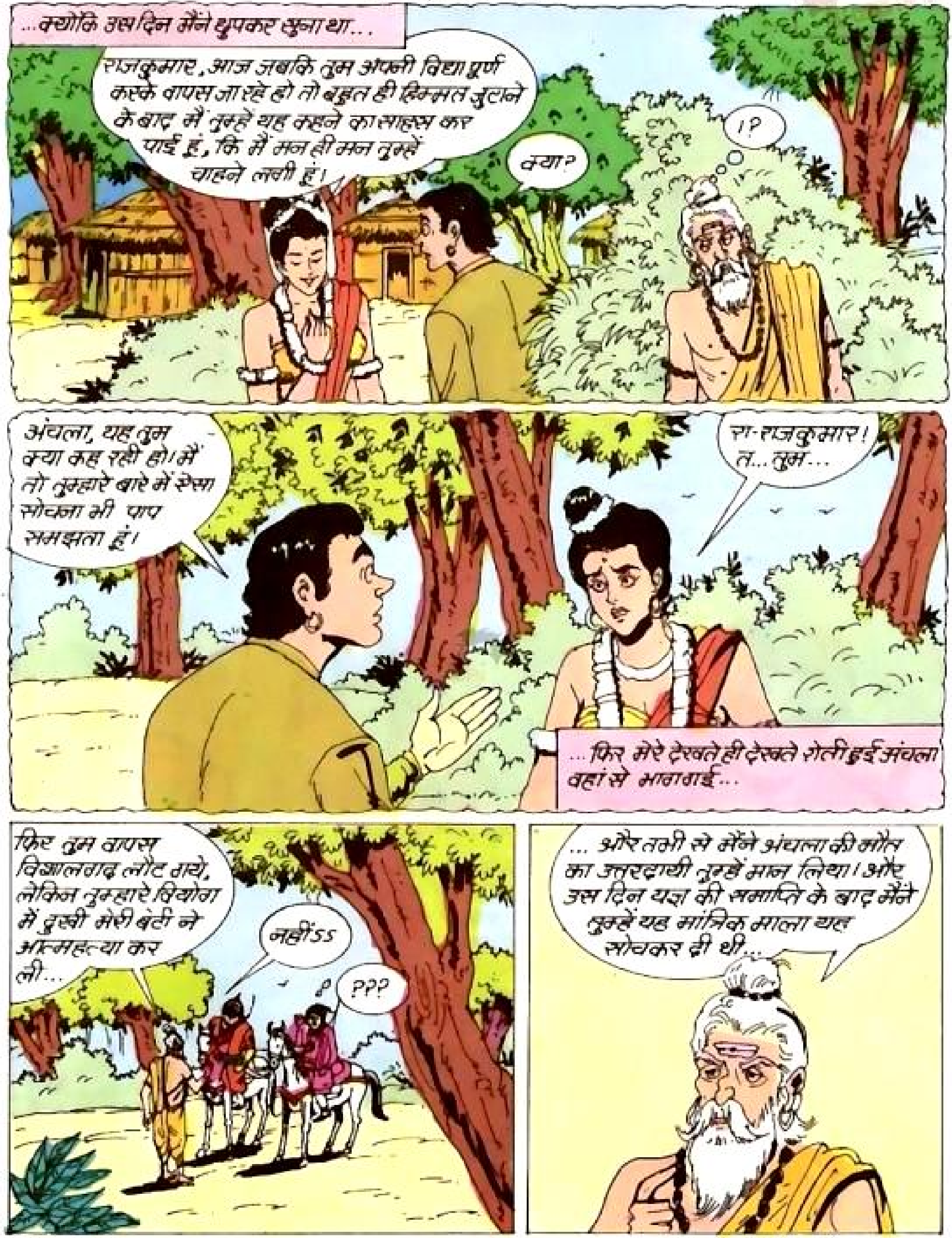

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

Come To www.PyareToons.com For More Comics

Always Buy Orignal Comics And Save Comic Industry

राज
कॉमिक्स

मूल्य 15.00 संख्या 89

बांकेलाल का कमाल

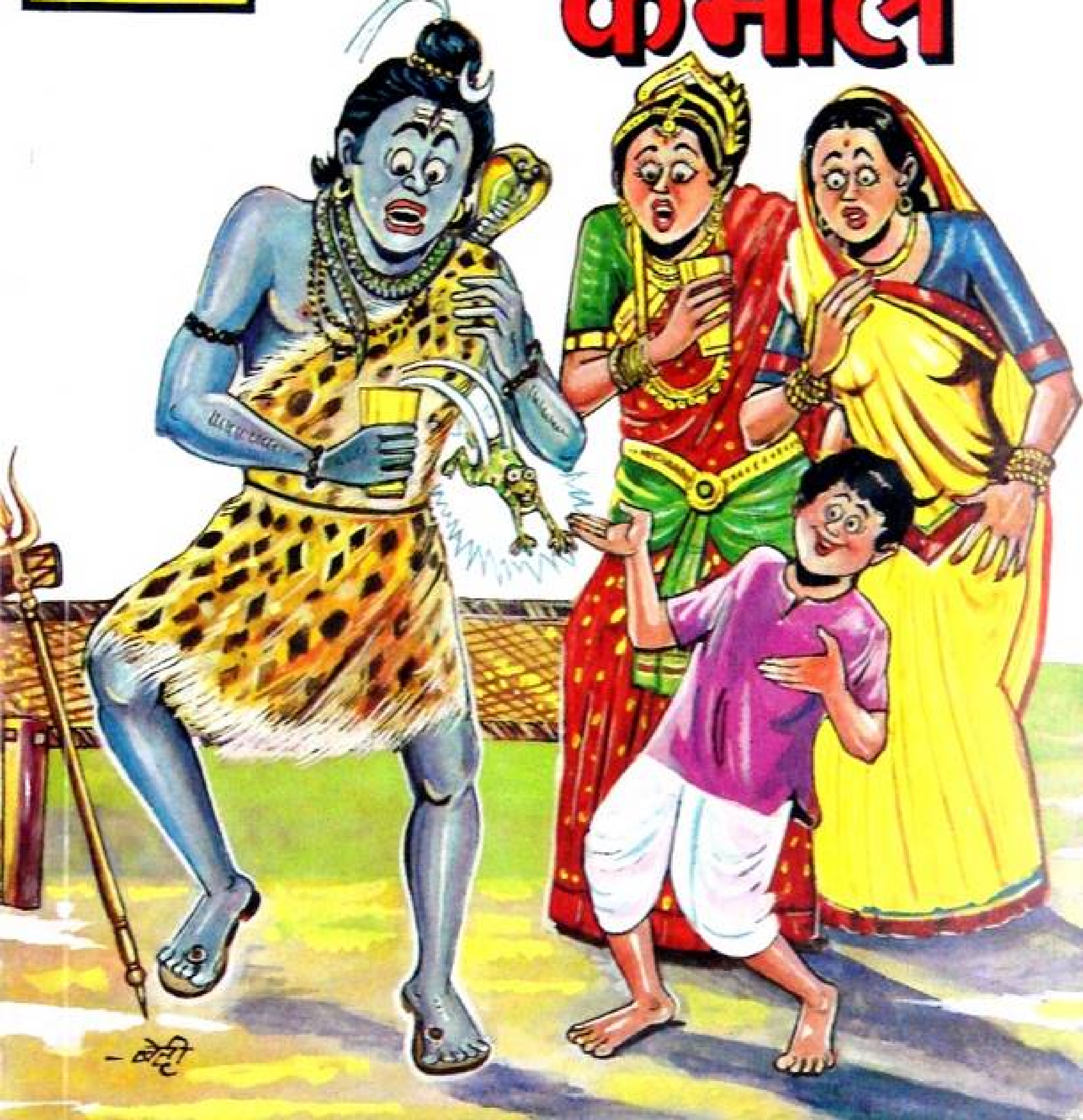

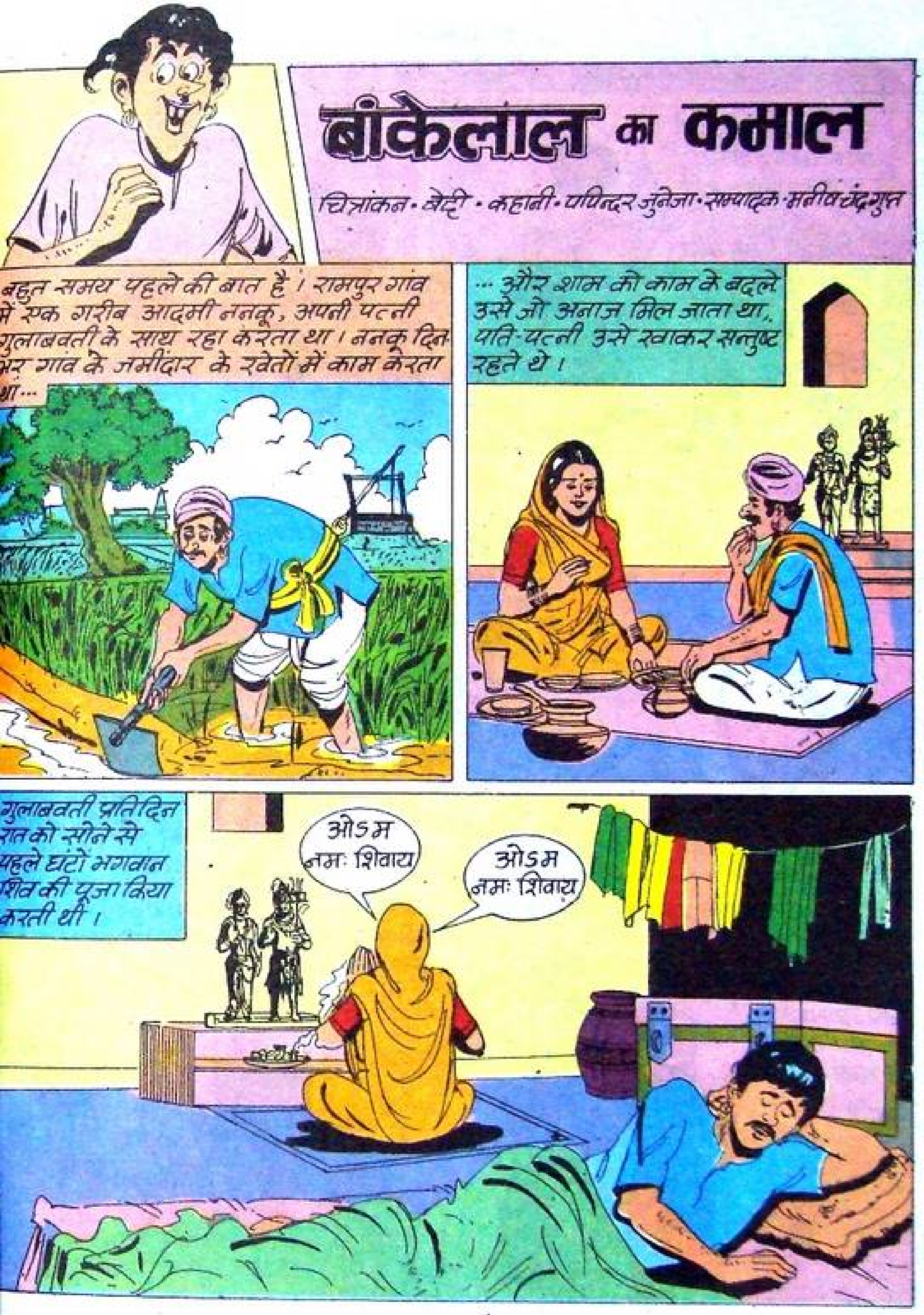
बांकेलाल का कमाल
चित्रांकन • बेदी • कहानी • पविन्दर जुनेजा • सम्पादक • मनीष चंद्रगुप्त
बहुत समय पहले की बात है। रामपुर गांव में एक गरीब आदमी ननकू, अपनी पत्नी गुलाबवती के साथ रहा करता था। ननकू दिन भर गांव के जमींदार के खेतों में काम करता था...
...और शाम को काम के बदले उसे जो अनाज मिल जाता था, पति-पत्नी उसे खाकर सन्तुष्ट रहते थे।
गुलाबवती प्रतिदिन रात को सोने से पहले घंटों भगवान शिव की पूजा किया करती थी।
ओऽम नमः शिवाय
ओऽम नमः शिवाय

उस समय भगवान शिव कैलास पर्वत पर पार्वती जी के साथ बैठे बातें कर रहे थे - जब...
ओऽम नमः शिवाय ओऽम नमः शिवाय
यह मेरी सच्ची पुजारिन की पुकार है !
स्वामी ! यह कौन है, जो नित्य इस समय आपको याद करती है ?
सच्ची पुजारिन ! यह आप कैसे कह सकते हैं कैलास-पति ?
मैं समझ गया प्रिये, कि तुम क्या चाहती हो...
...तुम स्वयं पृथ्वी पर चलकर मेरी पुजारिन से मिलना चाहती हो, हम तुम्हारी यह मनोकामना अवश्य पूरी करेंगे !
...और फिर उस रात गुलाबवतीने जैसे ही पूजा समाप्त कर आंखें खोलीं-
हम तुम्हारे भक्तिभाव से बेहद प्रसन्न हैं गुलाबवती ! मांगो क्या मांगती हो ?
अरे, भगवन आप मैया पार्वती के साथ !! मैं तो धन्य हो गई !
प्रभु ! आपके दर्शनकर मैंने सब कुछ पा लिया। फिर भी आपकी कृपा-दृष्टि मुझ पर है, तो आप मुझे एक पुत्र दे दें !
एवमस्तु!
और इसी के साथ भगवान शिव और पार्वती आलोप हो गए।

खुशी से झूमती गुलाबवती ने जब यह बात सोते हुए नन्कू को जगाकर बताई तो वह भी मारे खुशी के उछल पड़ा।
त...तुम सच कह रही हो भाग्यवान... म... मैं... बा...प बनूंगा!
जी!
वर्ष बीतने से पहले ही गुलाबवती ने एक पुत्र को जन्म दिया।
हे भगवान, आज मैं कितना खुश हूं! भागवान! मैंने तो इसका नाम भी सोच लिया है, बांकेलाल... क्यों कैसा रहेगा?
वाह! कितना सुन्दर नाम सोचा है आपने!
फिर बांकेलाल अपने पिता के प्यार एवं मां की ममता की छांव में बड़ा होने लगा।
और बांकेलाल जब सात-आठ वर्ष का हुआ तो, पिता के लाड़-प्यार ने उसे शरारती बना दिया।
हाय मैया!
खटाक!
उन्हीं दिनों भगवान शिव, पार्वती जी के साथ आकाश मार्ग से उधर से गुजर रहे थे कि —
नाथ! आपको याद है न, कुछ वर्ष पूर्व आपने इस गांव की एक स्त्री को पुत्र प्राप्ति हेतु वर दिया था।
प्रिये, मैं अपने भक्तों को कभी नहीं भूलता!

नाथ! मैं आपके आशीर्वाद का फल, यानि उस बालक को देखना चाहती हूं!
अवश्य प्रिये!
और जब भगवान शिव पार्वती के साथ गुलाबवती के घर पहुंचे, तो उस समय घर में बांकेलाल और गुलाबवती थे। नन्कू खेतों पर काम करने गया हुआ था।
भगवन्! आ... आप... आइए, भीतर चल कर बिराजिए!
नहीं गुलाबवती हम अब चलेंगे! हम तो सिर्फ इस बालक को देखने आए थे!
ऐसा कैसे हो सकता है मैया, आज तो आपको इस गरीब का आतिथ्य स्वीकार करना पड़ेगा!
बहुत इंकार करने के बाद, आखिर में उन्हें गुलाबवती की बात माननी ही पड़ी।
और उस समय गुलाबवती के घर में तो कुछ था नहीं, किन्तु वह पड़ोस के घर से थोड़ा दूध मांग लाई और उसे गरम कर दो गिलासों में डाला। और फिर—
उऽईऽऽ अभी तो दूध गर्म है! जब तक यह ठण्डा होता है, मैं प्रभु के दर्शन ही क्यों न करूं!
और जैसे ही गुलाबवती रसोई से बाहर निकली, खेलता हुआ बांकेलाल रसोई में पहुंचा—
अरे! ये मेंढक कहां से आया?
शरारती बांकेलाल ने मेंढक पकड़ा...
...और दूध से भरे दो गिलासों में से एक में डाल दिया
हूं, अब आएगा मजा!

थोड़ी ही देर बाद वह मेंढक वाला दूध से भरा गिलास शिव के हाथ में था तभी–
अरे ये क्या?
???
दूध में मेंढक!
ही-ही-ही
बांके को मुस्कराता देख, भगवान तुरन्त समझ गए कि यह शरारत इसी ने की है। अतः ...
... वह क्रोधित हो उठे।
उद्दंड बालक! तूने मुझ शुद्ध शाकाहारी को धोखे से मांस का अर्क पिलाने की कोशिश की, जा मैं तुझे शाप देता हूं, तू हमेशा निकम्मा और शरारती रहेगा!
गुलाबवती चीख पड़ी–
नहीं प्रभु-नहीं, बालक की शरारत का इतना कठोर दण्ड न दें- हां प्रभु, अपना शाप वापस ले लें अन्यथा मैं अपना सिर आपके चरणों में पटक-पटक कर जान दे दूंगी!
स्वामी-क्षमा कर दीजिए! अबोध बालक की शरारत का दण्ड अपनी भक्त को क्यों दे रहे हैं?
तब–
मेरा शाप मिट तो नहीं सकता, किन्तु इसका प्रभाव इस तरह कम हो सकता है कि ...
... यह लड़का जो भी शरारत करेगा, उससे इसे कोई हानि नहीं पहुंचेगी, बल्कि कुछ लाभ ही होगा। ऐसे ही शरारतों के लाभ से इसका जीवन यापन होगा!
क्या?
इसके बाद शिव तो पार्वती के साथ चले गए। लेकिन–

...उनके शाप के कारण बांकेलाल की शरारतें दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगीं। एक दिन की बात है, गांव का दूधिया रघु पेड़ के नीचे उदास बैठा था।
उफ़! अब क्या होगा! आज तो बच्चे भूखों मर जाएंगे। कम्बख्त बिल्ली ने ऐसा रास्ता काटा कि पत्थर की ठोकर लगने से सारी दही जमीन पर आ पड़ी।
तभी कहीं उधर से बांकेलाल निकला और उस एक सरसरी नजर रघु पर डाली। पर तभी उसक नजर ठीक उसके ऊपर डाल पर लटके मधु-मक्खियों के छत्ते पर पड़ी और—
बहुत दिन हो गए, मैंने किसी का कचौरी जैसा फूला मुंह नहीं देखा!
और अगले ही पल—
खटाक
बाप रे, मुसीबत!
मधु-मक्खियों से बचने के लिए रघु ने सिर की पगड़ी को खोलकर ओढ़ लिया। बांकेलाल पहले ही भाग खड़ा हुआ था।
टप! टप
थोड़ी देर बाद जब मधु-मक्खियों की हलचल खत हुई तो रघु उठा और जब उसने देखा कि—
अरे, मेरा मटका तो शहद से भर गया! वाह! ऊपर वाले किसी को छप्पर फाड़कर देता है और किसी को छत्ता फोड़कर।
रघु ने गांव के बनिए को शहद बेचकर घर के लिए सामान खरीदा। तभी उसकी नजर सामने से आते बांकेलाल पर पड़ी।
अरे! यह तो वही लड़का है, जिसकी वजह से आज मेरे बच्चे भूखे सोने से बच गए!
अरे, बेटा जरा सुनना!
बाप रे, भागो!
बांके भागा तो रघु भी उसके पीछे दौड़ पड़ा...

...और जल्दी ही उसे पकड़ लिया।
अब तो फंस गया बेटा बांके, आज तेरी खैर नहीं!
बेटा, आज तेरी ही वजह से मेरे घर का चूल्हा जलेगा। बेटा वो शहद पूरे दस सिक्कों में बिका...
...और तू ले यह एक सिक्का, और मौज कर...
!!!
एक सिक्का बांकेलाल को देकर रघु चलता बना, और–
...बांकेलाल–
बेईमान कहीं का! मेरी वजह से फायदा इसे दस का हुआ और देकर गया मुझे एक सिक्का कम से कम पांच तो देता।
बांकेलाल के पड़ोसी भालू व चालू, जो गांव में बेहद शरीफ समझे जाते थे, वास्तव में पक्के चोर थे। उन्होंने आजकल अपने व आस-पड़ोस के गांवों में जबरदस्त सफाई अभियान चलाया हुआ था। एक दिन सुबह मुंह अंधेरे ही गांव के लाला सुखीराम के घर झाड़ू फेर कर लौटे और फिर चोरी का माल अपने घर के पिछवाड़े दबाकर, उस स्थान की पहचान के लिए वहां पर एक आम का पौधा लगा दिया। और अंदर जाकर चैन की नींद सो गए। और सुबह जब बांकेलाल की निगाहें उस आम के पौधे पर पड़ी तो–
हूं, तो पड़ोसी आम खाएंगे, और हम ललचाएंगे–नहीं ऐसा कदापि नहीं हो सकता। मैं इस पौधे को जड़ से उखाड़ दूंगा!

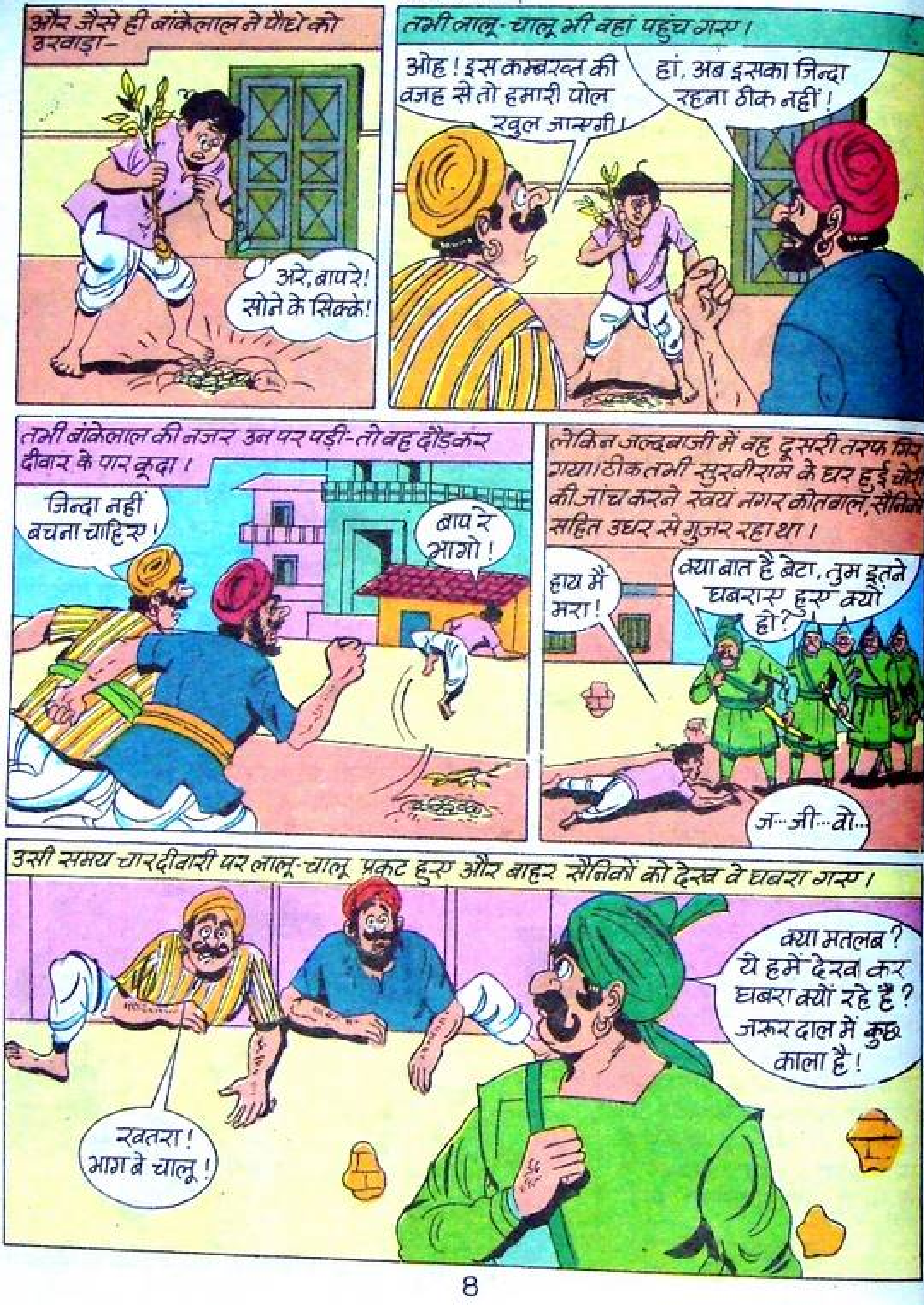
और जैसे ही बांकेलाल ने पौधे को उखाड़ा–
अरे, बाप रे! सोने के सिक्के!
तभी लालू-चालू भी वहां पहुंच गए।
ओह! इस कम्बख्त की वजह से तो हमारी पोल खुल जाएगी।
हां, अब इसका जिन्दा रहना ठीक नहीं!
तभी बांकेलाल की नजर उन पर पड़ी-तो वह दौड़कर दीवार के पार कूदा।
जिन्दा नहीं बचना चाहिए!
बाप रे भागो!
लेकिन जल्दबाजी में वह दूसरी तरफ गिर गया। ठीक तभी सुरवीराम के घर हुई चोरी की जांच करने स्वयं नगर कोतवाल, सैनिकों सहित उधर से गुजर रहा था।
हाय मैं मरा!
क्या बात है बेटा, तुम इतने घबराए हुए क्यों हो?
ज...जी...वो...
उसी समय चारदीवारी पर लालू-चालू प्रकट हुए और बाहर सैनिकों को देख वे घबरा गए।
क्या मतलब? ये हमें देख कर घबरा क्यों रहे हैं? जरूर दाल में कुछ काला है!
खतरा! भाग बे चालू!

और फिर–
सैनिको! पकड़ो उन दोनों को!
सैनिक जल्दी ही लालू-चालू को पकड़ लाए।
अब जल्दी ही अपनी राम कहानी, अपनी ज़ुबानी बता डालो, वरना...
हमें माफ कर दीजिए!
...फिर लालू-चालू ने अपने अपराध स्वीकार कर लिए...
...और साथ ही अब तक की सारी चोरियों का माल भी उनके हवाले कर दिया तब–
अरे, बाप रे! ये तो पुराने घाघ हैं!
और तो नहीं है कुछ?
नहीं हुजूर!
दूसरे दिन नगर कोतवाल के कहने पर सभा का आयोजन किया गया।
भाइयो! आपके गांव के बांकेलाल ने बहुत पुराने चोरों को पकड़वा कर अनेक चोरियों का माल दिलवाया है। ऐसे रंगे चोरों को पकड़ना बहुत मुश्किल था। मैं चोरी के माल में से दसवां भाग बांकेलाल को इनाम में देता हूं!
वाह! भई वाह! बांकेलाल ने तो कमाल कर दिया!
ननकुआ का लड़का तो कमाल का निकला!

और इस तरह शरारतें करता और उसके लाभ उठाता हुआ बांकेलाल बड़ा हो गया। लेकिन बांकेलाल का दुर्भाग्य था कि नन्कू व गुलाबवती पिछले ही वर्ष उसे अकेला छोड़कर स्वर्ग सिधार गए थे। दूर-दूर के गांवों में भी उसकी प्रसिद्धि फैल चुकी थी।
बारिश का मौसम था। बांकेलाल अपने घर के आंगन में चारपाई पर बैठा कोई नई-शरारत करने की योजना बना रहा था।
...बेटा बांके! अबकी बार कोई ऐसी तरकीब सोच, जिससे हर बार की तरह तेरी योजना की टांग न टूट सके...
...मैं चाहता कुछ हूं और होता कुछ है!
तभी वह कुछ सोचते-सोचते चुटकी बजाकर उछल पड़ा।
वो मारा पापड़ वाले को!
और फिर तुरन्त ही अपने दिमाग में आई नई योजना को कार्यरूप देने के लिए वह गांव के मुखिया के घर की ओर चल दिया।
आह! अब मैं जल्दी ही माला-माल हो जाऊंगा!
हर बार एक दो आदमी की खाट खड़ी करने की सोचता हूं, तो उसकी खाट खड़ी होने की बजाए उड़न खटोला बन जाती है।...
...पर इस बार पूरे गांव का बेड़ागर्क करके मानूंगा!

मुखिया जी घर के बाहर ही चौपाल पर कुछ लोगों के साथ बैठे, किसी मामले पर विचार कर रहे थे। तभी बांके-लाल उनके सामने कुछ परेशान सा हुलिया बनाए पहुंचा।
राम--राम मुखिया जी!
राम-राम बांकेलाल! आओ बैठो! कहो, कैसे आना हुआ? सब खैरियत तो है?
मुखिया जी, मेरी तो खैर है प--पर--पर...
क्या बात है? बांकेलाल तुम हिचकिचा क्यों रहे हो?
बात यह है मुखिया जी, कि--आज रात तक अपने गांव में एक भयानक मुसीबत आने वाली है!
!?
बांकेलाल की बात सुनकर वहां पर मौजूद सारे लोग हैरान हो उठे।
कैसी मुसीबत?
तुम कहना क्या चाहते हो बांकेलाल?
तबाही--विनाश --बर्बादी--
बांकेलाल के मुंह से तबाही--विनाश--बर्बादी जैसे शब्द सुनकर गांव वालों के मुंह से चीख निकल पड़ी।
आखिर बात क्या है? तुम किस तबाही या बर्बादी की ओर संकेत कर रहे हो बांकेलाल?

मुखिया जी, बात दरअसल यह है कि कल रात शंकर भगवान ने मुझे सपने में दर्शन दिए और कहा कि आज रात तक इस गांव...
...में भयानक बाढ़ आने वाली है, जिससे सारा गांव पानी में डूब जाएगा!
!!!
???
कोई उपाय भी बताया उन्होंने इस मुसीबत से बचने का?
जी हां!
भगवान शंकर ने मुझसे सपने में कहा कि सारे गांव वाले अपने-अपने घरों को छोड़कर ऊंचे टीलों पर पहुंच जाएं। इसी में सबका कल्याण है।
ओह, ठीक है बांकेलाल! तुम्हारा बहुत-बहुत धन्यवाद! तुमने समय रहते यह खबर...
...देकर बहुत बड़े पुण्य का काम किया है। मैं अभी यह खबर गांव...
...मैं पहुंचाए देता हूं। और आप सब लोग तो आने वाले समय की गम्भीरता से परिचित हो ही चुके हैं! अतः आप लोग अपने घरों में जाकर बचाव की तैयारी करें!
ठीक है मुखिया जी! चलो भाइयो!

और इसके साथ ही बांकेलाल अपनी योजना के सफल होने की आशा में मन ही मन खुश होता हुआ अपने घर की ओर चल दिया।
वाह! क्या शक्तिबाण चलाया है!
और घर पहुंचकर
हा... हा... हा... हो... हो... हो... खूब मूर्ख बनाया मैंने मुखिया को। अब आएगा मजा। सारे गांव वाले अपने-अपने घरों को छोड़कर गांव से बाहर ऊंचे टीलों पर चले जाएंगे। और मैं उनके घरों में घुसकर...
... अच्छा खासा माल बटोर लाऊंगा। और जब कल मुखिया जी मुझसे कहेंगे बाढ़ नहीं आई तो कह दूंगा मैं क्या करूं, जैसा मुझे सपना आया था, मैंने आपको बता दिया था। हा... हा... हा...
और यही सब सोचते हुए वह सो गया।
उधर गांव के भोले-भाले लोग मुखिया जी द्वारा भेजे गए संदेश को सुनकर गांव छोड़ने की तैयारी कर ही रहे थे कि तभी आकाश में काले-काले बादल गरजने लगे।
ओह! इतना खराब मौसम!
अरे भोला, मुखिया जी ने सच ही कहलवाया है। ऐसी भीषण बरसात मैंने पहली बार देखी है!
मुन्ने की मां जल्दी करो! बस अपने मतलब का थोड़ा बहुत सामान ले लो और निकल चलो ऊंचे टीले की ओर!
आप मुन्ने को पकड़िए मैं सामान सम्भालती हूं!

और कुछ ही देर बाद–
भागो जल्दी करो!
हे भगवान रक्षा करो!
कृपा भोलेनाथ
कुछ देर बाद जब पूरा गांव निर्जन हो चुका था बांकेलाल अपने घर से निकल कर बारिश में भीगता हुआ गांव के महाजन के घर की ओर चल दिया।
अरे वाह! यह तो सोने पर सुहागा हो गया। गांव वाले इस बारिश को देख कर मेरी बात को सच समझ रहे होंगे। और मुझे भी ऐसे सुहावने मौसम में लोगों का घर साफ करने में अलग ही मजा आएगा।
...सबसे पहले मैं गांव के महाजन लाला हरदयाल के घर में घुस कर उसका माल समेटूंगा, क्योंकि उसके यहां काफी मोटा माल मिलने की उम्मीद है।
इधर गांव वाले टीले पर पहुंचे और बरसात से बचने की व्यवस्था करने लगे।
तभी एक जगह तंबू के लिए बांस गाड़ रहे तीन-चार व्यक्तियों के पास एक औरत घबराई हुई आई।
रामू के बप्पा... व... व... वो...
क्या बात है कमला? तुम कुछ परेशान सी नजर आ रही हो!

अनर्थ हो गया स्वामी ! मैं बर्बाद हो गई !... मैं... मैं...
ब... बात क्या है कमला, तुम बताती क्यों नहीं ?
रामू के गांव में ही रह जाने की खबर कुछ ही देर में पूरे टीले पर फैल गई। तभी टीले के सब स्त्री-पुरुष हरिया और कमला की ओर दौड़ पड़े।
स्वामी ! अपना रामू लकड़ियां लेने जंगल में गया था। गांव से भागने की जल्दी में मुझे उसका ध्यान ही नहीं आया !... हाय... मेरा रामू... हू... हू... हू...
हे भगवान अब क्या होगा ?
स्वामी ! आप जल्दी से गांव में जाकर मेरे लाल को ढूंढ लाइए।
हाय ! मेरा रामू... हू... हू... हू
हे भगवान, रक्षा करना कमला के लड़के की ! बेचारी का एक ही तो लड़का था !
प्रभु ! कमला के बेटे को बचा लो !
तभी गांव के मुखिया जी भी वहां पहुंच गए।
क्या बात है... यहा भीड़ क्यों लगा रखी है?
मुखिया जी, हरिया का लड़का रामू गांव में ही रह गया है !
क्या?

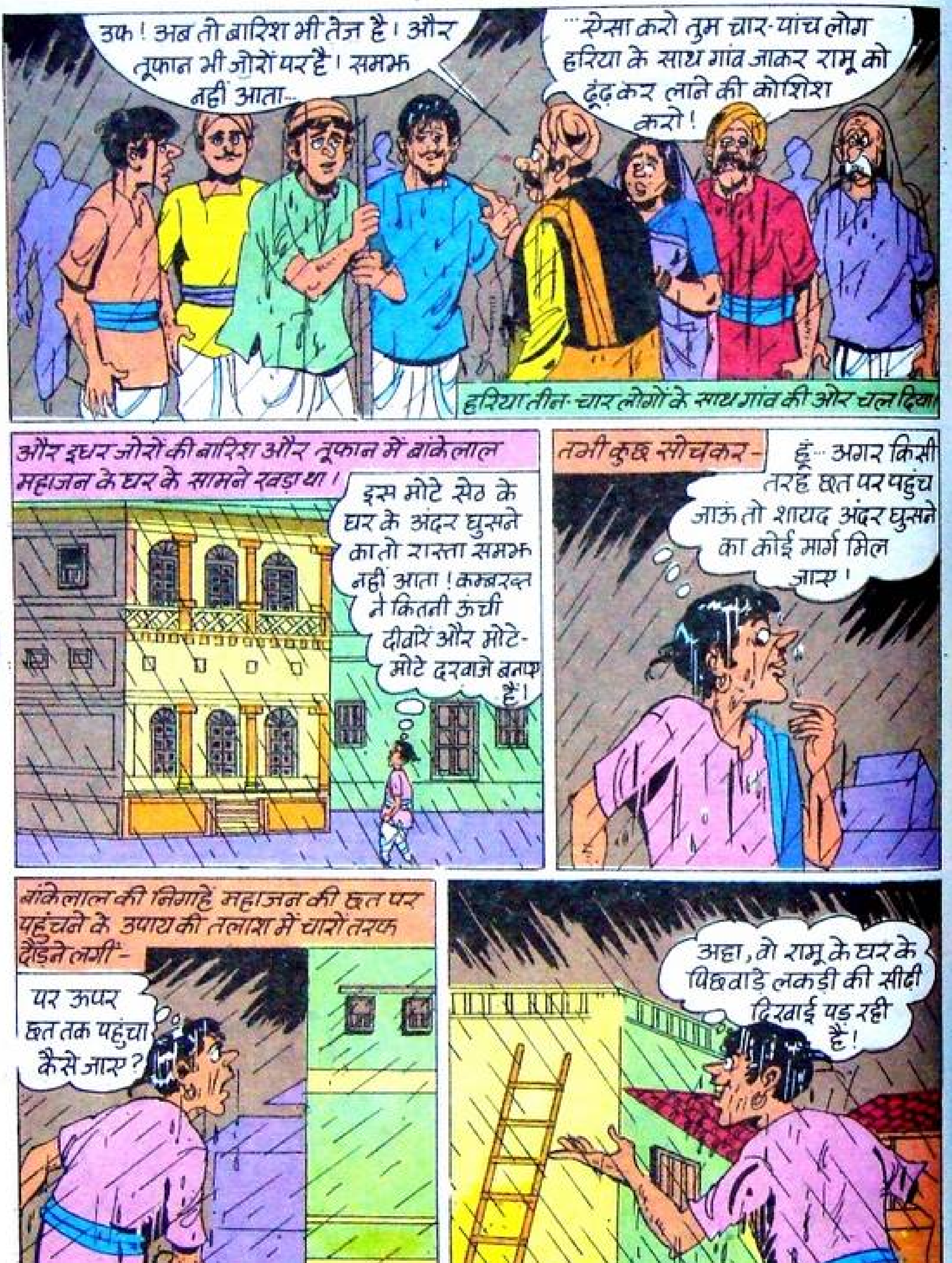
उफ! अब तो बारिश भी तेज है। और तूफान भी जोरों पर है। समझ नहीं आता...
...ऐसा करो तुम चार-पांच लोग हरिया के साथ गांव जाकर रामू को ढूंढ़ कर लाने की कोशिश करो!
हरिया तीन-चार लोगों के साथ गांव की ओर चल दिया।
और इधर जोरों की बारिश और तूफान में बांकेलाल महाजन के घर के सामने खड़ा था।
इस मोटे सेठ के घर के अंदर घुसने का तो रास्ता समझ नहीं आता! कम्बख्त ने कितनी ऊंची दीवारें और मोटे-मोटे दरवाजे बनाए हैं!
तभी कुछ सोचकर-
हूं... अगर किसी तरह छत पर पहुंच जाऊं तो शायद अंदर घुसने का कोई मार्ग मिल जाए!
बांकेलाल की निगाहें महाजन की छत पर पहुंचने के उपाय की तलाश में चारों तरफ दौड़ने लगीं-
पर ऊपर छत तक पहुंचा कैसे जाए?
अहा, वो रामू के घर के पिछवाड़े लकड़ी की सीढ़ी दिखाई पड़ रही है!

और अगले ही पल बांकेलाल रामू के घर के पिछवाड़े पड़ी लकड़ी की सीढ़ी को उठा लाया।
और फिर सीढ़ी महाजन के मकान की दीवार पर लगा कर उस पर चढ़ने लगा।
उधर रामपुर गांव के पास बहने वाली नदी में बाढ़ का पानी खतरे के निशान से ऊपर पहुंच गया।
अब महाजन के घर के आंगन में उतरने के लिए सीढ़ी लाकर यहां लगानी पड़ेगी।
और तभी भयंकर बाढ़ से नदी का बांध भयानक आवाज करता हुआ टूट पड़ा।
धड़ाम
धड़ाम

उस नदी का पानी पूरी तेजी के साथ रामपुर गांव की ओर बढ़ने लगा।
बांकेलाल अभी महाजन की छत पर खड़ा सीढ़ी ऊपर खींच ही रहा था कि पानी का रेला उसकी तरफ तेजी से बढ़ा ...
...और फिर उसके पैर छत से उखड़ गए –
हाय मैं मरा!
उधर हरिया और उसके साथी जब रामू की तलाश में गांव में जाने के लिए टीले के किनारे पर पहुंचे तो गांव का दृश्य देखकर चौंक पड़े।
हाय! यह तो पूरा का पूरा गांव ही डूब गया।
हा, और अब तो पानी टीले की ऊंचाइयों को छूने लगा है।
भगवान का शुक्र है! हम लोग समय रहते ही सुरक्षित ऊंचे टीले पर पहुंच गए।

...हां! वरना शायद हममें से एक भी जीवित नहीं बचता। सबके सब इस बाढ़ में डूब मरते।
मैं कहता हूं भला हो बांकेलाल का, जिसने समय रहते खतरे की सूचना देकर पूरे गांव को मरने से बचा लिया।
...तभी हरिया को लगा कि, जैसे उसका रामू पानी में डूबता हुआ उसे पुकार रहा है। और...
न... नहीं, मेरे लाल! तू चिन्ता मत कर मैं आ रहा हूं।
बचाओ... बचाओ... बापू मुझे बचा लो!
और अचानक हरिया अर्द्धविक्षिप्त सा पानी की ओर दौड़ पड़ा।
मेरे बेटे, मेरे रहते तुझे कुछ नहीं हो सकता। मैं... मैं... आ रहा हूं!
अभी हरिया पानी में छलांग लगाने ही वाला था कि उसके साथियों ने उसे पकड़ लिया।
ये क्या पागलपन है हरिया?
छोड़ दो मुझे! व... वह देखो, मुझे मेरा बेटा बुला रहा है।

होश में आओ हरिया! देखो, हम तुम्हारे साथी हैं।
होश में कैसे आऊं? हाय मेरा लाल! बू-हू-हू
हरिया रोता-पछाड़े खाता वहीं बेहोश हो गया। और अपने साथियों की बांहों में झूल गया।
ओह! लगता है बेटे के गम में होश खो बैठा है।
उधर बांकेलाल पानी के बहाव के साथ-साथ डूबता-उतरता हुआ एक तरफ बहा चला जा रहा था।
बुड़क--बुड़क--
जब वे तीनों बेहोश हरिया को लेकर ऊंचे टीले पर पहुंचे, अपने पति की बेहोशी और पूरे गांव के डूब जाने की खबर सुन और अपने बेटे रामू के जीवित रहने की रही-सही आस खोकर कमला जोर-जोर से रोने लगी।

बचाओ... बचाओ...
तभी बांकेलाल की नजर अपने साथ-साथ बहते लकड़ी के गट्ठर पर पड़ी। जिस पर हरिया का लड़का रामू पानी के बहाव के साथ-साथ बह रहा था।
अगर मैं इस लड़के को गट्ठर से धकेल कर...
...यह गट्ठर हथिया लूं तो शायद बच जाऊं!
और मन में इस विचार के आते ही बांकेलाल ने उस लड़के को गट्ठर से उठा कर फेंकने की कोशिश की...
...तो लकड़ी का गट्ठर पानी के तेज बहाव में दूर बह गया।
अरे! यह क्या?
अब क्या होगा?

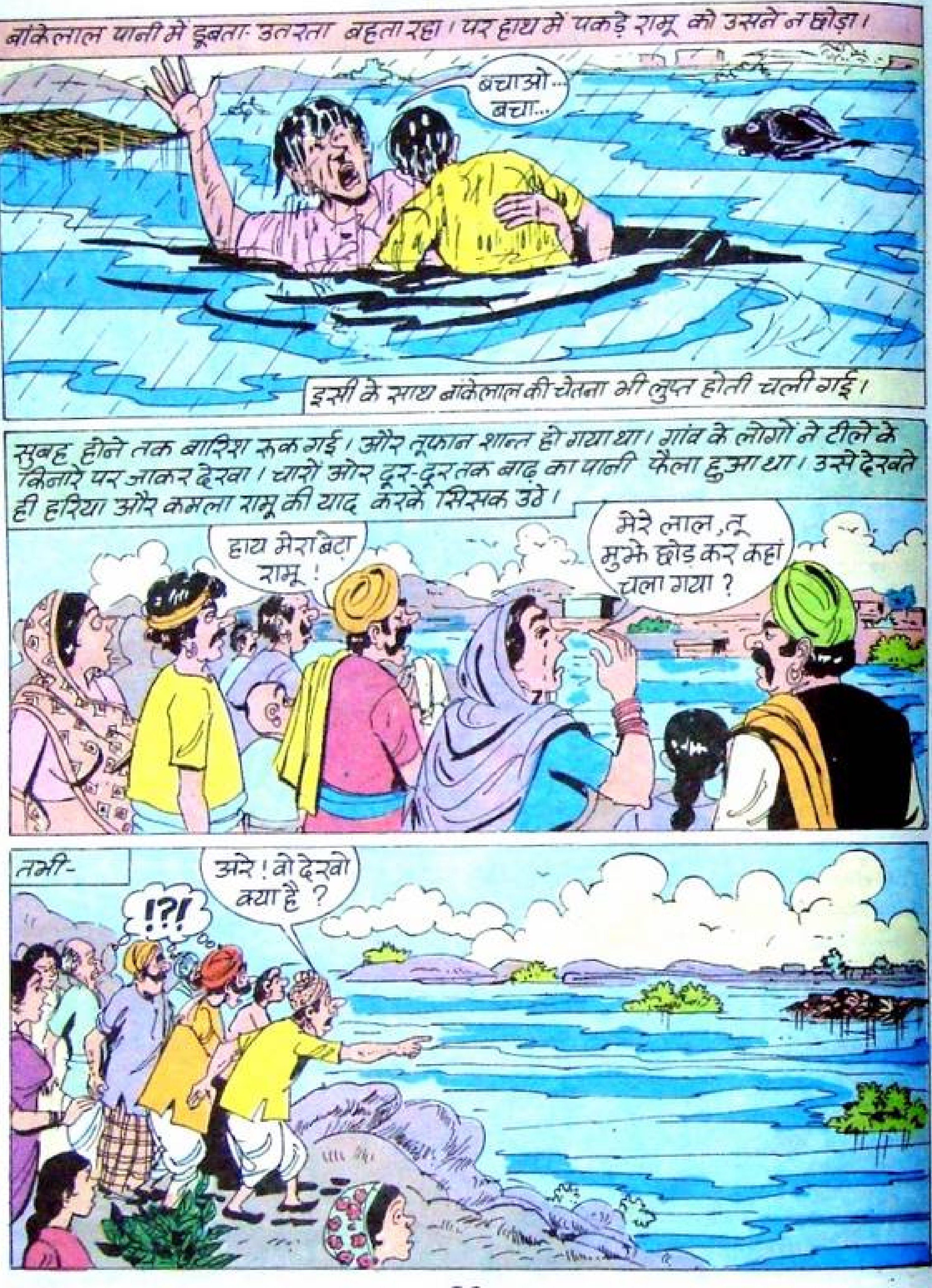
बांकेलाल पानी में डूबता-उतरता बहता रहा। पर हाथ में पकड़े रामू को उसने न छोड़ा।
बचाओ... बचा...
इसी के साथ बांकेलाल की चेतना भी लुप्त होती चली गई।
सुबह होने तक बारिश रुक गई। और तूफान शान्त हो गया था। गांव के लोगों ने टीले के किनारे पर जाकर देखा। चारों ओर दूर-दूर तक बाढ़ का पानी फैला हुआ था। उसे देखते ही हरिया और कमला रामू की याद करके सिसक उठे।
हाय मेरा बेटा रामू!
मेरे लाल, तू मुझे छोड़ कर कहां चला गया?
तभी-
!?!
अरे! वो देखो क्या है?

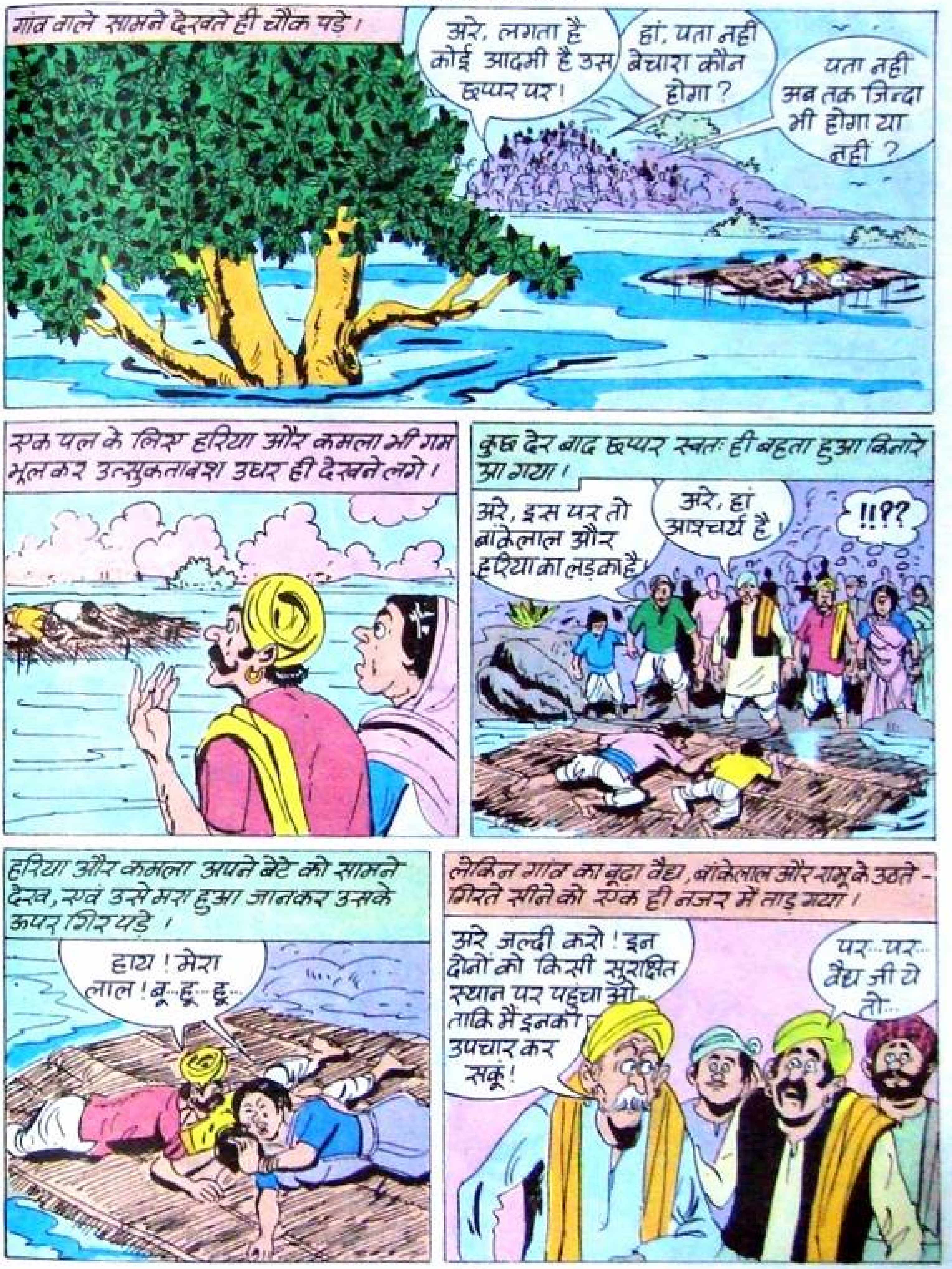
गांव वाले सामने देखते ही चौंक पड़े।
अरे, लगता है कोई आदमी है उस छप्पर पर।
हां, पता नहीं बेचारा कौन होगा?
पता नहीं अब तक जिन्दा भी होगा या नहीं?
एक पल के लिए हरिया और कमला भी गम भूल कर उत्सुकतावश उधर ही देखने लगे।
कुछ देर बाद छप्पर स्वतः ही बहता हुआ किनारे आ गया।
अरे, इस पर तो बांकेलाल और हरिया का लड़का है।
अरे, हां आश्चर्य है।
!!??
हरिया और कमला अपने बेटे को सामने देख, एवं उसे मरा हुआ जानकर उसके ऊपर गिर पड़े।
हाय! मेरा लाल! बू..हू..हू...
लेकिन गांव का बूढ़ा वैद्य, बांकेलाल और रामू के उठते-गिरते सीने को एक ही नजर में ताड़ गया।
अरे जल्दी करो! इन दोनों को किसी सुरक्षित स्थान पर पहुंचाओ... ताकि मैं इनका उपचार कर सकूं!
पर...पर... वैद्य जी ये तो...

नहीं, ये दोनों अभी जिन्दा हैं। देख नहीं रहे, इनकी सांसें चल रही हैं।
ओह! शुक्र है भगवान का!
फिर गांव वाले बेहोश रामू और बांकेलाल को उठाकर तम्बू में ले आए और वैद्यजी उनका उपचार करने लगे। फिर थोड़ी ही देर में पहले बांकेलाल की चेतना वापस लौटी।
आह!
उसने अभी अपनी आंखें हल्की सी खोली ही थीं कि गांव वालों की भीड़ देखकर उसने अपनी आंखें पुनः बन्द कर लीं।
ये गांव वाले मुझे क्यों घेरे खड़े हैं और मैं यहां कैसे आया?
फिर शीघ्र ही चेतना खोने के पूर्व की पूरी स्थिति बांकेलाल के मस्तिष्क में घूम गई।
ओह! लगता है गांव वालों ने मेरा झूठ पकड़ लिया है। तभी ये सब मुझे घेरे खड़े हैं। अब इनसे कैसे जान बचाई जाए?

मेरी इतनी शानदार योजनाओं की टांग तो हर बार टूटी है, पर इतनी बुरी तरह कभी नहीं कि जान बचाने के लाले पड़ जाएं।
धन्य हो बांकेलाल! इसने तो अपनी जान पर खेलकर हरिया के लड़के को बचाने की कोशिश की है।
वाकई बांकेलाल की जितनी भी तारीफ की जाए वह कम है।
आंखें बन्द किए लेटे हुए बांकेलाल ने जब गांव वालों की बातें सुनीं तो बहुत हैरानी हुई। कहां वह लोगों से जान बचाने के उपाय सोच रहा था और कहां–
एक हरिया के लड़के रामू को ही क्यों, इसने तो सारे गांव को इस मुसीबत से बचाया।
हूं...तो यह बात है!
हां, जो अगर बांकेलाल इस बात की पहले ही सूचना न देता तो शायद हममें से कोई भी जीवित न बचता!
सच ही बांके-लाल तो हमारे लिए ईश्वर का वरदान है।
अरे! कम्बख्तो, जो अगर सच ही मुझे पता होता कि आज ही इस गांव में बाढ़ आने वाली है तो मैं तुम लोगों को कभी न बताता-बल्कि मैं तो...
...तुम लोगों को मरने के लिए गांव में छोड़ कर खुद गांव से निकल जाता और जब तुम सब लोग मर-खप गए होते तो मैं अकेला पूरे गांव का बेताज बादशाह होता। और फिर...
...तुम लोगों के घरों को खोद-कर उनमें से सारा माल-पानी हथिया लेता, पर सत्यानाश हो इस बाढ़ का जो असमय ही आकर मेरी शानदार योजना का बेड़ागर्क कर गई।

तभी बूढ़े वैद्य का अथक परिश्रम रंग लाया। और हरिया के बेटे रामू की चेतना भी वापस लौट आई।
आह! अम्मा!
ओह! शुक्र है, भगवान का...बेटा आंखें खोलो!
म...मेरा रामू बच गया। व...वो अभी-अभी बोला था न वैद्य जी?
हां, हरिया, तुम्हारा रामू तो अब खतरे से बाहर है...
...और बांकेलाल को भी अब तक होश में आ जाना चाहिए। जाने क्या बात है? नब्ज़ तो इसकी ठीक चल रही है।
जब बांकेलाल के मन में छिपा भय खत्म हुआ तो उसने भी कराहते हुए आंखें खोलीं।
आह! म...मैं कहां हूं? और हरिया का लड़का रामू कहां है?
तुम अब सुरक्षित हो बांकेलाल! और हरिया का लड़का भी सकुशल है।
हे ईश्वर तू बड़ा दयालु है।
बांकेलाल के होश में आते ही गांव के लोग प्रसन्न हो गए।
भई बांकेलाल जैसे नेक पुरुष के ऊपर ईश्वर की विशेष कृपा होती है।
ईश्वर देवता स्वरूप बांकेलाल जी को लम्बी उम्र दे।

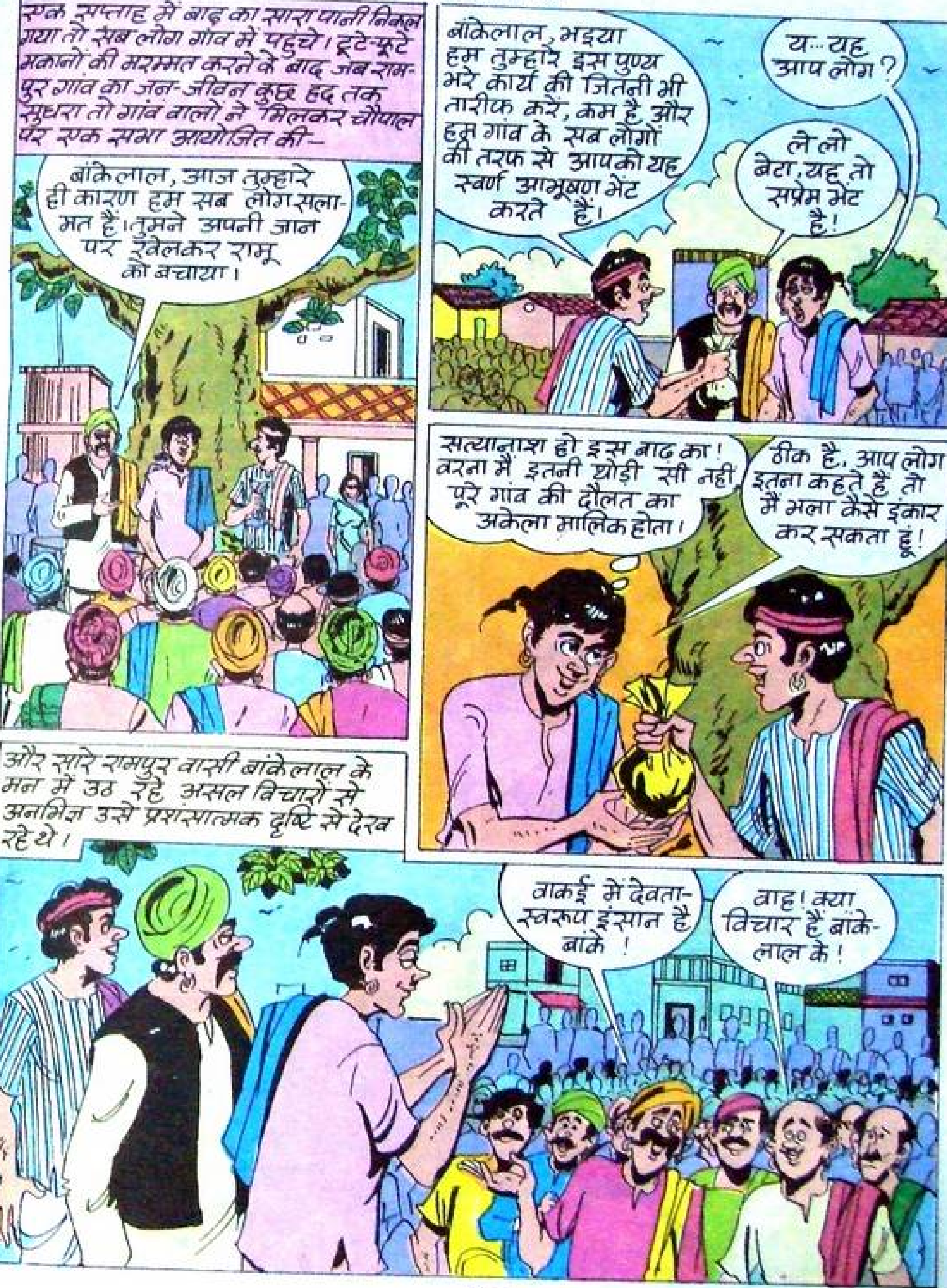
एक सप्ताह में बाढ़ का सारा पानी निकल गया तो सब लोग गांव में पहुंचे। टूटे-फूटे मकानों की मरम्मत करने के बाद जब रामपुर गांव का जन-जीवन कुछ हद तक सुधरा तो गांव वालों ने मिलकर चौपाल पर एक सभा आयोजित की—
बांकेलाल, आज तुम्हारे ही कारण हम सब लोग सलामत हैं। तुमने अपनी जान पर खेलकर रामू को बचाया।
बांकेलाल, भइया हम तुम्हारे इस पुण्य भरे कार्य की जितनी भी तारीफ करें, कम है और हम गांव के सब लोगों की तरफ से आपको यह स्वर्ण आभूषण भेंट करते हैं।
य...यह आप लोग?
ले लो बेटा, यह तो सप्रेम भेंट है!
सत्यानाश हो इस बाढ़ का! वरना मैं इतनी थोड़ी सी नहीं पूरे गांव की दौलत का अकेला मालिक होता।
ठीक है, आप लोग इतना कहते हैं तो मैं भला कैसे इंकार कर सकता हूं!
और सारे रामपुर वासी बांकेलाल के मन में उठ रहे असल विचारों से अनभिज्ञ उसे प्रशंसात्मक दृष्टि से देख रहे थे।
वाकई में देवता-स्वरूप इंसान है बांके!
वाह! क्या विचार हैं बांकेलाल के!

उधर विशालगढ़ के राजा विक्रमसिंह का दरबार लगा हुआ था। इसी दरबार में तरह-तरह की चर्चाओं के बीच महाराजा विक्रमसिंह, बांकेलाल के एक-दो कारनामे सुनकर इतना प्रभावित हुआ कि-
मंत्री धरमसिंह! आप फौरन सैनिकों के साथ रामपुर गांव जाकर बांकेलाल को ससम्मान राज अतिथि के रूप में लिवा-कर लाएं!
जो आज्ञा महाराज!
एक बात और! राजअतिथि को आते समय किसी प्रकार का कष्ट न हो, इस बात का विशेष ख्याल रखा जाए!
आज्ञा का पालन पूरी निष्ठा से किया जाएगा!
और फिर कुछ देर बाद मंत्री धरमसिंह, एक सुन्दर रथ और पांच घुड़सवार सैनिकों के साथ रामपुर गांव की ओर चल पड़ा।
और उधर बांकेलाल अपने घर में नई शरारत के लिए मन ही मन कोई योजना बना रहा था।
अब किसकी और कैसे खाट खड़ी की जाए, जिससे मेरी जिन्दगी के दिन फिर जाएं?
कि तभी-
खट-खट!
भला कौन हो सकता है?
कौन है भई?

हम हैं विशालगढ़ के सैनिक!
हे भगवान! ये सैनिक लोगों का मुझसे क्या काम? हो न हो किसी ने मेरी कोई शिकायत की है जो ये मुझे गिरफ्तार करने आए हैं।
बांकेलाल! दरवा ना खोलो! बाहर मंत्री जी आपको बुलवा रहे हैं।
हे भगवान अब क्या होगा?
...जरूर कोई घपला हो गया है जो स्वयं मंत्री जी मुझे गिरफ्तार करने आए हैं। पर क्या घपला हुआ है मुझसे?
और सैनिकों ने देर होती देख ज़ोर से दरवाजा भड़भड़ाया-
खतरा! अब मुझे फौरन भाग निकलना चाहिए।
दरवाजा खोलो! नहीं तो तोड़ दिया जाएगा।
बांकेलाल दरवाजे को इस तरह भड़भड़ाए जाने पर और भी बुरी तरह डर गया और खिड़की की ओर लपका-
पर तभी बाहर निकलते ही मंत्री धरम सिंह की नजर उस पर पड़ी।
देखो, वो बांकेलाल के घर की खिड़की से कौन भाग रहा है? मुझे तो कुछ गड़बड़ लगती है। तुम दौड़ कर उसे पकड़ लाओ!

फिर शीघ्र ही वह सैनिक बांकेलाल को पकड़ लाया।
कौन हो तुम और भाग क्यों रहे थे?
ज... जी, मेरा नाम बांकेलाल है! और...
क्या?
क्या?
मंत्री के संकेत पर सैनिकों ने फौरन बांकेलाल को छोड़ दिया।
बांकेलाल जी! हम आप ही को साथ ले जाने आए हैं।
प... पर... मेरा कसूर?
मंत्री धरमसिंह मुस्करा कर बोला—
आपको किसी अपराध के लिए नहीं, बल्कि सम्मानित करने के लिए महाराज ने बुलवाया है।
डरे हुए बांकेलाल को मंत्री के शब्द व्यंग्यात्मक प्रतीत हुए।
हुंह! महाराज भला मुझे क्यों सम्मानित करने लगे! अवश्य ही मेरे अनगिनत अपराधों में से किसी एक का भण्डाफोड़ हुआ है। जो ये यमदूत मेरे पीछे पड़े हैं?
क्या सोचने लगे...? चलिए जल्दी कीजिए।
प... पर मैं तो आपके साथ नहीं जाऊंगा मेरी तबियत ठीक नहीं है।

मंत्री धरमसिंह अच्छे-भले बांकेलाल को बहाने बनाते देख क्रोधित हो उठा।
देखिए बांकेलाल जी, यदि आप तुरन्त ही हमारे साथ खुशी से चलने को राजी न हुए तो मजबूरन ही हमें...
...आपके साथ सख्ती करनी पड़ेगी।
और बांकेलाल समझ गया कि उसकी बात मानने में ही सलामती है।
ठीक है हुजूर! जैसी आपकी इच्छा!
फिर महामंत्री उसे चार घोड़ों वाले सुन्दर रथ पर बिठाकर चल पड़ा।
और जब मंत्री धरमसिंह बांकेलाल को लेकर विशालगढ़ के राजमहल में पहुंचा तो रात हो चुकी थी। अतः बांकेलाल को राजा के विशेष कक्ष में ले जाया गया।
आइए बांकेलाल जी, आपका स्वागत है! हमने आपकी बहुत तारीफें सुनी हैं।
ज...जी, यह तो आपकी महानता है, जो आप इस नाचीज को किसी काबिल समझते हैं।
नहीं बांकेलाल, न तो हमें किसी की झूठी तारीफ करने की आदत है, न सुनने की! हां, हमने तुम्हारे लोक-कल्याण के कई कारनामे सुने हैं और सुना है, तुमने पूरा गांव डूबने से बचाया है।
हूं, तो यह बात है! मैं तो बेकार ही डर गया था।

मंत्री जी! आप तुरन्त बांकेलाल के जलपान का प्रबन्ध कराएं।
जो आज्ञा महाराज!
आहा! शाही दावत मज़ा आ गया!
धरमसिंह कमरे से बाहर चला गया।
हां, तो बांकेलाल जी अब बताएं कि आपको यहां तक आने में किसी प्रकार की तकलीफ तो नहीं हुई?
ज... जी कोई खास तो नहीं...
क्या मतलब? देखो बांकेलाल! मैंने मंत्री धरमसिंह को विशेषकर यह निर्देश दिया था कि वह तुमको सम्मान सहित हमारे पास लेकर आए... और इस बात का विशेष ख्याल रखे कि तुमको रास्ते में कोई तकलीफ न हो...
...और तुम शायद नहीं जानते कि हम राज-आज्ञा का उल्लंघन करने वाले किसी राजकर्मचारी या अधिकारी को फौरन राजपद से हटा देते हैं।
क्या?
राजा विक्रम की बात सुनकर बांकेलाल चौंक पड़ा।
और तभी उसकी उलटी खोपड़ी में एक नई शरारत ने जन्म लिया।
यदि मैं महाराज से कह दूं कि यहां लाते समय उसके राजमंत्री ने मेरे साथ बहुत बुरा सलूक किया, तो महाराज उसे तुरन्त ही मंत्री पद से हटा देंगे और...
...उसकी जगह जो नया मंत्री बनेगा, वह मुझसे निश्चित तौर पर खुश होगा, क्योंकि वह अपने मंत्री बनने का कारण मुझे मानेगा। और हो सकता है वह मुझसे खुश होकर कुछ इनाम-इकराम वगैरह भी मुझे दे दे!
क्या बांकेलाल की इस शरारत के कारण मंत्री धरमसिंह को अपना पद छोड़ना पड़ा या फिर भगवान शिव के वरदान के कारण उसे बहुत लाभ हुआ?
जानने के लिए पढ़ें
कर बुरा हो भला
इसी सैट में प्रकाशित

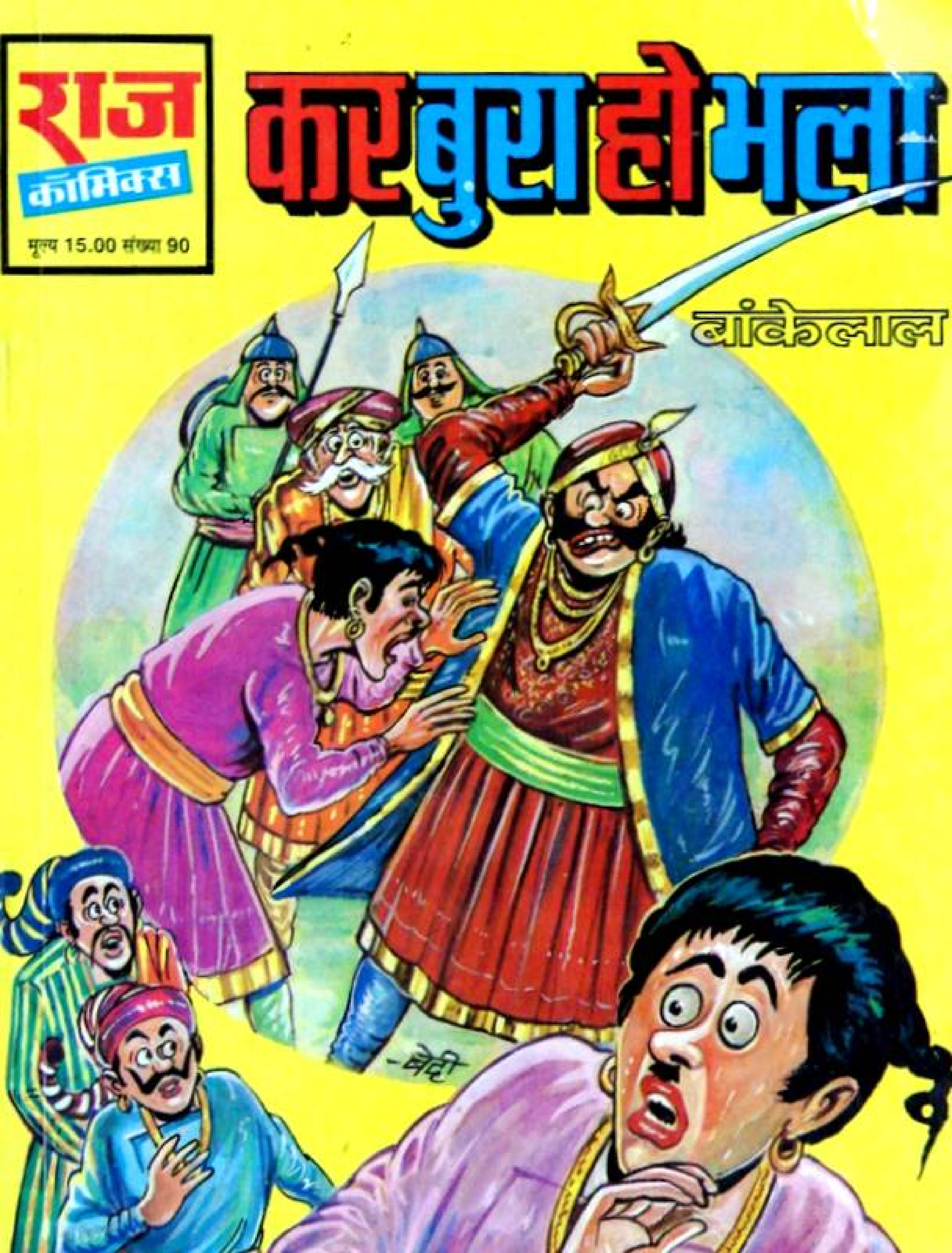
राज
कॉमिक्स
मूल्य 15.00 संख्या 90
कर बुरा हो भला
बांकेलाल
-बेदी

प्रिय पाठको! पूर्व कथा 'बांकेलाल का कमाल' में आपने पढ़ा कि रामपुर गांव में ननकू और उसकी पत्नी गुलाबवती रहते थे। ननकू को जमींदार के खेतों पर काम करके जो रूखा-सूखा मिलता था, उससे ही गुजारा करता था। उसकी पत्नी गुलाबवती भगवान शिव की अनन्य भक्त थी शिव के आशीर्वाद से ही बांकेलाल का जन्म हुआ था, लेकिन उसकी एक शरारत से क्रोधित हो शिव ने उसे शाप दिया था कि तू हमेशा शरारतें करता रहेगा, लेकिन फिर गुलाबवती के गिड़गिड़ाने पर उन्होंने कहा—"मेरा शाप तो नहीं फिर सकेगा, लेकिन बांकेलाल जो शरारतें करेगा, उससे उसे अपयश की बजाए यश और धन प्राप्त होगा और इससे ही उसका जीवनयापन होगा। इसी तरह शरारतें करते और यश और धन कमाते हुए बांकेलाल जवान हो गया। एक बार उसकी शरारत के कारण गांव के लोग भयानक डाकू से बचे। जब विशालगढ़ के राजा विक्रमसिंह को बांकेलाल के कारनामों की खबर मिली तो उन्होंने अपने मंत्री धर्मसिंह को भेजकर बांकेलाल को बुलवाया, लेकिन महल में पहुंचते ही बांकेलाल के दिमाग में मंत्री के खिलाफ ही एक शरारत कुलबुलाने लगी। अब आगे पढ़ें—

क्या सोचने लगे बांकेलाल! यदि कोई बात मन में हो तो निःसंकोच कहो।
ऐ..हाँ...गुस्ताखी माफ हो महाराज। पर यह सच है कि मुझे यहां किसी कैदी की तरह लाया गया है।
क्या मतलब? तुम कहना क्या चाहते हो बांकेलाल?
महाराज, दरअसल आज मेरी तबीयत कुछ खराब थी- यही बात बार-बार मैं मंत्री धरमसिंह के सामने दोहराता रहा, पर मेरी बात सुने बगैर मुझे अपमानित कर जबरन यहां लाया गया।
क्या? ऐसा बुरा व्यवहार राज-अतिथि के साथ! ठीक है। हम धरमसिंह को उसकी गुस्ताखी की सजा कल भरे दरबार में देंगे।
दूसरे दिन राजदरबार में.
धरमसिंह, तुमने हमारी चेतावनी के बावजूद भी कल बांकेलाल को लाते समय उनके साथ दुर्व्यवहार किया।
क्षमा महाराज! मेरे कई बार आग्रह करने के बावजूद भी यह हमारे साथ आने को तैयार न थे। और बीमार होने का बहाना कर रहे थे। अतः विवश हो...

खामोश धरमसिंह! हम कुछ सुनना नहीं चाहते। तुमने न केवल राजअतिथि का अपमान ही किया है बल्कि राजाज्ञा का उल्लंघन भी किया है।
इसकी सजा के तौर पर हम तुम्हें इसी समय मंत्री पद से हटाते हैं।
??
ज..ज..जो आज्ञा महाराज की!
क्या?
हुं, अब आया मजा। कम्बख्त, बांकेलाल से अकड़ता था। कह रहा था, दरवाजा तोड़ दूंगा। जल्दी से तैयार होकर हमारे साथ चलो, नहीं तो हम जबरन तुम्हें ले चलेंगे। बड़ा आया मंत्री कहीं का!
पर तभी उसका ध्यान राजा की तरफ गया जो उस समय बेहद चिंतित नजर आ रहे थे।
गुस्ताखी माफ, महाराज! आप कुछ चिन्तित नजर आ रहे हैं।
हां बांकेलाल! हमें धरमसिंह जैसे वफादार-बुद्धिमान मंत्री को भरे दरबार में अपमानित कर पद से हटाने में बहुत दुख हुआ है!....
....उफ! अब मैं इतना जिम्मेदारी भरा पद किसे सौंपूं?! धरमसिंह तुमने हमारी चेतावनी के बाद भी क्यों ऐसी गलती की, जिसे हम चाहकर भी क्षमा नहीं कर सकते थे।

तभी विक्रमसिंह के राज्य का विशेष सलाहकार हुल्लकुल्ल बोला—
महाराज की जय हो! आपको इस विषय में ज्यादा सोचकर परेशान नहीं होना चाहिए।
तुम नहीं जानते हुल्लकुल्ल यह अपने आप में एक बहुत ही गम्भीर मामला है। जाने मुझे क्यों ऐसा महसूस होता है कि मैंने धरमसिंह के साथ अन्याय किया है।
आपने कोई अन्याय नहीं किया महाराज! बल्कि आपने राजअतिथि के साथ बुरा बर्ताव करने वाले को उचित दण्ड देकर धर्म का पालन किया है।
पर अब मंत्री पद के लिए योग्य व्यक्ति की तलाश की जो समस्या है...
महाराज! इसका हल मेरे पास है। अभी कुछ ही दिनों पहले अपनी शिक्षा-दीक्षा सम्पूर्ण कर धरमसिंह का भाई करमसिंह लौटा है। महाराज, उसे कोई तो जगह राजमहल में देनी ही थी। क्यों...
ओह! वाकई इस समय तुमने बहुत अच्छा सुझाव दिया है। करमसिंह को मंत्री बनाने के बाद मेरे मन से धरमसिंह को मंत्री पद से हटाने का बोझ कुछ हद तक हल्का हो जाएगा।
थोड़ी देर बाद विक्रमगढ़ का नया मंत्री धरमसिंह का भाई करमसिंह था।
राजा विक्रमसिंह जिंदाबाद!
मंत्री करमसिंह जिंदाबाद!
बेटा बांके! अब तेरी खैर नहीं! क्योंकि अब धरमसिंह का भाई मंत्री है और वह अपने भाई की बेइज्जती का बदला तुमसे अवश्य लेगा।
हे भगवान! अब क्या करूं मैं?
और फिर...

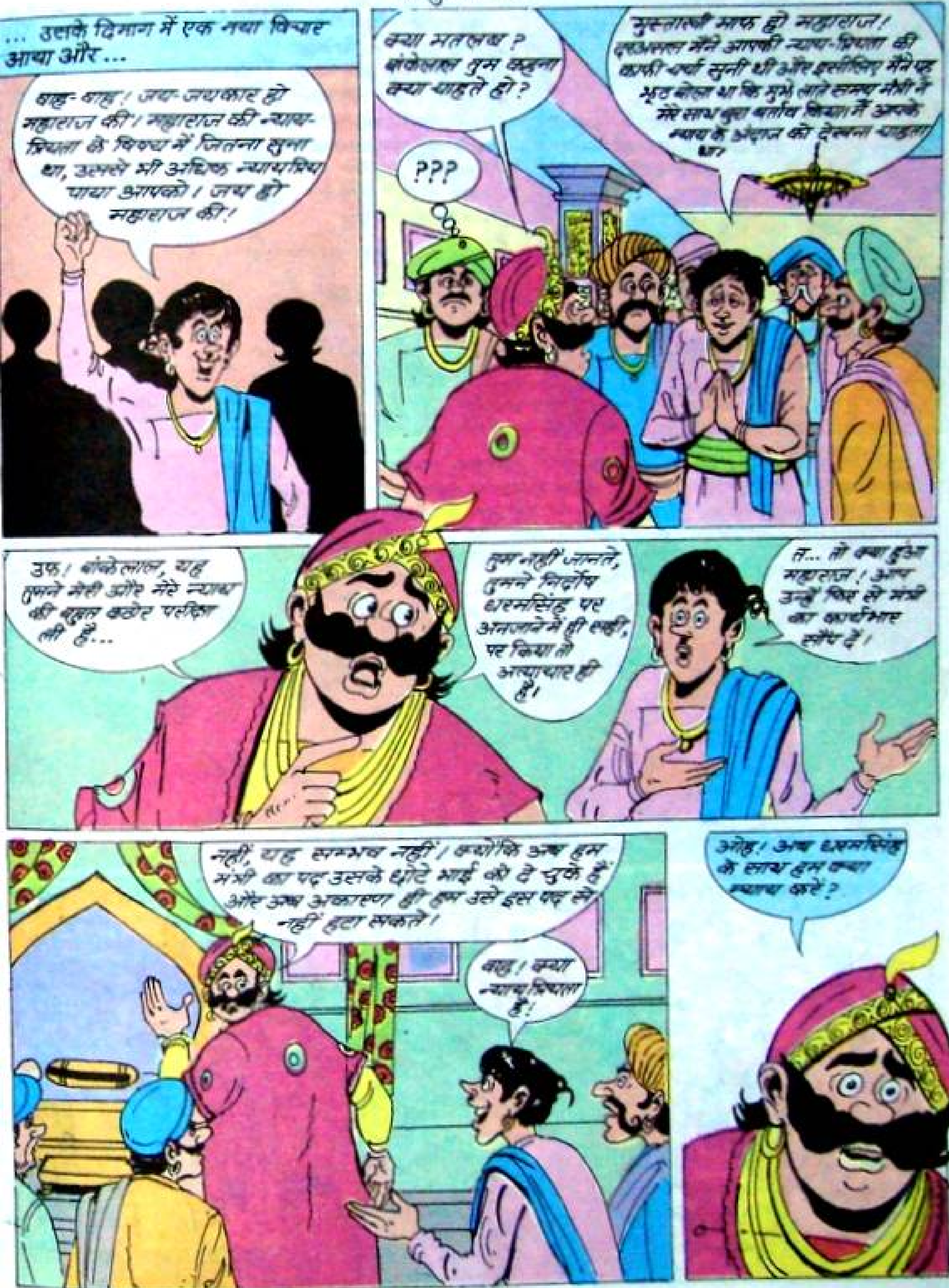
... उसके दिमाग में एक नया विचार आया और ...
वाह-वाह! जय-जयकार हो महाराज की! महाराज की न्याय-प्रियता के विषय में जितना सुना था, उससे भी अधिक न्यायप्रिय पाया आपको। जय हो महाराज की!
क्या मतलब? बांकेलाल तुम कहना क्या चाहते हो?
???
गुस्ताखी माफ हो महाराज! दरअसल मैंने आपकी न्याय-प्रियता की काफी चर्चा सुनी थी और इसीलिए मैंने यह झूठ बोला था कि मुझे लाते समय मंत्री ने मेरे साथ बुरा बर्ताव किया। मैं आपके न्याय के अंदाज को देखना चाहता था।
उफ! बांकेलाल, यह तुमने मेरी और मेरे न्याय की बहुत कठोर परीक्षा ली है...
तुम नहीं जानते, तुमने निर्दोष धरमसिंह पर अनजाने में ही सही, पर किया तो अत्याचार ही है।
त... तो क्या हुआ महाराज! आप उन्हें फिर से मंत्री का कार्यभार सौंप दें।
नहीं, यह सम्भव नहीं। क्योंकि अब हम मंत्री का पद उसके छोटे भाई को दे चुके हैं और अब अकारण ही हम उसे इस पद से नहीं हटा सकते।
वाह! क्या न्यायप्रियता है!
ओह! अब धरमसिंह के साथ हम क्या न्याय करें?

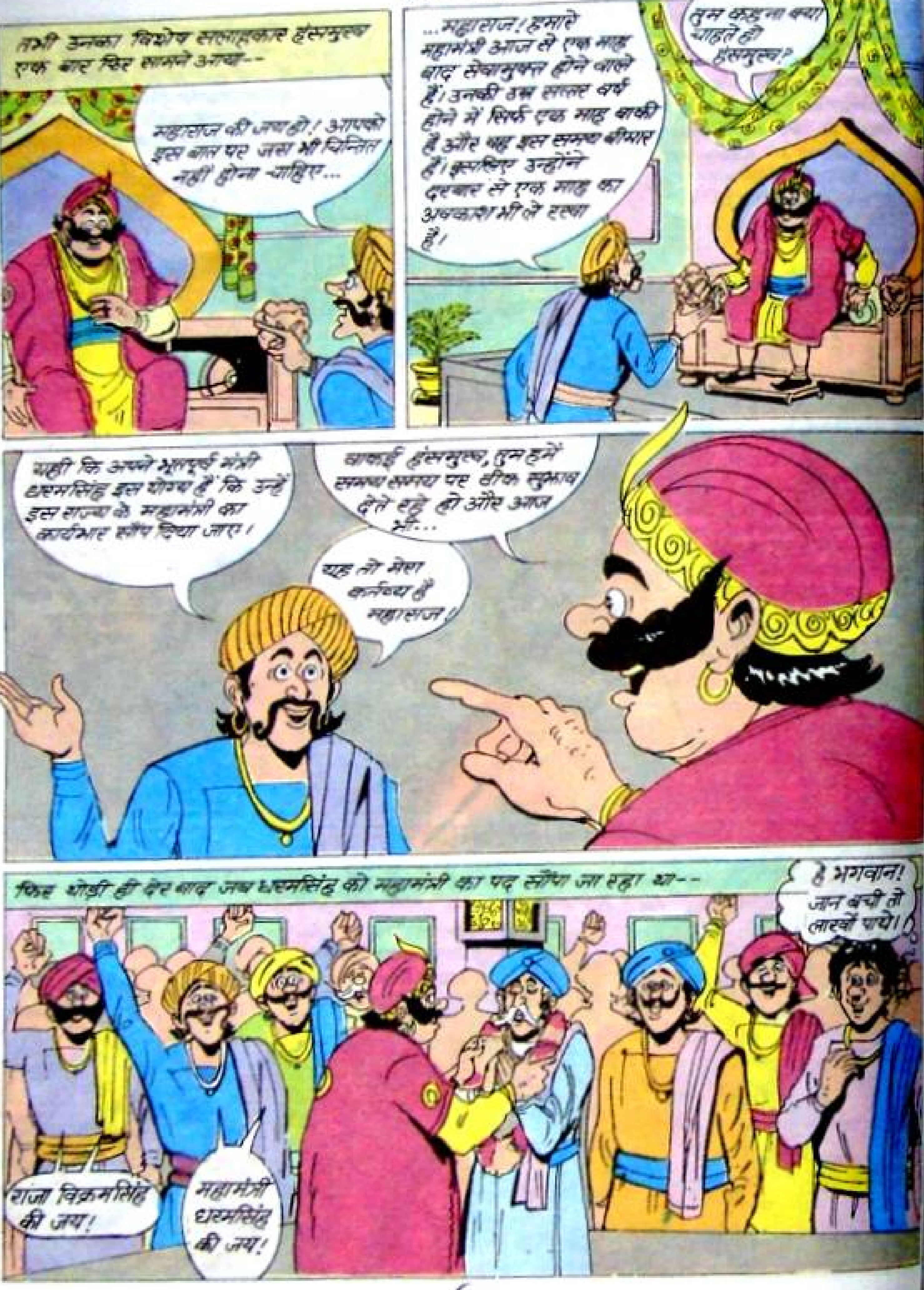
तभी उनका विशेष सलाहकार हंसमुख एक बार फिर सामने आया--
महाराज की जय हो! आपको इस बात पर जरा भी चिन्तित नहीं होना चाहिए...
...महाराज! हमारे महामंत्री आज से एक माह बाद सेवामुक्त होने वाले हैं। उनकी उम्र सत्तर वर्ष होने में सिर्फ एक माह बाकी है और वह इस समय बीमार हैं। इसलिए उन्होंने दरबार से एक माह का अवकाश भी ले रखा है।
तुम कहना क्या चाहते हो हंसमुख?
यही कि अपने भूतपूर्व मंत्री धरमसिंह इस योग्य हैं कि उन्हें इस राज्य के महामंत्री का कार्यभार सौंप दिया जाए।
वाकई हंसमुख, तुम हमें समय समय पर ठीक सुझाव देते रहे हो और आज भी...
यह तो मेरा कर्तव्य है महाराज!
फिर थोड़ी ही देर बाद जब धरमसिंह को महामंत्री का पद सौंपा जा रहा था--
हे भगवान! जान बची तो लाखों पाये!
राजा विक्रमसिंह की जय!
महामंत्री धरमसिंह की जय!

और उसी रात बांकेलाल जब विशालगढ़ राज्य की अतिथिशाला में अभी सोने की तैयारी कर ही रहा था कि तभी महामंत्री धरमसिंह अपने भाई मंत्री करमसिंह के साथ वहां पहुंचा--
बांकेलाल जी, आप वाकई बहुत ही महान हैं जो...
ज..जी ऐसी कोई बात नहीं है...
खैर जाने दीजिए। किसी भी महान व्यक्ति को अपने मुंह पर अपनी तारीफ अच्छी नहीं लगती। पर आप हम दोनों भाइयों की तरफ से यह तुच्छ भेंट स्वीकार करें।
और बांकेलाल मन ही मन अपनी पीठ ठोक रहा था।
शाबास बांके! किस्मत हो तो तेरे जैसी!
फिर तभी से बांकेलाल विशालगढ़ के राजमहल में राजअतिथि के रूप में शाही मौज-मस्ती छान रहा था।
वाह! क्या स्वादिष्ट भोजन है! और यह मिठाई आहा! मजा आ गया शाही पकवानों का!
किन्तु बांकेलाल अभी शाही पकवानों का पूरा स्वाद भी न ले पाया था कि वह एक दिन बुरी तरह बौखला गया। हुआ ये कि उस दिन महाराज विक्रमसिंह का दरबार लगा हुआ था और बांकेलाल राज-अतिथि के रूप में विशेष सिंहासन पर बैठा दरबार में चल रही कार्यवाही देख रहा था कि तभी दरबार में एक पहरेदार ने प्रवेश किया।
महाराज की जय हो!
कहो द्वारपाल, क्या कहना चाहते हो?
महाराज, उदयपुर के राजदूत पधारे हैं। वे अपने महाराज का आपके लिए संदेश लाए हैं।

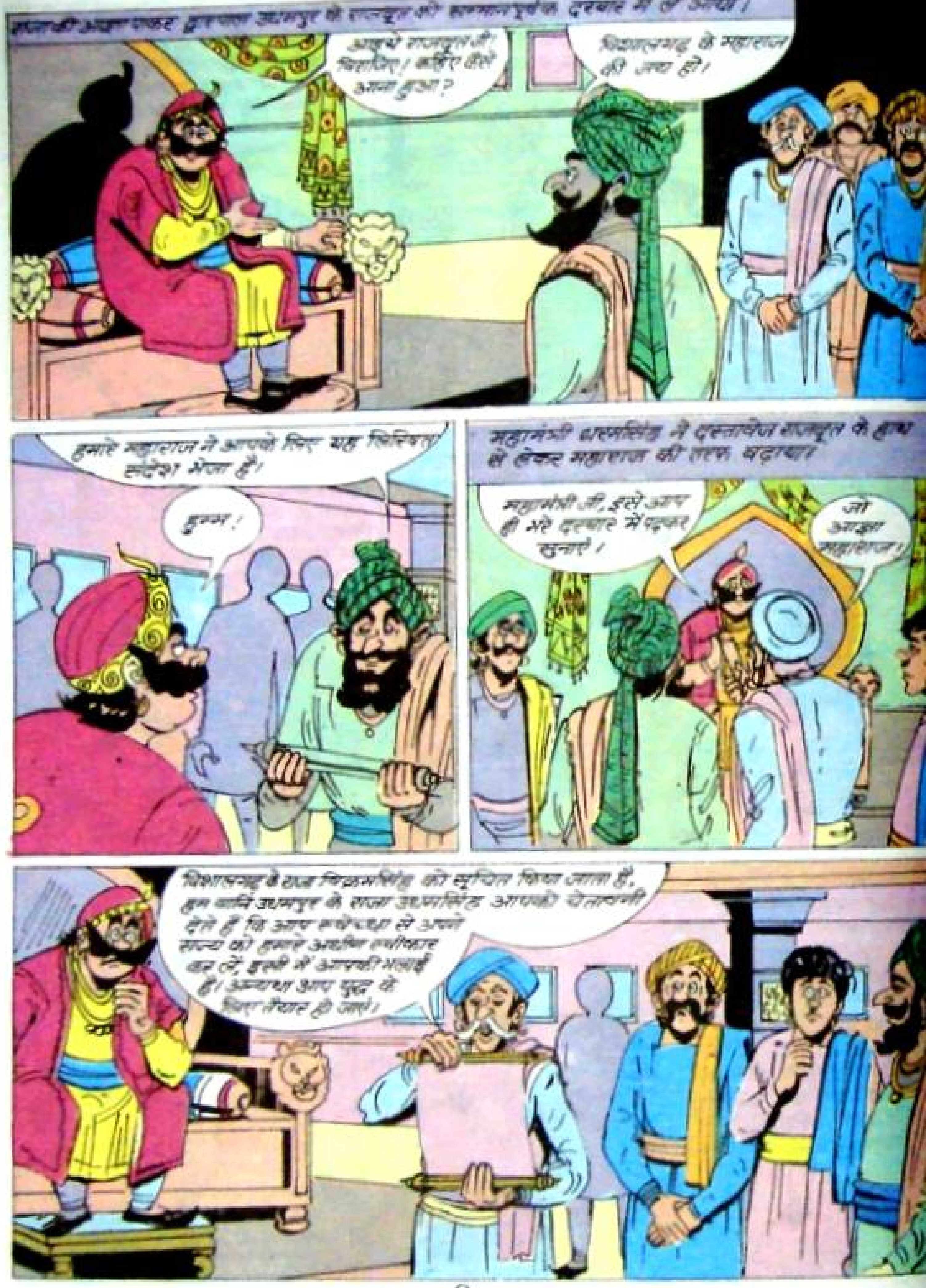
राजा की आज्ञा पाकर द्वारपाल उदमपुर के राजदूत को सम्मानपूर्वक दरबार में ले आया।
आइये राजदूत जी! बिराजिए! कहिए कैसे आना हुआ?
विशालगढ़ के महाराज की जय हो।
हमारे महाराज ने आपके लिए यह लिखित संदेश भेजा है।
हुक्म!
महामंत्री धरमसिंह ने दस्तावेज राजदूत के हाथ से लेकर महाराज की तरफ बढ़ाया।
महामंत्री जी, इसे आप ही मेरे दरबार में पढ़कर सुनाएं।
जो आज्ञा महाराज।
विशालगढ़ के राजा विक्रमसिंह को सूचित किया जाता है, हम यानि उदमपुर के राजा उदमसिंह आपको चेतावनी देते हैं कि आप स्वेच्छा से अपने राज्य को हमारे अधीन स्वीकार कर लें, इसी में आपकी भलाई है। अन्यथा आप युद्ध के लिए तैयार हो जाएं।

राजा विक्रमसिंह एक स्वाभिमानी राजा थे। अतः यह खबर सुनकर उनका खून खौलने लगा—
राजदूत! जाओ, और उदयसिंह से कहो कि हमसे युद्ध भूमि में मुलाकात करने के लिए तैयार रहें।
जो आज्ञा महाराज मैं चलता हूँ।
इसी के साथ राजदूत दरबार से बाहर निकल गया...
...और उसके जाते ही—
सेनापति!
जी महाराज।
आप युद्ध की तैयारियाँ प्रारम्भ करें।
तभी महामंत्री चिन्तित स्वर बोला—
महाराज, उदयपुर के राजा उदयसिंह के पास हमारी सेना के मुकाबले दुगनी-तिगुनी सेना है।
हम जानते हैं महामंत्री! और सच पूछो तो हम जरा भी युद्ध के पक्ष में नहीं हैं...
पर हम किसी भी प्रकार अपने आत्मसम्मान और अपनी प्रजा के अहं पर चोट नहीं होने दे सकते। अतः यह युद्ध एक तरह से हमारी मजबूरी है।

बस यही कारण था कि बांकेलाल मन ही मन डर गया था—
बेटा बांकेलाल! भाग ले यहां से, तेरी मौज-मस्ती के दिन अब खत्म हुए। और अब यहां बात युद्ध की चल रही है...
...और अपने राजा विक्रमसिंह की सेना भी विपक्ष के मुकाबले में आधी है। अतः बेटा भलाई इसी में है कि तू अब महाराज से विदा ले, और यहां से फुट ले।
और मन में आए इस विचार के साथ ही बांकेलाल, किसी गहरी सोच में डूबे महाराज से बोला—
अच्छा महाराज! अब मुझे इजाजत दें।
क्या मतलब बांकेलाल?
बस महाराज, मुझे काफी दिन हो गये घर से निकले। अब मैं घर वापस जाना चाहता हूं।
ओह! तुम्हारी इच्छा बांकेलाल! पर इतना जरूर कहूंगा कि यदि तुम भी इस युद्ध में हमारे साथ रहते तो...
...शायद तुम्हारी बुद्धि और सुझाव से हमारी सेना को कुछ लाभ पहुंचता...
व... वो महाराज! मैं रहता तो जरूर पर...

पर इससे पहले कि बांकेलाल अपनी बात पूरी करता या कोई नया बहाना बनाता, महामंत्री ने हस्तक्षेप किया।
चाहे जो भी हो बांकेलाल जी, इस समय तो आपको हमारे महाराज की बात मानकर अपने देश की, अपने राज्य की जनता का पूरा सहयोग करना चाहिए।
जी... जी ठीक है। जैसा आप लोग चाहेंगे वैसा ही होगा।
हाँ-हाँ, महामंत्री जी ठीक कहते हैं बांकेलाल जी!

और इसी के साथ दरबार में खुशी की लहर दौड़ गई।
बांकेलाल जी की जय हो!
महाराज विक्रमसिंह की जय हो!
ह! साले जबरदस्ती मौत के मुँह में धकेल रहे हैं, बांकेलाल की जय कह रहे!

फिर ठीक बारहवें दिन उदयपुर और विशालगढ़ की सेनाएं रणभूमि में क्रमशः पूरब और पश्चिम के छोरों में आ डटीं। तीसरे दिन युद्ध का बिगुल बजना था।

☆ दस्त लगाने वाली एक औषधि

अपनी योजना का प्रथम चरण सफलता पूर्वक पूराकर बांकेलाल ने चैन की सांस ली–
हा..हा..हा..! अब आएगा मजा! हो... हा..हा..हा..
हा..हा..हा! अब जैसे ही सैनिक भोजन करेंगे तो... हो...हो...हो...हो...उन्हें दस्त के ऊपर दस्त...हा.. हा..हा...
...फिर सारे सैनिक अपना-अपना पेट पकड़े लोटा हाथ में लिए जंगल की तरफ दौड़ेंगे। फिर जल्दी ही सैनिकों की हालत इतनी खराब हो जाएगी कि ये लोग युद्ध के कतई काबिल नहीं रहेंगे...
...मैं चुपके से मौका देखकर यहां से खिसक जाऊंगा और उधमपुर के राजा उधमसिंह के खेमे में जाकर उन्हें यहां की सारी स्थिति समझा दूंगा...
...और तब उधमपुर की सेना शीघ्र ही आक्रमण कर देगी..और फिर आनन-फानन बिना किसी खास कठिनाई के उधमपुर की सेना विजय प्राप्त कर लेगी...
...और फिर उधमपुर के राजा मेरे इस कारनामे से प्रसन्न होकर मुझे ढेर सारा इनाम देंगे...हा...हा..हा...

...समझ रहा था राजा विक्रमसिंह ये कि मुझे युद्ध के मैदान में न ले जाते। पर वे मुझे मरवाने के लिए यहाँ लाए थे। अब पता लगेगा कि बांकेलाल किस हस्ती का नाम है। ही... ही... ही...!
उधर बांकेलाल यानि नमकहराम मन ही मन कल्पना के महल बना रहा था और इधर मिष्ठ-व्यंजनों से निवृत्त हो सैनिकों की पहली टुकड़ी भोजन करने लगी—
और जैसे ही सैनिक भोजन करके उठे, भोजन में मिले जमालघोटे ने अपना असर दिखाया—
आह!
हाय!
आई!
उफ़! यह अचानक पेट में दर्द क्यों होने लगा?
और अगले ही क्षण भोजन कर चुके सारे सैनिक हाथों में लोटे लिए जंगल की तरफ भागे—
और जब सैनिकों की दूसरी टुकड़ी ने भी भोजन किया तो उनका भी यही हाल हुआ।
उफ़!
हा!
आई!
आह!

इसी तरह एक-एक कर पांच-पांच हजार सैनिकों की पांचों टुकड़ियों ने भोजन कर लिया। और फिर पांचों टुकड़ियों के सैनिक अपना-अपना पेट पकड़े लोटा हाथ में लिए जंगल की तरफ भागे।
और फिर थोड़ी देर बाद हालत यह थी कि सैनिक जंगल-पानी से निवृत होकर आते, अपने हाथ-मुंह धोते और फिर तुरन्त ही लोटा हाथ में लिए जंगल की तरफ भागते...
उफ!
हाय!
कुछ ही देर में सैनिकों के चेहरे इस कदर मुरझा गये कि वह वर्षों के पुराने रोगी नजर आने लगे।
मेरा तो सिर चकरा रहा है!
मुझसे अब और नहीं चला जाता!

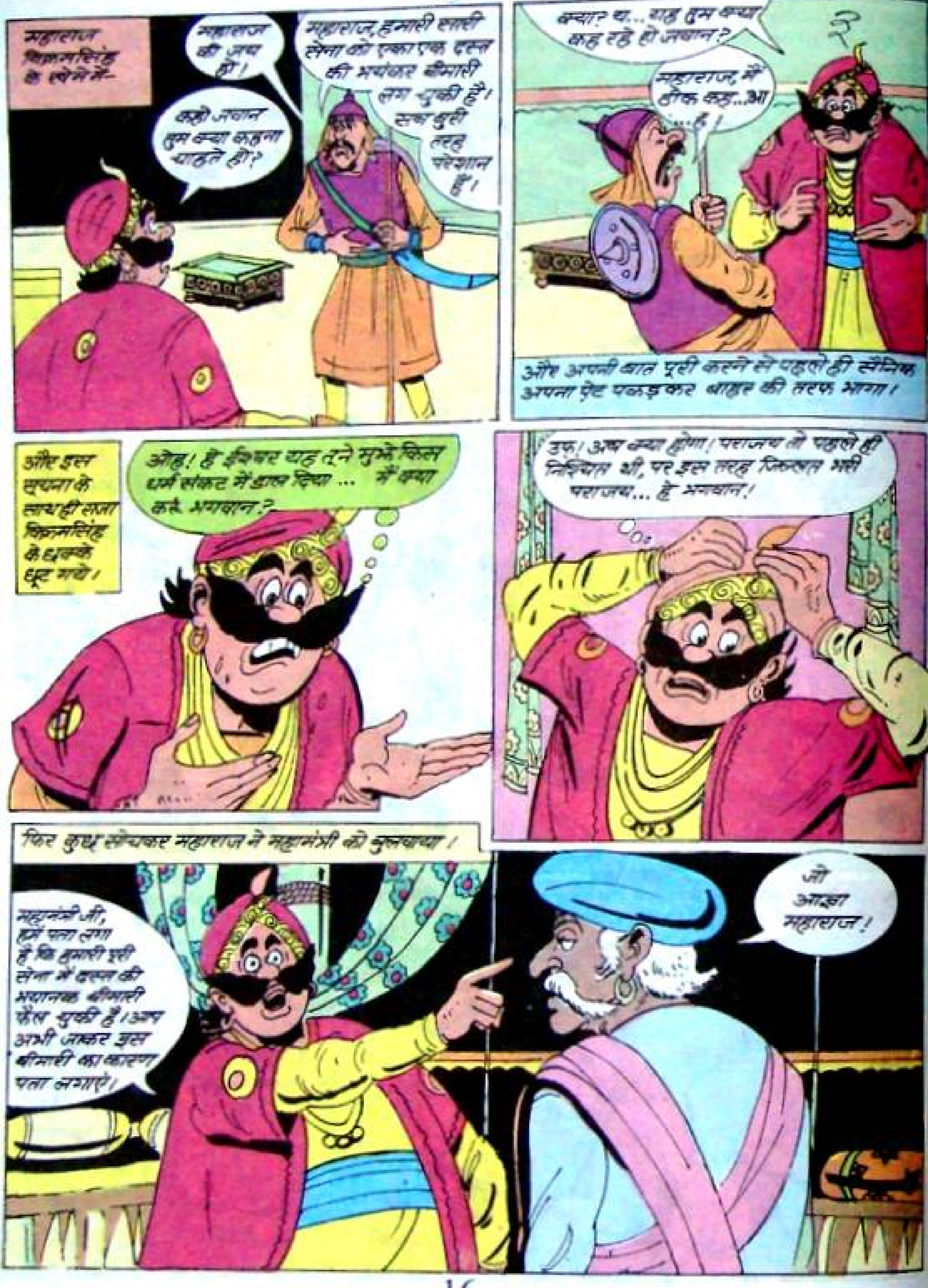
महाराज विक्रमसिंह के खेमे में-
महाराज की जय हो!
कहो जवान तुम क्या कहना चाहते हो?
महाराज, हमारी सारी सेना को एकाएक दस्त की भयंकर बीमारी लग चुकी है। सब बुरी तरह परेशान हैं।
क्या? य... यह तुम क्या कह रहे हो जवान?
महाराज, मैं ठीक कह...आ...ह!
और अपनी बात पूरी करने से पहले ही सैनिक अपना पेट पकड़कर बाहर की तरफ भागा।
और इस सूचना के साथ ही राजा विक्रमसिंह के छक्के छूट गये।
ओह! हे ईश्वर यह तूने मुझे किस धर्म संकट में डाल दिया ... मैं क्या करूं भगवान?
उफ! अब क्या होगा! पराजय तो पहले ही निश्चित थी, पर इस तरह जिल्लत भरी पराजय... हे भगवान!
फिर कुछ सोचकर महाराज ने महामंत्री को बुलवाया।
महामंत्री जी, हमें पता लगा है कि हमारी पूरी सेना में दस्त की भयानक बीमारी फैल चुकी है। आप अभी जाकर इस बीमारी का कारण पता लगाएं।
जो आज्ञा महाराज!

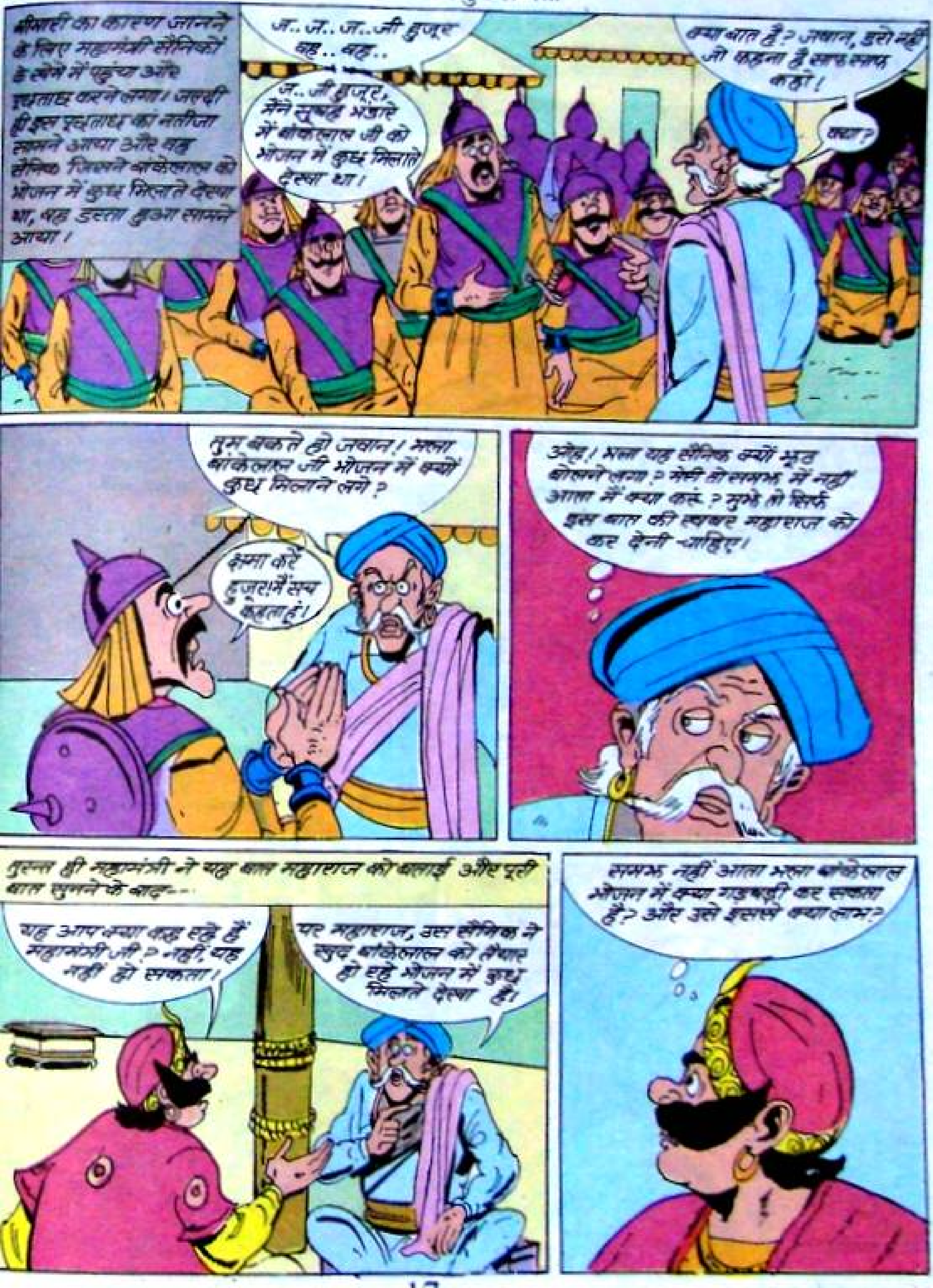
बीमारी का कारण जानने के लिए महामंत्री सैनिकों के खेमे में पहुंचा और पूछताछ करने लगा। जल्दी ही इस पूछताछ का नतीजा सामने आया और वह सैनिक जिसने बांकेलाल को भोजन में कुछ मिलाते देखा था, वह डरता हुआ सामने आया।
ज.. ज.. ज.. जी हुजूर वह.. वह..
क्या बात है? जवान, डरो नहीं जो कहना है साफ साफ कहो!
ज.. जी हुजूर, मैंने सुबह भंडारे में बांकेलाल जी को भोजन में कुछ मिलाते देखा था।
क्या?
तुम बकते हो जवान! भला बांकेलाल जी भोजन में क्यों कुछ मिलाने लगे?
क्षमा करें हुजूर! मैं सच कहता हूं!
ओह! भला यह सैनिक क्यों झूठ बोलने लगा? मेरी तो समझ में नहीं आता मैं क्या करूं? मुझे तो सिर्फ इस बात की खबर महाराज को कर देनी चाहिए।
तुरन्त ही महामंत्री ने यह बात महाराज को बताई और पूरी बात सुनने के बाद---
यह आप क्या कह रहे हैं महामंत्री जी? नहीं, यह नहीं हो सकता!
पर महाराज, उस सैनिक ने खुद बांकेलाल को तैयार हो रहे भोजन में कुछ मिलाते देखा है।
समझ नहीं आता भला बांकेलाल भोजन में क्या गड़बड़ी कर सकता है? और उसे इससे क्या लाभ?

महाराज! मेरे ख्याल से तो पहले राजवैद्य से भोजन का परीक्षण करवाया जाए, ताकि आगे सही निर्णय लिया जा सके।
जैसा चाहो, वैसा करो महामंत्री जी! हमारी तो कुछ समझ में नहीं आता, आखिर हो क्या रहा है?
महामंत्री ने वहीं राजवैद्य को बुलवाया और साथ ही रसोई से थोड़ा सा भोजन भी।
वैद्यजी! आप इस भोजन का परीक्षण करके बताएं कि इसमें कुछ मिला हुआ तो नहीं...
अभी लीजिए हुजूर!
फिर वैद्यजी वह भोजन लेकर अपने कक्ष में आए और तरह-तरह से उसका परीक्षण करने लगे।
और राजवैद्य ने जल्द ही भोजन में मिले जमालघोटे का रहस्य जान लिया।
ओह! भोजन में तो जमालघोटा मिलाया गया है! मुझे तुरन्त ही इस बात की सूचना महाराज को देनी चाहिए।
फिर—
हुजूर! इस भोजन में जमालघोटा बहुत अधिक मात्रा में मिलाया गया है।
क्या?
!!!

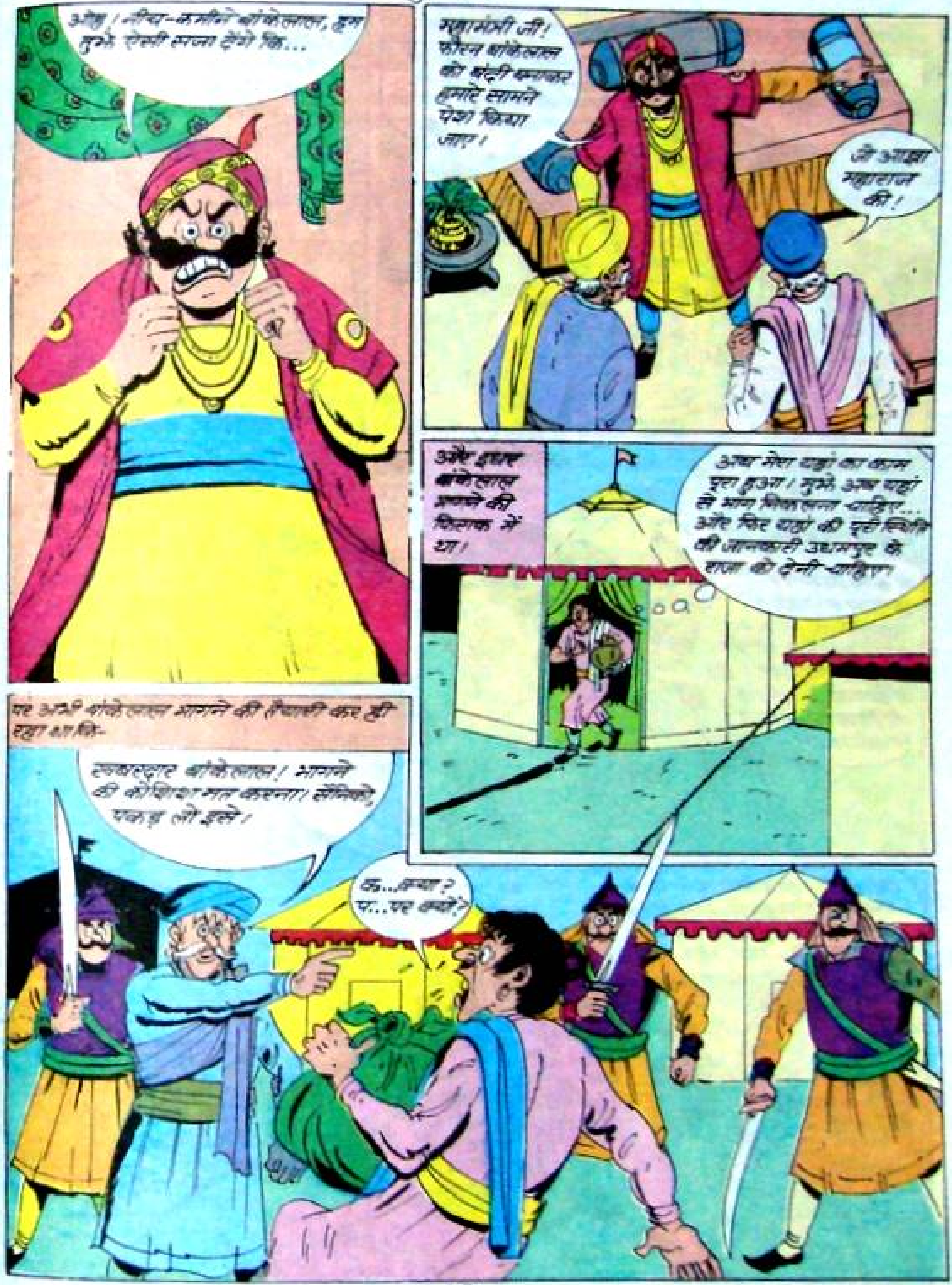
ओह! नीच-कमीने बांकेलाल, हम तुम्हें ऐसी सजा देंगे कि...
महामंत्री जी! फौरन बांकेलाल को बंदी बनाकर हमारे सामने पेश किया जाए।
जो आज्ञा महाराज की!
और इधर बांकेलाल भागने की फिराक में था।
अब मेरा यहां का काम पूरा हुआ। मुझे अब यहां से भाग निकलना चाहिए... और फिर यहां की पूरी स्थिति की जानकारी उदयपुर के राजा को देनी चाहिए।
पर अभी बांकेलाल भागने की तैयारी कर ही रहा था कि-
खबरदार बांकेलाल! भागने की कोशिश मत करना। सैनिको, पकड़ लो इसे।
क...क्या? प...पर क्यों?

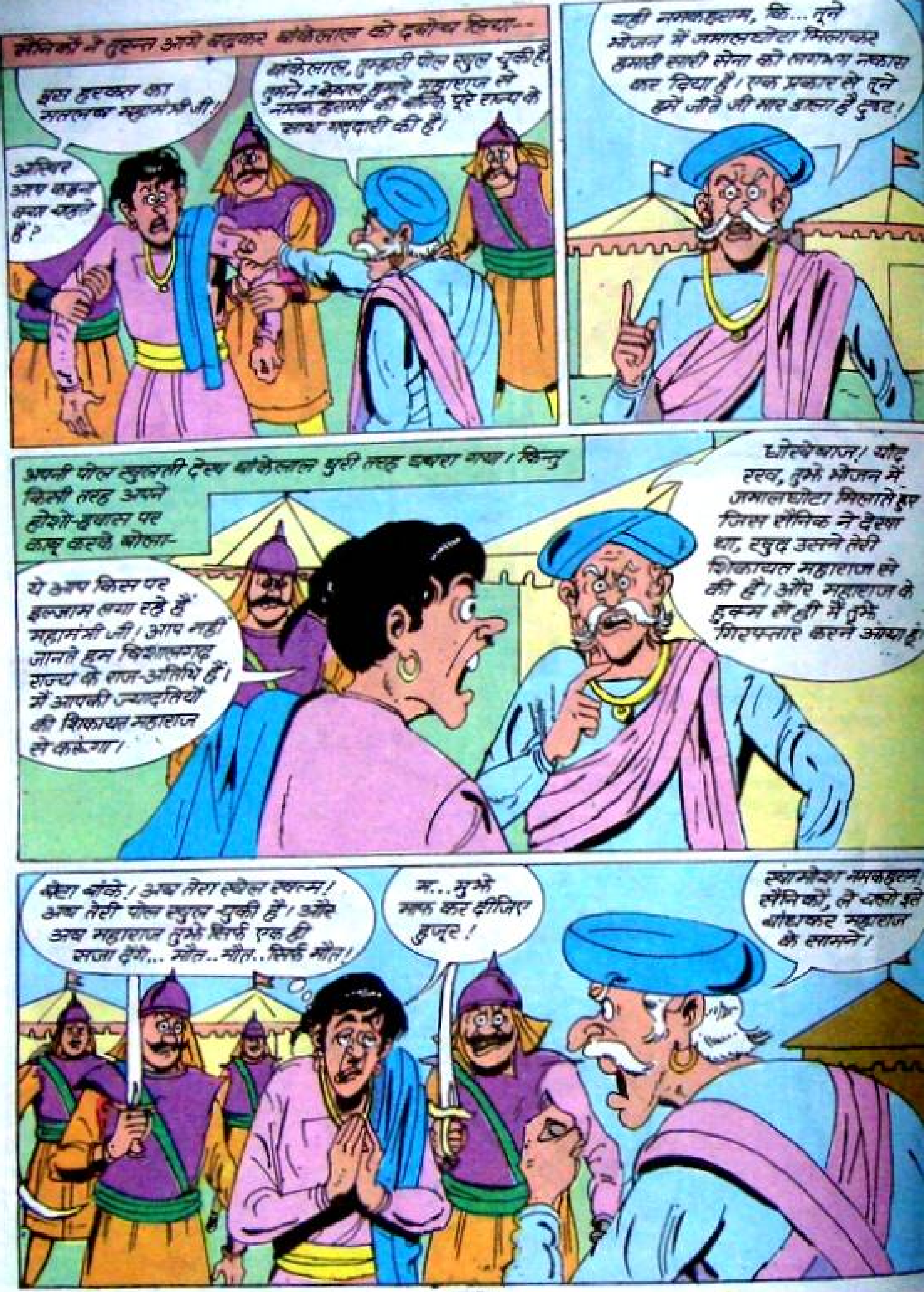
सैनिकों ने तुरन्त आगे बढ़कर बांकेलाल को दबोच लिया--
इस हरकत का मतलब महामंत्री जी!
आखिर आप कहना क्या चाहते हैं?
बांकेलाल, तुम्हारी पोल खुल चुकी है! तुमने न केवल हमारे महाराज से नमक हरामी की बल्कि पूरे राज्य के साथ गद्दारी की है।
यही नमकहराम, कि... तूने भोजन में जमालघोटा मिलाकर हमारी सारी सेना को लगभग नकारा कर दिया है। एक प्रकार से तूने हमें जीते जी मार डाला है दुष्ट!
अपनी पोल खुलती देख बांकेलाल बुरी तरह घबरा गया। किन्तु किसी तरह अपने होशो-हवास पर काबू करके बोला-
ये आप किस पर इल्जाम लगा रहे हैं महामंत्री जी! आप नहीं जानते हम विशालगढ़ राज्य के राज-अतिथि हैं। मैं आपकी ज्यादतियों की शिकायत महाराज से करूंगा।
धोखेबाज! याद रख, तुझे भोजन में जमालघोटा मिलाते हुए जिस सैनिक ने देखा था, खुद उसने तेरी शिकायत महाराज से की है। और महाराज के हुक्म से ही मैं तुझे गिरफ्तार करने आया हूं।
बेटा बांके! अब तेरा खेल खत्म! अब तेरी पोल खुल चुकी है! और अब महाराज तुझे सिर्फ एक ही सजा देंगे... मौत..मौत..सिर्फ मौत!
म...मुझे माफ कर दीजिए हुजूर!
खामोश नमकहराम! सैनिको, ले चलो इसे बांधकर महाराज के सामने।

महामंत्री ने बांकेलाल को महाराज के सामने पेश किया–
बोल दुष्ट! क्यों की तूने ऐसी नीच हरकत? बता, बोल दुष्ट...बोल...
मो...मो माफी... रहम महाराज... रहम...!
खामोश नीच! तूने हमारे साथ ही नहीं, बल्कि अपने देश, अपने साथियों के साथ गद्दारी की है। हम तुझे कभी माफ नहीं कर सकते।
महाराज, मुझे...
चुप हो जा मक्कार!
महामंत्री जी! आप इसे फौरन मेरी आंखों के सामने से हटा दीजिए। कल युद्ध आरम्भ होने से पहले हम खुद अपने हाथों से इसका गला काटेंगे। यही इसकी सजा है।
रहम...महाराज... रहम!
सैनिको! ले जाओ इसे!
न... नहीं!
फिर सैनिक बांकेलाल को घसीटते हुए वहां से ले गये।
इधर उधमपुर के राजा उधमसिंह के खेमे में उधमपुर के बुद्धिमान जासूस पोपटलाल और चौपटलाल अपने राजा उधमसिंह के सामने सिर झुकाए खड़े थे।
इसमें कोई शक नहीं कि आप दोनों विलक्षण सूझ-बूझ वाले हैं या यह कहा जाए कि आप दोनों हमारी सेना की रीढ़ हैं तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।
महाराज! यह तो आपका बड़प्पन है, वरना हम किस काबिल हैं!

यह आप दोनों द्वारा लाई गई दुश्मन सेना की गुप्त जानकारी ही है। जिसकी बदौलत हमने कई देशों में बड़ी सरलता से विजय प्राप्त की है और आज भी हम चाहते हैं कि आप दोनों फौरन यहां से जाकर किसी प्रकार सिंहालगढ़...
...की सेना का जायजा लें और शाम तक अपनी जानकारी हमारे सामने पेश करें।
आज्ञा का पालन होगा अन्नदाता!
फिर जासूस चोपट लाल, घोपट लाल अपने राजा की आज्ञानुसार चल पड़े सिंहालगढ़ की सेना की स्थिति का जायजा लेने।
और कुछ दूर आगे चलने के बाद-
भाई, घोपट, वो देखो! सामने सिंहालगढ़ के सैनिक!
नहीं घोपट! वे शायद नित्यकर्मों से निपटने जंगल जा रहे हैं। देख नहीं रहे उनके हाथों में लोटे हैं।
हां भई चोपट वो तो इधर ही आ रहे हैं। क्या हम दोनों उनकी नजर में आ गये हैं?
हां भई चोपट! तुम ठीक कहते हो और सुनो, मेरे दिमाग में जासूसी की एक सरल और नयी युक्ति आयी है।
क्या?
क्यों न हम दोनों यहीं किसी पेड़ पर चढ़कर आराम से बैठें?
घोपट भाई! हम यहां दुश्मन देश की सेना की स्थिति का जायजा लेने आये हैं, न कि पेड़ पर चढ़कर आराम करने।
चोपट भाई, बात को समझने का प्रयत्न करो। देखो, दुश्मन देश का प्रत्येक सैनिक नित्यकर्म से निबटने इधर से होकर ही जंगल जायेगा। और हम...

यहीं पेड़ पर
चढ़े अनुमान
लगा लेंगे कि
दुश्मन देश के
सैनिकों की संख्या
कितनी है?
मान गया भाई
चोपट! तेरे दिमाग
को! क्या धांसू तरकीब
आई है तेरे भेजे
में!
फिर देर किस
बात की प्यारे!
चढ़ लो, उस
बरगद के पेड़
पर।
ठीक है
चलो!
फिर दोनों जासूस सामने खड़े विशाल बरगद के
पेड़ पर चढ़ गये...
और सामने से जंगल-पानी के लिए जा
रहे विशालगढ़ के सैनिकों की गिनती
करने लगे।
और फिर कुछ ही देर बाद--
चौपट, तुम्हारे अनुमान से अब तक
कितने सैनिक निवृत होकर
वापस जा चुके होंगे?
यही करीब पचास-
पचपन हजार सैनिक!
और हमारा
अनुमान क्या
था?
यही कोई चालीस-पैंतालीस हजार
सैनिक! प...पर यह तो पचास-पचपन...
तुम कहना क्या चाहते हो?
यही कि हमारी पुरानी जानकारी
कितनी गलत थी। और सुनो,
सैनिक अभी भी आते ही जा
रहे हैं।
यानि कि
हम अभी
तक बहुत
बड़ी गलत-
फहमी में
थे।
यह वही समय था, जब
विशालगढ़ के सैनिकों को दस्त की
भयंकर बीमारी लगी हुई थी।
और वह बार-बार लोटा हाथ
में उठाए जंगल की ओर
भाग रहे थे और पेड़ पर
चढ़े चौपट-चोपट उन्हें
नया सैनिक समझकर
दुश्मन देश की सेना की संख्या
के बारे में गलतफहमी में
पड़ गये थे।...

...सैनिक निरन्तर आते-जाते रहे। और यह देख जासूस चौपट लाल और चौपट लाल के चेहरे पर पसीना चमकने लगा।
भई चौपट! विशालगढ़ के महाराज के पास इतनी बड़ी सेना? ताज्जुब है!
तुम शायद ठीक कहते हो।
इसमें ताज्जुब की क्या बात भाई चौपट! पड़ोसी देश के राजाओं ने गुप्त मदद की होगी राजा विक्रम सिंह की।
तुम्हारे ख्याल से अब तक कितने सैनिक नित्यकर्म से निवृत होकर जा चुके हैं?
लगभग दो लाख!
और हमारे महाराज अपनी सत्तर हजार की सेना को विशालगढ़ की सेना के मुकाबले दुगना समझ रहे हैं।
चौपट भाई! तुम कहना क्या चाहते हो?
यही कि हमारे महाराज को इस गलतफहमी में बहुत बड़ी पराजय का मुंह देखना पड़ेगा।
तो चौपट भाई, हमें क्या? हमारे महाराज हारें या जीतें... अरे भई हम जासूस हैं। हमारा काम है, दुश्मन देश की सैनिक जानकारी प्राप्त करना और प्राप्त जानकारी अपने राजा के सामने पेश करना।

तुम शायद ठीक कहते हो भाई चोपट... आओ, हम यह गर्मा-गर्म खबर जल्दी अपने महाराज को दें।
चल भाई चौपट!
फिर थोड़ी ही देर बाद चोपट-चौपट अपने महाराज अमरसिंह के सामने थे।
अन्नदाता, गुस्ताखी माफ!
अन्नदाता, विशालगढ़ की सेना अपनी सेना के मुकाबले तिगुनी-चौगुनी है।
ये तुम क्या कह रहे हो चौपट?
अन्नदाता, चौपट ठीक कह रहा है। हम लोगों ने अपनी आँखों से विशालगढ़ की विशाल सेना देखी है।
क्या?
जी हां अन्नदाता! अब आप ही उस देश की सेना की संख्या का अंदाजा लगाएं, जिस देश के सैनिक एक बार में हजारों की संख्या में नित्यकर्म से निबटने के लिए जंगल जाते हैं और उनके वापस आते ही दूसरी...
...टोली आती है। और यही क्रम सुबह से लेकर दोपहर तक चलता है। पर सैनिक फिर भी आते-जाते रहते हैं।
ओह! पर हमारी जानकारी में तो विशालगढ़ की सेना इतनी बड़ी न थी।

यह बात तो अपनी जगह सही है अन्नदाता! पर हमारा अनुमान है कि पड़ोस के कई राज्यों ने मिलकर राजा विक्रमसिंह की मदद की है।
यह तो हो सकता है। पर अब हम क्या करें? कल युद्ध में हमारी पराजय तो हमारी नाक कटवा देगी।
अन्नदाता! हमें विशालगढ़ के महाराजा विक्रम सिंह से अपनी पराजय स्वीकार कर सन्धि का रास्ता अपनाना चाहिए।
हाँ यही ठीक रहेगा वाकई तुम दोनों जासूसों ने समय-समय पर हमें ठीक सुझाव देकर हमारी नाक इतनी ऊँची कर दी है।
अन्नदाता! यह तो हमारा फर्ज है।
फिर उदयपुर के दोनों जासूस और राजदूत, तीनों चल पड़े विशालगढ़ के महाराज से मिलने।
अब तुम दोनों मिल विश्वस्त मित्र राजदूत डूंगरसिंह के साथ विशालगढ़ के महाराज के पास चले जाओ। मैं तुम्हें सन्धिपत्र लिखके देता हूँ।
ठीक है अन्नदाता!

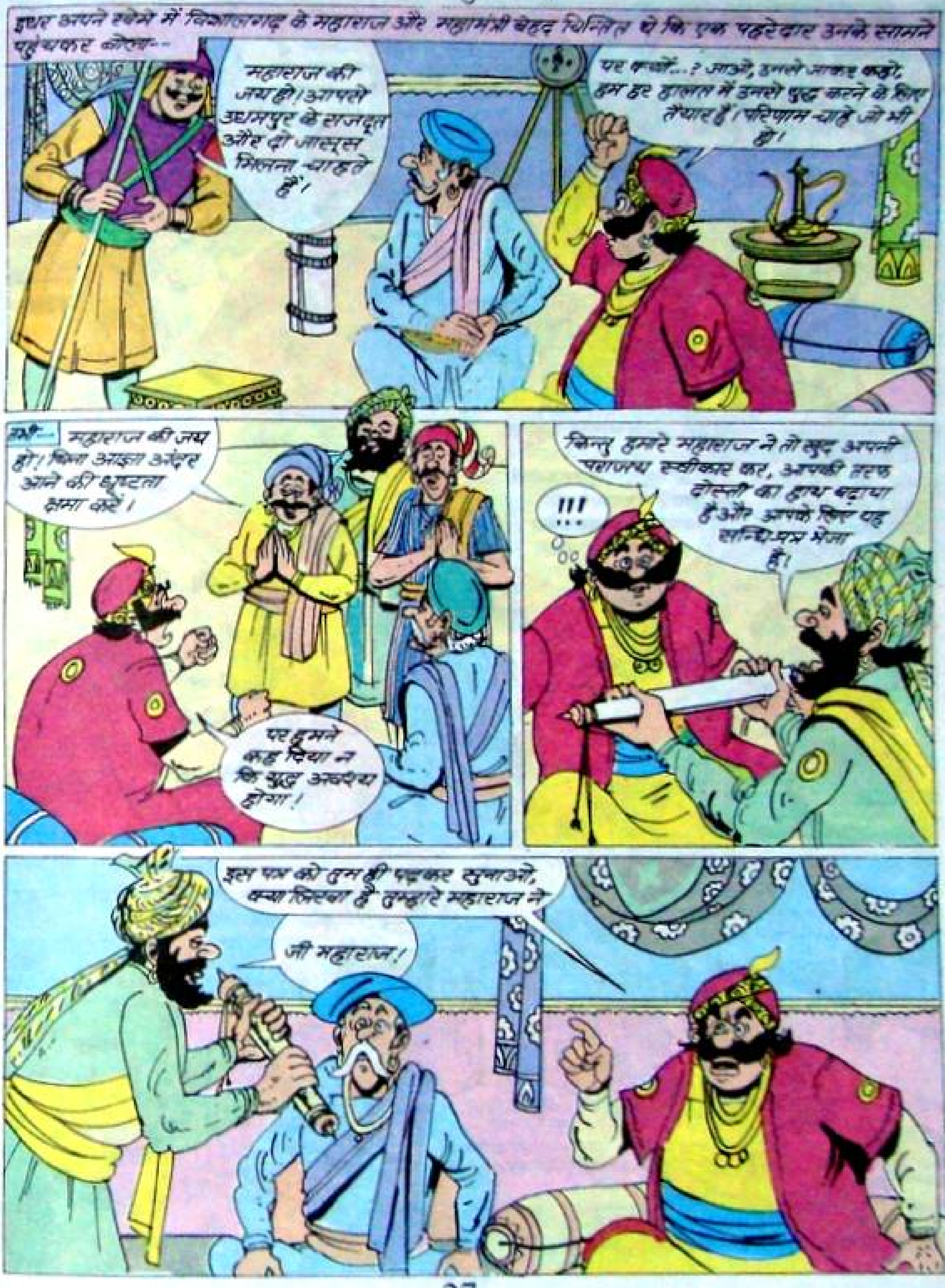
इधर अपने खेमे में विशालगढ़ के महाराज और महामंत्री बेहद चिन्तित थे कि एक पहरेदार उनके सामने पहुंचकर बोला--
महाराज की जय हो! आपसे उदयपुर के राजदूत और दो जासूस मिलना चाहते हैं।
पर क्यों...? जाओ, उनसे जाकर कहो, हम हर हालत में उनसे युद्ध करने के लिए तैयार हैं। परिणाम चाहे जो भी हो।
तभी--
महाराज की जय हो! बिना आज्ञा अंदर आने की धृष्टता क्षमा करें।
पर हमने कह दिया न कि युद्ध अवश्य होगा!
किन्तु हमारे महाराज ने तो खुद अपनी पराजय स्वीकार कर, आपकी तरफ दोस्ती का हाथ बढ़ाया है और आपके लिए यह सन्धि-पत्र भेजा है।
!!! ...
इस पत्र को तुम ही पढ़कर सुनाओ, क्या लिखा है तुम्हारे महाराज ने
जी महाराज!

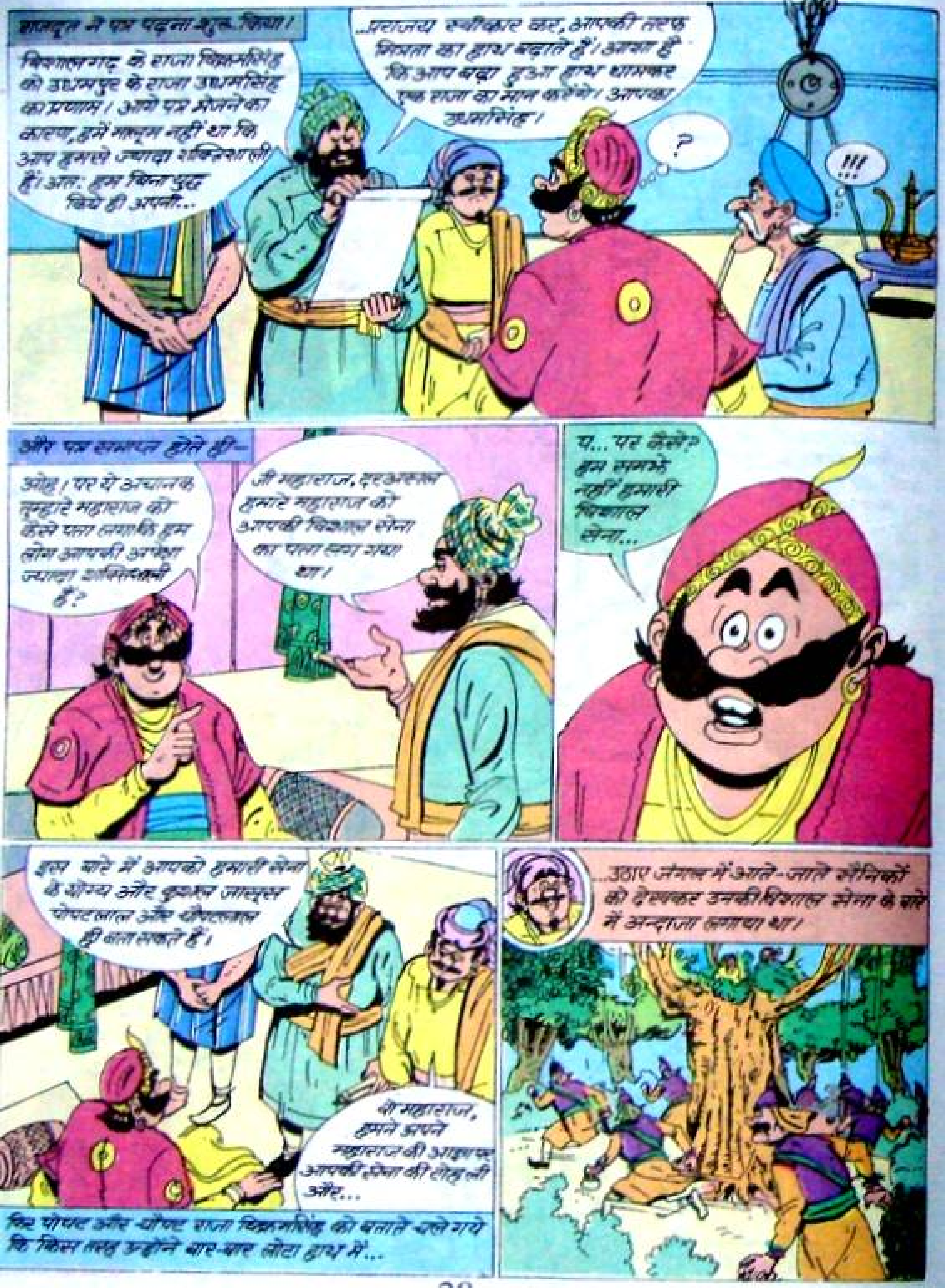
राजदूत ने पत्र पढ़ना शुरू किया।
विशालगढ़ के राजा विक्रमसिंह को उत्तमपुर के राजा उत्तमसिंह का प्रणाम। आगे पत्र भेजने का कारण, हमें मालूम नहीं था कि आप हमसे ज्यादा शक्तिशाली हैं। अत: हम बिना युद्ध किये ही अपनी...
...पराजय स्वीकार कर, आपकी तरफ मित्रता का हाथ बढ़ाते हैं। आशा है कि आप बढ़ा हुआ हाथ थामकर एक राजा का मान करेंगे। आपका उत्तमसिंह।
?
!!!
और पत्र समाप्त होते ही—
ओह! पर ये अचानक तुम्हारे महाराज को कैसे पता लगा कि हम लोग आपकी अपेक्षा ज्यादा शक्तिशाली हैं?
जी महाराज, दरअसल हमारे महाराज को आपकी विशाल सेना का पता लग गया था।
प... पर कैसे? हम समझे नहीं हमारी विशाल सेना...
इस बारे में आपको हमारी सेना के योग्य और कुशल जासूस पोपटलाल और चौपटलाल ही बता सकते हैं।
जी महाराज, हमने अपने महाराज की आज्ञा पर आपकी सेना की टोह ली और...
फिर पोपट और चौपट राजा विक्रमसिंह को बताते चले गये कि किस तरह उन्होंने बार-बार लोटा हाथ में...
...उधर जंगल में आते-जाते सैनिकों को देखकर उनकी विशाल सेना के बारे में अन्दाजा लगाया था।

पूरी बात सुनने के बाद राजा विक्रमसिंह गहरे सोच में पड़ गये।
फिर बोले—
अपने महाराज से आप लोग कहें कि, हमें उनकी मित्रता स्वीकार है।
महाराज विक्रमसिंह की जय हो।
इसी के साथ वे तीनों खेमे से बाहर निकल गये।
और उनके जाते ही—
हे महामंत्री जी, इसका मतलब बांकेलाल ने हमारी इज्जत बचाने के लिए जान-बूझकर भोजन में जमालघोटा मिलाया था।
जी महाराज! लगता है भोजन में जमालघोटा मिलाना बांकेलाल की पूर्व नियोजित योजना थी।
वह क्या शानदार बुद्धिमत्ता पूर्ण योजना थी बांकेलाल की!
हां महाराज! और अनजाने में हमने कितना बुरा सलूक किया बांकेलाल के साथ! वह तो बेचारा बारबार अपनी सफाई में कुछ कहना चाहता था, पर हमने उसे कुछ कहने का अवसर नहीं दिया।
महामंत्री! हमें तुरन्त उससे माफी मांगनी चाहिए।
इसी के साथ महाराज व महामंत्री बांकेलाल से मिलने चल पड़े।

और उधर कैद में पड़े बांकेलाल का बुरा हाल था।
हे ईश्वर! अब क्या होगा! अब तो मेरी मौत निश्चित है! प..पर मैं... मैं मरना नहीं चाहता, मुझे बचा ले भगवान, हे प्रभु!
तभी बांकेलाल की खुली आंखों के सामने एक भयानक स्वप्न घूम गया।
महाराज! मार डालो इस दुष्ट पापी को!
क्ष...क्षमा महा..राज! क्षमा... मुझे...
दुष्ट! देश के दुश्मन को हम कभी क्षमा नहीं कर सकते!
इसी के साथ राजा विक्रमसिंह का हाथ लहराया और...
न.. न... हीं!
और उसकी चीख सुनकर महाराज, जो बांकेलाल के पास ही आ रहे थे, दौड़ते हुए वहां पहुंचे--
बांकेलाल, क्या... क्या हुआ? तुम चीख क्यों रहे थे?
ऐ हां... महाराज मुझे मत मारो, मुझे क्षमा कर दो!

और फिर आंसू बहाता हुआ बांकेलाल महाराज के पैरों में गिर पड़ा।
प्राणदान महाराज! क्षमा महाराज मैं...
अरे! यह क्या करते हो बांकेलाल! माफी तो हम खुद तुमसे मांगने आए हैं।
महाराज की बात सुनते ही बांकेलाल के दिमाग को एक झटका सा लगा।
चोप बेटा! तू कुछ मत बोल। बस, चुपचाप इनकी सुनता रह और देख आगे-आगे होता है क्या?
हां बांकेलाल! तुम्हारी ही दूरदर्शिता व चतुराई से हम पर आई मुसीबत टली है... और हमें नहीं मालूम था कि भोजन में जमालघोटा मिलाना तुम्हारी बुद्धिमतापूर्ण योजना का अंग है।
क्या?
और बांकेलाल जी, हमने आप पर गलत संदेह कर आपसे बहुत बुरा व्यवहार किया। हमें क्षमा कर दीजिए।
विशालगढ़ की सेना को जब बांकेलाल की यह योजना बताई गई तो सभी बांकेलाल की जय-जयकार कर उठे।
क्या सोचने लगे बांकेलाल? क्या आपने अभी तक हमें क्षमा नहीं किया?
ए.. हां...जी, महाराज, कृपया आप मुझे शर्मिंदा न करें।
हा..हा..हा.. वाकई क्या चाल सोची थी बांकेलाल जी ने।
हा..हा..हा.. बांकेलाल जी ने हमारे पेट को थोड़ी तकलीफ देकर, हमारे प्राण और इज्जत दोनों की रक्षा की है।
बांकेलाल जी की!
जय!

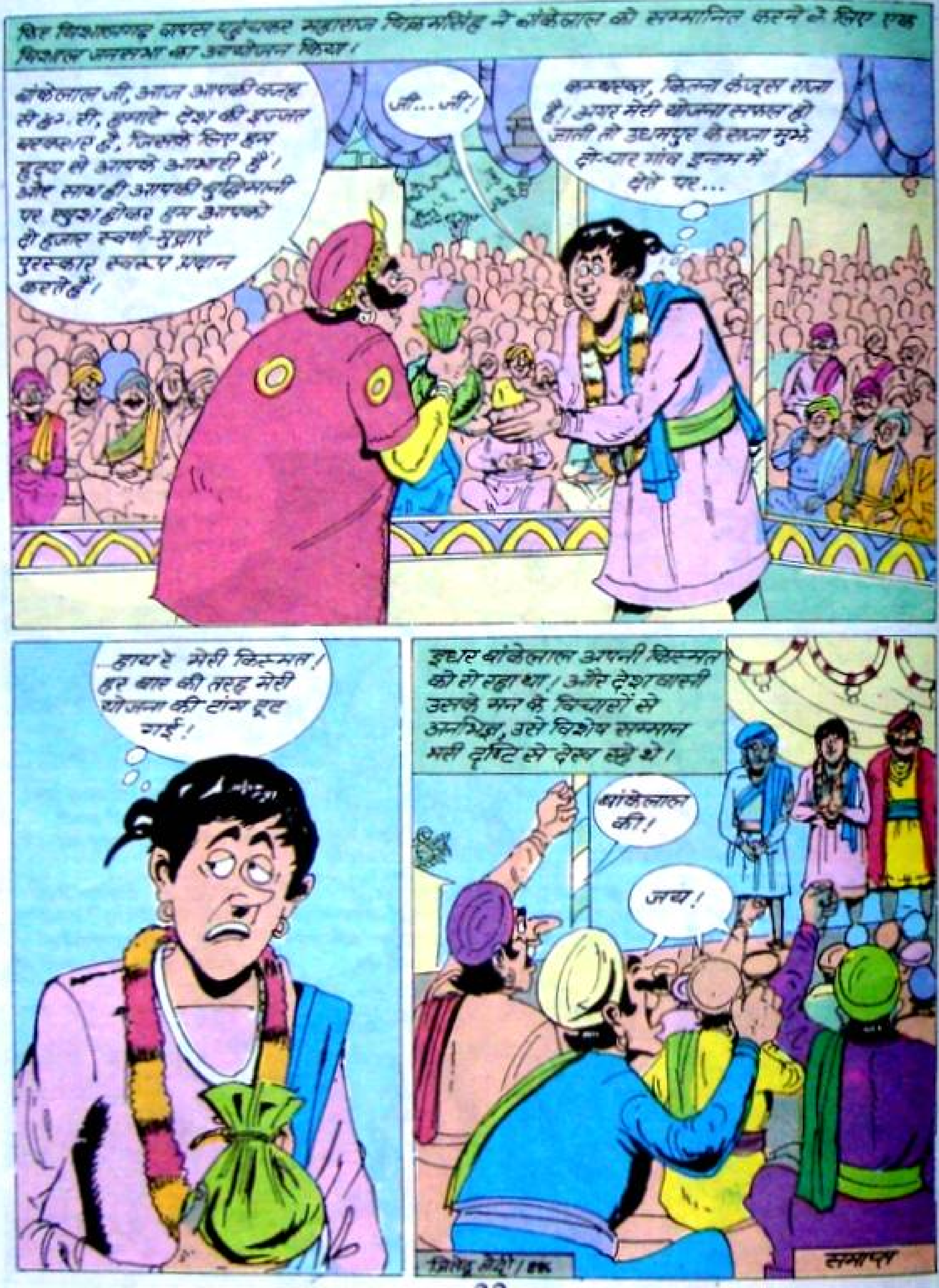
फिर विशालगढ़ वापस पहुंचकर महाराज विक्रमसिंह ने बांकेलाल को सम्मानित करने के लिए एक विशाल जनसभा का आयोजन किया।
बांकेलाल जी, आज आपकी वजह से ही, हमारे देश की इज्जत बरकरार है, जिसके लिए हम हृदय से आपके आभारी हैं! और साथ ही आपकी बुद्धिमानी पर खुश होकर हम आपको दो हजार स्वर्ण-मुद्राएं पुरस्कार स्वरूप प्रदान करते हैं।
जी... जी!
कमबख्त, कितना कंजूस राजा है! अगर मेरी योजना सफल हो जाती तो उदयपुर के राजा मुझे दो-चार गांव इनाम में देते पर...
हाय रे मेरी किस्मत! हर बार की तरह मेरी योजना की टांग टूट गई!
इधर बांकेलाल अपनी किस्मत को रो रहा था। और देशवासी उसके मन के विचारों से अनभिज्ञ, उसे विशेष सम्मान भरी दृष्टि से देख रहे थे।
बांकेलाल की!
जय!
समाप्त